प्राकृतमार्गोपदेशिका

कर्ता

अध्यापक बेचरदास जीवराज दोशी

प्रकाशक
शंभुलाल जगशी शाह
गूर्जर ग्रन्थरत्न कार्यालय
गांधीरोड — अमदावाद

प्रथम आवृत्ति
वि. सं. १९९१
मूल्य २-०-०

मुद्रक
मगनलाल लक्ष्मीदास पटेल
श्री सूर्यप्रकाश प्रिन्टींग प्रेस
पीरमशारोड—पानकोर नाका
अमदावाद

कांइक

प्रस्तुत पुस्तकना फरमा सहज जिज्ञासा दृष्टिथी हुं सांभळी गयेलो त्यारबाद पं० बेचरदासे ए विषे कांइक लखवा कह्युं. में वगर विलंबे एनो स्वीकार कर्यो एनुं कारण ए नहि हतुं के हुं प्राकृतभाषा के भाषाओनो सतत तेमज असाधारण अभ्यासी रह्यो छुं, पण ए स्वीकारनुं खरुं कारण पं० बेचरदासना दीर्घकालीन अने सतत प्राकृत भाषाओना अभ्यास तेमज चिंतन विषेनी मारी खात्रीमां रहेलुं हतुं.

एमनी चोवीस वर्ष पहेलां प्रथम लखाएली अने छपाएली 'प्राकृतमार्गोपदेशिका' आ पंक्तिओ लखती वखते में प्रथम ज वार जोई, एनी प्रस्तुत पुस्तक साथे सरखामणी करी. ए उपरांत गूजरात विद्यापीठ तरफथी प्रसिद्ध थयेल एमनुं 'प्राकृत व्याकरण' पण फरी वार जोई गयो. अने हमणां ज एमणे लखेल अने पूंजाभाइ ग्रन्थमाळामां प्रगट थयेल 'जिनागमकथासंग्रह' पण जोई गयो. साथे साथे हमणां हमणां अन्य लेखकोद्वारा गूजराती तेमज संस्कृतमां लखायेलां अने छपायेलां बीजां पण प्राकृत व्याकरण विषयक पुस्तको जोई गयो. आ बधा टूंक पण तटस्थ अवलोकनथी मारा उपर बे छापो मुख्यपणे पडी छे. पहेली ए के बीजा कोइ पण वर्तमान गूजराती लेखकना प्राकृत विषयक पुस्तको करतां पं. बेचरदासना प्राकृत विषयक पुस्तकोमां प्राकृत विषयक अभ्यास वाचन अने चिंतन वधारे दीर्घकालीक, वधारे विशाळ अने विशेषपणे सतत छे. बीजी छाप ए छे के तेमना चिंतनमां स्वतंत्रता विशेष होई सांप्रदायिक पूर्व ग्रहो मात्र संप्रदायने कारणे आडा नथी आवता.

*

पण्डितजीनो पालिविषयक अभ्यास अने तद्विषयक वाचन प्रमाणमां ठीक ठीक होवाथी एमना पुस्तकोमां प्राकृत अने पालिभाषानी सरखामणी समुचित अने साधार छे. तेथी एम कहेवाने कारण छे के जो प्राकृतना अभ्यासी विद्यार्थीओ प्रस्तुत पुस्तकथी शरू करी चडते क्रमे एमनां बीजां पुस्तको वांचे के शीखे तो प्राकृत भाषाओना सचोट ज्ञान उपरांत साथे पालीभाषानुं पण अमुक अंशे ज्ञान मेळवे, के जे प्राकृत भाषाना अभ्यासी वास्ते खास आवश्यक अने फळद्रुप छे.

प्रस्तुत पुस्तक ए चोवीस वर्ष पहेलां लखायेल प्राकृतमार्गोपदेशिकानो परिपाक छे एटले हवे आ पुस्तक प्रसिद्ध थया पछी ए प्राथमिक आवृत्तिने अभ्यासमां खास स्थान नथी रहेतुं ए कहेवानी भाग्येज जरूर छे. जे जे पाठ्यक्रममां प्रथम छपाएल एमनी मार्गोपदेशिका हती तेमां हवे आ पुस्तक दाखल करवुं दरेक दृष्टिए 'वधारे' उपयोगी सिद्ध थशे.

सुखलाल

परिचय

आ पुस्तकमां में जे क्रम अने रचनापद्धति योजी छे तेनी वीगत नीचे मुजब छे:—

१ प्राकृतप्रत्ययो, धातुओ, नामो अने नामोनां रूपो तथा कृदन्तो आपतां साथे साथे संस्कृत प्रत्ययो, धातुओ, नामो, नामोनां रूपो अने कृदंतो मुकेलां छे.

२ नामोनां अने धातुनां रूपोनी साधनिका बाबत समजुती आपतां तेमां भाषाशास्त्रनी मानिती तुलनादृष्टिने प्रधानपदे राखेली छे.

३ अर्थो आपतां मोटा भागे एवा शब्दो योज्या छे के जेमनां उच्चारणो मूळ शब्दो करतां बहु ओछां जुदां होय.

४ पाछळ खास केटलाक देशी शब्दो उमेर्या छे अने एमना अर्थो पण सरखामणीने लक्ष्यमां राखीने ज उक्त त्रीजी रीते आपेला छे.

[विद्यार्थी साधारण संस्कृत जाणतो होय के सारामां सारुं गूजराती जाणतो होय तो पण आ पाठोद्वारा सरलताथी प्राकृतभाषाने शीखी शके अने प्राकृतसाहित्यना रसने आस्वादी शके ए दृष्टिने ध्यानमां राखीने पाठोमां बधे गूजराती, प्राकृत अने संस्कृतनी सरखामणीनी पद्धति मुख्य राखेली छे. आ पद्धतिमां गोखवानुं घणुं ओछुं रहे छे. संस्कारो जमाववा माटे थोडुं घणुं गोखवुं पण मने अनिवार्य जणाय छे. सरखे सरखा शब्दो काने आवतां विद्यार्थी, व्युत्पत्ति तरफ पण वळशे अने तेनी अभ्यासवृत्ति व्युत्पत्तिने शोधवा जरूर मथशे अने एम करतां करतां ते, गूजरातीनी गंगोत्रीना मूळ पासे जइ पहोंचशे.]

५ जे रूपोनी साधना आचार्य हेमचंद्रे पण नथी बतावी तेवां आर्ष-रूपोनी पण साधना आ पाठोमां बतावबामां आवी छे.

६ केटलांक अव्ययो अने संख्यावाचक शब्दो माटे खास जुदा जुदा पाठो गोठवेला छे.

७ प्राकृत वाक्यो करतां गूजराती वाक्यो आणी जोईने ज वधारेलां छे. विद्यार्थीनी बुद्धि प्राकृत भाषाने समजवाने ठीक ठीक व्यायाम मागे छे अने एवो व्यायाम ए वाक्योद्वारा मळी रहे छे माटे ज गूजराती वाक्यो वधारे मुकेलां छे. छतां जे शिक्षको अने कुशाग्र-बुद्धिवाळा विद्यार्थिओ ए व्यायामने न इच्छे तो तेम करवानी तेमने पूरती छूट छे.

८ सारांश अने प्रश्नो आरम्भना ज भागमां मूकेला छे तेथी नवा नवा पाठो आवे त्यारे तेने अनुसरी सारांश अने प्रश्नो शिक्षकोए के विद्यार्थिओए ऊपजावी काढवाना छे.

९ पाठोना टिप्पणोमां वर्णविकारना मुख्य मुख्य बधा नियमो जणावी दीधा छे. ए बधा नियमोनुं मूळ, आदेश अने स्थानिनी समानतामां छे. जेमके–स्थानी 'प' होय, तो तेनो आदेश 'व' थाय छे. 'प' नो 'व' थवानुं कारण 'प' अने 'व' बन्नेनुं एक सरखुं ओष्ठ स्थान छे ए छे. ए ज रीते 'ए' नो 'इ' 'ओ' नो 'उ' 'ट' नो 'ड' 'ठ' नो 'ढ' 'य' नो 'ज' 'ह' नो 'घ' वगेरे विकारो विशे समजवानुं छे. उच्चारण करनार व्यक्ति, एकने बदले बीजुं बोलतां स्वाभाविक रीते घणे भागे मळतेमळतुं बोले छे एथी ज शब्दोना उच्चारणोमां फरक पण सरखेसरखो पडतो आवे छे संयुक्त अक्षरोमां पण पूर्ववर्ती के परवर्ती वर्णनी समानताना धोरणे परिवर्तन थाय छे, 'ट' ने बदले 'क' बोलनारो के 'क' ने बदले 'भ' बोलनारो भाग्ये ज मळी शकशे ए ध्यानमां राखवानुं छे, परिवर्तननो आ एक महानियम ध्यानमां राखवाथी बधा उच्चारणभेदोनो स्फोट सहजमां थई जशे:

शिक्षक, उक्त नवे मुद्दाओने लक्ष्यमां राखीने शीखवशे अने विद्यार्थी पण ते मुद्दाओने ते रीते बराबर समजीने शीखशे तो कोईने निष्फळता मळवानो संभव नथी.

वर्णविकारना नियमो समजावतां उक्त महानियम तो न ज भुलाय. परंतु ते माटे आपेलां उदाहरणो उपरांत बीजां पण उदाहरणो शिक्षक जरूर शोधी शके एक विकार थया पछी तेना उपर बीजा बीजा विकारो केवी केवी रीते थाय छे ते समजाववा भाषाना ग्रामीण शब्दो बहु उपयोगी थशे. ते उपरांत हिंदी, मराठी अने बंगाळी भाषाना शब्दो पण बहु रुचिकर नीवडशे.

उच्चारणभेद याने वर्णविकार थवानां कारणोमां बोलनारानां शरीर उपर थती भौगोलिक असर, उच्चारणस्थानोमां थता फेरफारो, स्पष्ट उच्चारणने माटे जोइता शारीरिक बळनो ह्रास लखनाराओनी बेदरकारी, परंपराने ज मान्य राखवानो आग्रह, बीजी प्रजानो सहवास, धर्मक्रांति राजसत्ता, भाषा संबंधी आदरनो घटाडो, पंडितोनो उन्माद, छेका मारेला शब्दो उपरथी नवा शब्दोनी कल्पना, वांचनाराओनो भ्रम, लखेलुं तेवुं ज वांचवुं, अनुवाद करवामां असावधानता वगेरे अनेक कारणो छे ते तरफ शिक्षके विद्यार्थीनुं ध्यान खेंचवुं.

आ रीते स्पष्टतापूर्वक शीखववाथी भाषाना भेदोनो कोयडो आपोआप ऊकली जशे अने ए भेदोमांथी प्रकटेली ए अस्मिता पण शमी जशे.

पाछला पाठोमां पर्यायवाची समान हिंदी शब्दो, मराठी शब्दो अने बंगाळी शब्दो आपी जुदा जुदा अनेक मोटा पाठो उमेरवा धारेलुं पण त्वरताने कारणे ते नथी बनी शक्युं, किंतु हवे पछीना संस्करणमां तेनुं स्थान जरूर रहेशे.

ते ते पाठोमां वपराएला शब्दोनो कोश पुस्तकने प्रांते संस्कृत पर्याय अने अर्थ साथे मुकेलो छे. तेमां नामोनो विभाग जाति प्रमाणे

करेलो छे, विशेषणो, अव्ययो, संख्यावाची शब्दो अने धातुओनो पण कोश ते ते विभागे गोठवेलो छे. पछी बे फारम जेटलुं सरळ गद्यपद्य मुकेलुं छे अने त्यार पछी तेनो पण सळंग कोश मुकेलो छे.

पाठोमां आवेला शब्दकोशनी योजना मारा विनयी विद्यार्थी पं. शांतिलाल वनमाळी शेठ-न्यायतीर्थे करेली छे ते अर्थे तेनुं अहीं संस्मरण करुं छुं.

काशीविश्वविद्यालयमां जैनदर्शनशास्त्रना अध्यापक ख्यात दर्शनशास्त्री सुहृद्वर पंडित सुखलालजीए पुस्तकना आरंभमां 'कांइक' लखी आपी पुस्तकने आशीर्वाद आप्यो छे ए बदल हुं शुं लखुं ते ज सूझतुं नथी.

अनुभवी शिक्षको अने अभ्यासी विद्यार्थीओ आ पाठोने शीखतां पोतपोतानी नोंधो अवश्य लखी राखे अने प्रसंग पडये मने ए नोंधो सूचववा लक्ष्य राखे तो हुं मने ठीक ठीक जाणी शकीश.

आ पुस्तकने प्रकाशमां लाववानुं साहस गूर्जरग्रंथरत्नकार्यालयना प्रख्यात मालिक भाइ शंभुलाल जगशीए खेडयुं छे ते माटे ते पण स्मरणार्ह छे.

वैशाख शुद. ३
अमरेली-काठियावाड

बेचरदास जीवराज दोशी

एक खुलासो

पुस्तकने पहेले ज पाने लखेलुं छे के—" उच्चारणोनुं ए परिवर्तन वैदिक संस्कृतमांय छे अने प्राकृतमांय छे." (पं० ११-१२)

आ वाक्यनो आशय, ए बन्ने भाषामां परिवर्तनो थवा पाम्यां छे एम जणाववानो छे, पण ए बन्नेमां एक सरखां ज परिवर्तनो छे एम बताववानो नथी.

आरंभमां आपेला परिचयमां परिवर्तननो जे एक व्यापक महा-नियम जणावेलो छे ते उक्त बन्ने भाषाने लागु पडे छे ए दृष्टिए उक्त वाक्य लखायुं छे. आ संबंधी विशेष विगत माटे आर्यविद्या-व्याख्यानमाळामांनुं 'प्राकृतभाषा अने साहित्य' नामनुं मारुं व्याख्यान जोई जवुं घटे अने आर्षप्राकृतनी समजूती माटे विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित मारा प्राकृत व्याकरणनी प्रस्तावना पण वांचो जवी जोईए.

अनुक्रमणिका

विषय | | पृष्ठ

पितरौ वन्दे।

परिचय

वैदिक (वेदोनी मूळ) भाषानुं अने प्राकृत भाषानुं मूळ बंधारण घणुं मळतुं आवे छे. ते बेमां मोटो भेद उच्चारणनो छे अने ए भेदने लीधे ते बन्नेने जुदी जुदी भाषा समजवामां आवी छे – गणवामां आवी छे.

वैदिक संस्कृतमां असंयुक्त अने संयुक्त बन्ने प्रकारना व्यंजनोनो ठीक ठीक व्यवहार छे. ते व्यंजनोमांना केटलाएकनुं उच्चारण अधिक क्लिष्ट छे अने केटलाएक सहज रीते वेगपूर्वक बोलतां एक बीजामां मळी जाय छे वा रूपांतर पामे छे के घसाइ जइ स्वरावशेषी बने छे. उच्चारणोनुं ए परिवर्तन वैदिक संस्कृतमांय छे अने प्राकृतमांय छे. तेथी सहज अने सुखरूप उच्चारणोथी टेवायेला प्राकृत बोलनारा लोको, अर्थनो विपर्यास न थाय तेवी रीते, ते ते असंयुक्त वा संयुक्त व्यंजनोवाळा शब्दोने सरळ उच्चारणपूर्वक व्यवहारमां लावतां विशेषे करीने उक्त परिवर्तनने वशवर्ती होय छे.

सरळ उच्चारण माटे क्यांय कोइ व्यंजननो धीरे धीरे ह्रास थतो आवे छे अने क्यांय बेमांथी एक व्यंजनने जतो करवो पडे छे – ते आपोआप सरी जाय छे. ए असंयुक्त वा संयुक्त व्यंजनोनुं उच्चारण जे जे रीते सरळ थयेलुं छे ते बधी रीतो हवे पछीना पाठोमां आवनारी छे.

प्राकृतभाषा; संस्कृत करतां वधारे व्यापक अने मधुर गणाई छे तेनुं कारण ते एनी सरळता ज छे.

प्राकृतभाषा, केटली बधी सरळ अने सुखपूर्वक बोली शकाय तथा लखी शकाय तेवां उच्चारणोवाळी छे तेनी विशेष समजण माटे अने संस्कृत तथा प्राकृत ए बन्ने भाषा वच्चेना उच्चारणभेदनो स्पष्ट ख्याल विद्यार्थीओने आवे ते सारु प्रत्येक स्थळे संस्कृत साथे तेनी तुलना करी बतावी छे.

तुलनात्मक संस्कृत अने प्राकृत शब्दो उपरांत तेने मळता वा तेमांथी नीपजेला अर्थसूचक गूजराती शब्दो पण साथे साथे जणावेला छे – आ बधुं भाषानी सरखामणीनी दृष्टिए अभ्यास करनार विद्यार्थीने उपयोगी थशे अने आ पद्धतिथी प्राकृत भाषानो अभ्यास पण सुकर बनशे

प्रयोजन

जेमनुं मूळ – उद्‌भवस्थान प्राचीन आर्यभाषामां छे तेवी गूजराती, मराठी, बंगाळी अने हिंदी वगेरे आर्यपेढीनी भाषाओनो तुलनात्मक अभ्यास करवा सारु अने ए प्रांतिक भाषाओनी मौलिक एकताद्वारा समस्त प्रजानुं ऐक्य समजवा – साधवा – सारु प्राकृत भाषाना अभ्यासनुं विशेष महत्त्व छे.

जूनी गूजराती, मराठी, बंगाळी के हिंदीने सारी रीते समजवा माटे अने उक्त ते ते भाषाना प्राचीन वा अर्वाचीन प्रत्येक शब्दनो क्रमविकास शोधवा अने ते द्वारा शुद्ध इतिहास उत्पन्न करवा पण प्राकृतना अभ्यासनी उपयोगिता छे.

भारतीय तपस्वीओना आध्यात्मिक विचारो जेम संस्कृत उपनिषदादिमां जळवायेला छे तेम प्राकृतभाषाना साहित्यमां पण जळवायेला छे तो ते बधाने समजवा अने सर्वधर्मसमभावना जीवनहितैषी उदार सिद्धान्तने विशेष रीते लक्ष्यमां लाववा पण प्राकृतभाषाओना अध्ययननो अति अगत्य छे.

जेटलो फेर गोहिलवाडी अने झालावाडी भाषामां छे या चरोतरनी अने पंचमहालनी भाषामां छे तेटलो ज फेर प्राकृतभाषामां - पाली अने प्राकृतमां, मागधी अने शौरसेनी वगेरेमां - छे तेथी एक मात्र प्राकृतने सारी रीते शीखी जवाथी पाली वगेरे बीजी बीजी प्राचीन शास्त्रीय भाषाओनुं ज्ञान सहेजे सहेजे थई जाय छे.

मूळ जैन सिद्धांतो प्राकृतभाषामां छे अने बौद्ध सिद्धांतो पाली भाषामां छे तेथी बौद्ध अने जैन धर्मना अभ्यासीए तो आ भाषा जरूर शीखी लेवी जोइए.

वर्णविज्ञान

स्वरा

ह्रस्व	दीर्घ	उच्चारणोनुं स्थान
अ	आ	कंठ अने नासिका
इ	ई	तालु अने नासिका
उ	ऊ	ओष्ठ-होठ-अने नासिका
	अ+इ=ए	कंठ अने तालु तथा नासिका
	अ+उ=ओ	कंठ अने होठ तथा नासिका

स्वरनुं प्लुत उच्चारण प्राकृतभाषाना व्यवहारमांथी जतुं रह्युं छे.

जे वर्ण, कंठमांथी बोलाय ते कंठ्य, तालुमांथी बोलाय ते तालव्य, ओष्ठमांथी बोलाय ते ओष्ठ्य अने ए बन्नेमांथी बोलाय ते कंठ्यतालव्य के कंठ्यौष्ठ तथा नासिकामांथी बोलाय ते नासिक्य-अनुनासिक कहेवाय. कंठ एटले गळुं, तालु एटले ताळवुं.

स्वरो बधा अनुनासिक छे पण तेमनुं ते जातनुं उच्चारण स्थलविशेषमां ज थाय छे, बधे नहि.

ह्रस्व 'ऋ' ने बदले विशेषे करीने 'अ' थी अने क्यांय क्यांय 'इ' वा 'उ' थी काम चाले छे.

'ऌ' ने बदले 'इलि' नुं उच्चारण प्रचलित छे.

'ऐ' तो मात्र एक 'अयि' अव्ययने बदले वपराय छे बीजे क्यांय तेनो प्रयोग ज नथी. तेम 'औ' नो पण प्रयोग नथी. 'ऐ' ने बदले 'ए' वा 'अइ' थी काम सरे छे अने 'औ' ने बदले 'ओ' के 'अउ' थी व्यवहार थाय छे.

केटलाक वैयाकरणो कहे छे के 'ऐ' अने 'औ' नो प्रयोग प्राकृतमां छे.

'एक्को' 'सेव्वा' 'सोत्तं' 'सो च्चिअ' वगेरे शब्दोमां आवेला 'ए' अने 'ओ' एकमात्रिक छे – ह्रस्व छे – एम आचार्य शुभचंद्र जणावे छे अने उच्चारणनी दृष्टिए ए छे पण बराबर.

व्यंजनो

	वर्ग	स्थान
क् ख् ग् घ्	क वर्ग	कंठ–कंठ्य
च् छ् ज् झ्	च वर्ग	तालु–तालव्य
ट् ठ् ड् ढ् ण्	ट वर्ग	मूर्धा–माथुं–मूर्धन्य
त् थ् द् ध् न्	त वर्ग	दंत–दांत–दंत्य
प् फ् ब् भ् म्	प वर्ग	ओष्ठ–होठ–ओष्ठ्य
य्		तालव्य
र्		मूर्धन्य
ल्		दंत्य
व्		दंत्य–ओष्ठ्य
स्		दंत्य
ह्		कंठ्य

ङ् ञ् ण् न् म्   नासिका-अनुनासिक
य् ल् व्   ,,   ,,

'सङ्खो' 'अञ्जणं' वगेरे शब्दोमां 'ङ' अने 'ञ्' मात्र पोताना वर्गना व्यंजनो साथे संयुक्त होय त्यारे ज व्यवहारमां आवे छे, पण तेमनो उपयोग प्राकृतमां स्वतंत्र नथी. माटे तेमने वर्गीय व्यंजनो गणावतां गणावेला नथी. संस्कृतमां पण तेमनो स्वतंत्र प्रयोग नहि जेवो ज छे.

'क्क' 'ज्ज' वगेरे सजातीय संयुक्त व्यंजनोनो प्राकृतमां खूब प्रचार छे अने केटलाक अपवादोमां विजातीय संयुक्त व्यंजनोनो पण उपयोग थयेलो छे, एवा व्यंजनोमां 'न्ह' 'म्ह' 'ण्ह' अने 'ल्ह' मुख्य छे. जैनसूत्रोमां क्यांय 'स्म' नो पण उपयोग थयेलो छे. आ सिवाय 'क्व' 'क्त' वगेरे विजातीय संयुक्त व्यंजनोनो प्राकृतमां क्यांय उपयोग नथी.

विसर्गनो तो प्राकृतमां प्रयोग ज नथी.

'कण्ठ' 'तन्तु' अने 'थम्भ' वगेरे शब्दोमां 'ण्' 'न्' अने 'म्'नो उपयोग तो छे ज पण ते त्रणे स्वतंत्र पण वपराय छे. जेमके – गुण, हीण, मुणि. नमी, नाह, नई. मुह, मउड, मोण वगेरे.

[यादीः—'कण्ठ' 'तन्तु' 'थम्भ' वगेरे शब्दोमां 'ण्' 'न्' अने 'म्'नुं नासिकास्थान ज छे त्यारे 'गुण' 'नई' 'मउड' वगेरे शब्दोमां तो तेओ वर्गीय अक्षर तरीके होवाथी तेमनुं वर्गोक्त ते ते स्थान छे, ए भेद ध्यानमां राखवानो छे.]

पाठ १ लो

वर्तमानकाळ

एकवचनना प्रत्ययो

१ पुरुष	मि	(मि)
२ ,,	सि, से	(सि, से)
३ ,,	ति, इ ते, ए	(ति) (ते)

धातु

१ आ आखा पुस्तकमां ( ) आवा गोळ चिह्नमां मूकेलां प्रत्ययो, धातुओ के नामो वा तेमनां रूपो संस्कृत भाषानां समजवां. सरखामणीनी अने उच्चारणना भेदनी समजण माटे ए बधां अहीं जणावेलां छे.

२ संस्कृतमां धातु एटले मूळ धातु अर्थात् जेने गणसूचक विकरण नथी लागेलो एवो शुद्ध धातु समजाय छे त्यारे प्राकृतमां ते करतां प्रायः ऊलटी स्थिति छे एटले के संस्कृतमां गणभेदने लीधे धातुओने जे जुदा जुदा विकरण प्रत्यय लागे छे ते जुदा जुदा विकरण जेमने लागेला छे तेवा ज घणा धातुओ प्राकृतमां मूळ धातुनुं स्थान ले छे. तात्पर्य ए छे के अमुक अमुक गणने सूचवनारा ते जुदा जुदा विकरणो प्राकृतमां धातुना अंगरूप बनी धातुमां मळी गया छे अने आम छे माटे ज प्राकृतमां कोइ प्रकारनो गणभेद नथी रह्यो.

उक्त हकीकत आ नीचेना कोठा उपरथी वधारे स्पष्ट थशे :

संस्कृत-गण	मूळ धातु	विकरणवाळो संस्कृत धातु	प्राकृत धातु
१	वृष्	वृष्+अ=वर्ष	वरिस्
,,	भू	भू+अ=भव	भव हव्
,,	पा	पा+अ=पिब	पिब् पिय्
४	सिध्	सिध्+य=सिध्य	सिज्झ्
,,	सिव्	सिव्+य=सिव्य	सिव्व्
,,	क्षुभ	क्षुभ्+य=क्षुभ्य	खुब्भ्
५	चि	चि+नु=चिनु	चिण्
,,	धु	धु+नु=धुनु	धुण्
६	मुच्	मुच्+अ=मुञ्च	मुञ्च
,,	सिच्	सिच्+अ=सिञ्च	सिञ्च्
,,	लिप्	लिप्+अ=लिम्प	लिम्प्
७	रुध्	रुध्+न=रुणध्	रुन्ध्
,,	भिद्	भिद्+न=भिनद्	भिन्द्
,,	छिद्	छिद्+न=छिनद्	छिन्द्
९	लू	लू+ना=लुना	लुण्
,,	पू	पू+ना=पुना	पुण्
,,	ग्रह्	ग्रह्+ना=गृह्णा	गिण्ह्
१०	कथ्	कथ्+अय=कथय	कहे कह
,,	चुर्	चुर्+अय=चोरय	चोरे चोर्
,,	तर्ज्	तर्ज्+अय=तर्जय	तज्जे तज्ज्

वळी, आत्मनेपदी, परस्मैपदी, उभयपदी एवो धातु सबंधे जुदो जुदो विभाग संस्कृतमां छे. अने एम छे माटे ते दरेक संबंधी प्रत्यय पण जुदा जुदा छे. त्यारे प्राकृतमां तेवो ए..इ जातनो विभाग हयाती धरावतो नथी.

हरिस् (हर्ष्) हरखवुं-हर्ष थवो
वरिस् (वर्ष्) वरसवुं.
करिस् (कर्ष्) कर्षवुं-खेंचवुं-काढवुं, खेडवुं
मरिस् (मर्श्) विमासवुं-विचारवु
घरिस् (घर्ष्) घसवुं-घामा थवु
गरिह् (गर्ह्) गरहवुं-निंदवु
जेम् (जेम्) जमवु.
देक्ख् (दृश्) देखवु
पुच्छ् (पृच्छ्) पूछवु
जाण् (जाना) जाणवु

मरिस् (मर्ष्) सहवुं-क्षमा राखवी
घरिस् (घर्ष्) घसवुं
तुरिय् (तूर्य) त्वरा करवी-उतावळा थवुं, तुरत करवुं
अरिह् (अर्ह्) योग्य थवु.
पुरिय् (पूर्य) पूरवुं-बूरवुं-भरवु-पूरु करवुं
कर् (कर्) करवुं
वंद् (वन्द्) वांदवु-नमवुं
पड् (पत्) पडवुं
नस्स् (नश्य)नासवुं, भागवु-नाश थवो.

आम छे तेथी उपर्युक्त पुरुषबोधक प्रत्ययो धातुमात्रने एक सरखा लागे छे. ए प्रत्ययोमां संस्कृतना आत्मनेपदी वगेरे प्रत्ययो वा तेमना अवशेषो समायेला छे. ए सरखामणीनी दृष्टिए जोतां सहज रीते समजाय एवु छे.

३ ( ) आ चिह्नमां मूकेला संस्कृत धातुओ 'र्ष' 'र्श' 'र्य' अने 'र्ह'वाळा छे. प्राकृत बोलनारा 'र्ष' अने 'र्श'ने 'रिस' 'र्य' ने 'रिय' अने 'र्ह' 'रिह' करीने व्यवहारमां लावता. आ उपरथी एवो नियम फलित थाय छे के 'र्ष' 'र्श' 'र्य' अने 'र्ह' नो प्राकृतमां व्यवहार करतां 'र्'मां 'इ' उमेरवो एटले 'र्ष' के 'र्श'ने बदले 'रिस' – र्+इ+ष=रिस, 'र्य'ने बदले 'रिय' अने 'र्ह' ने बदले 'रिह' समजवुं. जेमके—

र्ष–	वर्ष–वरिस	र्ह–	अर्ह–अरिह	र्य–	पूर्य–पुरिय
	वर्षम्–वरिसं		अर्हन्–अरिहंतो		तूर्य–तुरिय
र्श–	मर्श–मरिस		गर्हा–गरिहा		सूर्यः–सूरियो
	दर्शनम–दरिसणं				

१ मि, ति, न्ति वगेरे पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडतां पहेलां छेडे व्यंजनवाळा धातुओने विकरण 'अ' लगाडवामां आवे छे. जेमके :- वंद् + ति - वंद् + अ + ति = वंदति.

२ बीजा पुरुष एकवचननो 'से' अने त्रीजा पुरुष एकवचननो 'ए' के 'ते' ए बन्ने प्रत्ययो 'अ' छेडावाळा धातु सिवाय बीजा कोइ धातुओने लागता नथी. जेमकेः- वंद् + अ + से = वंदसे.

वंद् + अ + ते = वदते, वंद्+अ+ए=वदए.

प्रत्युदाहरण - जा+सि=जासि.

जा+ति=जाति, जा+इ=जाइ.

[यादी :-' वंद् 'नुं ' वदसे ' अने ' वंदते ' के ' वंदए ' थाय त्यारे ' जा ' धातुनुं मात्र ' जासि ' अने ' जाइ ' के ' जाति ' थाय पण ' जासे ' अने ' जाए ' के ' जाते ' न थाय.]

३ 'म'थी शरू थता प्रथम पुरुषना प्रत्ययोनी पूर्वना अंगना 'अ'नो 'आ' विकल्पे थाय छे. जेमकेः- वंद्+अ+मि-वंदामि, वंदमि.

४ पुरुषबोधक प्रत्ययोनी पूर्वे रहेला धातुना अंगना 'अ'नो 'ए' विकल्पे थाय छे. जेमकेः- वंद् + अ + ति - वंदेति, वंदति.

रूपाख्यान

१ पु० वंदमि, वंदामि, वंदेमि[४]

---

४ 'वंदे' रूप प्रथम पुरुषना एकवचनमां संस्कृतमां प्रसिद्ध छे तेम प्राकृतमां पण तेनुं ते ज रूप कांई पण फेरफार विना वपराय छे. जेमकेः-

'उसभमजिअं च वंदे' एटले ऋषभदेव अने अजितनाथने वंदन करुं छुं.

२ पु० वंदसि, वंदेसि,
वंदसे, वंदेसे

३ पु० वंदति, वंदेति, वंदइ, वंदेइ,
वंदते, वंदेते, वंदए, वंदेए

वाक्यो

वांदुं छुं	पडुं छुं	हरखुं छुं
[ ] वांदे छे	घसुं छुं	[तुं] सहे छे
वांदे छे	घसे छे	नाश पामे छे
घसुं छुं	[तुं] घसे छे	खेंचे छे
सहे छे	पूछुं छुं	गरहे छे
[तुं] जमे छे	[तुं] जाणे छे	सहु छुं
करुं छुं	पडे छे	[तुं] घसे छे
करे छे	तरत करुं छुं	जमुं छुं
[ते] हरखे छे	खेंचुं छुं	विचारे छे
[तुं] करे छे	वरसे छे	भरुं छुं
देखुं छुं	गरहु छुं	विचारु छुं
[ते] देखे छे	योग्य थाय छे	[तुं] पूरे छे
		[ते] तरत करे छे

वंदामि	अरिहते	वदते	मरिसेति
करिससे	पुच्छामि	हरिससि	तुरियसि
धरिससि	नस्ससि	मरिसामि	नस्सामि
हरिसेमि	धरिसइ	अरिहसे	हरिसए
वरिसति	करते	गरिहेइ	पडामि
देक्खसि	जाणसि	पुरियते	तुरियेमि
गरिहामि	करिससि	जेमति	

पाठ २ जो

लोकव्यापक कोई पण भाषामां द्विवचनने बतावबा माटे खास जुदा प्रत्ययो जणाता नथी. ए प्रमाणे लोकव्यापक प्राकृतभाषामां पण द्विवचनना दर्शक जुदा प्रत्ययो नथी तेथी एकवचन पछी लागला ज बहुवचनना प्रत्ययो आपवामां आव्या छे. परतु ज्यारे द्विवचननो अर्थ सूचववो होय त्यारे क्रियापद के नाम साथे द्विवचनदर्शक 'द्वि' शब्दनां प्राकृतरूपोनो उपयोग करवो पडे छे. ते रूपो आ प्रमाणे छे:

[५]दुण्णि

विण्णि, बिण्णि

दो (द्वौ)

दुवे (द्वे)

बे, वे (द्वे)

प्रयोग : बे सिक्खामो – अमे बे सीखीए छीए.

---

५ संयुक्त अक्षरनी पूर्वे आवेला 'इ' ने स्थाने प्रायः 'ए' थाय छे अने संयुक्त अक्षरनी पूर्वे आवेला 'उ' ने स्थाने प्रायः 'ओ' थाय छे. जेमके:—

इ—बि+ण्णि=वेण्णि, विण्णि. वि+ट्ठी=वेट्ठी, विट्ठी – विष्टिः.

उ—दु + ण्णि = दोण्णि, दुण्णि. पु + त्थिआ=पोत्थिआ, पुत्थिआ–पुस्तिका.

'दु' शब्दनां जे रूपो उपर जणाव्यां छे तेमांथी कतरी आवेलां रूपो आज पण जुदी जुदी लोकभाषामां प्रचलित छे जेमके:—

वर्तमान काळ [चालु]

बहुवचनना प्रत्ययो

१ पु०	मो, मु, म, म्ह	(मः, महे)
२ पु०	ह, इत्था	(थ, ध्वे)
३ पु०	न्ति, न्ते, इरे	(न्ति, न्ते)

धातुओ

⁷खुब्भ् (क्षुभ्य)खोभवुं-छोभवुं-खळभळवुं-क्षोभ थवो-गभरावुं	खिप्प् (क्षिप्य)खेपवुं-खेववुं-फेंकवुं
कुप्प् (कुप्य) कोपवु-कोप करवो	लुट्ट (लुठ्य) लोटवु-आळोटवु
सिव्व् (सिव्य) सीववुं	दिप्प् (दीप्य) दीपवुं
	गच्छ् (गच्छ) जवुं
	बोल्ल् (ब्रू) बोलवुं

बे, बे	गुजराती—बे
बिण्णि, बेण्णि	,, बन्ने
दो	हिंदी—दो
दुण्णि, दोण्णि	मराठी—दोन
दुवे	बंगाली—दुई

६ प्राकृतमां जेम 'इरे' प्रत्ययनो उपयोग छे तेम पाळी भाषामां 'गच्छरे' वगेरे प्रयोगोमां 'रे' प्रत्ययनो व्यवहार छे. पचेरन् - पच + ईरन् - वगेरे प्रयोगोमां विध्यर्थ सूचक 'ईरन्' प्रत्ययनो उपयोग संस्कृतमां पण छे.

७ संयुक्त व्यंजनमां परवर्ती 'य' नो लोप थाय छे अने लोप थतां बाकी रहेलो शब्दनी अंदरनो ज व्यंजन बेवडाय छे. जेमकेः—कुप्य–कुप्–कुप्प्. दीप्य–दिप्–दिप्प्. सीव्य–सिव्–सिव्व्. जुओ टिप्पण ९मुं.

[१]लव् (लप्) लववुं–बोलवुं	वेव् (वेप्) वेपवुं–कंपवुं–ध्रजवुं
तव् (तप्) तपवुं–संताप थवो, तप करवुं	सव् (शप्) शापवुं–शाप देवो
दीव् (दीप्) दीपवुं	खिव् (क्षिप्) खेपवुं–खेववुं–फेंकवुं
जव् (जप्) जपवुं–जाप करवो	

५ 'म 'थी शरू थता प्रथम पुरुषना बहुवचनना प्रत्ययोनी पूर्वेना अंगना 'अ 'नो 'इ ' विकल्पे थाय छे. जेमकेः—सिव्व् + अ + मो = सिव्विमो, सिव्वामो, सिव्वमो
[जु० पा० १ नो नि० ३]

रूपाख्यान

१ पु०	वंदमो,	वंदामो,	वंदिमो,	वंदेमो
	वंदमु,	वंदामु,	वंदिमु,	वंदेमु
	वंदम,	वंदाम,	वंदिम,	वंदेम
	वंदम्ह,	[१]वंदम्ह,	वंदिम्ह,	वंदेम्ह

[यादीः—लोप थतां बाकी रहेला ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ अने भ ने बदले अनुक्रमे क्ख, ग्घ, च्छ, ज्झ, ट्ठ, ड्ढ, त्थ, द्ध, प्फ अने ब्भ थाय छे. जेमकेः–क्षुभ्य+क्षुभ–खुब्भ् वगेरे.]

८ पदनी अंदर रहेला असंयुक्त 'प ' ने बदले ' व ' नो व्यवहार थाय छे. जेमकेः—

लप् – लव्. दीप् – दीव्. तप् – तव्.

दीपः–दीवो. गोपालः–गोवालो. तापः–तावो. अपि–अवि.

९ संयुक्त अक्षरनी पूर्वे आवेला दीर्घ स्वरने बदले ह्रस्व स्वरनो व्यवहार थाय छे. जेमके—

२ पु० वंदइत्था, [10]वंदित्था, वंदेइत्था, वंदेत्था
वंदह, वंदेह
३ पु० वंदंति, वंदेंति
वंदंते, वंदेंते
वंदइरे, वंदेइरे, वंदिरे

वाक्यो

[अमे बे] सीवीए छीए
जपो छो
[तमे बे] सीवो छो
,, बोलो छो
कोपो छो
जाउं छुं
दीपे छे
जपुं छुं
[तमे बे] दीपो छो
[तेओ बे] गभराय छे

[तुं] बोले छे
[अमे बे] बोलीए छीए
[तमे बे] फको छो
[तेओ बे] लवे छे
बोलीए छीए
सीवे छे
[तेओ बे] फेंके छे
[तमे बे] शाप दो छो
[तेओ बे] सीवे छे
[अमे बे] जपीए छीए

वंदा+म्ह = वंदम्ह – वन्दामहे. जा+न्ति = जन्ति – यान्ति.
बे+न्ति = बिंति – ब्रुवन्ति. दे+न्ति = दिंति – दा+अन्ति.
नरेन्द्रः – नरिन्दो. आम्रः–अम्बो.

१० ज्यारे एक पदमां बे स्वर लगोलग आव्या होय त्यारे पूर्वना स्वरनो प्रायः लोप थाय छे. जेमके:–वंद+इत्था = वंदित्था. वंद+इरे=वंदिरे. बु+एमि = बेमि. दा+एमि = देमि.

नर + ईसरो = नरीसरो, नरेसरो – नरेश्वरः. जिण+इंदो = जिणिंदो, जिणेंदो – जिनेन्द्रः.

(अमे बे) आळोटीए छीए	कोपीए छीए
गभराउं छुं	[तेओ बे] जपे छे
सीवे छे	[तेओ बे] तपे छे
वांदीए छीए	[अमे बे] गभराइए छीए
कंपीए छीए	[तुं फेंके] छे
बोलीए छीए	आळोटीए छीए

बे वंदामो	जवेत्था दु	गच्छस्ह
वेवेम्ह विण्णि	खिवामि	वंदह
गच्छंति	लुट्टामि	जविम दो
खिप्पित्था दोण्णि	लवेम	सविरे
खुब्भित्था दो	लुट्टह दुण्णि	सिव्वमो बेण्णि
खुब्भेमु	कुप्पेह	वंदेम
		बोल्लमु

पाठ ३ जो

वर्तमानकाळ [चालु]

सर्व पुरुष } ज्ज, ज्जा
सर्व वचन }

६ आ बे प्रत्ययो धातु मात्रने सर्व पुरुष अने सर्व वचनमां लागे छे. अने तेमनी पूर्वे आवेला अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' थाय छे. जेमके:—

वंद् + ज्ज = वंदेज्ज.   वंद् + ज्जा = वंदेज्जा.

वंदेज्ज वंदेज्जा	बटले	हुं वांदुं छुं, अमे वांदीए छीए तुं वांदे छे, तमे वांदो छे ते वांदे छे, तेओ वांदे छे

धातुओ

दा (दा) देवुं	ठा (स्था) स्थिर रहेवुं ऊभा रहेवुं–बेसी रहेवुं	खा (खाद्) खावुं
वा (वा) वावुं	झा (ध्या) ध्यावुं	हा (हा) हीण थवु–तजवुं
पा (पा) पीवुं	धा (धाव्) धावुं–दोडवुं	बू (ब्रू) बोलवुं
गा (गा) गावुं		हो (भू) होवुं–थवुं
जा (या) जावुं.		

७ पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडतां पहेलां अकारांत सिवायना स्वरांत धातुओने विकरण 'अ' विकल्पे लागे छे. जेमके:—

खा + इ – खा + अ + इ = खाअइ, खाइ
धा + इ – धा + अ + इ = धाअइ, धाइ

८ पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडतां पहेलां स्वरांत धातुओने 'ज्ज' अथवा 'ज्जा' विकल्पे लागे छे. जेमके—

हो + इ – हो + ज्ज + इ = होज्जइ, होइ

हो + इ – हो + ज्जा + इ = होज्जाइ, होइ

रूपाख्यान

होइ, होज्जइ, होज्जेइ, होज्जाइ, होज्ज, होज्जा } विकरण रहित

होअइ, होएइ, होएज्जइ, होएज्जेइ, होएज्जाइ होएज्ज, होएज्जा } 'अ' विकरण सहित

'अस्' = 'विद्यमान होवुं' धातुनां अनियमित रूपो

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	अम्हि, म्हि, मि, अंसि (अस्मि) अत्थि[11] (अस्ति)	म्ह, म्हो, म्हु, मो, मु[13] (स्मः) अत्थि

---

११ शब्दनी अदरना 'स्त' नो 'त्थ' थाय छे अने शब्दनी आदिना 'स्त' नो 'थ' थाय छे. जेमके:—

अस्ति—अत्थि	स्तम्भः—थंभो
नास्ति—नत्थि	स्त्यानम्—थीणं
हस्तः—हत्थो	स्तुतिः—थुई
प्रस्तरः—पत्थरो	स्तब्धः—थद्धो

१२ 'अत्थि' रूप त्रणे पुरुषमां, सर्व वचनोमां वपराय छे संस्कृतमां पण क्रियापद जेवुं ए जातना व्यवहारमां आवे एवुं 'अस्ति' अव्यय प्रसिद्ध छे.

१३ 'स्मः' रूप अने 'म्हो' रूप—बन्नेमां समानता छे. 'म्हो' रूप घसातां घसातां 'मो' थयुं छे. आगळ जणावेलो 'मि'

२ पु० सि, असि, (असि) अत्थि	थ, त्थ (स्थ) अत्थि
३ पु० अत्थि (अस्ति)	अत्थि, संति (सन्ति)

धातुओ

मज्ज् [१४](मद्य) मद करवो- माचवुं-खुश थवुं	जोत्, जोअ (द्योत) जोत थवी- प्रकाशवुं, जोवुं.
खिज्ज् (खिद्य) खीजवुं-खेद करवो	सिज्ज् (स्विद्य) सीजवु-चीकणुं थवुं-स्वेद-परसेवा-वाळा थवुं
संपज्ज् (सं+पद्य) संपजवुं-सांपडवुं	
निप्पज् (निर्+पद्य) नीपजवु	पुज्ज् (पूर्य) पूरवु, पूगवु
विज्ज् (विद्य) विद्यमान होवु	दिव्व् (दीव्य) द्युत रमवुं-रमवुं

प्रत्यय अने 'अस्मि-अम्हि-म्हि-मि' ए बन्नेमां खूब मळतापणुं छे. तेम ज 'मो' 'मु' अने 'म' प्रत्ययो साथे आ 'म्हो' 'म्हु' 'म्ह' 'मो' अने 'मु' रूपोनी सरखामणी करी शकाय एम छे. 'म्हु' अने 'मु' रूपनो प्रयोग विरल छे.

१४ शब्दनी अंदरना 'द्य' 'र्य' अने 'य्य' ने बदले 'ज्ज' थाय छे अने शब्दनी आदिना 'द्य' 'र्य' अने 'य्य' ने बदले 'ज' थाय छे. जेमके:—

द्य-अद्य-अज्ज	र्य-पूर्य-पुज्ज	य्य-
मद्यम्-मज्जं	कार्यम्-कज्जं	शय्या-सेज्जा
द्युतिः-जुती	मर्यादा-मज्जाया	

वाक्यो

[तेओ] थाय छे
[हुं] वे छे
[ते] थाय छे
गाईए छीए
दोडो छो
[ते बे] खाय छे
ऊभो रहुं छुं
बोलीए छीए
छो
जाय छे
खुश थाउं छुं
खेद करे छे
नीपजे छे
संपजे छे
प्रकाशित थइए छीए
[तेओ] जपे छे
[अमे बे] ध्याइए छीए
पीओ छो

[तेओ बे] रमे छे
सीजे छे
छीए
सहन करुं छुं
[अमे बे] जमीए छीए
विद्यमान छे
[तेओ बे] खेंचे छे
वरसे छे
पूगे छे
[तमे बे] ग्रसो छो
वांदो छो
[तमे बे] छो
[ते बे] निंदे छे
[तुं] दीपे छे
तजीए छीए
जाउं छुं
छुं
पूरुं छुं

हुंति[१५]	बूम	धाएज्जइ	वे खिज्जिरे
जंति	वाइ	वे जाम	दो मो

१५ हो + न्ति = हुंति
जा + न्ति = जंति } जुओ टिप्पण ९ मुं.

'न्ति' अने 'न्ते' प्रत्ययना 'न्'नो अने तेवी रीते आवेला बीजा 'न्' नो अनुस्वार पण थाय छे. जेमके:-हुंति, हुन्ति. गाअंति, गाअन्ति वगेरे.

निप्पज्जसे	धाइ	म्हि	म्ह
संति	बूमि	निप्पज्जइ	सि
पुज्जइ	संपज्जइ	अंसि	थ
सिज्झंति	गाइ	अत्थि	दुवे त्थ
गायसि	जासि	दो मज्जह	असि
जोतसि	खाइत्था	होज्जा	अम्हि
जोआमु	विज्जसे	दोण्णि दिव्वामु	बूमो
खिज्जेह	हाएज्ज	खाथज्जंति	बे खाथमु
बेण्णि संति	ठामि	मज्जंते	मज्जेसि

पाठ ४ थो

झा (ध्या)[१६] ध्यावुं–ध्यान करवु

विज्झ् (विध्य) वींधवु

गिज्झ् (गृध्य) गृद्ध थवुं–ललचावु

कुज्झ् (कुध्य) क्रोध करवो

सिज्झ् (सिध्य) सीझवु–सिद्ध थवुं

मुज्झ (मुह्य) मूंझावुं–मूढ थवु–मोह पामवा

नज्झ् (नह्य) नाझवुं–बांधवुं

जुज्झ (युध्य)[१७] जूझवु–युद्ध करवुं

खाद् } खाय् } (खद्) खावु

कह (कथ)[१८] कहेवु

कुह् (कुथ) कोहवु–सडवुं

बाह् (बाध) बाधवु–बाधा करवी–अडचण करवी

बोह् (बोध) बोध थवो–जाणवुं

वह् (वध) वध करवा–हणवुं

लिह् (लिख) लखवु

लह (लभ) लेवुं–मेळववु

सिलाह् (श्लाघ) सराहवु–वखाणवु

सोह (शोभ) सोहवुं–शोभवु

धाव् } धाय् } (धव्) धोडवु–दोडवुं

---

१६ शब्दनी अंदरना 'ध्य' अने 'ह्य' ने बदले 'ज्झ' नो प्रयोग थाय छे अने शब्दनो आदिना 'ध्य' अने 'ह्य' ने बदले 'झ' नो उपयोग थाय छे जेमके:—

ध्य– ध्या–झा	ह्य– मुह्य–मुज्झ
ध्यायति–झायति	मुह्यति–मुज्झइ
ध्यानम्–झाणं	गुह्यकारः–गुज्झारो
साध्यम्–सज्झं	गुह्यम्–गुज्झं
विन्ध्यः–विंझो	नह्यति–नज्झइ

१७ शब्दनी आदिना 'य' नो 'ज' थाय छे, जेमके:—

युध्य–जुज्झ	यथा–जहा
या–जा	यात्रा–जत्ता
यतिः–जती	युग्मम्–जुम्मं

१८ क्ष (क्+ष) अने ज्ञ (ज्+ञ) छे तो संयुक्त वर्णो छतां

वे ध्याइए छीए	वे परसेवावाळा थाय छे
[ते] वींधे छे	खेंचो छो
ललचाइए छीए	सांपडे छे
[तेओ] छे	वे योग्य थाय छे
वे मूंझाओ छो	वे निंदा करीए छीए
वे सडो छो	दोडो छो
बांधीए छीए	गाउं छुं
शोभो छो	शाप दे छे
वे लखो छो	प्रकाशे छे
छीए	छो
[ते] घसे छे	जूझो छो

अखण्ड वर्ण जेवा भासे छे तेम ख (क्+ह), घ (ग्+ह), थ (त्+ह), ध (द्+ह), फ (प्+ह) अने भ (ब्+ह) वर्णो पण अंग्रेजीनी जेम 'ह' साथे मिश्र थईने बनेला छे छतां रीढा थई जवाने लीधे अखंड जेवा लागे छे अने लिपिमां पण तेवा ज अखंड लखाय छे. तो पण शब्दविज्ञाननी दृष्टिए ते छये व्यजनो संयुक्त छे एथी ज्यारे ए छये अखंडित व्यजनो कोई शब्दनी अंदर आवेला होय त्यारे तेमने बदले – ते दरेकने बदले—मात्र 'ह' नो ज व्यवहार थाय छे. अर्थात् 'ह' नी पूर्वेना ए छये व्यजनो लखाता नथी तेम बोलाता पण नथी. जेमके:—

ख– लिख–लिह	थ– कथ–कह	फ– सफलम्–सहलं
लेख:–लेहो	कथनम्–कहणं	मुक्ताफलम्–मुत्ताहलं
मुखम्–मुह	पथ.–पहो	शफरी–सहरी
घ– श्लाघ–सिलाह	ध– बोध–बोह	भ– शोभ–सोह
श्लाघा–सिलाहा	बोध:–बहिरो	शोभा–सोहा
मेघ:–मेहो	व्याधि:–वाही	नभस्–नह

छुं	छे
सोझे छे	क्रोध करे छे
वे बोलीए छीए	सिद्ध थाउं छुं
थो छो	वे करो छो
शोभे छे	वींधुं छुं
जाणे छे	[तेओ] जपे छे
मेळवीए छीए	थईए छीए
जूझुं छुं	ऊभो रहे छे
रमो छो	खेद करीए छीए
जमे छे	लखे छे
नीपजे छे	[तुं] छे
हरखाओ छो	माचुं छुं
बाधीए छीए	सामा थाय छे
वे कहे छे	वे दोडो छो
आळोटीए छीए	वे जाय छे
फके छे	वाय छे
वे सीवीए छीए	कंपो छो
मुंझाईए छीए	खाय छे
वांदुं छुं	वे वखाणे छे

कुहंति	मुज्झिमु	सि
खिलाहंति	वेज्झि विज्झंति	म्ह
गिज्झम	ठाएइ	बिंति
मि	वे बाहह	लिहेज्ज
कहेमि	सिज्झम्ह	सिज्झंति
नज्झसि	झाम	मो
जुज्झिरे	होंति	लहेज्जा
ठाइ	बुज्झि बोहेंति	कुज्झेसि
वे सोहामो	जुज्झेम	अंसि

धातुओ

पुच्छ (पृच्छ) पूछवुं	**नम्** / **नव्** } (नम)[21] नमवु
बीह् (भी) बीवुं	**चय** (त्यज)[22] तजवुं-छोडवुं
पड् (पत) पडवु	**जिण्** (जिना) जितवुं
छज्ज् (सज्ज) छाजवुं-शोभवु	**छिंद्** (छिनद्) छेदवुं
वेढ् (वेष्ट) वीटवुं	**चल्ल्** (चल) चालवुं
कर् (कर) करवु	**निंद्** / **निन्द्** } (निन्द) निंदवुं-निंदा करवी
तर् (तर) तरवु	
चिण् (चिनु) चणवुं-एकठु करवुं	
डह् (दह) / **डज्झ्** (दह्य)[20] } दहवु-दाझवु-बळवु-बाळवुं	

१९ ब्+ह्+ई='भी' उपरथी 'बीह्'.

२० जुओ टिपण १६.

२१ शब्दनी आदिना 'न' नो 'ण' विकल्पे थाय छे. अने शब्दनी अंदरना 'न' नो 'ण' नित्य थाय छे. जेमकेः—

नमति-णमति, नमति	जिनः-जिणो
नमस्-णमो, नमो	दिनम्-दिणं

[यादीः—आर्षप्राकृतमां 'न' ना 'ण' माटे आ जातनो चोकस नियम नथी.]

२२ शब्दनी आदिना 'त्य' नो 'च' थाय छे अने शब्दनी अंदरना 'त्य' नो 'च्च' थाय छे जेमकेः—

त्यजति-चयति	नृत्यति-नच्चइ
त्यागः- { चागो / चायो	नृत्यम्-नच्चं

[अपवाद—चैत्यम्-चेइअं]

सूस् } (शुष्य)[२३] शोषवुं-
सुस्स् } सुकावु

सुण् } (शृणु)[२४] सुणवु-
हुण् } सांभळवुं

सुमर् (स्मर) स्मरण करवुं-
याद करवुं

गच्छ् (गच्छ) गति करवी-जवु

नस्स् } (नश्य) नाश थवो
नास् }

गेण्ह् (गृह्णा) ग्रहण करवु

नच्च् (नृत्य) नाचवुं

कुण् (कृणु) करवुं

रूस् } (रुष्य) रूसवुं-रोष करवो
रुस्स् }

हण् (हन्) हणवु-मारवुं

---

२३ जुओ टिप्पण ७ तुं [यादी—ज्यां श ष के स साथे 'य' 'र' 'व' 'श' 'ष' 'के' 'स' नो संयोग होय त्यां 'य' वगेरेनो लोप थतां बाकी रहेला श ष् के स् बेवडाता नथी किंतु तेमनी पूर्वना ह्रस्व स्वर दीर्घ पण थाय छे. जेमकेः—

शुष्य–सूस्	अथवा	सुस्स्
रूष्य–रूस्	,,	रुस्स्
नश्य–नास्	,,	नस्स्
विश्वासः–वीसासो	,,	विस्सासो
अश्वः–आसो	,,	अस्सो
विष्वाणः–वीसाणो	,,	विस्साणो
इष्वासः–ईसासो	,,	इस्सासो
आस्यम्–आसं	,,	अस्सं
सस्यम्–सासं	,,	सस्सं

२४ 'श्' के 'ष्' ने बदले स' नो ज व्यवहार थाय छे. जेमकेः—

शुष्कम–सुक्कं
दोषः–दोसो
नाशः–नासो
नश्य–नस्स्
पश्य–पस्स्

सार अने प्रश्नो

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	वंदमि, वंदामि, वंदेमि वंदेज्ज, वंदेज्जा	वंदमो, वंदामो, वंदिमो, वंदेमो वंदमु, वंदामु, वंदिमु, वंदेमु वंदम, वंदाम, वंदिम वंदेम वंदम्ह वंदाम्ह, वंदिम्ह, वंदेम्ह वंदेज्ज, वंदेज्जा
२ पु०	वंदसि, वंदेसि वंदसे वंदेसे वंदेज्ज. वंदेज्जा	वंदइत्था, वंदित्था, वंदेइत्था, वंदेत्था वंदह वंदेह वंदेज्ज, वंदेज्जा
३ पु०	वंदति, वंदेति वंदते, वंदेते वंदइ, वंदेइ वंदए, वंदेए वंदेज्ज, वंदेज्जा	वंदंति, वंदेंति, वंदिंति[25] वंदंते, वंदेंते, वंदिंते वंदइरे, वंदेइरे, वंदिरे वंदेज्ज. वंदेज्जा

विकरणवाळां रूपो

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	होअमि, होआमि, होएमि	होअमो, होआमो, होइमो, होएमो होअमु, होआमु, होइमु, होएमु होअम, होआम, होइम, होएम होअम्ह, होआम्ह, होइम्ह, होएम्ह

---

२५ वंदेंति उपरथी वंदिंति
होज्ज ,, हुज्ज
होएज्ज ,, होइज्ज वगेरे माटे जुओ टिप्पण ९ मु.

[ज्ज] होएज्जमि, होएज्जामि, होएज्जेमि होएज्ज	होएज्जमो, होएज्जामो, होएज्जिमो, होएज्जेमो होएज्जमु, होएज्जामु, होएज्जिमु, होएज्जेमु होएज्जम, होएज्जाम, होएज्जिम, होएज्जेम होएज्जम्ह, होएज्जाम्ह, होएज्जिम्ह, होएज्जेम्ह होएज्ज
[ज्जा] होएज्जामि, होएज्जा	होएज्जामो, होएज्जामु, होएज्जाम, होएज्जाम्ह होएज्जा

विकरण विनानां रूपो

१ पु० होमि	होमो, होमु, होम, होम्ह
[ज्ज] होज्जमि, होज्जामि होज्जेमि. होज्ज	होज्जमो, होज्जामो, होज्जिमो, होज्जेमो. होज्जमु, होज्जामु. होज्जिमु, होज्जेमु. होज्जम, होज्जाम, होज्जिम, होज्जेम. होज्जम्ह, होज्जाम्ह, होज्जिम्ह, होज्जेम्ह. होज्ज
[ज्जा] होज्जामि होज्जा	होज्जामो, होज्जामु, होज्जाम, होज्जाम्ह होज्जा[२६]

आ रीते बीजा अने त्रीजा पुरुषमां 'हो 'नां रूपो स्वयं साधी लेवां.

पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडतां पहेलां प्रत्येक स्वरांत धातुनां छ अंगो बने छे. जेमके :—

---

२६ त्रणे पुरुषनां मळीने तो घणां रूपो थाय छे तेथी अहीं प्रथम पुरुषनां रूपो उदाहरण तरीके दर्शाव्यां छे. साहित्यमां अने व्यवहारमां आ बधां रूपोनो उपयोग विरल छे. आ तो मात्र जाणवा माटे ज जणाव्यां छे.

होअ, होएज्ज, होएज्जा, हो, हज्ज, होज्जा, ['हो'नां]
गाअ, गाएज्ज, गाएज्जा, गा, गाज्ज, गाज्जा, ['गा'नां]
ए छ अंगो द्वारा उक्त सर्वे रूपो योजी लेवां.

---

१ 'से' अने 'ए' प्रत्यय न ले तेवा केटलाक धातुओ जणावो
२ 'ज्ज' अने 'ज्जा'ना उपयोग विषे शुं समजायुं ?
३ स्वरांत धातुनी साथे 'ज्ज' अने 'ज्जा' नो उपयोग केवी रीते थाय छे ए उदाहरण साथे समजावो.
४ आवा ( ) कौंसमां अने बहार मूकेला शब्दोमां केटला टका समानता लागे छे ?
५ बहार मूकेला अने अर्थमां जणावेला शब्दोमां केटला टका समानता लागे छे ?
६ 'इ' नो 'ए' अने उ' नो 'ओ' क्यारे थाय छे? उदाहरण सहित जणावो.
७ संस्कृत अने प्राकृतमां उच्चारणभेदने लीधे जे केटलाक फेरफारो बताव्या छे तेमांना केटलाक अहीं उदाहरण साथे समजावो.
८ स्वरांत धातु अने व्यंजनांत धातुनी रूपसाधनामां शुं भेद छे ?
९ 'ज्ज' अने 'ज्जा'नी पूर्वेना 'अ'नुं शुं थाय छे ?
१० 'अस्' धातुनां वर्तमानकाळनां बधां रूपो लखो.
११ प्राकृत भाषामां द्विवचन छे ? तेनो अर्थ शी रीते दर्शावाय ?
१२ कया संयोगोमां स्वरनो लोप थाय छे ते उदाहरण सहित बतावो.
१३ प्राकृत भाषा साथे गूजराती भाषानो केवो संबंध जणाय छे ?

१४ व्यंजनांत अने स्वरांत कोई पण एक धातुनां बधां रूपो लखो.

१५ प्राकृतभाषानां उच्चारणो सरळ छे के कठण ते उदाहरण आपीने समजावो.

उवसग्ग (उपसर्ग)

उपसर्ग धातुनी पूर्वे आवी घणुं करीने धातुना मूळ अर्थमां न्यूनाधिकता करी विशेष अर्थ—न्यून अर्थ अधिक अर्थ के जुदो अर्थ-बतावे छे. एवा उपसर्ग नीचे मुजब छेः—

प (प्र) आगळ. प+जाइ=पजाइ-आगळ जाय छे.
प+जोतते=पजोतते-विशेष प्रकाशे छे.
प+हरति=पहरति-प्रहार करे छे.

परा-सामुं, ऊलटुं. परा+जिणइ=पराजिणइ-पराजय करे छे.
परा+होइ=पराहोइ-पराभव करे छे-हरावे छे.

ओ अव अप	(अप)हलकुं, रहित, नीचे, दूर	ओ +सरइ=ओसरइ अव+सरइ=अवसरइ अप+सरइ=अपसरइ	सरके छे- खसे छे.

अप+अर्थकम्=अवत्थयं-अपार्थक-अमथुं.
ओ+माल्यम्=ओमल्लं-निर्माल्य.

सं (सम्) एकठुं, साथे. सं + गच्छति = संगच्छति – साथे जाय छे.
सं + चिणइ = संचिणइ-संचय करे छे-एकठुं करे छे.

अणु
अनु (अनु) पाछळ, सरखुं. अणु + जाइ = अणुजाइ-पाछळ जाय छे.
अणु+करइ=अणुकरइ-अनुकरण करे छे.

ओ } (अव) नीचे ओ+तरइ=ओतरइ } अवतरे छे, ऊतरे छे.
अव } अव+तरइ=अवतरइ } नीचे जाय छे.

निर्, नि, नी } (निर्) निरंतर, सतत, रहित.
निर्+इक्खइ = निरिक्खइ-नीरखे छे-निरीक्षण करे छे.
नि+ज्झरइ=निज्झरइ-झर्या करे छे.
नी+सरइ=नीसरइ-नीसरे छे-निरंतर सरे छे.
निर+अंतरं=निरंतरं-निरंतर-सतत.
निर+धनः=निद्धणो-निधनियो-धन वगरनो

दु, [27]दू } (दुर्) दुष्टता दु+गच्छइ=दुग्गच्छइ-दुर्गतिए जाय छे.
दो+गच्चं=दोगच्चं-दौर्गत्य-दुर्गति.
दू+हवो=दूहवो-दुर्भग-कमनसीब.

अभि } (अभि) सामे. अभि+भासइ=अभिभासइ-सामे बोले छे.
अहि } अहि+मुहं=अहिमुहं-अभिमुख-सामुं.

वि—विशेष, नहि, विपरीत वि + जाणइ = विजाणइ-विशेष जाणे छे.

वि + जुंजइ = विजुंजइ-वियोग करे छे.

वि + कुव्वइ = विकुव्वइ-विकृत करे छे.

---

२७ 'दू' अने 'सू' नो उपयोग फक्त 'हव'-(भग) शब्दनी पूर्वे थाय छे.

अधि } (अधि) अधिक. अधि+गच्छति=अधिगच्छति-मेळवे छे, जाणे छे, उपर जाय छे.
अहि }

अहि+गमो=अहिगमो-अधिगम-ज्ञान

सु } (सु) सारुं. सु+भासए=सुभासए-सारुं बोले छे.
सू } सू + हवो=सूहवो-सुभग-भाग्यवान.

उ (उत्) ऊंचे. उ+गच्छते=उग्गच्छते-ऊंचे जाय छे-ऊगे छे

अइ } अतिशय, हद बहार. अइ+सेइ=अइसेइ – अतिशय करे छे-हद बहार वखाणे छे.
अति }

अति +गच्छति=अतिगच्छति -हद बहार जाय छे.

णि } (नि) निरंतर, नीचे णि+पडइ=णिपडइ } निरंतर पडे छे,
नि } नि+पडइ-निपडइ } नीचे पडे छे.

पडि } (प्रति)-सामुं, सरखुं, विपरीत
पति } पडि+भासए=पडिभासए-सामुं बोले छे.
[28]परि } पति+ट्ठाइ=पतिट्ठाइ-प्रतिष्ठित थाय छे.

परि+ट्ठा=परिट्ठा-प्रतिष्ठा

पडि+मा=पडिमा-सरखी आकृति.

पडि+कूलं=पडिकूलं-प्रतिकूल

परि } (परि) चारे बाजु. परि+वुडो=परिवुडो-परिवृत-चारे बाजुथी वींटाएलो
पलि }

पलि+घो=पलिघो-परिघ-घण.

---

२८ 'परि' ए 'पडि' नुं ज भिन्न उच्चारण छे 'र' अने 'ड' नुं उच्चारण स्थान पण सरखुं छे.

अपि[29] अवि पि वि इ	(अपि) ऊलटुं, पण.	अवि+हेइ=अविहेइ[30] अपि+हेइ=अपिहेइ पि + हेइ = पिहेइ	ढांके छे
		को+वि=कोवि को+इ=कोइ	कोई पण
		किम्+अवि=किमवि–कांई पण	
		जं+पि=जंपि–जे पण	

ऊ ओ उव	(उप) पासे. उव+गच्छइ=उवगच्छइ–पासे जाय छे	
	ऊ+ज्झायो=ऊज्झायो ओ+ज्झायो=ओज्झायो उव+ज्झायो=उवज्झायो	उपाध्याय

आ– मर्यादा, ऊलटुं. आ + वसइ = आवसइ–अमुक मर्यादामां रहे छे.

आ + गच्छइ = आगच्छइ–आवे छे.

उपसर्गना अर्थो नियत नथी. कोइ उपसर्ग, धातुना मूळ अर्थ करतां विपरीत अर्थ बतावे छे कोइ ए मूळ अर्थने अनुसरे छे. कोइ, एमां थोडो वधारो देखाडे छे अने कोइ, मात्र शोभा माटे ज वपराय छे—धातुना अर्थमां कशो फेरफार

---

२९ 'अवि' 'वि' के 'इ' अव्यय, शब्दना स्वरांत अगनी पछी जोडाय छे अने शब्दना व्यजनांत अंगनी पछी 'अवि' के 'पि'नो उपयोग थाय छे. जेमके:—

को + अवि – को अवि, को वि

को + इ – कोइ

होइ + अवि – होइ अवि, होइ वि

किम् + अवि – किमवि

किम् + पि – किंपि (जुओ टि० ८ मुं)

३० अपिदधाति, पिदधाति

बतावतो नथी. ' अपि ' उपसर्ग छे अने ' पण ' अर्थमां अव्यय पण छे यथी ' अपि ' साथेना उदाहरणोमां तेनो बन्ने जातनो उपयोग बताव्यो छे.

धातु

पुण् (पुना) पुणवुं-पवित्र करवुं

थुण् (स्तुनु) थुणवुं-स्तुति करवी

वच्च् (व्रज) फरता रहेवुं

कुद्द् (कूर्द) कूदवुं

अच्च् (अर्च) अर्चवुं-पूजवुं.

वड्ढ् (वर्ध) वधवुं

भम् (भ्रम) भमवुं

भम्म् (भ्राम्य) भमवु

भिंद् (भिनद्) भेदवुं-कटका करवा

छिंद् (छिनद्) छेदवु

सिंच् (सिञ्च) सींचवुं

मुंच् (मुञ्च) मूकवुं

लुण् (लुना) लणवुं-कापवुं

गंठ् (ग्रन्थ) गंठवुं, गुंथवु

गज्ज् ([३१] गर्ज) गाजवुं

मिला (म्ला) म्लान थवुं-करमावुं

गिला (ग्ला) ग्लान थवुं, गळवुं-क्षीण थवुं

चिइच्छ(चिकित्स) चिकित्सा करवी-रोगनो उपचार करवो

जग्ग् (जागृ) जागवुं.

वीसर् (वि+स्मर्) वीसरवु.

जम्म् (जन्मन्) जन्मवुं.

रुव् (रुव) रोवुं.

तोल् (तोल) तोळवुं

---

३१ संयुक्त अक्षरमां आगळ रहेलो के पाछळ रहेलो 'र' लोप पामे छे. 'र' नो लोप थया पछी बाकी रहेलो शब्दनी अंदरनो व्यंजन बेवडाय छे जेमके:—

आगळनो 'र'—गर्ज-गज-गज्ज। अर्च-अच-अच्च ।
कूर्द-कूद-कुद्द । वर्ध-वध-वड्ढ ।
वार्ता-वता-वत्ता । अर्कः-अको-अक्को ।

पाछळनो 'र'—ग्रन्थ-गंथ-गंठ । भ्रम-भम ।
रात्रिः-रती-रत्ती । चक्रम्-चकं-चक्कं ।

पाठ ५ मो

अकारांत नामनां रूपाख्यानो (नरजाति)

वीर

	एकवचन	बहुवचन
१	वीर+ओ=वीरो (वीरः) वीर+ए=वीरे	वीर+आ=वीरा (वीराः)
२	वीर+म्=वीरं (वीरम्)	वीर+आ=वीरा (वीरान्) वीर+ए=वीरे
३	वीर+एण=वीरेण (वीरेण) वीरेणं	वीर+एहि=वीरेहि (वीरेभिः, वीरैः) वीरेहिं वीरेहिँ
४	वीर+आय=वीराय (वीराय) वीर+आए=वीराए वीर+स्स=वीरस्स (वीरस्य)	वीर+ण=वीराण (वीराणाम्) वीराणं
५	वीर+आ=वीरा (वीरात्) वीर+त्तो=वीरत्तो (वीरतः)	वीर+त्तो=वीरत्तो (वीरतः)
	वीर+तो=वीरातो वीर+ओ=वीराओ वीर+तु=वीरातु वीर+उ=वीराउ } (वीरतः)	वीर+तो=वीरातो वीर+ओ=वीराओ वीर+तु=वीरातु वीर+उ=वीराउ
	वीर+हि=वीराहि वीर+हिंतो=वीराहिंतो	वीर+हि=वीराहि, वीरेहि

	वीर + हिंतो = वीराहिंतो, वीरेहिंतो (वीरेभ्यः)
	वीर + सुंतो = वीरासुंतो, वीरेसुंतो
६ वीर+स्स=वीरस्स (वीरस्य)	वीर+ण=वीराण (वीराणाम्) वीराणं
७ वीर+ए=वीरे (वीरे)	वीर+सु=वीरेसु (वीरेषु) वीरेसुं
वीर+°सि=वीरंसि ([32]वीरस्मिन् ?)	
वीर+म्मि=वीरम्मि	
सं० वीर ! (वीर !)	वीर+आ=वीरा (वीराः !)
वीरा !	
वीरो !	
वीरे !	

संस्कृत अने प्राकृत रूपोनां उच्चारणोमां नहि जेवो भेद छे. ए भेद, ए रूपो बोलतां ज समजाय छे. मात्र पांचमी विभक्तिमां वधारे अनियमित रूपो छे.

रूपो बतावतां नामनुं मूळ अंग अने प्रत्ययनो अंश-ए बन्ने छूटा पाडीने जणावेलां छे. अने साथे साथे ए

---

३२ सप्तमीनो सूचक 'स्मिन्' प्रत्यय संस्कृतमां मात्र 'सर्वादि' शब्दोने लागे छे त्यारे प्राकृत अने पालीमां तो ए सर्व व्यापक छे. प्राकृतनो '°सि' प्रत्यय, 'स्मिन्'नुं जुदु पण सरळ उच्चारण छे. फक्त ए सूचववा 'वीरस्मिन्' रूप बताव्युं छे. रूप पासेनुं '?' निशान, ए रूपनी संस्कृतमां अविद्यमानता सूचवे छे एवां निशानवाळां बीजां रूपो विषे पण एम समजवानुं छे.

उपरथी साधित थतां दरेक रूपो पण जुदां जुदां दर्शाविलां छे. एथी आ साधनपद्धतिद्वारा ज, विद्यार्थी, अकारांत नामनां रूपोने समजी लेशे.

साधनपद्धतिनी समजण

१ प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी अने सप्तमी विभक्तिना स्वरादि प्रत्ययो तथा पंचमीनो एक मात्र 'आ' प्रत्यय लगाडी अंगना अन्त्य 'अ' नो लोप करवानो छे. जेमके-वीर + ओ वीरो. वीर + ए = वीरे वगेरे. [जुओ टि० १० मुं.]

२ अंत्य 'म्' नो अनुस्वार थाय छे अने अंत्य 'म्' पछी काइ स्वर आवेलो होय तो अनुस्वार विकल्पे थाय छे: वीर + म् = वीरं
वीरम् + अवि = वीरं अवि, वीरमवि.

३ तृतीया अने षष्ठी विभक्तिना 'ण' उपर तथा सप्तमी विभक्तिना 'सु' उपर अनुस्वार विकल्पे थाय छे:

वीर + एण = वीरेण, वीरेणं.
वीर + ण = वीराण, वीराण
वीर + सु = वीरेसु, वीरेसुं.

४ तृतीया अने सप्तमीना बहुवचनना प्रत्ययोनी पूर्वना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' थाय छे अने इकारांत अंगनो तथा उकारांत अंगनो अंत्य 'इ' अने 'उ' दीर्घ थाय छे:

वीर + हि = वीरेहि.	रिसि+हि = रिसीहि.	भाणु + हि=भाणूहि.
वीर + सु = वीरेसु.	रिसि+सु = रिसीसु.	भाणु + सु= भाणूसु.

५ पंचमीना 'तो' 'तु' 'ओ' 'उ' 'हि' 'हिंतो' अने 'सुंतो' प्रत्ययोनी पूर्वना स्वरांत अंगनो अंत्य स्वर दीर्घ थाय छे तथा पंचमीना बहुवचनना 'हि' 'हिंतो' अने 'सुंतो' प्रत्ययोनी पूर्वना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' पण थाय छे :

एकवचन	बहुवचन
वीर+ओ=वीराओ	वीर=हि+वीराहि, वीरेहि
वीर+उ=वीराउ	वीर+हिंतो-वीराहिंतो, वीरेहिंतो
वीर+हि=वीराहि	वीर+सुंतो=वीरासुंतो, वीरेसुंतो
वीर+हिंतो=वीराहिंतो	रिसि+हि=रिसीहि
रिसि+ओ=रिसीओ	भाणु+हि=भाणूहि
भाणु+ओ=भाणुओ	रिसि+हिंतो=रिसीहिंतो

६ षष्ठीना बहुवचननो 'ण' लागतां पूर्वना अंगनो अंत्य स्वर दीर्घ थाय छे : वीर+ण=वीराण, वीराणं.

रिसि+ण=रिसीण.

भाणु+ण=भाणूण.

७ संबोधननां रूपोनी साधना प्रथमा प्रमाणे छे. वधारामां मूळ अंग पण जेमनु तेम वपराय छे.

वीर ! वीरो ! वीरा ! वीरे !

८ तृतीया विभक्तिनो 'हि' प्रत्यय माथे अनुस्वार पण ले छे अने तेनो सानुनासिक उच्चार पण थाय छे. आ रीते ते एक 'हि' नां पण त्रण रूपो थाय छे :

वीरेहि, वीरेहिं, वीरेहिँ

९ 'तो' अने 'तु' प्रत्ययवाळां पंचमीनां रूपोनो उपयोग विरल छे. ते 'तो' अने 'तु' इकारांत, उकारांत अंगने पण लागे छे.

लोकव्यापक भाषामां केटलांक प्राचीन रूपो हयाती धरावे छे. काळभेद, व्यवहारभेद, देशभेद अने उच्चारण-भेद तथा अन्य कारणोने लीधे व्यापक भाषामां नवां नवां रूपो उमेरातां जाय छे. तेमज केटलांक रूपोनो संकर पण थई गएलो होय छे :

उपर्युक्त प्राकृत रूपोमां 'वीरे' (प्र० ए०) ए, मागधी भाषानुं एटले प्रांतिक प्राकृतनुं छतां आर्ष प्राकृतमां सचवाइ रह्युं छे

वीराए (च० ए०) वीरंसि (स० ए०) रूपोनो[33] व्यवहार विशेषे करीने आर्षप्राकृतमां देखाय छे. केटलेक स्थळे चतुर्थीना एकवचनमां 'आइ' प्रत्ययवाळुं रूप पण मळे छे: वहाइ (वधाय) 'आय' 'आए' अने 'आइ' ए त्रणेमां खास कशी विषमता नथी. 'आइ' प्रत्ययवाळुं रूप बहु प्रचलित नथी तेथी ज ते उपरनां रूपोमां जणाव्युं नथी. केटलेक स्थळे 'आए' ने बदले 'आते' प्रत्यय पण वपराएलो छे एथी 'वीराए' नी पेठे 'वीराते' रूप पण आर्ष प्राकृतमां वपराएलुं छे. प्राकृतभाषामां चतुर्थी विभक्ति खास जुदी नथी पण ते षष्ठी विभक्तिमां समाइ गएली छे तेथी ते बन्ने विभक्तिनां रूपो एक सरखां थाय छे.

---

३३ अजिणाए (अजिनाय) मंसाए (मांसाय) पुच्छाए (पुच्छाय) वगेरे 'आए' प्रत्ययवाळां अने लोगंसि (लोके) कंसि (कस्मिन्) अगारंसि (अगारे) सुसाणंसि (श्मशाने) वगेरे '°सि' प्रत्ययवाळां रूपो आचारांगादिसूत्रोमां मळे छे.

प्रथमानां अने द्वितीयानां तथा संबोधननां रूपो एक बीजामां भळी गयलां छे माटे ज ते सरखा जेवां जणाय छे.

तृतीयाना अने पंचमीना बहुवचनमां पण तेवी ज मेळसेळ थइ गई छे एथी ज 'वीरेहि' तृतीयांत पण छे अने पंचम्यंत पण छे. लोकभाषामां तृतीया अने पंचमीना अर्थमां विशेष भेद नथी तेम संस्कृतमां पण तृतीयाना अर्थमां पंचमी वपराय ज छे.

'हिंतो' अने 'सुंतो' प्रत्ययवाळां रूपोनो उपयोग अधिक नथी जणातो.

'वीरा' रूप पंचम्यंत छे पण कोइ काळे ए पंचमीनो अर्थ जणाववा असमर्थ नीवडयुं लागे छे तेथी ज एने मूळ अंग मानी, 'ओ' उ' वगेरे प्रत्ययो[३४] लगाडी तेनां जुदां जुदां रूपो नीपज्यां जणाय छे. गूजरातीमां 'तेणे' 'एणे' रूप ए प्रकारनां छे.

'तो' अने 'तु' प्रत्ययवाळां पंचमीनां रूपो प्राचीन प्राकृतमां ज सचवायां छे. छतां ते, 'आवश्यकसूत्र'नी

---

३४ पंचम्यर्थसूचक सं० 'तस्' नुं प्राकृत 'तो' थाय छे. 'ओ' 'उ' प्रत्ययोनी उत्पत्ति ए 'तो' मांथी ज करी शकाय एम छे. 'वीरतो' 'वीराओ' 'वीराउ'. पाछलां बे रूपोमां 'त्'नुं उच्चारण कमी थतां 'र'नो 'अ' दीर्घ थइ गयो छे. 'वीरत्तो' रूपनो संबंध पण 'वीरतो' साथे ज छे.

३५ 'तेन' 'एनेन' तृतीया विभक्तिनुं सूचक छे. प्राकृतमां तेने मळतुं 'तेण' 'एणेण' रूप थाय छे. ए 'तेण' 'एणेण' तृतीयांत होवा छतां तेने फरीवार तृतीया विभक्तिनो अपभ्रंशीय 'इं' प्रत्यय लगाडवो पडयो छे. ए रीते 'तेन'–'तेण' 'तेणइं'–'तेणे' 'एनेन'–'एणेण' 'एणेणइं'–'एणे' उतरी आव्युं छे.

कथाओ अने 'वसुदेवहिंडी' जेवा प्राकृत ग्रंथोमां ठीक प्रमाणमां वपरायां छे माटे तेने खास जुदां जणाव्यां छे.

अकारांत अंगने लागता केटलाक प्रत्ययो इकारांत अने उकारांत अंगने पण लागे छे तथा इकारांत अने उकारांत अंगनां केटलांक [३६]रूपो 'इन्' छेडावाळां अंगोनी जेवां थाय छे.

आम अनेक प्रकारनी [३७]अनियतता, लोकभाषानुं खास लक्षण छे अने ते, वैदिकभाषानी पेठे प्राकृतमां पूरेपूरुं जळवाएलुं छे.

नाम [नरजाति]

अरिहंत (अरि+हन्त) वीतराग देव	बाल (बाल) बाळ-बालक
हर (हर) हर महादेव.	उवज्झाय (उपाध्याय) उपाध्याय -अध्यापक-गुरु-ओझा
बुद्ध (बुद्ध) बुद्धदेव.	आयरिय (आचार्य) सदाचार-वंत गुरु.
मग्ग (मार्ग) मार्ग-मारग	सिद्ध (सिद्ध) अदेही वीतराग.
कलह (कलह) कलह-कळो	निव (नृप) नृप-राजा
हत्थ (हस्त) हाथ.	बुह (बुध) बुद्धिमान-डाह्यो पुरुष
पाय (पाद) पाद-पग, पायो	पुरिस (पुरुष) पुरुष.
भार (भार) भार.	

---

३६ अग्गि (अग्नि)नुं 'अग्गिणो' रूप सं० 'दण्डिनः' [प्रा० 'दण्डिणो']नुं अनुकरण छे. ए ज प्रमाणे भाणु (भानु) नुं 'भाणुणो' रूप नीपजेलुं छे.

३७ लिंगनी अनियतता, विभक्तिओना अर्थनी अनियतता, एक-वचन बहुवचननी अनियतता-आम अनेक प्रकारनी अनियतता छे.

आइच्च (आदित्य) आदित्य–सूर्य
इंद (इन्द्र) इन्द्र
चंद (चन्द्र) चंद्र.
मेह (मेघ) मे–मेघ–वरसाद
भारवह (भारवह) भार वहनार –मजूर

समुद्द (समुद्र) समुद्र–समुदर
नयण[38] (नयन) नेण–आंख
कण्ण (कर्ण) कान
महावीर (महावीर) महावीर देव.
जिण (जिन) जय पामनार–वीतराग

मेघ मार्गने सिंचे छे
इन्द्र बुद्धदेवने नमे छे
डाह्यो पुरुष बाळकने पूछे छे
आंखवडे चन्द्रने जोउं छुं
समुद्रने कानवडे सांभळुं छु
बालकना हाथमां चंद्र छे
कलहने छेदो छो
सूर्य तपे छे
राजा मार्गने जाणे छे

सिद्धोने नमो
मजूरो मार्गमां दोडे छे
समुद्रमां चंद्रोने देखीए छीए
बाळको उपाध्यायने पूछे छे
राजाना पगोमां पडुं छुं
वीतराग देव ! नमुं छुं
बे बालक बोले छे
समुद्रो गाजे छे
राजा शोभे छे

नमो अरिहंताणं
भारवहो हरं वंदइ
महावीरो जिणो झाअइ
कण्णेहिं सुणेमि
नयणेहिं देक्खामु
भारवहा भारं चिणिज्ज
नमो उवज्झायाणं
समुद्दो खुब्भइ

मेहो समुद्दम्मि पडइ
बाला हत्थे धरिसंति
समुद्दं तरह
हत्थाओ हरं अच्चेमि
नमो आयरियाय
आयरियाण पाए नमाम
बाला कुदंति
चन्दो वड्ढइ

---

३८ 'आंख' अर्थने सूचवनारा शब्दो नरजातिमां पण वपराय छे: नयणो, नयणं. लोअणो, लोअणं, (लोचनम्)

पाठ ६ ट्ठो

अकारांत नामनां रूपाख्यानो (नान्यतर जाति)

	एकवचन	बहुवचन	
१	कमल+म्=कमलं (कमलम्)	कमल+णि=कमलाणि कमल+इं=कमलाइं कमल+इँ=कमलाइँ	(कमलानि)
२	,, = ,, (,,)	,, ,, ,,= ,, ,,	(,,)
सं०	कमल ! (कमल !)	,, ,, ,,= ,, ,,	(,,)

तृतीयाथी सप्तमी सुधीनां रूपो

'वीर'नी जेवां जाणवां

१० 'णि' 'इं' 'इँ' प्रत्ययोनी पूर्वना अंगना अंत्य ह्रस्व स्वरनो दीर्घ थाय छे :

कमल+णि=कमलाणि

वारि+इं=वारीइं

महु+इँ=महूइँ

११ संबोधनना एकवचनमां मूळ अंग ज वपराय छे.

नाम [नान्यतरजाति]

नयण (नयन) नेण

मत्थय[३९] (मस्तक) माथुं

नाण (ज्ञान) ज्ञान

चंदण (चन्दन) चंदननुं झाड–लाकडुं

---

३९ शब्दनी अंदरना अने असंयुक्त एवा क, ग, च, ज, त, द, प, ब, य अने वनो प्रायः लोप थई जाय छे:

मस्तक = मत्थय   हृदय = हिअय

नगर = नयर   रिपु = रिउ

वेर ४०(वैर) वेर-वैर

वयण (वचन) वचन-वेण

वयण (वदन) वदन-मुख

णयर
णगर
नगर
नयर } (नगर) नगर-शहेर

मुह (मुख) मुख

पित्त (पित्त) पित्त

सिंग (शृङ्ग) शिगडुं, शिंगु

फल (फल) फळ

वण (वन) वन

भायण
भाण } (भाजन) भाजन-भाणुं-पात्र

मंगळ (मङ्गल) मंगल

पास (पार्श्व) पासुं-पडखुं

हियय (हृदय) हृदय-हैयुं

गल (गल) गळुं

पुच्छ (पुच्छ) पूंछडु-पूंछ

पिच्छ (पिच्छ) पीछुं

मंस (मांस) मांस

अजिण (अजिन) अजिन-चामडुं

भय (भय) भय-भो

चम्म (चर्म) चामडुं

वचन = वयण

गज = गय

रजत = रयय

विबुह = विउह

वियोग = विओग

लावण्य = लायण्ण

यादी—'क' वगेरेनो लोप थया पछी बाकी रहेलो स्वर अवर्ण [अ के आ] होय अने तेनी पूर्वे पण अवर्ण आवेलो होय तो ए बाकी रहेलां 'अ'नो 'य' अने 'आ' नो 'या' प्रायः थइ जाय छे.

४० 'ऐ' ने बदले 'ए' थाय छे:

वैर = वेर   शैल = सेल   कैलास = केलास

नाम (नरजाति)

सीह } (सिंह)[४१] सिंह
सिंघ }

वग्घ (व्याघ्र) वाघ

सिआल (शृगाल) शिआळ

सीआल (शीतकाल) शीआळो

गय (गज) गज–हाथी

वसह (वृषभ) वृषभ–बळद

ओट्ठ (ओष्ठ) ओठ–होठ

दंत (दन्त) दांत

कुंभार (कुम्भकार) कुंभार

चम्मार (चर्मकार) चमार

हव्ववाह (हव्यवाह) हव्यवाह–अग्नि

कोह (क्रोध) क्रोध

लोह (लोभ) लोभ

दोस (द्वेष) द्वेष

दोस (दोष) दोष

राग (राग) राग–आसक्ति

धातुओ

घड (घट्) घडवु–बनाववुं

जहा (जहा) छोडवुं–त्याग करवो

जागर् (जागर्) जागवुं

भक्ख् (भक्ष) भक्षवुं–खावु–भरखवुं

जाय् (जाय) जावुं–जन्म थवो–उत्पन्न थवुं

सोह् (शोध) शोधवुं–सोवुं–शुद्ध करवुं

परि+क्कम् (परि+क्रम्) परिक्रमण करवुं–परकमवुं–प्रदक्षिणा करवी

इच्छ् (इच्छ) इच्छवुं

रक्ख् (रक्ष) राखवुं–पाळवुं

वह् (वह्) वहेवु–वावुं

---

४१ अनुस्वारथी पर आवेला 'ह' नो विकल्पे 'घ' थाय छे:

सिंह=सिंघ, सीह. संहार=संघार, संहार

विशेषण

लंब (लम्ब) लांबुं
लण्ह (श्लक्ष्ण) नानुं
बज्झ (बाह्य) बहारनुं-बहारनो देखाव

अव्यय

न (न) न
व (वा) वा-अथवा-के
विणा, विना [42] (विना) विना
सया, सइ (सदा) सदा-हमेशा
सह [43] (सह), सद्धिं (सार्धम्) सह-साथे
निच्चं, णिच्चं (नित्यम्) नित्य

वैरथी वैर वधे छे
नगरनी पडखे चंदननुं वन छे
सिंह के वाघथी शिआळ बीए छे
मांसने माटे सिंहने हणो छो
दांतो माटे हाथीओने मारे छे
लांबा पुरुषनुं पण हृदय नानुं होय छे
बुद्धनी साथे महावीर बोले छे
कुंभार शीआळामां पात्रो घडे छे
वाघने पींछा नथी होता

अग्नि वनने बाळे छे
ज्ञानमां मंगळ छे
महावीरने माथावडे वांदुं छुं
राजाने कान नथी
सिंहना हृदयमां भय नथी
हाथी हाथवडे वनमां फळो खाय छे
चामडा माटे वाघने हणे छे
हाथीओ बळदोथी बीता नथी
सिंहनुं पुंछडं लांबुं होय छे
आंखमां क्रोधने जोउं छुं
सूर्य के चंद्र भमता नथी

---

४२ 'विणा' के 'विना'नी साथे आवता नामने बीजी, त्रीजी के पांचमी विभक्ति लागे छे:

मेहं विणा, मेहेण विना, मेहाउ विणा

४३ 'सह' के 'सद्धिं' नी साथे आवता नामने त्रीजी विभक्ति लागे छे:

बुद्धेण सह. महावीरेण सद्धिं.

सिंहना गळामां मांस छे
बळदो शिंगडाथी शोभे छे
चमार चामडाने शुद्ध करे छे
मुखवडे वचनो बोलुं छुं

पुरुष नाना होठथी शोभे छे
वरसाद नित्य पडे छे
वरसाद विना वनो सुकाय छे

अजिणाए वहंति वग्घे
फलाइं भायणम्मि सोहंति
वुड्ढा पुरिसा हियये वेरं
न रक्खंति
निवो वणेसु सिंघे वा वग्घे
वा हणइ
सिंघो फलं न खायइ
चंदणस्स वणंसि जामि
कुंभारो नगराओ आगच्छइ
चम्मारो अजिणाए नगरं जाइ
निवस्स मत्थयंमि कमलाणि
छज्जंति

मत्थएण वंदामि महावीरं
वणे गए देक्खह
वसहेसुंतो वसहा जायंति
सीहाहिंतो वग्घो न जायइ
वग्घस्स वा सिंघस्स सिंगं
नत्थि
लोहाओ लोहो वड्ढइ
रागा दोसो जायइ
कोहेण पित्तं कुप्पइ
सीआलंसि पुरिसो सिंगं होइ

पाठ ७ मो

नरजाति

घड (घट) [44]घडो	**समण** (श्रमण) शुद्धि माटे श्रम करनार–संतपुरुष
नट (नट) नट	**मोक्ख** (मोक्ष) मोक्ष-छूटकारो
पडह (पटह) पडो–ढोल	**वेय** (वेद) ऋग्वेद वगेरे वेद
भड (भट)भड–शूर	**फास** (स्पर्श) स्पर्श
मोह (मोह) मोह–मूढता	**तलाय** [46](तडाग) तलाव
काय (काय) काय–काया–शरीर	**गरुल** (गरुड) गरुड
सद्द (शब्द) शब्द–साद–अवाज	**खार** / **छार** (क्षार)[47] खारो
हरिस (हर्ष) हरख–हर्ष	**खंध** [48](स्कन्ध) कांध–खांध, भाग, मोटी डाळ
मढ[45] (मठ) मढी–मठ–संन्यासीओनुं रहेठाण	**पोक्खर** (पुष्कर) पोखर–तळाव
सढ (शठ) शठ–लुच्चो	
कुढार (कुठार) कुठार–कुहाडो	
पाढ (पाठ) पाडो–आंकनो पाडो–पाठ	

४५ शब्दनी अंदरना असंयुक्त 'ट' नो 'ड' थाय छे:

घट–घड   नट–नड

४६ शब्दनी अंदरना असंयुक्त 'ठ'नो 'ढ' थाय छे:

मठ–मढ   पाठ–पाढ

४७ शब्दनी अंदरना असंयुक्त 'ड' नो 'ल' थाय छे:

तडाग–तलाय   गरुड–गरुल

४८ शब्दनी आदिना 'क्ष'नो क्यांय 'ख' के 'छ' थाय छे अने शब्दनी अंदरना 'क्ष' नो क्यांय 'क्ख' के 'च्छ' थाय छे.

क्षीर – खीर, छीर.   क्षय – खय, छय.

क्षेत्र – खेत्त, छेत्त.   मोक्ष – मोक्ख, मोच्छ

अक्षि – अक्खि, अच्छि.   लक्षण–लक्खण, लच्छण

४९ शब्दनी आदिना 'स्क' नो के 'ष्क' नो 'ख' थाय छे अने शब्दनी अंदरना 'स्क' नो के 'ष्क' नो 'क्ख' थाय छे:

स्कन्ध – खंध   स्कन्द – खंद

पुष्कर – पुक्खर–पोक्खर   शुष्क – सुक्ख

खय (क्षय) खे–क्षय
कोस (कोश) कोह–पाणी
काढवानो कोश, खजानो
पाण (प्राण) प्राण–जीव

गंध (गन्ध) गंध
काम (काम) काम–तृष्णा–इच्छा
अप्पाण (आत्मन्) आत्मा–पोते–आप

नान्यतर जाति

जल (जल) जळ पाणी
रयय (रजत) रजत–रूपु
गीअ / **गीत** (गीत) गीत, गाएलु
मित्त (मित्र) मित्र
दुक्ख (दुःख) दुःख
सुक्ख (सौख्य) सुख
चारित्त (चारित्र) सच्चारित्र–सद्वर्तन
सीस (शीर्ष) शीष–माथुं
गुत्त (गोत्र) गोत्र–वंश
गहण (ग्रहण) ग्रहण करवानुं साधन
पंजर (पञ्जर) पांजरु
सील (शील) सदाचार

लावण्ण / **लायण्ण** (लावण्य) लावण्य–कांति
रसायल (रसातल) रसातल–पाताल.
कुम्पल / **कुंपल** [४९] (कुड्मल) कुंपळ–फणगो
रुप्प (रुक्म)[५०] रूपुं
जुम्म / **जुग्ग** [५१] (युग्म) युग्म–जोडु
कम्म (कर्म) काम–कार्य–सारी नरसी प्रवृत्ति
घाण (घ्राण) घ्राण–नाक–सुंघवानुं साधन
सयढ (शकट) छकडो–गाडु–शकट

---

४९ 'ड्म' नो प्प थाय छेः कुड्मल = कुंपल

५० 'क्म नो 'प्प' थाय छेः रुक्म=रुप्प, रुक्मिणी=रुप्पिणी

५१ 'ग्म' नो विकल्पे 'म्म' थाय छेः
युग्म = जुम्म, जुग्ग. तिग्म = तिम्म, तिग्ग

पद
पय } (पद) पद–पगलुं

जुग (युग) धोंसरुं

खीर
छीर } (क्षीर) क्षीर–खीर–दूध

लक्खण
लच्छण } (लक्षण) लक्षण–लखण चिह्न

छीअ (क्षुत) छींक

खेत्त
छेत्त } (क्षेत्र) खेतर–छेतर

सोअ
सोत्त } (श्रोत्र) श्रोत्र कान–सांभळवानुं साधन

वीरिय (वीर्य) वीर्य–बळ–शक्ति

विशेषण

मूढ (मूढ) मढ–मोहवाळो–अभण–अज्ञानी

पुट्ठ (पुष्ट) [५२]पुष्ट

संजय (संयत) सयमवाळो

पुट्ठ (पृष्ट) पूछाएलुं

पंडित
पंडिअ } (पण्डित) पंडित–भणेलो, पंड्यो, पोपट पंडित

दुल्लह (दुर्लभ) दुर्लभ–दुलभ–मुश्केल

अव्यय

नो (नो) नहि

च
य } (च) अने

बहिआ
बहिया } (बाह्य) बहार

जहासुत्तं (यथासूत्रम्) सूत्रमां–शास्त्रमां कह्या प्रमाणे

पुण
पुणो
उण } (पुनः) पुनः पुनः–फरीवार

बज्झओ (बाह्यतः) बहारथी–बहार तरफ

तत्तो (ततः) तेथी

किं (किम्) शुं, शा माटे

---

५२ 'ष्ट' नो 'ट्ठ' थाय छे:

पृष्ट = पुट्ठ पुष्ट = पुट्ठ

यादी—इष्टा, उष्ट्र अने संदष्ट शब्दना 'ष्ट' नो 'ट्ठ' थतो नथी:

इष्टा = इट्ठा उष्ट्र = उ संदष्ट = संदट्ठ

धातु

गवेस् (गवेष) गवेषणा करवी—शोधवु

वस् (वस) वसवुं—रहेवु

वय् (वद्) वदवुं—बोलवुं

पिब् (पिब) पीवुं

आ+पिब् } (आ+पिब) थोडुं
आ+पिय् } पीवुं—मर्यादाथी
आ+विय् } पीवुं—सामने नूकसान न थाय ए रीते चूसवुं

जय् (जय) जितवुं

हव् } (भव) होवुं—थवुं
भव् }

पा (पा) पीवुं

पढ (पठ) पढवु—भणवुं

सोअ } (शोच) शोचवुं—
सोच् } विचारवुं, शोक करवो

भण् (भण) भणवुं

घडामां तळावनुं पाणी छे
नटो ढोल साथे मार्गमां नाचे छे
बाळको कांतिवडे शोभे छे
जिनो शीलने वखाणे छे
कुहाडावडे चन्दनने छेदुं छुं
गरुडनुं जोडुं तळावमां पडे छे
बाळकोने छींक आवे छे
खेतरमां खार छे तेथी फणगा बळी जाय छे
शब्दोनो कोश करुं छुं
गाडावडे नगरभणी जाउं छुं
तृष्णाथी कलह थाय छे अने कलहथी द्वेष थाय छे

संयमी श्रमण सुखोथी हरखातो नथी अने दुःखोथी कोपतो नथी
नटो गीत गाय छे अने नाचे छे
सिंहो अने वाघो तळावनुं पाणी पीए छे
वाघ अने सिंह पांजरामां दोडे छे
भड पुरुष शठोने जीते छे
कलहथी वैर थाय छे
श्रमणो मठमां रहे छे
आंकना पाडाने भूली जइए छीए
खीर पीओ छो
मूढ पुरुष दुर्लभ वीर्यनो क्षय करे छे

बळदो पाणीनो कोस
खेंचे छे
राजाना भंडारमां रूपुं छे
बळदना कांधमां धोंसरु
शोभे छे
पंडित पुरुषो मोक्षने इच्छे छे

पंडितो शीलने शोधे छे
पण गोत्रने पूछता नथी
शीलनो मार्ग दुर्लभ छे
बाळको उपाध्याय पासेथी
पाठ भणे छे
भड पुरुषो दुःखथी शोक
करता नथी

घाणं गंधस्स गहणं वयंति
लोहा मोहो जायइ
दुक्खेसुंतो वेया चि न
रक्खंति
सोत्तं सद्दस्स गहणं वयंति
दुक्खेहिंतो वीहंति पंडिता !
कायं फासस्स गहण वयंति
सुक्खेसु मित्तं सुमिरति
समणे महावीरे जयति
मूढो पुणो पुणो बज्जं देक्खइ
पंडिता ! खीरं पिबित्था

मूढा कामेसु मुज्झंति
चन्दणस्स रसमापिबंति
अप्पाणो अप्पाणस्स मित्तं
किं बहिया मित्तमिच्छसि
पुरिसे वीरियं पुण दुलहं
पुरिसस्स काये पुण दुलहे
अप्पाणं जिणासु संजया !
पुट्ठो पंडिओ जहासुत्त वदति
पंडिता पुट्ठा न होंति
गीअस्स सद्दं सुणह

पाठ ८ मो

अकारांत सर्वादि (नरजाति अने नान्यतर जाति)

सव्व (सर्व)
ज (यद्)
त (तद्)
क (किम्)

अकारांत सर्वनामोनां रूपाख्यानो नरजातिमां 'वीर' जेवां अने नान्यतरजातिमां 'कमल' जेवां थाय छे. जे खास विशेषता छे ते, आ नीचे समजुती साथे आपी छे.

१ प्रथमाना बहुवचनमां मात्र एकलुं सव्वे (सर्वे), जे (ये), ते (ते), के (के) थाय छे. अर्थात् प्रथमाना बहुवचनमां अकारांत सर्वनामो, नरजातिमां 'ए' प्रत्यय ले छे.

६ षष्ठीना बहुवचनमां सव्वेसिं (सर्वेषाम्), जेसिं (येषाम्), तेसिं (तेषाम्), केसिं (केषाम्) पण थाय छे अर्थात् षष्ठीना बहुवचनमां अकारांत सर्वनामो, नरजातिमां उक्त 'ण' उपरांत 'एसिं' प्रत्यय पण ले छे:-

सव्व + एसिं = सव्वेसिं.

७ सप्तमीना एकवचनमां सव्वस्सि, सव्वहिं (सर्वस्मिन्), सव्वत्थ (सर्वत्र) जस्सि, जहिं (यस्मिन्) जत्थ (यत्र) तस्सि, तहिं (तस्मिन्) तत्थ (तत्र), कस्सि, कहिं (कस्मिन्) कत्थ (कुत्र) एम त्रण त्रण रूपो पण थाय छे अर्थात् सप्तमीना एकवचनमां अकारांत सर्वनामोने नरजातिमां स्सि, हिं अने त्थ प्रत्यय

उपरांत उक्त ॰सि अने म्मि प्रत्ययो पण लागे छे. मात्र 'ष' प्रत्यय प्रायः नथी लागतो.

रूपाख्यान—सव्व (नरजाति)

१ सव्वो, सव्वे (सर्वः)	सव्वे (सर्वे)
२ सव्वं (सर्वम्)	सव्वे, सव्वा (सर्वान्)
३ सव्वेण, सव्वेणं (सर्वेण)	सव्वेहि, सव्वेहिं, (सर्वेभिः सव्वेहिँ सर्वैः)
४ सव्वस्स (सर्वस्य)	सव्वेसिं (सर्वेषाम्) सव्वाण, सव्वाणं (सर्वाणाम् ?) सव्वाहँ+
५ सव्वत्तो (सर्वतः) सव्वाओ (,,) सव्वाउ (,,) सव्वा (सर्वात् ?) सव्वाहि, सव्वाहिंतो सव्वम्हा (सर्वस्मात्)	सव्वत्तो, सव्वाओ (सर्वतः) सव्वाउ सव्वाहि, सव्वेहि सव्वाहिंतो, सव्वेहिंतो (सर्वेभ्यः) सव्वासुंतो, सव्वेसुंतो
६ सव्वस्स (सर्वस्य)	सव्वेसिं (सर्वेषाम्) सव्वाण, सव्वाणं (सर्वाणाम् ?) सव्वाहँ+
७ सव्वंसि, सव्वस्सिं (सर्वस्मिन्) सव्वहिं, सव्वम्मि सव्वत्थ (सर्वत्र)	सव्वेसु, सव्वेसुं (सर्वेषु)

यादीः-

\+ आ निशानीवाळां रूपोनो प्रयोग अतिविरल छे.

सव्व (नान्यतरजाति)

१ सव्वं (सर्वम्)	सव्वाणि, सव्वाइं सव्वाइँ	(सर्वाणि)
२ ,, (,,)	,, ,, ,,	(,,)

बाकीनां नरजाति–सव्व–प्रमाणे

ज (यद्) नरजाति

१ जे, जो (यः)	जे (ये)
२ जं (यम्)	जे, जा (यान्)
३ जेण, जेणं (येन) जिणा	जेहि, जेहिं, जेहिँ (येभिः, यैः)
४ जस्स, जास (यस्य)	जेसिं (येषाम्) जाण, जाणं (यानाम् ?)
५ जम्हा (यस्मात्) जत्तो, जाओ, जाउ (यतः) जाहि जाहिंतो जा (यात् ?)	जत्तो, जाओ, जाउ (यतः) जाहि, जेहि जाहिंतो जेहिंतो (येभ्यः) जासुंतो, जेसुंतो
६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे	
७ जंसि, जस्सि (यस्मिन्) जहिं, जम्मि जत्थ (यत्र) जाहे, जाला, [५३]जइआ (यदा)	जेसु, जेसुं (येषु)

ज (नान्यतर)

१ जं (यत्)	जाणि, जाइं, जाइँ (यानि)
२ ,, ,,	,, ,, ,, (,,)

बाकीनां नरजाति–ज–प्रमाणे

---

५३ आ त्रणे रूपो ' यदा–ज्यारे–'ना ज अर्थमां वपराय छे.

त, ण, (तद्) नरजाति[५४]

१ स, से (सः)	ते, णे (ते)
२ तं, णं (तम्)	ते, ता (तान्) णे, णा
३ तेण, तेणं, तिणा, (तेन) णेण, णेणं	तेहि, तेहिं, तेहिँ (तेभि, तैः) णेहि, णेहिं, णेहिँ
४ तस्स, तास (तस्य)	सिं, तास, तेसिं (तेषाम्) ताण, ताणं, (तानाम् ?) णेसिं, णाण, णाणं
५ तो, तत्तो, ताओ, ताउ (ततः) तम्हा, (तस्मात्) ताहि, ताहिंतो ता (तात् ?) णत्तो, णाओ, णाउ णाहि, णाहिंतो, णा	तत्तो, ताओ, ताउ (ततः) ताहि, तेहि ताहिंतो, तेहिंतो (तेभ्यः) तासुंतो, तेसुंतो णत्तो, णाओ, णाउ णाहि, णेहि, णाहिंतो, णेहिंतो णासुंतो, णेसुंतो

६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे

---

५४ प्राकृत भाषामां 'त' अने 'ण' ए बन्ने 'ते' ना अर्थमां वपराय छे. माटे 'त'नी साथे 'ण'नां रूपो जणावी दीधां छे. ' त ' अने 'न'–'ण' लखवामां तद्दन सरखा छे तेथी आ 'ण' लिपिदोषने लीधे प्रचलित थयो होय तो ना न कहेवाय 'त्यां'ने बदले 'न्यां' नो प्रयोग गोहिलवाडमां प्रचलित छे ज

७ तंसि, तस्सि, तहिं	तेसु, तेसुं (तेषु)
तम्मि (तस्मिन्)	
तत्थ (तत्र)	
ताहे ताला, [५५]तइआ(तदा)	
णंसि, णस्सि, णहिं,	णेसु, णेसुं
णम्मि, णत्थ	

त (नान्यतर)

१ तं (तत्)	ताणि, ताइं, ताइँ (तानि)
णं	णाणि, णाइं, णाइँ
२ ,, ,, (,,)	,, ,, ,, (,,)
	,, ,, ,,

बाकीनां नरजाति-त-प्रमाणे

क (किम्) नरजाति

१ को (कः)	के (के)
२ कं (कम्)	के, का (कान्)
३ केण, केणं, किणा (केन)	केहि, केहिं, केहिँ (केभिः, कैः)
किण्णा+	
४ कस्स, कास (कस्य)	कास, केसिं (केषाम्)
	काण, काणं (कानाम् ?)
५ कम्हा (कस्मात्)	कत्तो, काओ, काउ (कुतः)
किणो, कीस	काहि, केहि
कत्तो, काओ काउ (कुतः)	काहिंतो, केहिंतो
का (कात् ?)	कासुंतो, केसुंतो
काहि, काहिंतो	

---

५५ आ त्रणे रूपो 'तदा—त्यारे 'ना ज अर्थमां वपराय छे.

६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे
७ कंसि, कस्सिं, कहिं, केसु, केसुं (केषु)
कम्मि (कस्मिन्)
कत्थ (कुत्र)
काहे, काला, [५६]कइआ (कदा)

क (नान्यतर)

१ किं (किम्) काणि, काइं, काइँ (कानि)
२ ,, (,,) ,, ,, ,, ,,
बाकीनां नरजाति-क-प्रमाणे

सर्वनाम

अण्ण (अन्य) अन्य-बीजु
अण्णयर } (अन्यतर) अनेरुं-
अन्नयर } बीजु काई
अंतर (अन्तर) अंदरनु
अवर (अपर) अवर-बीजु
अहर (अधर) नीचुं, बीजु
इम (इदम्) आ
इयर (इतर) इतर-बीजु
उत्तर (उत्तर) उत्तरदिशा, उत्तरनु
एग }
इक्क } (एक) एक, बीजुं
एक्क }

एअ }
एय } (एतद्) ए
तुम्ह (युष्मद्) तु
अम्ह (अस्मद्) हु
क (किम्) कोण
कइम }
कतम } (कतम) क्यो, केटलाक
कयर (कतर) क्यो
अमु (अदस्) ए
ज (यद्) जे
त, ण (तद्) ते
दाहिण } (दक्षिण) दक्षिण,
दक्खिण } दक्षिणनुं

---

५६ आ त्रणे रूपो 'कदा—क्यारे' ना ज अर्थमां वपराय छे.

पुरिम [५७](पुरा+इम) पहेलानुं, पूर्व
पुव्व (पूर्व) पूर्व, पूर्वनुं
वीस (विश्व) विश्व-बधुं
स, सुव (स्व) स्व-पोते, पोतानुं

सम (सम) बधुं
सव्व (सर्व) सर्व-सव-बधुं
सिम (सिम) बधुं

सामान्य शब्दो (नरजाति)

भूअ (भूत) भूत-प्राण-जीव
सीस, सिस्स (शिष्य) शिष्य, विद्यार्थी
कासिबल (कृषिबल) खेडवाळो-खेडुत
अंक (अङ्क) अंक-खोळो
हरिस (हर्ष) हर्ष-हरख
बंधव (बान्धव) बांधव-भाई
पासाय (प्रासाद) प्रासाद-महेल
जीव (जीव) जीव

ताव (ताप) ताव-ताप-तडको
बंभण, बम्हण, माहण (ब्राह्मण) ब्रह्मविद्याने जाणनार-समजनार-पुरुष
कोड (क्रोड) गोद-खोळा
पास (पाश) पाश-फांसो, पाशलो-फांसलो
दिणयर (दिनकर) दिनने करनार-सूरज, दीकरो
संसार (संसार) संसार-जगत्

(नान्यतर)

अंगण (अङ्गन) आंगणुं
सीअ (शीत) शीत-टाढ
खेम (क्षेम) क्षेम-कुशळ
महब्भय (महाभय) महाभय-मोटो भय
वत्थ (वस्त्र) वस्त्र-वस्तर-कपडुं
कट्ठ (काष्ठ) काष्ठ-काट-काठ-काठी-लाकडुं

कम्मबीअ (कर्मबीज) कर्मबीज-सत्-असत् संस्कारनु बीज
भोयण (भोजन) भोजन-जमण
धण (धन) धन
ताण (त्राण) रक्षण-शरण-आशरो
घर (गृह) घर
आउय (आयुष्क) आयुष्य-जींदगी

---

५७ पूर्व-पुरिव-पुरिम ।

(विशेषण)

पडुप्पन्न (प्रत्युत्पन्न) वर्तमान–ताजुं

पमत्त (प्रमत्त) प्रमत्त–प्रमादी

सम (सम) समानवृत्तिवाळुं–सरखुं

वीयराग / **वीयराय** (वीतराग) जेमां राग नथी ते

सुजह (सु+ज्ञान) सहेलाइथी तर्जा शकाय ते

जुन्न (जीर्ण) जीर्ण–जूनुं–जळी–जरी गएलु

पिय (प्रिय) प्रिय–वहालुं

आसत्त (आसक्त) आसक्त–मोही

हय (हत) हणाएलुं–हणेलुं

आगअ / **आगत** / **आअ** (आगत) आवेलुं

पिआउय (प्रियायुष्क) आयुष्यने प्रिय समजनार

उत्तम / **उत्तिम** (उत्तम) उत्तम

बुद्ध (बुद्ध) बोध पामेल–ज्ञानी

बद्ध (बद्ध) बद्ध–बांधेल–बंधाएल

सीअ (शीत) शीत–ठंडुं

अधीर (अधीर) अधीर–धीरज विनानुं–नबळुं

हंतव्व (हन्तव्य) हणवा योग्य

अप्प (अल्प) अल्प–थोडुं

अणाइअ (अनादिक) आदि विनानुं

अव्यय

कुत्तो / **कुओ** (कुतः) क्यांथी, शाथी, कइ बाजुथी.

जहा / **जह** (यथा) जेम

एव / **एवं** (एवम्) एम–ए रीते.

सव्वत्तो / **सव्वतो** / **सव्वओ** (सर्वतः) सर्व प्रकारे चारे बाजुथी

तहा / **तह** (तथा) तेम

अंतो (अन्तर्) अंदर

खलु (खलु) निश्चय

धातु

जाण (ज्ञा) जाणवुं

प+मत्थ् (प्र+मथ्) मथवुं–नाश करवो

कील् / **कीड्** (क्रीड्) क्रीडा करवी–खेलवुं

रम् (रम्) रमवुं

णम्
नम् } (नम्) नमवुं

दह्
डह् } (दह्) दहवुं–बळवुं–बाळवु

सह् (सह्) सहवुं–सहन करवुं

पास् (पश्य) जोवुं

परि+यट्ट् (परि+वर्त्त) परिवर्तवुं –फर्या करवुं–बदलाया करवुं

आ+इक्ख् (आ+चक्ष)आचखवुं —कहेवुं

बधांने सदा सुख प्रिय छे

जेओ शरीरमां आसक्त छे तेओ मूढ छे

राग अने द्वेष संसारमां अनादिना छ

मेघ, बधा भागोमां चारे बाजुए वरसे छे

अमे बे, जेनां कपडां सीवीए छीए ते राजा छे

अग्नि जेम लाकडांने बाळे छे तेम बुद्ध पुरुष पोताना दोषोने बाळे छ

प्रमत्त पुरुष भयथी कंपे छे

उत्तर, पूर्वमां शीत छे अने दक्षिणमां ताप छे

एक पण भूत हणवा योग्य नथी

बधां बाळको गाय छे

बधा खेडुतो टाढ अने ताप सहे छे

तेने ब्राह्मण कहीए छीए जे, कोई जीवने हणतो नथी

कोण क्यांथी आवेलो छे?

माणसो शरीरना क्षेम माटे तपे छे

पंडितो हर्षवडे दुःख सहे छे

सव शिष्यो माथावडे आचार्यने नमे छ

हुं बधांओने माटे चंदन घसुं छुं

जे, तेनाथी गभराय छे ते भड नथी

बद्ध अने आसक्त पुरुषो कर्मबीजवडे संसारमां फर्या करे छे

अमे बीजाओनुं मंगळ इच्छीए छीए

ते पोताना दोषोने जुए छे

हाथीथी हणाएलो खेडुत भयथी ध्रुजे छे

तेना आंगणामां बधां बाळको रमे छे

जे मूढ शिष्यो, आचार्यने वांदता नथी तेओ दुःख सहे छे

जहा जुन्नाइं कट्ठाइं हव्ववाहो पमत्थति तहा जुन्ने दोसे समणो दहइ

जस्स मोहो हओ तस्स न होइ दुक्खं

सव्वेसिं पाणाणं भूआणं दुक्खं महब्भयं ति बेमि

'सव्वे वि पाणा न हतव्वा' एव जे पडुप्पन्ना जिणा ते सव्वे वि आइक्खंति

जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ

पमत्तस्स सव्वतो भय विज्जइ [५८] इअ महावीरो भासते

जस्स मोहो न होइ तस्स दुक्खं हयं

वीतराग पुरुष सवमां उत्तम ब्राह्मण छे

वीतराग सर्व भूतोने सरखां जुए छे

एगेसिं माणवाणं आउयं अप्पं खलु

अधीरेहिं पुरिसेहिं इमे कामा न सुजहा

पुरिमाओ, दाहिणाओ, उत्तराओ कत्तो आगओ त्ति न जाणइ जीवो

जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ

समो य जो सव्वेसु भूएसु स वीतरागो

जेहिं बद्धो जीवो संसारे परियट्टइ ते रागा य दोसा य कम्मबीअं

जेण मोहो हओ न सो संसारे परियट्टइ

सव्वे पाणा पिआउआ सुहमिच्छंति

---

५८ वाक्यनी आदिमां 'इति' ने बदले 'इअ' वपराय छे. व्यंजनांत शब्दथी लागेला 'इति' ने बदले 'ति' थाय छे अने स्वरांत शब्दथी लागेला इति ने बदले 'त्ति' आवे छेः—इअ महावीरो भासते. महब्भयं+इति=महब्भयं ति. आगओ+इति=आगओ त्ति.

पाठ ९ मो

तुम्ह, अम्ह, इम अने एअनां रूपाख्यानो

तुम्ह (युष्मद्) तुं (त्रणे जाति)

एक वचन	बहु वचन
१ तुं, तुमं, तं (त्वम्)	तुम्हे, तुम्ह, तुब्भे (यूयम्)
२ ,, ,, ,, तुमे, तुए (त्वाम्)	,, तुब्भे, तुज्झ (युष्मान्) वो (वः)
३ ते, तइ, तए, तुमं, तुमइ, तुमए, तुमे (त्वया)	तुम्हेहि, तुम्हेहिं, तुम्हेहिँ (युष्माभिः) तुब्भेहि, तुब्भेहिं, तुब्भेहिँ (युष्मेभिः ?) उम्हेहि, उम्हेहिं, उम्हेहिँ
४ तुह, तुज्झ, तुव, तुम, ते, तुव (तव, ते) तुह (तुभ्यम्)	तुमाण, तुमाणं (युष्माकम्) तुम्हाण, तुम्हाणं तुज्झाण, तुज्झाणं तुम्हाहं+ वो (वः)
५ तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, तुवाहि, तुवाहिंतो, तुवा (त्वत्) तुमत्तो, तुमाओ, तुमाउ, तुमाहि, तुमाहिंतो तुमा तुज्झत्तो, तुज्झाओ, तुज्झाउ, तुज्झाहि, तुज्झाहिंतो, तुज्झा	तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ, तुम्हाहि, तुम्हेहि तुम्हाहिंतो, तुम्हेहिंतो तुम्हासुंतो, तुम्हेसुंतो तुय्हत्तो, तुय्हाओ, तुय्हाउ, तुय्हाहि, तुय्हेहि

तुहत्तो, तुह्माओ, तुहाउ,	तुय्हाहिंतो, तुय्हेहिंतो,
तुहाहि, तुह्माहिंतो तुह्मा	तुय्हासुंतो, तुय्हेसुंतो
तुम्हत्तो, तुम्हाओ,	(युष्मत्)
तुम्हाउ, तुम्हाहि,	
तुम्हाहिंतो, तुम्हा	
६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे	
७ तुवम्मि, तुवंसि, तुवस्सि	तुवेसु, तुवेसुं (युष्मासु)
तुमे, तुमम्मि, तुमंसि,	तुवसु, तुवसुं
तुमस्सि	तुमेसु, तुमेसु
	तुमसु, तुमसुं
तुहम्मि, तुहंसि, तुहस्सि	तुहेसु, तुहेसु
तुम्हम्मि, तुम्हंसि, तुम्हस्सि	तुम्हेसु, तुम्हेसुं
तुम्मि, तइ, तए, (त्वयि)	तुसु, तुसुं

अम्ह (अस्मद्) हुं (त्रणे जाति)

१ हं, अहं, अहगं (अहम्)	मो, अम्ह, अम्हे, अम्हो
म्मि, अम्हि, अम्मि	(वयम्)
२ म्मि, अम्मि, अम्ह, मं,	,, ,, ,,
ममं, मिमं (माम्)	(अस्मान्)
	णे (नः)
३ ममए, ममाइ, मयाइ,	अम्हेहि, अम्हाहि,
मइ, मए मि, मे (मया)	(अस्माभिः)
	अम्हेहिं, अम्हाहिं
	अम्हेहिँ, अम्हाहिँ
	अम्ह, अम्हे

४	मे, मइ, मम, मज्झ, मज्झ, (मह्यम्, मम, मे) अम्ह अम्हं महं.	मम्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, अम्हाणं, (अस्माकम्) ममाण, ममाणं, मज्झाण, मज्झाणं, महाण, महाणं, णो (नः)
५	ममत्तो, ममाओ ममाउ, ममाहि ममाहिंतो, ममा, (मत्) मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिंतो, महत्तो, महाओ, महाउ, महाहि महाहिंतो, महा मज्झत्तो, मज्झाओ, मज्झाउ, मज्झाहि, मज्झाहिंतो, मज्झा,	ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममेहि, ममहिंतो, ममेहिंतो, ममासुंतो ममेसुंतो अम्हत्तो, अम्हाओ अम्हाउ (अस्मत्) अम्हाहि, अम्हेहि अम्हाहिंतो अम्हेहिंतो, अम्हासुंतो, अम्हेसुतो
६	जुओ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे	
७	ममंसि, ममस्सि, ममम्मि महंसि, महस्सि, महम्मि, मज्झंसि, मज्झस्सि, मज्झम्मि, अम्हंसि अम्हस्सि, अम्हम्मि मे, ममाइ मि, मए, मइ (मयि)	अम्हेसु, अम्हेसुं, (अस्मासु) ममसु, ममसुं, ममेसु ममेसुं, महसु, महसुं, महेसु महेसुं, मज्झसु, मज्झसुं, मज्झेसु मज्झेसुं.

इम (इदम्) आ–(नरजाति)

१	अयं, इमो, इमे (अयम्)	इमे (इमे)
२	इमं, इणं, णं (इमम्)	इमे, इमा (इमान्) णे, णा.
३	इमेण, इमेणं, इमिणा णेण, णेणं (अनेन)	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ णेहि णेहिं, णेहिँ एहि, एहिं, एहिँ (एभिः)
४	इमस्स, से, अस्स (अस्य)	सिं, इमेसिं, (एषाम्) इमाण, इमाणं.
५	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिंतो, इमा (अस्मात्)	इमत्तो, इमाओ, इमाउ इमाहि, इमेहि (एभ्यः) इमाहिंतो, इमेहिंतो, इमासुंतो, इमेसुंतो.
६	चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे.	
७	इमंसि, इमस्सि, इमम्मि इह, अस्सि (अस्मिन्)	इमेसु, इमेसुं, एसु, एसुं, (एषु.)

नान्यतरजाति

१	इणं, इणमो, इदं (इदम्)	इमाणि, इमाइं, इमाइँ (इमानि)
२	,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,

बाकीनां नरजाति प्रमाणे.

एअ (एतद्)–ए (नरजाति)

१	एस, एसो, एसे (एषः) इणं, इणमो	एए (एते)
२	एअं (एतम्)	एए, एआ, (एतान्)
३	एएण एएणं, (एतेन) एइणा	एएहि, एएहिं, एएहिँ (एतैः–एतेभिः)
४	से, एअस्स (एतस्य)	सिं, एएसिं (एतेषाम्) एआण, एआणं
५	एत्तो, एत्ताहे, एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि एआहिंतो, एआ (एतस्मात्)	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एएहि (एतेभ्यः) एआहिंतो, एएहिंतो, एआसुंतो, एएसुंतो.
६	चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे.	
७	एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि एअंसि, एअस्सिं, (एतस्मिन्) एअम्मि	एएसु, एएसुं, (एतेषु)

नान्यतरजाति

१	एस, एअं, इणं, इणमो, (एतत्)	एआणि, एआइं, एआइँ, (एतानि)
२	” ” ” ”	” ” ”

बाकीनां नरजाति प्रमाणे.

सामान्य शब्दो

नरजाति

दुम (द्रुम) द्रुम–झाड
भमर (भ्रमर) भमरो
रस (रस) रस
जणय (जनक) जनक–पिता
साव (शाप) शाप–श्राप
भारहर (भारहर) भार लइ जनार –मजूर
लाह } **लाभ** } (लाभ) लाभ–लावो
अलाह } **अलाभ** } (अलाभ) अलाभ–अप्राप्ति
कयविक्कय (क्रयविक्रय) खरीदवु –वेचवुं–क्रयविक्रय करवो
जम्म (जन्मन्[५९]) जन्म
छत्त (छात्र) छात्र–विद्यार्थी
वद्धमाण (वर्धमान) वर्धमान– महावीरनुं नाम
एरावण (ऐरावण) ऐरावण–मोटो हाथी
लोअ } **लोग** } (लोक) लोक–जगत्–लोको
मुहुत्त (मुहूर्त) मुरत–वखत–थोडो समय
नह (नभस्) नभ–आकाश
महादोस (महादोष) महादोष– मोटो दोष
नास (नाश) नाश
नास (न्यास) न्यास–थापण
सूअर (शूकर) शूकर–भुंड
काल (काल) काल–समय
खत्तिय (क्षत्रिय) क्षत्रिय
नमिराय (नमिराज) नमिराज –ते नामनो मिथिलानो एक राजर्षि
पमाद (प्रमाद) प्रमाद–असावधानता –आळस
संग (संग) संग–सोबत
असमण (अश्रमण) श्रमण नहि ते
तेअ (तेजस्) तेज
तस (त्रस) त्रास पामी गति करी शके तेवा प्राणी

---

५९ शब्दना अंत्य व्यंजननो लोप थाय छे:
जन्मन्=जम्म. तमस्=तम. यावत्=जाव. तावत्=ताव.

थावर (स्थावर) स्थिर रहेनार–गति न करी शके ते प्राणी–वनस्पति वगेरे
पव्वय (पर्वत) पर्वत
तव (तपस्[६०]) तप–तपश्चर्या
नह (नख) नख
अय (अयस्) अयस्–लोढुं
जायतेय (जाततेजस्) जेमां तेज छे ते–अग्नि
पाय (पाद) पा–चोथो भाग
उट्ट (उष्ट्र) उंट

नान्यतरजाति

पाव (पाप) पाप
पावग (पापक) पाप
फंदण (स्पन्दन) फांदवु–फरकवु–थोडुं थोडुं हलवु
जुज्झ, जुद्ध (युद्ध) युद्ध–लडाई
कारण (कारण) कारण
पय (पद) पद–पगलु
सत्थ (शस्त्र) शस्त्र–हणवानुं हथीआर–तरवार वगेरे
महब्भय, महाभय (महाभय) मोटो भय
रय (रजस्) रज–पाप, धूळ, मेल
अरविंद (अरविन्द) अरविंद–उत्तम कमळ
दाण (दान) दान
अभयप्पयाण (अभयप्रदान) अभयदान–प्राणीओ निर्भय रहे–बने–तेवी प्रवृत्ति
असाय, असात (असात) शाता नहि–सुख नहि ते
रज्ज (राज्य) राज्य–राज
सरण (शरण) शरण–आशरो
धीरत्त (धीरत्व) धीरत्व–धीरपणुं–धैर्य
पुप्फ (पुष्प) पुष्प–फूल
अत्थ (अस्त्र) अस्त्र–फेंकवानुं हथीआर–बाण वगेरे
सत्थ (शास्त्र) शास्त्र
चेइअ (चैत्य) चिता उपर

---

६० 'स्' छेडावाळुं अने 'न्' छेडावाळुं नाम प्रायः नरजातिमां वपराय छे: यशस्=जसो तपस्=तवो जन्मन्=जम्मो. मर्मन्=मम्मो.

६१ शब्दनी आदिना 'ष्प' अने 'स्प'नो 'फ' थाय छे अने शब्दनी अंदरना 'ष्प' अने 'स्प'नो 'प्फ' थाय छे:

स्पन्दन=फंदण. बृहस्पति=बिहप्फइ पुष्प=पुप्फ.

चणेलुं स्मारक चिह्न-ओटलो, छत्री पगलां, वृक्ष, कुंड, मूर्ति वगेरे

छत्त (छत्र) छत्र-छत्री

बम्हचेर / बंभचेर (ब्रह्मचर्य) ब्रह्मचर्य-सदाचारवाळी वृत्ति-ब्रह्ममां परायण रहेवुं ते

सच्च (सत्य) सत्य-साचुं

साय / सात (सात) शाता-सुख

गुरुकुल (गुरुकुल) सदाचारवाळा गुरुओ ज्यां रहे छे ते स्थान

सुत्त (सूत्र) सूत्र-सूतर, सूत्ररूप टूंकुं वाक्य

अव्यय

अलं[६२] (अलम्) बस-सर्युं-थयुं

तओ / तत्तो (ततः) तेथी, त्यारपछी

अवरिं / उवरिं (उपरि) उपर

मुसं / मुसा / मूसा / मोसा (मृषा) मिथ्या-खोटुं

हु / खु / खो (खलु) निश्चय

एगया (एकदा) एकवार-एक वखत

धुवं (ध्रुवम्) ध्रुव-चोकस

अज्झत्थं / अज्झप्पं (अध्यात्म) आत्माने लगतुं-अंदरनुं

सतत / सययं (सततम्) सतत-निरंतर

[६३] इइ / इअ / त्ति / ति / इति (इति) इति-ए प्रमाणे, समाप्तिसूचक

---

६२ 'अलं'नी साथे आवता नामने त्रीजी विभक्ति लागे छे:

अलं जुद्धेणं. अलं तवेणं.

६३ 'इति'ना उपयोग माटे जुओ टिप्पण ५८मुं.

विशेषण

अवज्ज (अवद्य) अवद्य–न वदी–कही–शकाय तेवुं काम–पाप–दोष

अणवज्ज / **अनवज्ज** } (अनवद्य) पापरहित–निर्दोष

दुरणुचर (दुरनुचर) जेनुं आचरण कठण लागे ते

सुत्त (सुप्त) सुतेलु

सुत्त (सूक्त) सूक्त–सारी उक्ति–सुभाषित

वद्धमाण (वर्धमान) वधतुं

गढिय (गृद्ध) अतिशय लालचु

अहम (अधम) अधम–हलकुं–नीच

जिइंदिय (जितेन्द्रिय) इन्द्रियो उपर जय मेळवनार

निरट्ठय (निरर्थक) निरर्थक–नकामु

धीर (धीर) धीर–धीरजवाळुं

अणारिय (अनार्य) अनार्य–आर्य नहि ते–अनाडी

पिय (प्रिय) प्रिय–वहालुं

दुप्पूरिय (दुष्पूर्य) मुश्केलीथी पूराय–भराय–तेवुं

सयल (सकल) सकल–सघळुं

कुसल (कुशल) कुशळ–चतुर

दुरतिक्कम (दुरतिक्रम) न मटे तेवुं

मड / **मय** } (मृत) मृत–मरेलुं

सेट्ठ (श्रेष्ठ) श्रेष्ठ–उत्तम

दंत (दान्त) जेणे तृष्णाने दमी छे ते, दमेलुं–शांत

कड / **कय** } (कृत) करेलुं

विविह (विविध) विविध–जात जातनुं

धातु

भास् (भाष्) भाखवुं–भाषण करवुं

प+माय् (प्र+माद्य) प्रमाद करवो

जूर् (जुर) जूरवुं

तिप्प् (तिप्) टपकवुं–गळवुं

पिट्ट् (पिट्ट) पीटवु–मारवु–पीडवु

परि+तप्प् (परि+तप्य) परिताप पामवो–दुःखी थवु

समा+यर् (सम्+आ+चर) आचरण करवुं

अणु+तप्प् (अनु+तप्य) अनुताप करवो–पश्चात्ताप करवो.

प+यय् (प्र+यत्) प्रयत्न करवो

अभि+नि+क्खम् (अभि+निष्+क्रम्) हमेशने माटे घरथी नीकळवुं- संन्यास लेवो

परिहर् (परि+हर्) परहरवुं–तजवुं

तच्छ् (तक्ष्) तासवुं–छोलवुं–पातळुं करवुं

कप्प् (कल्प) खपवुं-उचित होवु

वज्ज् (वर्ज) वर्जवु–छोडवुं

चय् (त्यज) तजवु

चर् (चर) चरवु चालवुं

सं+जल् (सं+ज्वल) जळवुं–तपवुं–क्रोध करवो

अभिप्पत्थ् / **अभिपत्थ्** (अभि+प्र+अर्थ) प्रार्थना करवी

अभि+जाण् (अभि+जाना) अहिजाणवु–एधाणवु–ओळखवु

खण (खन्) खणवु-खोदवु

परि+च्चय् (परि+त्यज) परित्याग करवो

आचार्यो कुशळ माटे निरंतर प्रयास करे छे

संसारमां पापनो भार वधे छे.

जेम जेम वासना वधे छे तेम तेम लोभ वधे छे.

युद्धने वखते धैर्य दुर्लभ होय छे.

अमे निरर्थक बोलता नथी.

भमराओ फुलोमां दोडे छे.

झाडो पाणी पीए छे अने ताप सहे छे.

नमिराज युद्धने तजे छे.

क्षत्रियो शस्त्रो अने अस्त्रो वडे निर्दोष मनुष्यनां माथां कापे छे.

छात्रो हमेशो गुरुकुळमां रहे छे.

तेना आंगणामां सूरजनुं तेज दीपे छे.

तेओ तमने वारंवार याद करे छे.

अमे महेलनी उपर छीए.

अमारामां ते एक जितेंद्रिय पंडित छे.

तमे एने वारंवार वांदो छो.

एओ, तमे अने अमे दूध पीए छीए

पापी ब्राह्मण सर्वमां हलको छे.

संसारमां कोई, कोईनुं शरण नथी.

तमे अंदरनुं जाणो छो तेथी
प्रमाद करता नथी.
अमे, तमे अने तेओ बधा,
संसारना पाशने कापीए
छीए
श्रमणो पाणी वडे वस्त्रोने
शुद्ध करे छे
कुशळ पुरुषो निर्दोष वचनने
उत्तम कहे छे.
तपोमां ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ छे.
क्षत्रियोनुं लक्षण धैर्य अने
वीर्य छे.
जितेंद्रिय पुरुषो बुद्धनी अने
महावीरनी सेवा करे छे.
बधा जीवो लोभथी पापने
मार्गे चाले छे.
धीर क्षत्रियो मनुष्योनुं
कुशळ इच्छे छे.
तमे धैर्य वडे लोभने
जितो छो.
झाडो वधे छे अने करमाय
छे तेथी तेमां जीव छे.
आचार्यो जागे छे अने
ध्याय छे.
ब्राह्मणो अने श्रमणो शास्त्रो
वडे लडे छे.

चैत्यमां महावीरनां अने
बुद्धनां पगलां छे.
मारो भाइ टाढथी धूजे छे.
आ ब्राह्मण, ए लोकोने शाप
आपे छे.
आ सागर खळभळे छे.
ते अने हुं लाकडां छोलीए
छीए.
केटलाको निरर्थक कोपे छे.
तमे, तेने, मने अने एने
जितो छो.
साचा ब्राह्मण विना बीजुं
कोण उत्तम छे ?
कोई ब्राह्मण, जन्म वडे
ब्राह्मण थतो नथी.
संसारमां बधा, बधानां
शरणरूप छे
संसारमां चारे बाजु त्रस
अने स्थावर जीवो छे.
श्रमणो पापरूप कर्मोनो
त्याग करे छे.
श्रमणोमां वर्धमान श्रेष्ठ छे.
दानोमां अभयदान श्रेष्ठ छे,
पगथी अग्निने हणो छो.
पर्वतने तमे नखोथी खणो छो
पुष्पोमां अरविंद श्रेष्ठ छे.

थोडुं पण असत्य महाभय-
रूप छे
तप वडे वधता वर्धमान
मनुष्योना क्षेम माटे संन्यास
ले छे

दांतोथी लोढाने खाओ छो.
मजूरो रूपा माटे पहाडने
खोदे छे.
बापना खोळामां पुत्र
आळोटे छे

एगो हं नत्थि मे को वि
नाहमन्नस्स कस्स वि
धीरो वा पडितो मुहुत्तमवि
नो पमायए
इमे तसा पाणा, इमे थावरा
पाणा न हंतव्वा इति सव्वे
आयरिया भासंति
अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे
विविहेर्हि दुक्खेर्हि जूरइ
तओ से एगया पासेर्हि
दिव्वइ
कोहेण, मोहेण, लोहेण वा
चित्तं खुब्भइ तत्तो अलं
तव एएर्हि
अयं पुरिसे गढिए सोयइ,
जूरइ, तिप्पइ, पिट्टइ, परि-
तप्पइ
जे अज्झत्थं जाणति ते
बहिया वि जाणति
अलं बालस्स संगेणं
वीराणं मग्गो दुरणुचरो

वुड्ढो कामे जहाइ
पावगेण कम्मेण पुणो पुणो
कलहो जायति
अलं पमादेण कुसलस्स
पंडिओ न हरिसेइ, न कुप्पइ
पाणाणं असातं महब्भयं
दुक्खं
नत्थि जीवस्स नासो त्ति
मूढाणं अप्पाणे दुप्पूरिए
अत्थि
समणाणं कयविक्कयो महा-
दोसो न कप्पइ
तुमे सच्चं समणं तहा
सच्चं माहणं न गरिहह
'पुत्ता मे' 'धणं मे' 'भोयणं
मे' त्ति गढिए पुरिसे
मुज्झइ
ते पुत्ता तव ताणाए नालं,
तुमंपि तेसिं सरणाए
नाल होसि
एस लोगे संसारंसि गिज्झए

तं वयं बूम माहणं जो एग-
मवि पाणं न हणेज्जा
पुरिसा ! तुममेव तुमं मित्तं
किं बहिया मित्तमिच्छसि ?
जहा अंतो तहा बाहिं एवं
पासंति पंडिता
कामा खलु दुरतिक्कमा
असमणा सया सुत्ता, समणा
सया जागरंति
कडेहिंतो कम्मेहिंतो केसि-
मवि न मोक्खो अत्थि
मूढस्स पुरिसस्स संगेण अलं

लाभो त्ति न मज्जेज्जा,
अलाभो त्ति न सोएज्जा
सततं मूढे धम्मं [६४]नाभि-
जाणति
जिणा अलोभेण लोभं जयंति
संसारे एगेसिं माणवाणं
अप्पं च खलु आउयं
जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो
आवियइ रसं
खत्तिया धम्मेणं जुज्झं जुज्झंति
जहा लाहो तहा लोहो
लाहा लोहो पवड्ढइ
समणा सव्वेसिं पाणाणं
सुहमिच्छंति[६५]

६४ न + अभिजाणति = नाभिजाणति. न+अत्थि = नात्थि=नत्थि. प्राकृतमां बे पदो वच्चे ज संधि करवानी पद्धति छे अने ते पण विकल्पे. एक पदमां पण सामसामा अव्यवहित स्वरो आवे छे छतां तेओ वच्चे संधि थतो नथी. कारण के प्राकृतना स्वरप्रधान शब्दोमां ते रीते संधि करवाथी अर्थनी अस्पष्टता अने उच्चारणनी क्लिष्टता वगेरे अनेक दूषणो उभां थाय छे.

ह्रस्व के दीर्घ अ, इ, उ पछी अनुक्रमे ह्रस्व के दीर्घ अ, इ, उ, आवे तो ते बन्नेने स्थाने एक सजातीय दीर्घस्वर आवे छे.

अ + अ	इ + इ	उ + उ
अ + आ =आ	इ + ई =ई	उ + ऊ = ऊ
आ + अ	ई + इ	ऊ + उ
आ + आ	ई + ई	ऊ + ऊ

६५ सुहम्+इच्छंति=सुहमिच्छंति–जुओ पृ० ३६ नि० २

पाठ १० मो

भूतकाळ–प्रत्ययो

स्वरांत धातुओने लगाडवाना– **एकवचन–बहुवचन**

१ पु०	सी, ही, हीअ (सीत्[६६])
२ पु०	,, ,, ,, ,,
३ पु०	,, ,, ,, ,,

'पा' धातुनां रूपो

सर्व पुरुष, सर्व वचन:
पासी [पा+सी], पाअसी [पा+अ+सी]
पाही [पा+ही], पाअही [पा+अ+ही]
पाहीअ [पा+हीअ], पाअहीअ [पा+अ+हीअ]

'हो' धातुनां रूपो

होसी [हु + सी] होअसी [हो + अ + सी]
होही [हो + ही] होअही [हो + अ + ही]
होहीअ [हो + हीअ] होअहीअ [हो + अ + हीअ]

एकवचन–बहुवचन

व्यंजनांत धातुओने लगाडवाना

१ पु०	ईअ (ईत्[६७])
२ पु०	,,
३ पु०	,,

---

६६ प्राकृतमां वपरातो भूतकाळनो 'सी' प्रत्यय अने संस्कृतमां वपरातो भूतकाळनो 'सीत्' प्रत्यय बन्ने समान छे. 'अधासीत्' 'अघ्रासीत्' वगेरे संस्कृतरूपोमां वपराएलो 'सीत्' [तृतीय पु० एक०] भूतकाळने दर्शावे छे, प्राकृतमां ते व्यापक थइ सर्व पुरुष अने सर्व वचनने दर्शावे छे 'ही' अने 'हीअ' ए बन्ने पण 'सी' ना ज रूपांतरो छे.

६७ 'ईअ' अने संस्कृतनो भूतकाळ सूचक 'ईत्' बन्ने समान

वंद् - वंदीअ [वंद् + ईअ]
हस् - हसीअ [हस् + ईअ]
कर् - करीअ [कर् + ईअ]

खास करीने आर्ष प्राकृतमां वपराएला प्रत्ययो.

प्रायः तृतीय पुरुष एक वचन	त्था इत्था इत्थ	(इष्ट)[६८]
प्रायः तृतीय पुरुष - बहुवचन	इत्थ इंसु अंसु	(इष्ट)[६९] (इषुः)[७०]

धातु-	रूपाख्यान
हो	होत्था [हो + त्था]
री	रीइत्था [री + इत्था]

छे. 'अभाणीत्' 'अवादीत्' वगेरे संस्कृत क्रियापदोमां आवेलो 'ईत्' [तृ० पु० एक०] भूतकाळने दर्शावे छे, प्राकृतमां ते, सर्व पुरुष अने सर्व वचनमां आवे छे.

६८ आ 'इत्थ' प्रत्यय अने संस्कृतनो 'इष्ट' प्रत्यय बन्ने समान छे. इष्ट–इट्ठ–इत्थ, इत्था, त्था. अजनिष्ट, अभविष्ट वगेरे संस्कृत रूपोमां आवेलो 'इष्ट' [तृतीय पु० एक०] भूतकाळनो सूचक छे. प्राकृतमां पण ते, प्रायः तृतीय पुरुषना एक वचनने सूचवे छे.

६९ जुओ टिप्पण ६८ मुं.

७० आ 'इसु' अने 'अंसु' तथा संस्कृतनो भूतकाळ-दर्शक 'इषुः' ए बधा समान छे. 'अवादिषुः' 'अग्राबिषुः' वगेरे संस्कृत क्रियापदोमां वपरातो इषुः [तृ० पु० बहुव०] भूतकालनो सूचक छे अने ते प्राकृतमां पण प्रायः ते ज काळ, पुरुष अने वचनने सूचवे छे.

प+हार्	पहारित्थ पहारेत्थ	[पहार् + इत्थ]
भुंज्	भुंजित्था [भुज् + इत्था]	
वि+हर्	विहरित्था [विहर् + इत्था]	
सेव्	सेवित्था [सेव् + इत्था]	
गच्छ्	गच्छिसु [गच्छ् + इंसु]	
पुच्छ्	पुच्छिसु [पुच्छ् + इंसु]	
कर्	करिंसु [कर् + इंसु]	
नच्च्	नच्चिसु [नच्च् + इसु]	
आह	आहंसु [आह + अंसु]	

केटलांक अनियमित रूपो

अस्

अत्थि, अहेसि, आसि [सर्व पुरुष सर्व वचन] आसिमो, आसिमु (आस्म) रूप, प्रथम पुरुषना बहुवचनार्थे आर्ष प्राकृतमां क्वचित वपराएलुं मळे छे.

वद्

'वद्' धातुनुं 'वदीअ' रूप थवुं योग्य छे छतां आर्ष प्राकृतमां 'वदीअ' ने बदले अनेक स्थळे 'वदासी' अने 'वयासी'[७१] रूपनो उपयोग थएलो छे अर्थात् उक्त 'सी' प्रत्यय स्वरांत धातुने लगाडवानो छे ते, आर्षप्राकृतमां क्वचित् व्यञ्जनांत धातुने पण लागेलो छे, वद्+सी वदासी-आर्षप्राकृत होवाने कारणे 'वद' नुं 'वदा' थयुं छे.

---

७१ 'वदासी' उपरथी 'वयासी'—टिप्पण ३९ मुं.

कर

भूतकाळमां 'कर' ने बदले 'का' पण थाय छे.

कर + इअ = करीअ

'कर'नो 'का' थयो त्यारे { का + सी = कासी
का + ही = काही
का + ही = काहीअ }

आर्ष प्राकृतमां वपराएलां बीजां केटलांक अनियमित रूपो

कर् – अकरिस्सं (अकार्षम्)	१ पु०	एक०	
कर् = का – अकासी (अकार्षीत्)	३ पु०	,,	
ब्रू – अब्बवी (अब्रवीत)	,,	,,	
वच – अवोच (अवोचत्)	,,	,,	
अस् – आसी (आसीत्)	,,	,,	
ब्रू – आह (आह)	,,	,,	
,, आहु (आहु)	,,	बहु०	
दृश – अद्क्खू (अद्राक्षुः)	,,	,,	
भू } अभू (अभूत के अभुवन्) हू } अहू	,,	एक,	,,

उक्त आर्षरूपो संस्कृत अने प्राकृत एम बे भिन्न भिन्न भाषाना अस्तित्वनो स्पष्ट रीते निषेध करे छे. ए बधां रूपो मात्र उच्चारणभेदना नमूना छे

नरजाति

आरिय (आर्य) आर्य-सज्जन
णातसुत } (ज्ञातसुत[७२]) ज्ञातवंशनो
णायसुय } पुत्र-महावीर
छगलय (छाग) छालु-बकरुं

नातपुत्त }
णातपुत्त } (ज्ञातपुत्र) ज्ञातवंशनो पुत्र-महावीर
नायपुत्त }

७२ शब्दनी आदिना 'ज्ञ' नो 'न' के 'ण' थाय छे अने शब्दनी अंदरना 'ज्ञ' नो 'न्न' के 'ण्ण' थाय छेः—

ज्ञातसुत = { णायसुत
नायसुत }

ज्ञातपुत्र = { नातपुत्त.
णायपुत्त. }

विज्ञान = { विण्णाण.
विन्नाण. }

संज्ञा = { संन्ना.
संण्णा. }

देस (देश) देश
मिलिच्छ (म्लेच्छ) म्लेच्छ
ऊसव (उत्सव) उत्सव
मअ[७३] (मृग) मृग–हरण
मयंक (मृगाङ्क) मृगना निशान वाळो–चंद्र
पज्जुण्ण / पज्जुन्न (प्रद्युम्न[७४]) प्रद्युम्न नामनो कृष्णनो पुत्र

वच्छ (वत्स[७५]) वत्स–बच्चुं–पुत्र
उच्छाह (उत्साह) उत्साह
रिच्छ (ऋक्ष) रींछ
गोतम / गोयम ([७७] गौतम) गौतम गोत्रनो मुनि

---

७३ शब्दनी अंदरना प्रथम 'ऋ' नो 'अ' थाय छे:—
मृग = मअ. मृगाङ्क = मयंक.

७४ शब्दनी आदिना 'म्न' नो 'न' के 'ण' थाय छे अने शब्दनी अंदरना 'म्न' नो 'न्न' के 'ण्ण' थाय छे:–

प्रद्युम्न = पज्जुन्न / पज्जुण्ण   निम्न = निन्न. / निण्ण.

७५ ह्रस्वथी पर आवेला 'त्स' 'श्च' 'थ्य' अने 'प्स' नो 'च्छ' थाय छे:—

वत्स = वच्छ   आश्चर्य = अच्छेर
उत्साह = उच्छाह   पश्चात् = पच्छा.
पथ्य = पच्छ   जुगुप्स = जुगुच्छ.
मिथ्या = मिच्छा   लिप्स = लिच्छ.

७६ शब्दनी आदिना शुद्ध 'ऋ' नो 'रि' थाय छे:—
ऋक्ष = रिच्छ.   ऋद्धि = रिद्धि

७७ 'औ' ने बदले 'ओ' वपराय छे:— गौतम= गोतम / गोयम

पवंच (प्रपञ्च) प्रपंच
संख (शङ्ख) शख
कंटग (कण्टक) कांटो
पंथ (पन्थ) पंथ–मार्ग
कलंब (कदम्ब) कदंबनुं झाड
सप्प (सर्प) साप
मंजार (मार्जार) मणजर–बिलाडो
दुक्काल (दुष्काल) दुकाळ
वम्मह ([७८] मन्मथ) मनने मथनार–कामदेव
पण्ह (प्रश्न[७९]) प्रश्न
कण्ह (कृष्ण) कृष्ण–कान
पण्हुअ (प्रस्नुत) पानो
पुव्वण्ह (पूर्वाह्ण) दिवसनो पूर्व भाग
हेमंत (हेमन्त[८०]) हेमंत ऋतु–शिआळो
मूसअ / मूसय (मूषक) मूषक–उंदर

---

७८ 'न्म' नो 'म्म' थाय छे:–

मन्मथ = वम्मह   मन्मन = मम्मण

७९ शब्दना 'श्न' 'ष्ण' 'स्न' 'ह्न' अने 'ह्ण' नो 'ण्ह' थाय छे:—

प्रश्न = पण्ह   स्नात = ण्हाअ.   वह्नि = वण्हि.
कृष्ण = कण्ह   प्रस्नुत = पण्हुअ.   पूर्वाह्ण=पुव्वण्ह.

८० शब्दनी अंदरना ङ्, ञ्, ण्, न् अने म् पछी कोइ पण व्यंजन आवे, तो ते दरेकनो अनुस्वार थाय छे अने ते अनुस्वारने स्थाने–अनुस्वारनी पछी जे वर्गनो व्यंजन आव्यो होय ते वर्गनो छेल्लो व्यंजन पण आवे छे:—

मृगाङ्क = मयंक, मयङ्क.   शङ्ख = संख, सङ्ख.
प्रपञ्च = पवंच, पवञ्च.   कण्टक = कंटग, कण्टग.
हेमन्त = हेमंत, हेमन्त.   पन्थ = पंथ, पन्थ.
कदम्ब = कलंब, कलम्ब.

पल्हाअ } (प्रह्लाद) प्रह्लाद
पल्हाद } नामनो भक्त राजपुत्र

मोहणदास (मोहनदास) ए नामनो वीरपुरुष–मोहनदास गांधी

रट्ठधम्म (राष्ट्रधर्म) राष्ट्रनो धर्म–समग्र देशनुं हित करनारी प्रवृत्ति.

गाम (ग्राम) गाम

देविंद (देवेन्द्र) देवोनो इन्द्र–देवोनो स्वामी

मोर } (मयूर) मोर
मयूर }

हरिएसबल (हरिकेशबल) मूळ चंडाळ कुळमां जन्मेलो एक जैन मुनि

विंछिअ (वृश्चिक) वींछी

नान्यतर

गमण (गमन) गमन–जवुं

पाणीय } (पानीय) पाणी,
पाणीअ } पीवानुं

दुद्ध (दुग्ध) दध

रायगिह (राजगृह) बिहारमां आवेलुं हालनुं राजगिर–मगध देशनी राजधानी

कुसग्गपुर (कुशाग्रपुर) राजगृहनुं बीजुं नाम

विन्नाण } (विज्ञान) विज्ञान
विण्णाण }

भारहवास (भारतवर्ष) भारतदेश–हिंदुस्थान

महाविज्जालय (महाविद्यालय) मोटुं विद्यालय–कोलेज

पाडलिपुत्त (पाटलिपुत्र) पाटलिपुत्र–पटणा शहेर

चंडालिय (चाण्डालिक) चंडाळनो स्वभाव–क्रोध

नाण (ज्ञान) ज्ञान

पवहण (प्रवहण) वाहन, वहाण

अच्छेर (आश्चर्य) आश्चर्य–अचरज

विशेषण

महड्ढिय } (महर्धिक) मोटी
महिड्ढिय } ऋद्धिवाळुं–धनाढ्य

वाघायकर (व्याघातकर) व्याघात करनार–विघ्न करनार

महग्घ (महार्घ) मोंघुं
सग्घ (स्वर्घ) सोंघुं
केरिस (कीदृश) केवुं
नवीण } (नवीन[८१]) नवीन–नवुं
णवीण }
अज्जयण } (अद्यतन) आजनुं
अज्जतण } –ताजुं
सरस (सरस) सरस
पच्छ (पथ्य) पथ्य–रस्तामां हितकर
जुगुच्छ (जुगुप्स) जुगुप्सा करनार–घृणा करनार

सण्ह } (सूक्ष्म) सूक्ष्म–सूक्ष्म–
सुहुम } नानुं सूनुं
सुखुम }
सहल (सफल) सफळ
विहल (विफल) विफळ
विलिअ (व्यलीक) विशेष अलीक –खोटुं
वीलिअ (व्रीडित) वीलो–भोंठो
पुराण } (पुराण) पुराणु–जूनुं
पुराअण } (पुरातन)
णिण्ण } (निम्न) निम्न–नीचुं
णेण्ण } नानुं–नेनुं[८२]

अव्यय

तेण (तेन) ते तरफ
जेण (येन) जे तरफ
अवस्सं (अवश्यम्) अवश्य
एव } (एवम्) एम–ए प्रमाणे
एवं }
सुट्ठु (सुष्ठु) सारी रीते
दुट्ठु (दुष्ठु) दुष्ट रीते
खिप्पं (क्षिप्रम्) खेप–जल्दी[८३]

पच्छा (पश्चात्) पछी
इहेव (इहैव) अहीं ज
असइं (असकृत्) वारंवार
गामाणुग्गामं } (ग्रामानुग्रामम्)
गामाणुगामं } गामे गाम–दरेक गामडे

---

८१ जुओ टिप्पण २१ मुं.

८२ 'नेनुं' ए प्रांतिक उच्चारण छे. नेनुं=नानु

८३ सरखावो–'खिप्प' उपरथी खेपियो–खेप करनारो–खरावी कागळ पहोंचाडनारो.

नमो / णमो } ([८४]नमः) नमस्कार

पगे (प्रगे)प्रागडवाइये–प्रातःकाळे

मा (मा) मा–नहि

धातु

अच्च् (अर्च) अर्चवुं–पूजवुं

उव+दिस् (उप+दिश)उपदेशवुं–उपदेश करवो.

नच्च् (नृत्य) नाचवुं

प+हार (प्र + धार) धारवुं–संकल्प करवो.

ने / णे }(नी) लइ जवु–दोरवुं

आ+णे (आ+नी) आणवुं–लाववुं.

सेव् (सेव) सेववुं

हस् (हस्) हसवुं

पढ् (पठ) पाठ करवो–पढवुं

पुच्छ् (पृच्छ) पूछवुं

भण् (भण) भणवुं

रीय् (रीय) नीकळवु

वि+हर् (वि+हर) विहरवुं–फरवुं

अणु+भव् (अनु+भव) अनुभववुं–भोगववुं.

हुं गाममां गयो अने साथे बकराने लइ गयो.

आर्य पुरुषोए महावीरने अनेकवार वांद्या.

मेघ वरस्यो अने मोरो नाच्या.

'महावीरनुं शील केवुं छे'–एम ब्राह्मणोए पूछ्युं.

तेमणे घणां सारां कामो कर्यां अने जीवनने सफळ कर्युं.

---

८४ विसर्गने बदले 'ओ' थाय छेः—

नमः = नमो. तमः = तमो.

मनः = मणो. ततः = ततो.

महावीर हेमंत रुतुमां नीकळ्या.

ज्यारे तेणे पूछयुं त्यारे तमे खोटुं बोल्या.

अमे सत्यनो जाप कर्यो.

तेओए पाणी पीधुं अने अमोए दूध पीधुं.

पाणी नीचुं जाय छे एम कोण नथी जाणतुं ?

ज्ञान वडे हुं क्रोधने अवश्य हणुं छुं

तेणे दुष्ट रीते संकल्प कर्यो.

अमे बेए सारी रीते सेवा करी.

आजनुं दूध सरस हतुं.

सवारे अने पछी पण बालको आंगणामां रम्या.

श्रमणो मोघां वस्त्रोने अडकता नथी.

लोकोए ज्ञान माटे पंडितोने पूज्या.

अमे साचुं बोल्या.

राजा अने इंद्र विनयपूर्वक बोल्या.

'बधा प्राणीओ हणवा लायक छे' एम अनार्योए कह्युं.

हुं अने तुं महाविद्यालयमां गया अने राष्ट्रधर्मने भण्या.

'कोई पण प्राणी हणवा योग्य नथी' एम आर्योए कह्युं.

मोहनदास महापुरुषे गामे गाम विहार कर्यो अने राष्ट्र धर्मने उपदेश्यो.

प्रद्युम्ननो शिष्य पाटलिपुत्र गयो

दुकाळमां देशना माणसोए दुःख भोगव्युं.

मोंठा शिष्यो हसता नथी.

तमे शिष्योने शीघ्र पूछयुं.

खोटुं वचन शा माटे बोल्यो?

पुराणुं साचुं छे एम नथी अने नवुं खोटुं छे एम पण नथी.

आर्योने नमस्कार.

दिवसना आगला भागमां सूर्यने पूज्यो.

हिंदुस्थानना लोको सोंघुं अन्न खाय छे.

बाला धाविंसु
मा य चंडालियं कासी
तंसि देसंसि दुक्कालो होसी
मिच्छा ते एवमाहंसु
तवस्स वाघायकरं वयणं वयासी
इमं पण्हं उदाहरित्था
गोयमो समणं महावीरं एवं वयासी
सीलं कहं नायसुतस्स आसी ?
नमिरायो देविंदमिणमब्बवी
अंगणम्मि बाला मोरा य नच्चिंसु
ते पुत्तो जणयं इणं वयणं कहिंसु
वद्धमाणो जिणो अभू
सो दुद्धं पासी
तुमं छगलयं गामं नेही
माणवा हसीअ
जिणा एवं कहिंसु
आसि अम्हे महिड्ढिया
तेणं कालेणं तेणं समयेणं पाडलिपुत्ते नयरे होत्था
जेणेव समणे महावीरे तेणेव गोयमो गच्छीअ

पुच्छिंसु णं समणा माहणा य
सो पुरिसो पाडलिपुत्तं नयरं गमणाए पहारेत्थ
रायगिहे नयरे होत्था
अहू जिणा, अत्थि जिणा.
सव्वे वि जिणा धम्मम्मि सच्चमुत्तमं आहसु
ते पाणीयं पाही
बालो हसीअ
तुम्हे तत्थ ठाहीअ
आसिमु बंधवा दोवि
सो इमं वयणमब्बवी
अत्थि इहेव भारहवासे कुसग्गपुरं नाम नयरं
सोसे विणयेणं आयरिये सेवित्था
तंसि हेमंते नायपुत्ते महावीरे रोइत्था
जे आरिया ते एवं वयासी
समणे महावीरे गामाणुगामं विहरित्था
हरिएसबलो नाम जिइंदिओ समणो आसि
किं अम्हे असच्चं भासीअ ?

पाठ ११ मो

इकारांत अने उकारांत (नरजाति)

	एकव०	बहुव०
१	रिसि = रिसी (ऋषिः)	रिसि + अउ = रिसउ रिसि + अओ = रिसओ रिसि + अयो = रिसयो (ऋषयः) रिसि + णो = रिसिणो रिसि = रिसी
२	रिसि+म्=रिसिं (ऋषिम्)	रिसि = रिसी (ऋषीन्) रिसि + णो = रिसिणो
३	रिसि+णा=रिसिणा (ऋषिणा)	रिसि + हि = रिसीहि रिसीहिं रिसीहिँ (ऋषिभिः)
४	रिसि+अये=रिसये (ऋषये) रिसि + स्स = रिसिस्स रिसि + णो = रिसिणो	रिसि + ण = रिसीण रिसीणं (ऋषीणाम्)
५	रिसि+त्तो=रिसित्तो(ऋषितः) रिसि+ओ=रिसीओ (,,) रिसि+उ =रिसीउ (,,) रिसि+णो=रिसिणो रिसि+हिंतो=रिसीहिंतो	रिसि+त्तो=रिसित्तो (ऋषितः) रिसिओ=रिसीओ (,,) रिसि+उ=रिसीउ (,,) रिसि+हिंतो=रिसीहिंतो (ऋषिभ्यः) रिसि+सुंतो=रिसीसुंतो

६ रिसि+स्स=रिसिस्स (ऋषेः) रिसि+ण=रिसीण,
रिसि+णो=रिसिणो रिसीणं (ऋषीणाम्)

७ रिसि+°सि=रिसिसि रिसि+सु=रिसीसु, रिसीसुं
(ऋषिस्मिन्? ऋषौ) (ऋषिषु)
रिसि+म्मि=रिसिम्मि

सं० रिसि=रिसि! (ऋषे!) रिसि+अउ=रिसउ (ऋषयः)
रिसि=रिसो ! रिसि+अओ=रिसओ ,,
रिसि+अयो=रिसयो ,,
रिसि+णो=रिसिणो !
रिसि=रिसी !

भाणु (भानु)

१ भाणु=भाणू (भानुः) भाणु+अवो=भाणवो (भानवः)
भाणु+अवे=भाणवे[८५] (,,)
भाणु+अओ=भाणओ (,,)
भाणु+अउ=भाणउ (,,)
भाणु+णो=भाणुणो
भाणु=भाणू

२ भाणु+म्=भाणुं (भानुम्) भाणु+णो=भाणुणो
भाणु=भाणू (भानून्)

३ भाणु+णा=भाणुणा (भानुना) भाणु+हि=भाणूहि
भाणूहिं
भाणूहिँ (भानुभिः)

---

८५ प्रथमा-बहुवचनना 'अवे' प्रत्ययनो उपयोग आर्ष प्राकृतमां ठीक ठीक थयेलो छे.

४ भाणु+अवे=भाणवे (मानवे)	भाणु=ण=भाणूण (भानूनाम्)
भाणु+णो भाणुणो	भाणूण
भाणु+स्स=भाणुस्स	
५ भाणु+त्तो=भाणुत्तो	भाणु+त्तो=भाणुत्तो (भानुतः)
भाणु+ओ=भाणूओ	भाणु+ओ=भाणूओ (,,)
भाणु+उ=भाणूउ	भाणु+उ=भाणूउ (,,)
(भानुतः,भानोः)	
भाणु+णो=भाणुणो	भाणु+हिंतो=भाणूहिंतो
भाणु+हिंतो=भाणूहिंतो	(भानुभ्यः)
	भाणु+सुंतो=भाणूसुंतो
६ भाणु+स्स भाणुस्स (भानोः)	भाणु+ण=भाणूण } (भानूनाम्)
भाणु+णो-भाणुणो	भाणूणं }
७ भाणु+ंसि=भाणुंसि	भाणु+सु=भाणूसु (भानुषु)
भाणु+म्मि=भाणुम्मि	भाणूसुं
(भानुस्मिन् ?, भानौ)	
सं० भाणु भाणु (भानो !)	भाणु+अवो=भाणवो (भानवः)
भाणु=भाणू	भाणु+अओ=भाणओ (,,)
	भाणु+अउ=भाणउ (,,)
	भाणु+णो=भाणुणो
	भाणु=भाणू

अकारांत नामनां रूपोनी साधनामां जे प्रत्ययो वपराएला छे ते ज प्रत्ययो उपर्युक्त रूपोनी साधनामां वधारे प्रमाणमां वपराएला छे अने तद्दन नवां रूपो बहु थोडां छे

१ प्रथमाना अने संबोधनना एक तथा बहुवचनमां तथा द्वितीयाना बहुवचनमां इकारांत अने उकारांत

मूळ अंग फक्त दीर्घ करीने पण वापरवानुं छेः—
रिसि = रिसी

२ प्रथमाना, संबोधनना अने चतुर्थीना स्वरादि प्रत्ययो लगाडी पूर्व स्वरनो एटले अंगना अंत्य 'इ' के 'उ' नो लोप करवानो छेः—

रिसि+अओ=रिस्=अओ=रिसओ

भाणु+अवो=भाण्+अवो=भाणवो

रिसि+अये=रिस्+अये=रिसये

भाणु+अवे=भाण्+अवे=भाणवे

[जुओ टिप्पण—१० मुं]

३ नवां रूपोमां तृतीया एकवचन, 'णो' प्रत्ययवाळां बधां रूपो अने चतुर्थीनुं एकवचन छे परंतु ते बधांनी साधना उपर जणावेला विभाग उपरथी समजाय तेवी ज छे.

संस्कृतमां इन्' छेडावाळा (दण्डिन्, मालिन्) नामोनां प्रथमा-द्वितीया बहुवचनमां अने पंचमी-षष्ठी एकवचनमां दण्डिनः, मालिनः रूपो प्रसिद्ध छे. ए रूपोनुं प्राकृत रूपांतर दंडिणो, मालिणो थाय छे. आ जोतां अहीं जणावेलां रिसिणो, भाणुणो रूपोनी घटना सहजमां समजी शकाय तेम छे. वळी, 'इन्' छेडावाळां नामोनां बधां रूपो लगभग इकारांत नामनो जेवां थाय छे.

इकारांत अने उकारांत नान्यतर अंगनां, तृतीयाथी सप्तमी सुधीनां बधां रूपोनी साधना इकारांत अने उकारांत नरजाति अंगनां रूपोनी समान छे अने प्रथमा, द्वितीया तथा संबो-

घननां रूपोनी साधना, अकारांत नान्यतर अंगनां रूपोनी जेवी छेः—

वारि (वारि)

१-२ वारि+म्=वारिं (वारि)......वारि+णि=वारीणि
वारि+इं=वारीइं | वारीणि
वारि+इँ=वारीइँ

सं० वारि ! (वारि !) „ „ „ (")
(जुओ पाठ छट्ठानो प्रारंभ)

महु (मधु)

१-२ महु+म्=महुं (मधु)...महु+णि=महूणि
महु+इं=महूइं | (मधूनि)
महु+इँ=महूइँ

सं० महु ! (मधु !) „ „ „ (")

चतुर्थीना एकवचनमां वारिणे, वारिस्स. महुणे, महुस्स रूपो समजवानां छे पण 'वारये' के 'महवे' रूपो समजवानां नथी.

इकारांत अने उकारांत नाम (नरजाति)

मुणि (मुनि) मुनि-मनन करनार-मौन राखनार संत	रिसि / इसि (ऋषि) रुषि
सउणि (शकुनि) शकुनि-पक्षी	भूवइ (भूपति) भू-पृथ्वी-नो पति-भूपति-भूपत-राजा
पइ (पति) पति-स्वामी-धणी-मालिक	गणवइ (गणपति) गणोनो पति -गणपति
घरवइ / गहवइ (गृहपति) घरनो पति -गृहस्थ	

अमुणि-(अमुनि) मुनि नहि ते -बडबड करनार

कोहदंसि (क्रोधदर्शिन्) क्रोधने जोनार-क्रोधी

दुक्खदंसि (दुःखदर्शिन्) दुःखने जोनार-दुःख पामनार

भोगि } (भोगिन्) भोगी-
भोइ } भोगोने भोगवनार

उदहि (उदधि) उद-पाणी-ने धारण करनार-समुद्र

साहु (साधु) साधक-साधन करनार, साधु पुरुष, सज्जन, शाहुकार

जंतु (जन्तु) जंतु-प्राणी

सिसु (शिशु) शिशु-बाळक

मच्चु } (मृत्यु) मृत्यु-मोत-मरण
मिच्चु }

बिंदु (बिन्दु) बिंदु-मींडुं, टीपुं

भाणु (भानु) भानु-भाण-सूरज

वाउ } (वायु) वायु-वा
वायु }

विण्हु (विष्णु) विष्णु

हत्थि (हस्तिन्) हाथी

कुलवइ (कुलपति) कुळनो पति -आचार्य

नरवइ (नरपति) नरोनो पति नरपति-नरपत-राजा

भूमिवइ (भूमिपति) भूमिनो पति-राजा

उवाहि (उपाधि) उपाधि

सेट्ठि (श्रेष्ठिन्) श्रेष्ठी-शेठ

गब्भदंसि (गर्भदर्शिन्) गर्भने जोनार-जन्म धारण करनार

अभोगि } (अभोगिन्) अभोगी-
अभोइ } भोगोने नहि भोगवनार

पक्खि (पक्षिन्) पंखी-पांखवाळुं

सोमित्ति (सौमित्रि) सुमित्रानो पुत्र-लक्ष्मण

भिक्खु (भिक्षु) भिक्षु

चक्खु (चक्षुष्) चक्षु-आंख

सयंभु (स्वयंभू) स्वयं थनार-ब्रह्मा, ते नामनो समुद्र

संसारहेउ (संसारहेतु) संसारनो हेतु-संसार वधवानुं कारण

गुरु (गुरु) गुरु-वडिल माता पिता वगेरे

तरु (तरु) तरु-द्रु-झाड

बाहु (बाहु) बाहु-बांय-हाथ

अकारांत (नरजाति)

वसह (वृषभ) वृषभ-बळद

कोसिअ (कौशिक) कौशिक गोत्रवाळो इंद्र अथवा चंड-कौशिक सर्प

आहार (आहार) आहार-खावानुं

ण्हाविअ / नाविअ (नापित) नवरावनारो-नावी-हजाम

मअ (मृग) मृग-वनपशु-हरण

भार (भार) भार

कुमारवर (कुमारवर) उत्तम कुमार

आहार (आधार) आधार

गरुल (गरुड) गरुड

रण्णवास (अरण्यवास) अरण्यमां वसवुं-वनमां रहेवुं

सव्वसंग (सर्वसङ्ग) सर्व प्रकारनो संग-संबंध-आसक्ति

महासव (महास्रव) मोटो आस्रव-पापोनो मोटो मार्ग

महप्पसाय (महाप्रसाद) मोटा प्रसादवाळो-सुप्रसन्न-कृपाळु

मास (मास) मास-महीनो

पक्ख (पक्ष) पक्ष-पखवाडियुं, पंख-पांख, पक्ष-तरफदारी

वेसाह (वैशाख) वैशाख मास

उवासग (उपासक) उपासक-उपासना करनार

कोघवर (कोपपर) कोपमां तत्पर-कोपी-क्रोधी

सोवाग (श्वपाक) चांडाळ

अकारांत (नान्यतरजाति)

आभरण (आभरण) आभरण-घरेणुं

घर (गृह) घर

पंजर (पञ्जर) पांजरु

उदग / उदय (उदक) उदक-पाणी

हुअ (हुत) होम

रूव (रूप) रूप

कुल (कुल) कुल-कुळ

घय (घृत) घी

तण (तृण) तरणुं-घास

मित्तत्तण (मित्रत्व) मित्रत्व-मित्रता-भाईबंधी

विशेषण

बुद्ध (बुद्ध) बोधवाळो-ज्ञानी
हुत (हुत) होमेलु-हवन कराएलुं
सेट्ठ (श्रेष्ठ) श्रेष्ठ-सारु
संभूअ (संभूत) संभवेलो-थएलो
चउत्थ } **चतुत्थ** } (चतुर्थ) चोथुं
तिण्ण (तीर्ण) तरी गएलुं
सुत्त (सुप्त) सुतेलुं-आळसु

अप्पणिय (आत्मीय) आपणुं
पासग (दर्शक-पश्यक?) द्रष्टा समजनारो-विचारक
परिसोसिय } **परिसोसिअ** } (परिशोषित) परिशोषित-तद्दन सुकाएलुं
बिइज्ज (द्वितीय) बीजुं

अव्यय

ताव } **ता** } (तावत्) तो, त्यांसुधी
एगया (एकदा) एक वखत-एकवार
सया (सदा) सदा-हमेशा

जाव } **जा** } (यावत्) जो, ज्यां सुधी
एत्थ (अत्र) अहीं
चिरं (चिरम्) चिरं-लांबा काळ सुधी

धातुओ

अवमन्न् (अप+मन्य) अप-मानवुं-अपमान करवुं
आ+घा (आ+ख्या) आख्यान करवुं-कहेवुं
जाय् (याच) जाचवुं-याचना करवी-मागवुं
प+वय् (प्र+वद) वदवु-कहेवुं

पूज् } **पूअ्** } (पूज) पूजवुं
चय् (त्यज) तजवुं-छोडवुं
भण् (भण) भणवुं, बोलवुं, कहेवुं
डस् (दश्) डसवुं-डंख मारवो
रक्ख (रक्ष) रक्षवुं-राखवुं-साचववुं-रक्षण करवुं

जागर् (जागर्) जागवुं
वि+राअ } (वि+राज) विराजवुं
वि+राज् } —शोभवु
उ+ड्डी (उत्–डी) ऊडवुं
नि+मंत् (नि+मन्त्र) निमंत्रण करवुं—नोतरवुं

ताल् } (ताड) ताडन करवुं
ताड् } —मारवुं
वि+चर् (वि+चर) विचरवुं—फरवुं

वाक्यो

एकवार साधुओ ब्राह्मणने घरे गया.

भिक्षुओ उपाधिओने छोडे छे अने स्वयंभूनुं ध्यान करे छे.

तपथी सुकायेला मुनिने अनार्यो हसे छे.

ब्राह्मणोए भिक्षुओनुं अपमान कर्युं.

हे मुने! तुं संसारने तरेलो छे.

कर्म वडे उपाधि थाय छे.

मारे बधा भूतोमां मित्रपणुं छे, कोइनो पण साथे वैर नथी

अमुनिओ हमेशा सुतेला छे अने मुनिओ हमेश जागे छे.

श्रमण महावीरने चण्डकौशिक सर्पे डस्यो.

कोइ पण पुरुष कुलपतिना बळदने अने मृगने हणतो नथी.

बळदो अने मृगो तृण खाय छे अने मुनिओ घी पीए छे.

महावीरना उपासक शेठे वैशाख मासमां तप कर्यो.

बधां आभरणो भार छे.

कुलपतिए श्रमण महावीरने कह्युंः कुमारवर! अहीं ऋषिओनो मठ छे.

सौमित्रि रामने नमे छे.

मुनिओ आहार माटे बधां कुलोमां फरे छे.

ग्रीष्मने बीजे मासे अने चोथे पक्षे महावीर बुद्ध थया.

जे क्रोधदर्शी छे ते गर्भ-
दर्शी छे अने जे गर्भ-
दर्शी छे ते दुःखदर्शी छे.

हे पंडितो! हुं बधा प्रकारे
लोभने तजुं छुं.

चंडकौशिक सर्पमां अने
देवेन्द्रमां महावीरे मित्र-
पणुं राख्युं.

वायु वडे वृक्षो कंप्यां अने
पाणीनां बिंदुओ उड्यां.

शुं विचारकने उपाधि
होय छे?

कौशिक देवेन्द्रे श्रमण महा-
वीरने पूज्या.

समुद्रना हाथीए पाणी
पीधुं.

लोभ संसारनो हेतु छे.

सुप्रसन्न मुनिओ क्रोधदर्शी
होता नथी.

ए भिक्षु शेठना कुळनो
हतो.

हे भिक्षो! मारा घरमां
दूध नथी, घी नथी पण
पाणी छे

ए गृहस्थने बे बाळक हतां.

तेओए हाथवडे पांजराने
फेंक्युं.

कोने आंखो नथी?

पक्षी पांजरामां कंप्युं अने
हल्या कर्युं.

शेठ राजाने नम्यो अने
राजा गणपतिने नम्यो.

तमे पाणी इच्छो छो?

मुनिओना पति महावीर
राजगृहमां विहर्या.

मुणिणो सया जागरंति
अमुणो सया सुत्ता संति
'घयं पिबामि'त्ति साहुस्स
णो भवइ
चक्खुं रूवस्स गहणं वयंति
पक्खीसु वा उत्तमे गरुले
विराजइ
धम्मो भिक्खुणो उज्जमेण
मोक्खं पवयंति

सउणी पंजरंसि उड्डेइ
ते उवासगा भिक्खुं निमंत-
यंति
बहवे गहवइणो भिक्खुं वंदंते
मच्चू नरं णेइ हु अंतकाले
गहवई मुणिणो दुद्धं दिज्ज
भूवई, घरवई य दोवि गुरुं
वंदंति
महरिसी! तं पूजयामु

न मुणी रण्णवासेण किंतु
नाणेण मुणी होइ
नमी भूमिवई कयावि न
चंडालियं कासी
भिक्खू धम्मं आइक्खेज्जा
लोहेण जंतुणो दुक्खाणि
जायंति
सिसुणो किं किं न छिंदिरे?
जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे,
इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे
अन्न मुणिणो हुएण मोक्खं
उदाहरिरे
भिक्खू सव्वसंगे महासवे
परिजाणीअ

भोगिणो संसारे भमीअ
अभोगी चयइ रयं
हत्थीसु एरावणमाहु सेट्ठं
एगया पाडलिपुत्तस्स नर-
वई ण्हाविओ होत्था
महप्पसाया इसिणो हवंति
न हु मुणी कोववरा
हवंति
महासवं संसारहेउं वयंति
बुद्धा
बुद्धो भयं मच्चुं च तरीअ
गणवई हत्थिस्स सिसुं
रक्खीअ

पाठ १२ मो

भविष्यकाळ

प्रत्ययो

	एकवचन	बहुवचन
पु० १	स्सामि (ष्यामि)	स्सामो, स्सामु, स्साम (ष्यामः)
	हामि	हामो, हामु, हाम
	हिमि	हिमो, हिमु, हिम
	स्सं	हिस्सा, हित्था
पु० २	स्ससि (ष्यसि)	स्सह, स्सथ, (ष्यथ)
	स्ससे (ष्यसे)	
	हिसि,	हित्था, हिह (ष्यध्वे)
	हिसे	
पु० ३	स्सइ, स्सति (ष्यति)	स्संति, (ष्यन्ति)
	स्सए, स्सते (ष्यते)	स्संते (ष्यन्ते)
	हिइ, हिए	हिंति, हिंते, हिइरे
	हिति, हिते	
	सर्व पुरुष- सर्व वचन { ज्ज, ज्जा	

१ भविष्यकाळना प्रत्ययो लगाडतां धातुना मूळ अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' अने 'इ' वाराफरती थाय छे:- भण्+अ=भण+स्सामि=भणेस्सामि, भणिस्सामि वगेरे

रूपाख्यान

पु० १	भणिस्सामि, भणेस्सामि	भणिस्सामो, भणेस्सामो
	भणिहामि, भणेहामि	भणिस्सामु, भणेस्सामु

भणिहिमि, भणेहिमि	भणिस्साम, भणेस्साम
भणिस्सं, भणेस्सं	भणिहामो, भणेहामो
	भणिहामु, भणेहामु
	भणिहाम, भणेहाम
	भणिहिमो, भणेहिमो
	भणिहिमु, भणेहिमु
	भणिहिम, भणेहिम
	भणिहिस्सा, भणेहिस्सा
	भणिहित्था, भणेहित्था
पु० २ भणिस्ससि, भणेस्ससि	भणिस्सह, भणेस्सह
भणिस्ससे, भणेस्ससे	भणिस्सथ, भणेस्सथ
भणिहिसि, भणेहिसि	भणिहित्था, भणेहित्था
भणिहिसे भणेहिसे	भणिहिह, भणेहिह
पु० ३ भणिस्सइ, भणेस्सइ	भणिस्संति, भणेस्संति
भणिस्सति, भणेस्सति	भणिस्संते, भणेस्संते
भणिस्सए, भणेस्सए	भणिहिंति, भणेहिंति
भणिस्सते, भणेस्सते	भणिहिंते, भणेहिंते
भणिहिइ, भणेहिइ	भणिहिइरे, भणेहिइरे
भणिहिति, भणेहिति	
भणिहिए भणेहिए	
भणिहिते, भणेहिते	

सर्व पुरुष } भणिज्ज, भणेज्ज
सर्व वचन } भणिज्जा, भणेज्जा

बीजा पुरुषना बहुवचननो 'हित्था' अने प्रथम पुरुषना बहुवचननो 'हित्था' ए बन्ने प्रत्ययो समान छे अने तेथी ज ए बन्नेनो सेळभेळ थइ गएलो होवो जोइए.

स्सामि, हामि, स्सामो, हामो वगेरे प्रत्ययो तो 'स'-कारना उच्चारण भेदने लीधे प्रचलित थया होय एम कां न कहेवाय ?

इकारांत अने उकारांत शब्दो

अग्गि (अग्नि) आग
गणि (गणिन्) गण-समूहने साचवनार-आचार्य
गिहि (गृहिन्) गृहस्थ
मणि (मणि) मणि
सव्वण्णु (सर्वज्ञ) सर्व जाणनार
किसाणु (कृशानु) अग्नि
जण्हु (जह्नु) ते नामनो सगरपुत्र
भिक्खु (भिक्षु) भिक्षु
उच्छु (इक्षु) इख-शेरडो
महेसि {महा+ऋषि-महर्षि} व्यास वगेरे महर्षि
रायरिसि {राज-ऋषि-राजर्षि} राजर्षि
जीवाउ (जीवातु) जीवननुं औषध
दयालु (दयालु) दयालु
कवि (कवि) कवि
कवि (कपि) कपि-वानर
चाइ (त्यागिन्) त्यागी
नमि (नमि) ते नामनो एक राजर्षि-नमिराज

पाणि (पाणि) पाणि-हाथ
पाणि (प्राणिन्) प्राणी
बंभयारि (ब्रह्मचारिन्) ब्रह्मचारी
मेहावि (मेधाविन्) मेधावाळो-बुद्धिमान
वणप्फइ / वणस्सइ (वनस्पति) वनस्पति
करेणु (करेणु) करी-हाथी
कुंथु (कुन्थु) कंथवो-एक नानो जीवडो
विज्जत्थि (विद्यार्थिन्) विद्यानो अर्थी-विद्यार्थी
विहु (विधु) चंद्र
कमंडलु (कमण्डलु) कमंडळ
मंतु (मन्तु) अपराध, शोक
तरु (तरु) तरु द्रु-झाड
जंबु (जम्बु) जांबु, जांबुनु झाड
विडवि (विटपिन्) वीड-झाड
साणु (सानु) शिखर
बंधु (बन्धु) बंधु भांडु-भाइ
पीलु (पीलु) पीलु, पीलुनु झाड
उरु (उरु) उरु साथळ
पावासु (प्रवासिन्) प्रवासी

विशेषण

कयण्णु (कृतज्ञ) कृतज्ञ–कदरदान
गुरु (गुरु) गुरु–भारे मोटु
लहु (लघु) लघु–हळवु नानु
मिउ (मृदु) मृदु–कोमळ–नरम
दुहि (दुःखिन्) दुःखी
दुग्गंधि (दुर्गन्धिन्) दुर्गन्धी चीज
चारु (चारु) चारु–सुंदर
सुहि (सुखिन्) सुखी
साउ (स्वादु) स्वादु–स्वादवाळुं
खलपु (खलपु) खळु साफ करनार
दिग्घाउ (दीर्घायुष्) दीर्घ आयुष्यवाळो
सुइ (शुचि) शुचि–पवित्र
सुगंधि (सुगन्धिन्) सुगंधी वस्तु
बहु (बहु) बहु–घणुं
गामणि (ग्रामणी) गामनो नेता

इकारांत अने उकारांत [नान्यतरजाति]

अक्खि / **अच्छि** (अक्षि) आंख
अट्ठि (अस्थि) हड्डी–हाडकुं–हाड
जउ (जतु) जतु–लाख
वत्थु (वस्तु) वस्तु
दहि (दधि) दहीं
धणु (धनुष्) धनुष
जाणु (जानु) जान–जांघ–साथळ
वारि (वारि) वारि–पाणी
महु (मधु) मध
खाणु (स्थाणु) स्थाणु–खीलो–ठुंठुं

सामान्य शब्दो [नरजाति]

जर (ज्वर) ज्वर–ताव
अंब (आम्र) आंबो
कोकिल / **कोइल** (कोकिल) कोयल
तिल (तिल) तल
लोहार (लोहकार) लुहार–लूवार
सोवण्णिय (सौवर्णिक) सोनी सोनुं घडनार
गंधिअ (गान्धिक) गांधी–गंधवाळी वस्तुने वेचनार
वाणिज्जार (वाणिज्यकार) वणजारो–वणज करनारो–वेपारी
कांबलिअ (काम्बलिक) कामळीयो–कांबळीओने वेचनार वा ओढनार

मोच्चिअ (मौच्चिक) मोची-मोजां सीवनार

कुडुंबी (कुटुम्बिन्) कणबी

कौडुंबिअ (कौटुम्बिक) कणबी, राजानुं कामकाज करनार

साड (शाट) साडलो-साडी

साडय (शाटक) ,, ,,

सोरहिअ (सौरभिक) सरैयो-सुरभि-सुगन्धी-तेल वगेरेने वेचनार

कस (कश) चाबुक

सुत्तहार (सूत्रधार) सुतार

तेलिअ (तैलिक) तेली-तेल वेचनार

मालिअ (मालिक) माळी-माळा वेचनार

दोसिअ (दौष्यिक) दोशी-दूष्य-वस्त्र-वेचनार

उण्हाल (उष्णकाल) उनाळो

सीआल (शीतकाल) शियाळो

तंबोलिअ (ताम्बूलिक) तंबोली

दंड (दण्ड) दंड-डांडो-लाकडी

जोइसिअ (ज्योतिषिक) जोशी

साडवी } (शाटविन्) साळवी
साळवी } -साडी वणनार

मणिआर (मणिकार) मणियार -काचनो सामान वेचनार

सामान्य शब्दो [नान्यतरजाति]

लोह (लोह) लोढुं

वाणिज्ज (वाणिज्य) वणज-वेपार

तेल (तैल) तेल

तंबोल (ताम्बूल) तंबोळ-नागर-वेलनुं पान

मलीर (मलयचीर) मलय देशनुं कोमळ, झीणुं अने आछुं कापड

कंटयरक्ख (कण्टकरक्ष) कांटारखु -कांटाथी रक्षण करनार-जोडा

कंबल (कम्बल) कंबल-कामळ

चेल (चेल) चेल-वस्त्र

बीअ (बीज) बी-बीज

जीवण (जीवन) जीवन-जिंदगी

पायत्ताण (पादत्राण) पादत्राण-जोडा

पगरक्ख (पदकरक्ष) पगरखां-पगनुं रक्षण करनार

वत्थ (वस्त्र) वस्त्र-वस्तर

पटोल (पट्टकूल) पटोळुं

खेत्त }
खित्त } (क्षेत्र) क्षेत्र-खेतर

मिहिलानयर (मिथिलानगर) मिथिला

घरचोल (गृहचोल) घरचोळुं

पम्हपड (पक्ष्मपट) पक्ष्म-पांपण-जेवु झीणुं कापड-पांभडी

वित्त } (वेत्र) नेतर-नेतरनी
वेत्त } सोटी-बेत

सुवण्ण (सुवर्ण) सोनुं

रयय (रजत) रजत-रूपु

रुप्प (रुक्म) रूपुं

रुप्प (रौप्य) ,,

लोमपड } (लोमपट) रुंवाटानुं वस्त्र
} (रोमपट) -लोबडी

पम्ह (पक्ष्मन्) पांपण

नेड्ड } (नीड) निलय-नीड-माळो
णेड्ड }

सामान्य शब्द [विशेषण]

घट्ट (घृष्ट) घसेलु-गुंवाळु करेलुं, वाटेलुं

मट्ट (मृष्ट) मांजेलु-शुद्ध

अंतिअ (अन्तिक) पासे-नजीकमां

चंड (चण्ड) प्रचंड-क्रोधी

लहुअ } (लघुक) लघु-हळवुं-
हलुअ } हलु-नानु

नाय (ज्ञात) जाणितुं-प्रसिद्ध

अम्हारिस (अस्मादृश) अमारीशु-अमारा जेवुं

सचेलय (सचेलक) चेल-वस्त्र-वाळुं-कपडावाळुं

अचेलय } (अचेलक) ऐलक-
अएलय } कपडा विनानुं

अव्यय

सव्वत्थ (सर्वत्र) सर्वत्र-बधे स्थळे

मज्झे (मध्ये) मध्ये-वच्चे-महीं-मां

जं (यत्) जे-के

सक्खं (साक्षात्) साक्षात्-प्रत्यक्ष

सययं (सततम्) सतत-निरतर

अह (अथ) अथ-हवे-प्रारंभसूचक

मणा } (मनाक्) मणा-थोडुं-
मणयं } खामी दर्शक

सइ (सदा) सदा

अभिक्खणं (अभिक्षणम्) क्षणे क्षणे-वारंवार

अहुणा (अधुना) हमणां

धातुओ

जुंज (युञ्ज) योजवुं-जोडवुं-अडाडवुं-सबंध करवो
सोह् (शोध) सोवुं-शोधवुं
सिव्व् (सीव्य) सीववुं
हण् (हन्) हणवुं
मन्न् (मन्य) मानवुं
ओप्प् (अर्प) पाणी-आपवुं-चडाववु-ओपवुं
पवस् (प्र+वस्) प्रवास करवो
उवचिट्ठ (उप+तिष्ठ) उपस्थित रहेवुं-सेवामां हाजर रहेवुं
ताव् (ताप) तपाववुं-ताववुं
विक्के (वि+क्री) वेचवु-वेकवुं
अप्प् } ओप्प } (अर्प) आपवुं
पील् } पीड् } (पीड) पीडवुं-पीलवु
फल् (फल) फळवुं-फळ आववां
चिंत् (चिन्त) चिंतववु
वीसर् (वि+स्मर्) वीसरवुं-भूली जवुं
संम्हर् (सं+स्मर) संभारवु-याद करवुं
खण् (खन) खणवु-खोदवु
पाव् (प्र+आप्) पामवु-प्राप्त करवुं
वक्खाण् (वि+आ+ख्यान) वखाणवुं-विस्तारथी कहेवु-वखाण करवां
तच्छ् (तक्ष्) तासवु-छोलवुं
अणुसास् (अनु+शास्) शिक्षण आपवुं-समजाववुं
संबुज्झ् (सं+बुध्य) समजवुं
वण् (वन) वणवुं-भात पाडीने वणवुं
कूअ (कूज) कूकू करवुं-कूहू कूहू करवुं

वाक्यो

कुंभारनुं कुल पण उत्तम थशे
वणजारो गामेगाम प्रवास करशे अने वस्तुओ वेचशे
लुहार लोढाने घडशे
नमि, विद्यार्थीओने अने ऋषिओने मध आपशे
साळवी पटोळां, मलीर अने घरचोळांने वेचशे

सुतार लाकडांने छोलशे अने पछी घडशे

गृहस्थो, ब्राह्मणोने अने साधुओने अन्न आपशे

श्रमण महावीर, कुंभारने अने मोचीने धर्म समजावशे

सरैयो सुगंधी वस्तुने वखाणशे

मोची, मारा माटे पगरखां सीवशे

कुशळ तरनारो तळावने पोताना बे हाथे तरशे

कामळीयाना शरीर उपर कामळ अने लोबडी शोभशे

त्यागी पुरुषो पण आगथी मुंझाशे

उनाळाना दिवसोमां कोयल आंबा उपर कुहू कुहू करशे

बधा धर्मना महर्षिओए एम कह्युं के वनस्पतिमां अने पाणीमां जीव छे

गुरु विद्यार्थीओने तेमनो पाठ समजावशे.

तेली तलने पीलशे अने तेल वेचशे

सोनी सोनानां अने रूपानां घरेणां घडशे अने तेमने तासशे

भिक्षुओ अने ब्राह्मणो नाना कंथवाने पण मारशे नहि

मारा दुःखी जीवननु औषध धर्म थशे

माळी शेठने घरे तेना बगीचाना फूलो लई जशे

हुं पहाडना शिखरे चंद्रने जोईश

तळावमां झाडनां पांदडां पड्यां तेथी तेनुं पाणी सारुं नथी

मिथिला नगरी अग्निवडे बळी अने ते नमि राजाए जोयुं

वांदराओ आंबाना झाडमां कूदशे

उनाळामां सूर्यनो प्रचंड ताप तपशे

तंबोळी तंबोळ वेचशे अने अमे तंबोळ खाईशुं

विद्यार्थीओनी वच्चे आचार्यो शोभशे.

आ आंबो शियाळामां फळशे

तमे बे दयाळु अने कृतज्ञ थशो

ऋषिओ कमंडळथी शोभशे

आ राजामां कांइ मणा नथी

जेओ पोताना भोगोने छोडशे तेओने लोको त्यागी कहेशे

मारा सोनी घरेणांने ओपशे

सर्वज्ञनुं मन कोमळ होय छे

केटलीक वनस्पतिओ उनाळामां फळशे अने तेमने तुं खाईश

कणबी खेतरने वारंवार खोदशे

हवे हुं पान खाईश, ते तेनो पाठ समजशे अने तमे पाणी पीशो

त्यां बधे पीलुनां वृक्षो शोभे छे अने तेमनी नीचे अमे बेसीए छीए

विज्जत्थी भिक्खू य सया गुरुं उवचिट्ठिस्सइ

गुरूणमंतिए सीसो उरुणा सह उरुं न जुजिस्सइ

मिउं पि गुरुं सीसा चंडं पकरंति

हत्थीसु एरावणं नायमाहु

मच्चू णरं णेइ हु अंतकाले

रिसी रायरिसिं इमं वयणमब्बवी

सव्वे साहुणो, गुरुणो अणुसासणं कल्लाणं मन्निस्संति

'अहं अचेलए सचेलए वा' इइ भिक्खू न चिंतिस्सइ

सव्वे जणा अंबस्स तरुं वक्खाणिस्संति

मज्झे मज्झे तु बोल्लिस्ससि, तुमे नच्चिस्सह, सो य गाइस्सति

वाणिज्जारा अम्हे गामे गामे वाणिज्जं करेहामो वत्थूइं च विक्केहिमु

अम्हे लोहारा लोहं ताविहिस्सा तस्स च सत्थाणि घडेहिमो

माहणा पाणिणो पाणे न
हणिस्संति
अह अम्हे समणं वा मा-
हणं वा निमंतिस्सामो
सो सक्खं मूढो किमवि
न संबुज्झिहिइ
तुमं वत्थं सिव्विस्ससि, अहं
च पट्टोलं वणिस्सं
अहं सोवण्णिओ सुवण्णं
सोहिहामि तस्स च
आभरणाइं घडिहिमि

आसी भिक्खू जिइंदियो
दंडेहि वित्तेहि, कसेहि चेव
अणारिया तं रिसिं
तालयंति
ताहे सो कुलवती समणं
महावीरं अणुसासति,
भणति य-कुमारवर!
सउणी ताव अप्पणियं
णेड्डुं रक्खति
रायरिसिम्मि नमिम्मि
निक्खंते मिहिलानयरे
सव्वत्थ सोगो आसी

पाठ १३ मो

भविष्यकाळ [चालु]

स्वरांत धातुनां भविष्यकाळनां रूपो साधतां त्रीजा पाठमां फक्त स्वरांत धातु माटे जे विशेष साधनिका बतावी छे तेनो उपयोग करवो.

ते साधनिका प्रमाणे प्रत्येक स्वरांत धातुनां छ अंगो बने छे अने ए अंगोथी भविष्यकाळना प्रत्ययो लागे छे.

छ अंगोनी समजः—

विकरण विनानुं		विकरण वाळुं	
१ हो		२ होअ	
पा		पाअ	
ने		नेअ	
ज्ज अने ज्जावाळुं विकरणविनानुं		ज्ज अने ज्जावाळुं विकरणवाळुं	
३ होज्ज,	४ होज्जा	५ होएज्ज	६ होएज्जा
पाज्ज,	पाज्जा	पाएज्ज	पाएज्जा
नेज्ज,	नेज्जा	नेएज्ज,	नेएज्जा वगेरे

रूपाख्यान [उदाहरण]

१ पु० होस्सं, होइस्सं, होज्जिस्सं, होज्जास्सं होएज्जिस्सं
होएस्सं, होज्जेस्सं, होज्जस्सं होएज्जेस्सं
होएज्जास्सं
होएज्जस्सं

आ प्रमाणे सर्व धातुनां उक्त छ अंगो बनावी उपर्युक्त रीते सर्व पुरुषनां रूपाख्यानो समजी लेवां.

केटलांक अनियमित रूपाख्यानो

कर्

भविष्यकाळमां 'कर्' ने बदले 'का' पण वपराय छे अने तेनां बधां रूपो स्वरांत धातुनी सरखां थाय छे तथा प्रथम पुरुषना एकवचनमां 'काहं' रूप वधारे थाय छे. जेमके; ३ पु० काहिइ. २ पु० काहिसि. १ पु० काहिमि, काहं वगेरे

दा

'दा' धातुनां भविष्यकाळ संबंधी बधां रूपो स्वरांत धातुनी सरखां थाय छे. फक्त प्रथम पुरुषना एकवचनमां 'दाहं' रूप वधारे थाय छे. जेमके;
३ पु० दाहिइ. २ पु० दाहिसि. १ पु० दाहिमि, दाहं वगेरे.

सोच्छ (श्रोष्य) सांभळवुं
रोच्छ (रोत्स्य) रोवुं
मोच्छ (मोक्ष्य) मुकावुं-छुटुं थवुं
भोच्छ (भोक्ष्य) भोजन करवुं भोगववुं
वोच्छ (वक्ष्य) कहेवुं-बोलवुं
वेच्छ (वेत्स्य) वेदवुं-अनुभववुं-जाणवुं
भेच्छ (भेत्स्य) भेदवुं-टुकडा करवा
छेच्छ (छेत्स्य) छेदवुं
दच्छ (द्रक्ष्य) जोवुं-देखवुं.
गच्छ (गंस्य) जवुं, पामवुं

मात्र आ उपर्युक्त दस धातुओने 'हि' आदिवाळा (हिमि, हिस्सि, हिमो, हिम, हिइ वगेरे) प्रत्ययो लगाडतां तेमनी आदिनो 'हि' विकल्पे लोपाय छे. जेमकेः-

सोच्छ + हिमि = सोच्छिमि, सोच्छेमि, सोच्छिहिमि, सोच्छेहिमि-वगेरे

वळी, मात्र प्रथम पुरुषना एकवचनमां ज ए दसे धातुओनुं अनुस्वारवाळुं पण एक रूप वधारे थाय छे. जेमकेः-

सोच्छं	वेच्छं	दच्छं	
सोच्छिस्सं	वेच्छिस्सं	दच्छिस्सं	वगेरे

बाकीनो बधी साधनिका 'भण' धातुनी समान छे.

रूपाख्यान [उदाहरण]

एकवचन—

१ पु० सोच्छं, सोच्छिमि, सोच्छिस्सामि
सोच्छिस्सं, सोच्छेमि, सोच्छेस्सामि
सोच्छेस्सं सोच्छिहिमि, सोच्छिहामि
सोच्छेहिमि, सोच्छेहामि

२ पु० सोच्छिसि, साच्छेसि, सोच्छिहिसि, सोच्छेहिसि
सोच्छिसे, सोच्छसे, सोच्छिहिसे, सोच्छेहिसे

३ पु० सोच्छिइ, सोच्छेइ, सोच्छिहिइ, सोच्छेहिइ
सोच्छिए, सोच्छेए, सोच्छिहिए, सोच्छेहिए इत्यादि

आर्ष प्राकृतमां वपराएलां बीजां केटलांक अनियमित रूपो:

(भोक्ष्यामः) — भोक्खामो
(भविष्यति) — भविस्सइ
(करिष्यति) — करिस्सइ
(चरिष्यति) — चरिस्सइ
(भविष्यामि) — भविस्सामि
(भू-भो+ष्यामि) — होक्खामि

[यादीः काशी मिथिला अने नवद्वीप तरफना लोको 'ष' ने बदले 'ख' नुं उच्चारण करे छे पथी 'ष्यामि' नुं 'ख्यामि' उच्चारण थतां उक्त 'होक्खामि' रूप नीपज्युं जणाय छे: 'ष्' अने 'ख' लखवामां सरखा होवाथी ए बन्नेना उच्चारणमां पण समानता आवी गएली लागे छे.]

अमु (अदस्) आ [नरजाति]

	एकवचन	बहुवचन	
१	अह अमू असो (असौ)	अमुणो अमवो अमउ अमओ अमू	(अमी)
२	अमुं (अमुम)	अमुणो अमू	(अमून्)
७	अयम्मि इअम्मि अमुम्मि (अमुष्मिन्)	अमूसु अमूसुं	(अमीषु)

बाकी बधां 'भाणु'नी प्रमाणे

अमु (अदस्) आ [नान्यतरजाति]

	एकवचन	बहुवचन	
१	अह (अदः) अमुं	अमूइं अमूइँ अमूणि	(अमूनि)
२	,, ,,	,, ,,	,, ,,

बाकी बधां 'अमु'नी प्रमाणे

इकारांत अने उकारांत शब्दो [नरजाति]

सारहि (सारथि) सारथि–रथ हांकनारो

वरदंसि (वरदर्शिन्) उत्तम रीते जोनार

माराभिसंकि (माराभिशङ्किन्) मार–तृष्णा–थी शंकित रहेनार दूर रहेनार–तृष्णाथी डरनारो

वाहि–(व्याधि) व्याधि–रोग

महासड्ढि (महाश्रद्धिन्) मोटी-अचल-श्रद्धावाळो

तवस्सि (तपस्विन्) तपस्वी

उवाहि (उपाधि) उपाधि-प्रपंच

पवासि (प्रवासिन्) प्रवास करनार

पहु (प्रभु) प्रभु-प्रभावशाळी-समर्थ

तंतु (तन्तु) तांतणो

महातवस्सि (महातपस्विन्) मोटो तपस्वी

समत्तदंसि (सम्यक्त्वदर्शिन्) सत्यने जोनार-समजनार-आचरनार

पसु (पशु) पशु

विहु (विधु) विधु-चंद्र

जंतु (जन्तु) जंतु-प्राणी-जीवजंत

जोगि (योगिन्) योगी-जोगी

केसरि (केसरिन्) केसरावाळो याळवाळो-सिंह-केसरीसिंह

मंति (मन्त्रिन्) मंत्री-कारभारी

चक्कवट्टि (चक्रवर्तिन्) चक्र फेरवनार-चक्रवर्ती राजा

वसु (वसु) वसु-धन, पवित्र मनुष्य

संभु (शम्भु) शंभु-सुखनुं स्थान-महादेव

संकु (शङ्कु) शंकु-खीलो

सामान्य शब्दो [नरजाति]

मग्ग (मार्ग) मार्ग-माग

मार (मार) मारनारो-तृष्णा

दुस्सीस, दुस्सिस्स (दुश्शिष्य) दुष्ट शिष्य-विद्यार्थी

ववहारिअ (व्यावहारिक) वहेवारी-वेपारी

थेर (स्थविर) स्थिर बुद्धिवाळो-पाकट-वयोवृद्ध संत

गग्ग (गार्ग्य) गर्गनो पुत्र-ए नामनो एक ऋषि

वेवाहिअ (वैवाहिक) वेवाई

ववहार (व्यवहार) व्यवहार–वेव्हार –वेपार

कंसआर } (कांस्यकार) कंसारो
कंसार

लेहसालिअ (लेखशालिक) निशाळिओ–निशाळे भणवा जनार

सुमिण
सिमिण
सुविण
सिविण } (स्वप्न) स्वप्न–सपनुं–सोणु

गणहर } (गणधर) गणने धारण करनार–समूहनी व्यवस्था करनार–आचार्य
गणधर

अणागम } (अन्+आगम) न आववु ते–अनागमन
अनागम

कण्ण (कर्ण) कान, कानो

विराग (विराग) रागथी विरुद्ध भाव–वैराग्य

विप्परियास (विपर्यास) विपर्यास–विपरीतता–भ्रांति

सढ (शठ) शठ–लुच्चो

अकम्म (अकर्मन्) कर्म रहित –निर्मळ–पवित्र

सामान्य शब्दो [नान्यतर जाति]

रूव (रूप) रूप–वस्तु–पदार्थ

कम्म (कर्मन्) कर्म–पुण्यपापनी प्रवृत्ति

कुंपल (कुड्मल) कुपळ–फणगो

जाण (यान) यान–वाहन

मच्चुमुह (मृत्युमुख) मृत्युनुं मुख–मोतनुं मोढुं

जुम्म
जुग्ग } (युग्म) युग्म–जोडु–जोडी

छणपय } (क्षणपद) हिंसा–हिंसानु स्थान
छणपअ

मरण (मरण) मरण–मोत

धम्मजाण (धर्मयान) धर्मरूप वाहन–धर्मनुं वाहन, धर्मस्थान उपर लई जवानुं वाहन

महब्भय (महाभय) मोटो भय–मोटी बीक

पुच्छ (पुच्छ) पूछडी

वयण (वचन) वचन–वेण

वयण (वदन) वदन–मुख

विशेषण

तिम्म } (तिग्म) तीक्ष्ण-तेजदार-तेज
तिग्ग }

पुण्ण (पुण्य) पुण्य-पवित्र काम

पंत (प्रान्त) अंतनुं-छेवटनुं-वापरतां वधेलुं

विब्भल } (विह्वल) विह्वल-भांभळो-गभराएल
विहल }

जोइअ } (योजित) जोडेलुं
जोइय }

डज्झमाण (दह्यमान) दाझतु-बळतुं

पुण्ण (पूर्ण) पूर्ण-भरेलो-संपत्तिवाळो

तुच्छ (तुच्छ) तुच्छ-रांक-अधूरो

पन्नत्त (प्रज्ञप्त) प्रज्ञापेलुं-जणावेलुं

लुक्ख } (रूक्ष) लूखुं, आसक्ति विनानुं
लूह }

सीलभूअ (शीलभूत) शीलभूत-सदाचाररूप

अव्यय

इत्थं (इत्थम्) ए प्रकारे

तु (तु) तो

ईसि } (ईषत्) ईषत्-थोडुं जरा-मात्र
ईसिं }

इह (इह) आमां-अहीं

दाणि }
दाणिं } (इदानीम्) हमणां-आजकाल
इयाणि }
इयाणिं }

एअं (एतत्) ए

उप्पिं }
अवरिं } (उपरि) उपर
उवरिं }
उवरि }

धातुओ

विहर् (वि+हर्) विहरवुं-फरवु

डस् (दंश) डसवु-करडवु

पगब्भ् (प्र+गल्भ) प्रगल्भ थवुं-बडाइ मारवी

अमराय् } (अमराय) अमरनी पेठे रहेवु-पोतानां जातने अमर मानवी
अमरा }

अइवाअ (अति+पात) अतिपात करवो-हणवुं

विसीअ (वि+षीद) विषाद पामवो-खेद करवो

कत्थ् (कत्थ) कथवुं-कहेवुं, वखाणवुं

फुट्ट् (स्फुट) स्फुट थवुं-खीलवुं-फुटी नीकळवुं

विचिंत् (वि-चिन्त) चिंतववुं-विशेष चिंतववुं

विंध् (विध्य) वींधवुं

उक्कुद् (उत्+कूर्द) उंचे कूदवुं अद्धर ऊछळवुं

भञ्ज्, भंज् (भञ्ज) भांजवुं-भांगवुं

अवसीअ (अव+सीद) अवसाद पामवो-खूंचवुं

लिप्प् (लिप्य) लेपावुं-खरडावुं

संजम् (सं+यम) संजमवुं-संयम करवो

पडिकूल् (प्रति+कूल) प्रतिकूल थवुं-विपरीत थवुं

सर् (स्मर) स्मरण करवुं

पमुच्च् (प्र+मुच्य) प्रमुक्त थवुं-तद्दन छूटी जवुं

सेव् (सेव्) सेववुं

विज्ज् (विद्य) विद्यमान होवुं

हिंस (हिंस) हिंसा करवी-हणवुं

उवे (उप+इ) पासे जवुं-पामवुं

वाक्यो

पंडितो हरखाशे नहि अने कोप करशे नहि

निर्दोष पुरुष उपाधिनी पासे नहि जशे

वृद्ध पुरुषो छेपटनुं अने लूखुं अन्न खाशे

अमे बे, ए प्रकारे आचार्यने वारंवार कहीशुं

ए विद्यार्थी बडाई मारशे नहि पण संयम राखशे

मारथी दूर रहेनारो मरणथी मुकाशे

महाश्रद्धावाळो तुं विह्वल न थईश

हुं ए साचुं कहीश

सारथी बळदोने साचवशे अने वाहनमां जोडशे

राजा धर्मध्यानवडे साधुना मठ तरफ जशे

तेओ बे, पशुना कान वींधशे नहि

तेणे वारंवार पाणी पीधुं
तमे बे, ए मध अने घी
न खाशो
जे तमे कहेशो ते हुं जो-
ईश अने सांभळीश
तेओ बेए रोज दहिं खाधुं
तपस्वी योगी, व्याधिओथी
बीशे नहि
मूढ पुरुषो दुःखने लीधे
विपर्यास पामे छे
वरसाद आवशे त्यारे
खेतरमां फणगा फूटशे
गार्ग्य मुनि गणधर थशे
तु कहीश अने हुं सांभळीश
वीर पुरुष हिंसाथी ले-
पाशे नहि
तपस्वी, महातपस्वी सा-
धुओने नमशे
वननो केसरी वनना हाथीने
तेना माथामां छेदशे
आचार्य, पूर्ण अने तुच्छ
बन्नेने धर्म कहेशे

समणे महावीरे जहा पुण्ण-
स्स कत्थिहिइ तहा तु-
च्छस्स कत्थिहिइ
धम्मं वेच्छं
सुहं भोच्छं

सभ्यने जोनार शंभु धनने
इच्छशे नहि
जोडेला शठ बळदो वाह-
नने भांगी नाखशे
दुष्ट शिष्यो गुरु पासे जशे
नहि अने खेद पामशे
तमे बे तीक्ष्ण वचन न
कहेशो
'बधाओने जीवित प्रिय
छे' एम कोण नहि
अनुभवशे
[illegible] अनागम नथी
चक्रवर्तीनो मंत्री धनुपवडे
शोभशे
वरदर्शी जिनोए सत्यनो
मार्ग जणावेलो छे
बाळकोना संगथी सर्यु
हुं कदी रोईश नहि
दुष्ट शिष्यो भणशे नहि
पण निरंतर बडाइ मा-
रशे अने कूदशे

एगे डसइ पुच्छम्मि, एगे
विंधइ अभिक्खणं
दुक्खं महब्भयं ति वोच्छं
जिणस्स वयणाइं कण्णेहिं
सोच्छं

दाणं दाहं, पुण्णं काहं ततो य दुक्खं छेच्छं

रूवेसु विरागं गच्छं

धम्मेण मरणाओ मोच्छं

वीरो भडो जुद्धं काहिइ

रायगिहं गच्छं, महावीरं वंदिस्सं

नरवई बम्हणे पसू वसू य दाहिइ

गुरुणो सच्चमाहंसु

अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ

तुमं किं किं पावं, पुण्णं च कासी

सद्दे उक्कुद्दिहिए, पराभिस्सति च

तस्स मुहं दच्छं तेण य सुहं पाविस्सं

जोइया धम्मजाणम्मि तं भज्जंति दुस्सिस्सा

वीरे छणपएण ईसिमवि न लिप्पिहिइ

जेहिं अहं विसोएस्सामि तेहिं दुट्ठसीसेहिं किं मज्झ?

कयावि सुविणे वि न रोच्छं

सीलभूओ मुणी जगे विहरिस्सइ

अह सो सारही विचिंतेहिइ

जं वोच्छं तं सोच्छिसे

नाऽणागमो मच्चुमुहस्स अत्थि

तवेणं पावाइं भेच्छं

दुट्ठो विज्जत्थी तु आयरियाणं वयणमभिक्खणं पडिकूलेइ

सो दुद्धं पासी धयमवि

महासड्ढी अमरायइ

---

८६ संधि तो बे पदोमां ज थाय छे छतां एक पदमां पण संधि थएला केटलाक प्रयोगो मळे छेः–

काहि + इ = काही, काहिइ. दाहि+इ = दाही, दाहिइ वगेरे

जुओ टिप्पण ६४ मुं.

पाठ १४ मो

ऋकारान्त शब्दो

ऋकारांत नामोनी बे जात छे – केटलांक ऋकारांत नाम संबंधसूचक विशेष्यरूप छे. अने केटलांक ऋकारांत नाम मात्र विशेषणरूप छे.

संबंधसूचक विशेष्यरूप — जामातृ, पितृ, भ्रातृ वगेरे.
मात्र विशेषणरूप — कर्तृ, दातृ, भर्तृ वगेरे.

ऋकारांत — (संबंधसूचक विशेष्यरूप)

१ प्रथमा अने द्वितीयाना एकवचन सिवाय बधी विभक्तिओमां संबंधसूचक विशेष्यरूप ऋकारांत नामना अंत्य 'ऋ' नो विकल्पे 'उ' थाय छे. जेमके—

पितृ = पितु, पिउ. जामातृ = जामातु, जामाउ. भ्रातृ = भातु, भाउ.

२ संबंधसूचक विशेष्यरूप ऋकारांत नामना अंत्य 'ऋ' नो बधी विभक्तिओमां 'अर' थाय छे. जेमके —

जामातृ = जामातर, जामायर. पितृ = पितर, पियर. भ्रातृ = भातर, भायर.

३ मात्र प्रथमाना एकवचनमां उक्त नामना अंत्य 'ऋ' नो 'आ' विकल्पे थाय छे. जेमके —

पितृ = पिता, पिया. जामातृ = जामाता, जामाया. भ्रातृ = भाता, भाया.

४ फक्त संबोधनना एकवचनमां ए नामोना अंत्य 'ऋ' नो 'अ' अने 'अरं' ए बन्ने विकल्पे थाय छे. जेमके —

पितृ = पित ! पितरं ! पितरो ! पितरा !
पिय ! पियरं ! पियरो ! पियरा !

जामातृ= जामात ! जामातरं ! जामातरो ! जामातरा !
जामाय ! जामायरं ! जामायरो ! जामायरा !

भ्रातृ = भात ! भातरं ! भातरो ! भातरा !
भाय ! भायरं ! भायरो ! भायरा !

ऋकारान्त (विशेषणसूचक)

१ उक्त नियम पेलो अने त्रीजो – संबंधसूचक विशेष्यरूप ऋकारांत नामने लगतो छे ते, आ विशेषणसूचक ऋकारांत नामोने पण लगाडवानो छे. जेमके—

दातृ=दातु, दाउ. कर्तृ=कत्तु. भर्तृ=भत्तु } नियम पेला प्रमाणे.

दाता, दाया. कत्ता. भत्ता } नियम त्रीजा प्रमाणे.

२ विशेषणरूप ऋकारांत नामना अंत्य 'ऋ'नो बधी विभक्तिओमां 'आर' थाय छे. जेमके —

दातृ=दातार, दायार. कर्तृ=कत्तार. भर्तृ=भत्तार.

३ फक्त संबोधनना एकवचनमां आ विशेषणरूप ऋकारांत नामोना अंत्य 'ऋ'नो 'अ' विकल्पे थाय छे. जेमके—

दातृ = दाय ! दायार ! दायारो ! दायारा !
कर्तृ = कत्त ! कत्तार ! कत्तारो ! कत्तारा !
भर्तृ = भत्त ! भत्तार ! भत्तारो ! भत्तारा !

उक्त बन्ने प्रकारनुं ऋकारांत नाम उपर जणावेली साधनिका प्रमाणे प्रथमाथी सप्तमी सुधीनी बधी विभक्ति-

ओमां अकारांत अने उकारांत बने छे तेथी तेना अकारांत अंगनां रूपाख्यानोनी साधनिका 'वीर'नी पेठे समजी लेवी अने उकारांत अंगनां रूपाख्यानोनी साधनिका 'भाणु'नी पेठे समजी लेवी.

रूपाख्यानो

पिउ, पिअर (पितृ)

एकवचन	बहुवचन
१ पिअरो, पिआ (पिता)	पिअरा (पितरः) पिउणो, पिअवो, पिअओ पिअउ पिऊ
२ पिअरं (पितरम्)	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ (पितॄन्)
३ पिअरेण, पिअरेणं	पिअरेहि, पिअरेहिं, पिअरेहिँ
पिउणा (पित्रा, पितृणा ?)	पिऊहि, पिऊहिं, पिऊहिँ (पितृभिः)
४ पिअरस्स	पिअराण, पिअराणं
पिउणो, पिउस्स (पितुः, पितृणः ?)	पिऊण, पिऊणं (पितृणाम्)
५ पिअरत्तो, पिअराओ, पिअराउ, पिअराहि, पिअराहिंतो, पिअरा	पिअरत्तो, पिअराओ, पिअराउ, पिअराहि, पिअरेहि, पिअराहिंतो, पिअरेहिंतो, पिअरासुंतो, पिअरेसुंतो
पिउणो, पिउत्तो, पिऊओ, पिऊउ (पितृतः, पितुः, पितृणः?) पिऊहिंतो	पिउत्तो, पिऊओ, पिऊउ, (पितृतः) पिऊहिंतो (पितृभ्यः) पिऊसुंतो

६ पिअरस्स	पिअराण, पिअराणं
पिउणो, पिउस्स, (पितुः, पितृणः ?)	पिऊण, पिऊणं (पितॄणाम्)
७ पिअरंसि, पिअरम्मि, पिअरे, (पितरि)	पिअरेसु, पिअरेसुं
पिउंसि, पिउम्मि	पिऊसु, पिऊसुं (पितृषु)
सं० पिअरं ! पिअ ! (पितः) पिअरो ! पिअरा ! पिअर !	पिअरा ! (पितरः)
	पिउणो ! पिअवो, पिअओ, पिअउ, पिऊ

दाउ, दायार (दातृ)

१ दायारो, दाया (दाता)	दायारा (दातारः) दाउणो, दायवो, दायओ, दायउ, दाऊ
२ दायारं (दातारम्)	दायारे, दायारा
	दाउणो, दाऊ (दातॄन्)
३ दायारेण, दायारेणं	दायारेहि, दायारेहिं, दायारेहिँ
दाउणा, (दात्रा, दातृणा)	दाऊहि, दाऊहिं, दाऊहिँ (दातृभिः)
४ दायारस्स	दायाराण, दायाराणं
दाउणो, दाउस्स (दातुः, दातृणः)	दाऊण, दाऊणं (दातॄणाम्)
५ दायारत्तो, दायाराओ, दायाराउ	दायारत्तो, दायाराओ, दायाराउ,

दायाराहि, दायाराहिंतो, दायारा	दायाराहि, दायारेहि दायाराहिंतो, दायारेहिंतो दायारासुंतो, दायारेसुंतो
दाउणो, दाउत्तो, दाऊओ (दातृतः दातुः, दातृणः)	दाउत्तो, दाऊओ, दाऊउ (दातृतः)
दाऊउ, दाऊहिंतो	दाऊहिंतो, दाऊसुंतो, (दातृभ्यः)
६ दायारस्स	दायाराण दायाराणं
दाउणो, दाउस्स (दातुः दातृणः)	दाऊण, दाऊणं, (दातॄणाम्)
७ दायारंसि, दायारम्मि, दायारे (दातरि)	दायारेसु, दायारेसुं
दाउंसि, दाउम्मि	दाऊसु, दाऊसुं (दातृषु)
सं० दायार ! दाय ! (दातः)	
दायारो ! दायारा !	दायारा ! (दातारः) दाउणो, दायवो, दायओ, दायउ, दाऊ

उपर उपरथी जोनार एम समजशे के, ऋकारांत नामनां संस्कृत रूपाख्यानो अने आ – ऋकारांतनां प्राकृत – रूपाख्यानो वच्चे बहु थोडुं मळतापणुं छे. पण खरी रीते तेम नथी. कारण के ऋकारांतनां संस्कृत रूपाख्यानोनी साधनिकाने व्यापकरूपमां लईए तो तेने ज मूळ आधार तरीके अवलंबीने उक्त बधां रूपो उच्चारणना भेदथी तैयार थयां छे. जेमके — संस्कृतमां विशेषणवाचक ऋकारांत नामना अंत्य 'ऋ'नो 'आर' थाय छे अने संबंधवाचक विशेष्यरूप ऋकारांत नामना अन्त्य 'ऋ'नो 'अर' थाय छे ते ज

पद्धति प्राकृतमां छे. मात्र ते 'आर' अने 'अर' संस्कृतमां प्रथमामां अने द्वितीयाना एकवचन-द्विवचनमां थाय छे अने 'अर' सप्तमीना एकवचनमां पण थाय छे त्यारे प्राकृतमां, ते बन्ने (आर - अर) विभक्तिमात्रमां थाय छे.

वळी, प्राकृतमां 'ऋ'नुं उच्चारण ज नथी तेथी 'पितृ' के 'दातृ' वगेरे शब्दोना अंत्य 'ऋ' नो 'उ' थतां तेनां 'पितु' के 'दातु' वगेरे अंगो बने छे अने तेमांनो 'त्' लोपातां 'पिउ' के 'दाउ' अंगो पण थाय छे. आ रीते 'पिउ' के 'दाउ' वगेरेनो 'पितृ' वा 'दातृ' वगेरे शब्दो साथे सीधो संबंध छे.

तथा, संस्कृतमां नान्यतरजातिवाळा विशेषणवाचक ऋकारांत शब्दनां 'दातृणा' 'दातृणः' वगेरे 'ण' वाळां वैकल्पिक रूपो नीपजे छे अने ते रूपोनी साथे 'दाउणा' 'दाउणो' वगेरे 'ण' वाळां प्राकृत रूपोनी ठीक ठीक समानता छे ए ध्यानमां राखवा जेवुं छे अथवा आगळ इकारांत उकारांत रूपोनी साधनिकामां जे रीते 'णो' नी उपपत्ति समजावी छे ते रीते पण ए दाउणा, दाउणो वगेरे रूपो संस्कृत रूपो साथे गाढ संबंध धरावे छे. ए रूपोनो संस्कृत रूपो साथेनो गाढ संबंध नीचेनां उदाहरणोथी विशेष स्पष्ट थशे :

सं०	प्रा०	सं०	प्रा०
पिता	पिआ	दाता	दाया
पितरः	पिअरा	दातारः	दायारा
पितरम्	पिअरं	दातारम्	दायारं

पितॄन्	पितू-पिऊ
पितृभिः	पितूहि, पिऊहि
पितॄणाम्	पितूण, पिऊण
पितरि	पिअरे
पितः	पित !-पिअ !

दातॄन्	दातू-दाऊ
दातृणा	दातुणा-दाउणा
दातृभिः	दातूहि, दाऊहि
दातृणः	दातुणो,-दाउणो
दातॄणाम्	दातूण-दाऊण
दातरि	दायारे
दातः	दात ! दाय !

[यादीः-पिआ, पिअरं वगेरे रूपोमां 'आ' के 'अ'ने स्थाने 'या' के 'य'नुं पण चलण छे. पिआ, पिया. पिअरं, पियरं. पिअरे, पियरे वगेरे]

संबंधवाचक ऋकारांत [नरजाति]

भाउ, भायर } (भ्रातृ) भाई

पिउ, पियर } (पितृ) पिता

जामाउ, जामायर } (जामातृ) जमाइ

विशेषणवाचक ऋकारांत [नरजाति]

दाउ, दायार } (दातृ) दातार

भत्तु, भत्तार } (भर्तृ) भर्ता-भरतार—पोषण करनार

कत्तु, कत्तार } (कर्तृ) करनार

ऋकारांत [नान्यतरजाति]

ऋकारांतनां 'कत्तार' वगेरे अकारांत अंगनां रूपाख्यानो पेलो बे विभक्तिमां 'कमल'नी जेवां समजवानां छे

अने 'कत्तु' वगेरे उकारांत अंगनां रूपाख्यानो मात्र पेली बे विभक्तिना बहुवचनमां 'महु'नी जेवां समजवानां छे तथा बाकी बधां संबोधनसहित रूपाख्यानो नरजातिक रूपाख्यानो प्रमाणे साधी लेवानां छे. जेमके—

अकारांत अंग–दायार

१ दायारं	दायाराणि, दायाराइं, दायाराइँ
२ दायारं	दायाराणि, दायाराइं, दायाराइँ
सं० दाय ! दायर !	दायाराणि, दायाराइं, दायाराइँ

बाकी बधां नरजाति प्रमाणे

उकारांत अंग–दाउ

[यादी: उकारांत अंग एकवचनमां वपरातुं नथी. जुओ पाठ १४ नि० १]

१–२ सं०	दाऊणि, दाऊइं, दाऊइँ (दातृणि)

अकारांत अंग–सुपिअर (सुपितृ)

१ सुपिअरं	सुपिअराणि, सुपिअराइं सुपिअराइँ
२ सुपिअरं	सुपिअराणि, सुपिअराइं, सुपिअराइँ
सं० सुपिअरं, सुपिअर! सुपिअ !	सुपिअराणि, सुपिअराइं, सुपिअराइँ

उकारांत अंग–सुपिउ (सुपितृ)

१–२ सं०	सुपिऊणि, सुपिऊइं, सुपिऊइँ (सुपितृणि,)

सामान्य शब्दो [नरजाति]

कुक्खि } (कुक्षि) कूख
कुच्छि }

वाणिअ (वाणिज) वाणिओ

धणि (धनिन्) धनवाळो–धणी

बहिणीवइ (भगिनीपति) बनेवी

नेहालु (स्नेहालु) नेहाल–स्नेहाळ –स्नेहवाळो

छाइल्ल } (छायलु) छायाळ–
छायालु } छायावाळु

जडालु (जटाल) जटालु–जटावाळु

रसाल } (रसालु) रसाळ–रसवाळु
रसालु }

अग्गि (अग्नि) अग्नि–आग

रस्सि (रश्मि) राश–लगाम

झुणि (ध्वनि) झण झणझणाट, अवाज–ध्वनि

अच्चि (अर्चिस्) आंच–जाळ

आस (अश्व) अश्व–घोडो

पोट्टिय (पौष्टिक) पोठिओ–महाठवनो पोठियो

कवड्ड (कपर्द) कोडो–कोडी

गड्डह } (गर्दभ) गधेडो
गद्दह }

धन्न (धान्य) धान्य

उट्ट (उष्ट्र) उट

वच्छ (वत्स) बच्चुं–सतान–वाछडो

वच्छयर (वत्सतर) वच्छेरो

अंध } (अन्ध) आंधळो
अंधल }

देवर (देवर) देवर–देर–दियर

जेट्ट (ज्येष्ठ) मोटो, जेठ

रुक्ख (वृक्ष) रुंख–झाड

मरहट्ठ (महाराष्ट्र) मोटो देश, महाराष्ट्र देश

मरहट्ठीअ (महाराष्ट्रीय) महाराष्ट्रनो वतनी–मराठी लोक

मूअ (मूक) मूंगो

घोडअ (घोटक) घोडो

तुरंगम (तुरगम) तरत जनार–तुरग–घोडो

अक्क (अर्क) सूर्य, आकडानुं झाड

नग्ग (नग्न) नागो, लुच्चो

सुरट्ठ (सुराष्ट्र) सोरठ देश

सुरट्ठीअ } (सुराष्ट्रीय, सौराष्ट्रीय) सोरठनो
सोरट्ठीअ } वतनी–सोरठी लोक

सामान्य शब्दो [नान्यतरजाति]

अंसु (अश्रु) आंसु
लोहिअ (लोहित) लोही
सत्थिल्ल | सत्थि (सक्थि) साथळ
तालु (तालु) ताळवुं
दारु (दारु) दारु-लाकडुं
बार | दुवार (द्वार) बार-बारणुं
णडाल (ललाट) निलाट-ललाट
भाल (भाल) भाल-कपाळ-ललाट
वरिस (वर्ष) बरस
दिण (दिन) दिन-दन-दनियुं-दिवस
जोव्वण (यौवन) जोबन-यौवन
दीवेल्ल | दीवतेल्ल (दीपतैल) दीवेल-दीवो बाळवानु तेल
कोहल (कूष्माण्ड) कोळुं
दहण (दहन) देण-दहन-आग-बळवुं
तेल्ल (तैल) तेल
तंब (ताम्र) तांबु
कंजिय (काञ्जिक) कांजी

विशेषण

पढम (प्रथम) प्रथम-परथम
बिइय | बिइज्ज | दुइय | दुइज्ज (द्वितीय) बीजुं-दूजु
तइय | तइज्ज (तृतीय) त्रीजुं
चउत्थ (चतुर्थ) चोथुं
पंचम (पञ्चम) पांचमुं
छट्ठ (षष्ठ) छट्ठु
सत्तम (सप्तम) सातमुं
अट्ठम (अष्टम) आठमुं
नवम (नवम) नवमुं
दसम (दशम) दशमुं
सवाय (सपाद) सवायु-सवा
दियड्ढ | दिवड्ढ (द्वितीयार्ध) जेमां एक आखं अने बीजुं अडधुं छे ते-दोढ
अड्ढाअ | अड्ढाइअ | अड्ढाइज्ज (अर्धतृतीय) जेमां बे आखां अने त्रीजुं अडधुं छे ते-अढी
अद्धुट्ठ (अर्धचतुर्थ) जेमां त्रण आखां अने चोथु अडधुं छे ते-उठ-साडात्रण
रत्त (रक्त) रातु-रंगेलु
ठड्ढ (स्तब्ध) टाढो-ठंडो-स्तब्ध-जड-थमी गएलुं

अव्यय

अहव } (अथवा) अथवा
अहवा }

अवस्सं (अवश्यम्) अवश्य-अचूक

अत्थं (अस्तम्) आथमवुं-अदर्शन

एगया (एकदा) एकवार

कहि, कहिं (कुत्र) क्यां-कहीं

आम (आम) हा-स्वीकार

अंतो (अन्तर्) अंदर

इओ (इतः) आथी, एथी, वाक्यनो आरंभ, आ बाजुथी

केवलं (केवलम्) केवळ-नकरुं

तहि, तहिं (तत्र) त्यां-तहीं

धातु

अच्चे (अति+इ) अतीत थवुं-पार पामवुं

पडिवज्ज् (प्रति+पद्य) पामवुं-स्वीकारवुं

कोव् (कोप) कोप करवो, कुपित करवु

आगम् (आ+गम्) आववुं

अहिट्ठ (अधि+स्था-तिष्ठ) अधिष्ठान मेळववुं-उपरि थवुं

एस् (एष) एषणा करवी-शोधवुं

परिव्वय् (परि+व्रज्) परिव्रज्या लेवी-बंधन रहित थइ चारे कोर फरवुं

संपाउण् (संप्राप्नु-सम्+प्र+आप्नु) सारी रीते पामवुं

आयय् (आ+दय) आदान करवुं-ग्रहण करवुं

परिदेव् (परि+दिव) खेद करवो

विहड् } (वि+घट) बगडवुं-नाश पामवो
विघड् }

पक्खाल् (प्र+क्षाल) पखाळवु-धोवु

समारंभ् (सम्+आ+रम्भ) समारंभ करवो-हणवु

णिव्विज्ज् (निर्+विद्) निर्वेद पामवो

वाक्यो

मराठाओ ठंडा नथी
तेओनो ए गधेडो रंगेलो छे
घोडो, पोठियो अने उंट धान्य खाशे
मारो बाप जटावाळा मुनिने पाणी आपशे
अमारा बनेवीनो पुत्र वरसे वरसे धन पामशे
तमारा भाईए पोताना जमाईने सवायुं आप्युं
मारा बापना भाइनो घोडो दोड्यो अने पड्यो
अमारा भाइओमां स्नेह नथी
ते मुंगाना भाइने तारा भाइए पखाळ्यो
अढो वरसे साडा त्रण मासे अने दोढ दिवसे अमे आवशुं
तमारो जमाई दिवसे दिवसे निर्वेद पामे छे तेथी तमारुं कुटुंब खेद पामे छे
पांचमे के आठमे दिवसे ते जशे
मुनि मरणनो पार पाम्यो
अने पिताने कुपित नहि करीशुं
तेनो भाई अने जमाई लुच्चा छे
सोरठी लोको स्नेहाळ छे
चोथानी अंदर साडा त्रण छे
अमे शब्दोने ताळवा वडे बोलीशुं
आगनी आंचमां दीवेल पडशे.
तारो बाप अने तेनो भाई केवळ लाकडा माटे लड्या.
तांबा अने लोढामां लोढुं उत्तम छे.
तेना अने तारा कपाळमां अथवा साथळमां में सारां लक्षणो जोयां.
त्यां आकडाना झाडनी पासे बीजुं छायावाळुं अने रसवाळुं एक झाड छे.
एकवार सातमे वरसे ते दातारे बधुं धन आप्युं.
घरमां कांजी क्यां हशे ?
मराठा लोको ज्ञानने ग्रहण करे छे.
घोडानी लगाम कुवामां पडी गइ.
रातो घोडो अने रंगेलुं उंट मार्गमां दोडशे.
तमारा भाइए प्रवज्या लीधी अने मारो भाई सोरठमां उपरी थयो.

सुरट्ठीआ कोहं न काहिंति
तुम्हे सोरट्ठीए घोडए
वक्खाणेह
सोवण्णिओ दहणंसि तंबं
खिवित्था
मूओ केवलं कंजिअं पाहिइ
दुवारंसि कोहलं पडिहिइ
गड्डहो तुरंगमो य दोन्नि
भायरा संति
दिणे दिणे तुमं आसं च
पक्खालिस्सं
तेल्लेण दीवा दीवेहिंति
सो तुज्झ भाया तस्स जामा-
ऊहिं सह गच्छीअ

तस्स पिउणो भाउणो य
• जोव्वणं विघडीअ
मरहट्ठीआ लोहं वयंति
सत्तमंसि वरिसंसि आगमिस्सं
मम भाउणो भालं विसाल-
मत्थि
तस्स छट्ठो भायरो न परि-
व्वयिहिइ
अहं बिइज्जे दिणे दीवेल्लं
पाएहिमि
मम बहिणीवई एगया धणं
संपाउणित्था
पिअ! मम वयणं न सुणि-
हिसि?

९

पाठ १५ मो

विध्यर्थ अने आज्ञार्थ

प्रत्ययो

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	मु	मो[८७]
२ पु०	सु (स्व)	ह (ध्वम्, त)
	हि (हि)	
	इज्जसु	
	इज्जसि, इज्जासि	
	इज्जहि, इज्जाहि[८८]	
	इज्जे	

---

८७ 'मु' अने 'मो' आ बन्ने प्रत्ययो वर्तमानकाळना बहुवचनना प्रत्ययोने मळता आवे छे [जुओ पाठ २ जो] भाषानी प्राकृतताने लीधे ज वर्तमानकाळना प्रत्ययो पण विध्यर्थ अने आज्ञार्थना भावमां भेळाइ गया छे. संस्कृतमां तो वर्तमानकाळ, विध्यर्थ अने आज्ञार्थना प्रत्ययो तद्दन जुदा जुदा छे, ते विध्यर्थ अने आज्ञार्थना संस्कृत प्रत्ययो साथे आ 'मु' 'मो' – प्राकृत – प्रत्ययोनी नहि जेवी ज समानता छे माटे ए बे वच्चेनी सरखामणी अहीं नथी जणावेली.

८८ क्यांय क्यांय आर्षप्राकृतमां बीजा पुरुषना एकवचनमां 'ज्जाएहि' प्रत्यय वपराएलो छे ते, आ 'इज्जाहि' प्रत्ययना उलटासुलटा उच्चारणनु परिणाम जणाय छे.

जेमके:—"मम ते सालिअक्खए पडिनिज्जाएहि"—"मारा ते चोखा पाछा आप" आमां पडि+नी+एज्जाहि=पडिनिएज्जाहि थवाने बदले पडिनिज्जाएहि थयु छे.

इज्जसि, इज्जासि, इज्जहि, इज्जाहि अने इज्जे आ पांचे प्रत्ययो लागे छे तो जुदा जुदा पण विचार करतां ते पांचेनु मूळ एक ज जणाय छे. एक 'इज्जासि' प्रत्ययने पण ए पांचेनुं मूळ कल्पी शकाय खरो, पाली भाषामां प्राकृत 'इज्जासि' अर्थमां 'एय्यासि' प्रत्ययनो उपयोग छे अने 'इज्जासि' ना तथा 'एय्यासि' ए बन्ने तो तद्दन मळता ज छे, प्रा– हसेज्जासि अने पा० हसेय्यासि–ए बन्नेमां कशो भेद ज क्यां छे !

३ पु० उ, तु (तु) न्तु (अन्तु, अन्ताम्)
ए (एत्)
एत, एय (ईत)

धातु

वज्ज् (वर्ज्) वर्जवुं-तजी देवुं
कोव् (कोप्) कोपाववुं
सेव् (सेव्) सेववुं-धारण करवुं आश्रय लेवो
छिंद् (छिनद्) छेदवुं-हणवुं-मारवुं
लभ् (लभ्) लाभवुं-मेळववुं
भव् (भव्) थवुं-होवुं
गवेस् (गवेष्) गवेषवुं-शोधवु
विकिर् } (वि+कि) वेरवुं
विइर् }
विप्पजह् (वि+प्र-जहा) त्याग करवो-दूर करवुं
कप्प् (कल्प्) खपवुं-उपयोगमां लेवुं
हण् (हन्) हणवुं
कुव्व् (कुरु) करवुं
पास् } (पश्य) जोवुं
पस्स् }
संजल् (सं+ज्वल्) बळवु-कोप करवो

एस् (एष्) एषवुं-शोधवुं
गच्छ् (गच्छ्) जवुं-पामवुं
अहिट्ठ् (अधि+ष्ठा) अधिष्ठित थवुं-अधिकार मेळववो
भा (भी) बीवुं
जिण् (जि) जीतवुं-जय मेळववो
खल् (स्खल्) स्खलित थवुं-दूर थवुं
निद्धुण् (निर्+धुना) खखेरवुं-दूर करवुं
वस् (वस्) वसवुं-रहेवुं
संपाउण् (संप्राप्नु=सम्+प्र+आप्+नु) संप्राप्त करवुं-पामवु
पमाय् (प्र+माद्य) प्रमाद करवो-आळस करवी
विणस्स् (वि+नश्य) वणसी जवुं-नष्ट थवु-बगडवु
आलोट्ट् (आ+लुठ्य) आळोटवुं

१ उपर्युक्त बधा प्रत्ययो लागतां धातुना अकारांत अंगनां अंत्य 'अ'नो 'ए' विकल्पे थाय छे. जेमकेः—
हस्+उ-हस्+अ+उ=हसेउ, हसउ
हस्+मो-हस्+अ+मो=हसेमो, हसमो
['अ' विकरण माटे जुओ पाठ १ नि० १]

२ प्रथम पुरुषना प्रत्ययो लागतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ'नो 'आ' तथा 'इ' विकल्पे थाय छे. जेमके—

हस्+मु–हस्–अ+मु=हसामु, हसिमु, हसमु

३ बीजा पुरुषना स्वरथी शरू थता (इज्जसु वगेरे) प्रत्ययो अकारांत अंगने ज लागे छे. जेमकेः—

हस्+अ+इज्जसु=हसेज्जसु

हस्+अ+इज्जसि=हसेज्जसि

प्रत्युदाहरण—

जा+सु=जासु

जा+हि=जाहि

[यादीः जेमने छेडे 'अ'कार नथी एवा 'जा' वगेरे धातुओने 'इज्जसु' वगेरे प्रत्ययो नथी लागता]

४ अकारांत अंगने लागता 'हि' प्रत्ययनो प्रायः लोप थाय छे अने क्यांय ए अंगना अंत्य 'अ'नो 'आ' पण थाय छे.

हस्+अ+हि=हस

गच्छ्+अ+हि=गच्छाहि

५ कोइक ज प्रयोगमां त्रीजा पुरुषनो (एकवचननो) 'उ' के 'तु' प्रत्यय लागता पूर्वना 'अ'नो 'आ' पण थाय छे. जेमकेः—

सुण्+अ+उ=सुणाउ, सुणउ, सुणेउ

रूपाख्यान

	एकव०	बहुव०
१ पु०	हसमु, हसामु हसिमु, हसेमु	हसमो, हसामो हसिमो, हसेमो
२ पु०	हससु, हसेसु हसाहि, हसहि, हस हसिज्जसु, हसेज्जसु	हसह, हसेह

हसिज्जसि, हसेज्जसि
हसिज्जासि, हसेज्जासि
हसिज्जहि, हसेज्जहि[८९]
हसिज्जाहि, हसेज्जाहि
हसिज्जे, हसेज्जे

३ पु०	हसउ, हसेउ	हसंतु, हसेंतु, हसिंतु
	हसतु, हसेतु	
	हसे, हसए	
	हसेत	
	हसेय	
	सर्वपुरुष / सर्ववचन } हसेज्ज, हसेज्जा	

[ज्ज, ज्जा माटे जुओ पाठ ३ नि० ६]

हो

१३मा पाठमां बताव्या प्रमाणे प्रत्येक स्वरांत धातुनां छ अंगो बनाववां अने ए तैयार थएलां अंगो द्वारा प्रस्तुत विध्यर्थ अने आज्ञार्थनां रूपो साधी लेवां. जेमकेः—

अंग–		
होअ–	होअमु, होआमु	होअमो, होआमो
	होइमु, होएमु	होइमो, होएमो
होएज्ज / होएज्जा }	होएज्जमु, होएज्जामु	होएज्जमो, होएज्जामो
	होएज्जिमु, होएज्जेमु	होएज्जिमो, होएज्जेमो
हो–	होमु	होमो
होज्ज / होज्जा }	होज्जमु, होज्जामु	होज्जमो, होज्जामो
	होज्जिमु, होज्जेमु	होज्जिमो, होज्जेमो

[विकरण ‘ अ ’ तथा ज्ज, ज्जा माटे जुओ पाठ ३ नि० ७–८]

---

८९ हस्+अ+इज्जहि=हसेज्जहि [स्वरलोप अने ‘ इ ’ना ‘ ए ’ माटे जुओ टि० १० मुं अने ५ मुं]

पूर्व प्रमाणे 'हो' वगेरे बधा स्वरांत धातुओनां छ अंगो बनावी विध्यर्थ अने आज्ञार्थनां बधां रूपो साधवानां छे.

सामान्य शब्दो

नरजाति

आयरिय (आचार्य) आचार्य–धर्मगुरु, विद्यागुरु
पाण (प्राण) प्राण–जीव
पाणि (प्राणिन्) प्राणी
असंजम (असंयम) असंयम
अप्प (आत्मन्) आत्मा–आप–पोते
हरिण (हरिण) हरण
दाडिम (दाडिम) दाडम
तिल (तिल) तल
छेअ (छेद) छेडो
बोक्कड (बर्कर) बोकडो–बकरो
गब्भ (गर्भ) गाभो
पायय (पादक) पायो
वंसअ (वंशक) वांसो–पीठ
वोज्झ (वह्य) बोजो
भारय (भारक) भारो
चित्त (चित्र) एक सारथिनुं नाम

नान्यतरजाति

सावज्ज (सावद्य) पापप्रवृत्ति
सासुरय (श्वाशुरक) सासरुं–सासरानुं घर
निवाण (निपान) नवाण–जलाशय
विहाण (विभान) वहाणुं–प्रातः–काळ–सवार
अंडय (अण्डक) इंडु
पल्लाण (पर्याण) पलाण
सल्ल (शल्य) साल
चउव्वट्टय (चतुर्वर्त्मक) चौटुं–चार रस्ता
चेण्ह (चिह्न) चेन–चाळा
छिद्दय (छिद्रक) छीडुं
मोत्तिअ (मौक्तिक) मोती
अमिअ (अमृत) अमी–अमृत
घय (घृत) घी

विशेषण

लण्ह (श्लक्ष्ण) नानुं
पोअ (प्रोत) परोव्युं–परोवेलुं
पत्त (प्राप्त) पहोंच्युं–पहोंच्यु
चउरंस / चउरस्स (चतुरस्र) चोरस
तिण्ह (तीक्ष्ण) तीणुं–अणीदार
अहिनव (अभिनव) अवनवुं–नवीन
उच्छिट्ठ (उच्छिष्ट) एठुं–अजीठुं
तंस (त्र्यस्र) त्रांसुं–त्रिकोण

अव्यय

णवर -नयुं-केवळ
णाणा (नाना) अनेक प्रकारनुं
बहिद्धा (बहिर्धा) बहार

तहिं (तत्र) त्यां-तइं
जहिं (यत्र) ज्यां-जइ
कहिं (कुत्र) क्यां-कइं

वाक्यो

तुं इंडाने न हणजे.
ते पापप्रवृत्तिने न करे
हे चित्र ! जा अने हरणने शोध
मुनि असंजमने वर्जे
तुं चौटामां जा अने दाडमने लाव
पोते पोताने शोध बहार न भम
तेनां बधां शल्यो बळो
सवारमां तमे सासराने घरे जजो
गाभामांथी ब्राह्मणना तल वेराया
तेने माथे गाभानो भार मूक
पापोनो छेडो क्यां छे?
तेनी त्रांसी आखमां तीणुं शल्य पडशुं

बागना छोंडामांथी हरणो अने बोकडा आवशे
ब्राह्मण ! बोकडानो होम न कर पण तलनो होम कर
सर्व भूतोमां प्रम करो
प्राणीना प्राण न हणो
घरना पायामां घी नाख
परोवेलां नवां मोतीनो हार जो
घोडा उपर पलाण राख
पाणीनां नवाण तो सौ बांधे छे तमे घीनां नवाण बांधो.
बकरो चाळा करे छे अने एटुं खाय छे
तेना वांसामां नानो तल छे
ज्यां त्यां चोरस चौटामां मजूरो बोजो वहे छे.

सा गामं पत्तो
सावज्जं वज्जए मुणी
ण कोवए आयरियं
न हणे पाणिणो पाणे
संनिहिं न कुविज्जा माहणो
सवुडो निध्धुणे पावस्स रजं
सव्वं गंथं कलहं च विप्प-
जहेत भिक्खू
किं नाम होज्ज तं कम्मयं
जेणाहं णाणा दुक्खं न
गच्छेज्जा
गच्छाहि णं तुमं चित्ता !

वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते
उत्तमट्ठं गवेसए
वसे गुरुकुले निच्चं
असंजमं न सेवेज्जा णवर
भिक्खू न कमवि छिंदे
बालस्स बालत्तं पस्स
बालाणं मरणं असइं भवे
सुयं अहिट्ठिज्जा
गोयम ! समयं मा पमायए
अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं
न य णं दाहामु तुमं नियंठा !

पाठ १६ मो

विध्यर्थ [चालु]

सर्वपुरुष } ज्जइ
सर्ववचन }

एक मात्र विध्यर्थ बताववा माटे 'ज्जइ' प्रत्यय पण वपराय छे अने तेनी पूर्वना अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' थाय छे.

जेमके:— हस+ज्जइ-हस्+अ+ज्जइ=हसेज्जइ

हो+ज्जइ-हो+अ+ज्जइ=होएज्जइ

हो+ज्जइ=होज्जइ

आर्ष प्राकृतमां वपराएलां बीजां केटलांक अनियमित रूपो-

(कुर्यात्) (कुर्याः)	कुज्जा
(निदध्यात्)	निहे
(अभितापयेत्)	अभितावे
(अभिभाषेत)	अभिभासे
(स्यात्)	सिया, सिआ
(आच्छिन्द्यात्)	अच्छे
(आभिन्द्यात्)	अब्भे
(हन्यात्)	हणिया

विध्यर्थसूचक आ आर्षरूपो, संस्कृत सिद्धरूपोनां भिन्न भिन्न उच्चारणोमांथा सधाएलां छे ए हकीकत, तेमनी सामे आपेलां संस्कृत रूपो ज जणावी आपे छे.

धातु

उवणी (उप+नी) पासे लई जवु

पच्चप्पिण् (प्रत्यर्पण–प्रति+अर्पण) पाछुं सोपवुं

पडिनी / **पडिणी** (प्रति+नी) पाछुं देवु–सामुं देवु–बदले देवुं

वर् (वृ) वरवु-स्वीकारवुं–वरदान लेवुं

वाव् (वाप्) वाववु, ववरावबुं

तूर् (त्वर) त्वरा करवी-झपाटाबध जवुं

संदिस् (सम्+दिश्) संदेशो आपवो–सूचन करवुं

उवदंस् (उप+दर्श) देखाडवु–पासे जइने बतावबु

अणुजाण् (अनु+जाना) अनुज्ञा आपवी–संमति आपवी

संवड्ढ (सं+वर्ध्) संवर्धन करवुं–पोषवु–साचववु

चिणा (चिनु) चणवुं–एकठ् करवुं

क्रियातिपत्ति

ज्यारे परस्पर संकेतवाळां बे वाक्योनुं एक संयुक्त वाक्य बनेलुं होय अने तेमां जणाती बन्ने क्रियाओ कोइ मात्र सांकेतिक क्रिया जेवी अशक्य भासती होय त्यारे क्रियातिपत्तिनो प्रयोग थाय छे. क्रियातिपत्ति एटले क्रियानी अतिपत्ति-असंभवितता. क्रियानी असंभवितताने सूचववा ज क्रियातिपत्तिनो उपयोग थाय छे.

प्रत्ययो

सर्व पुरुष } न्तो, माणो
सर्व वचन } ज्ज, ज्जा

एकवचन	बहुवचन
भण्–भणंतो, भणमाणो	भणंता, भणमाणा
हो—होअंतो, होअमाणो	होअंता, होअमाणा
होंतो, होमाणो	
भण्–भणेज्ज, भणेज्जा	

हो—होएज्ज, होएज्जा
होज्ज, होज्जा

[याद्दीः—क्रियातिपत्तिनो बहुवचनी प्रयोग वांचवामां के जोवामां नथी आव्यो छतां अहीं जे बहुवचनी रूप बताव्यां छे ते मात्र कल्पनाथी समजवानां छे.]

आकारांत इकारांत ईकारांत उकारांत अने ऊकारांत
नामो [नारीजाति]

प्राकृतमां आकारांत नामो बे जातनां छेः—केटलांक आकारांत नामोनुं मूळरूप अकारांत होय छे अने नारी-जातिने लीधे तेओ आकारांत बनेलां होय छे त्यारे बीजां केटलांक आकारांत नामोनुं मूळ रूप तेवुं-अकारांत-नथी होतुं पण तेओ बीजी रीते आकारांत थयेलां होय छे.

आ नीचे ए बन्ने जातनां आकारांत नामोनां रूपो आपेलां छे. जेओ मूळथी अकारांत नथी तेमनुं संबोधननुं एकवचन प्रथमा विभक्ति जेवुं ज थाय छे त्यारे जेओ मूळथी अकारांत छे तेमनुं संबोधननुं एकवचन करतां तेम-ना अंत्य 'आ' नो विकल्पे 'ए' करवामां आवे छे – ए बेय नामोना रूपोमां बीजो कशो भेद नथी.

जेमकेः — ननान्द् – णणंदा – हे णणंदा !
अप्सरस् – अच्छरसा – हे अच्छरसा !
सरित् – सरिया – हे सरिया !
सरिआ – हे सरिआ !
वाच् – वाया – हे वाया !

मूळ अकारांत
- माल – माला – हे माले ! हे माला !
- रम – रमा – हे रमे ! हे रमा !
- कान्त – कान्ता – हे कांते ! हे कांता !
- देवत – देवता – हे देवते ! हे देवता !
- मेध – मेधा – हे मेहे ! हे मेहा !

रूपाख्यान

माला [मूळ अकारांत]

	एकवचन	बहुवचन
१	माला=माला (माला)	माला+उ=मालाउ माला+ओ=मालाओ माला=माला (मालाः)
२	माला+म्=मालं (मालाम्)	माला+उ=मालाउ माला+ओ=मालाओ माला=माला (मालाः)
३	माला+अ=मालाअ (मालया) माला+इ=मालाइ माला+ए=मालाए	माला+हि=मालाहि (मालाभिः) माला+हिं=मालाहिं माला+हिँ=मालाहिँ
४	माला+अ=मालाअ माला+इ=मालाइ माला+ए=मालाए (मालायै)	माला+ण=मालाण (मालानाम्) माला+णं=मालाणं
५	माला+अ=मालाअ (मालायाः) माला+इ=मालाइ माला+ए=मालाए	

माला+त्तो=मालत्तो (मालातः) माला+त्तो=मालत्तो (मालातः)
माला+तो=मालातो (,,) माला+तो=मालातो
माला+ओ=मालाओ (,,) माला+ओ=मालाओ
माला+उ=मालाउ (,,) माला+उ=मालाउ
माला+हिंतो=मालाहिंतो माला+हिंतो=मालाहिंतो (मालाभ्यः)
माला+सुंता=मालासुंतो

६ माला+अ=मालाअ माला+ण=मालाण (मालानाम्)
माला+इ=मालाइ (मालायाः) माला+णं=मालाणं
माला+ए=मालाए

७ माला+अ=मालाअ(मालायाम्) माला+सु=मालासु (मालासु)
माला+इ=मालाइ माला+सुं=मालासुं
माला+ए=मालाए

सं० माला=माले ! (हे माले !) माला+उ=मालाउ
माला=माला ! माला+ओ=मालाओ
माला+माला (मालाः)

वाया (वाक्) [मूळ अकारांत नहि]

'वाया' नां बधां रूपो 'माला' जेवां ज करवानां छे. विशेषता मात्र संबोधनमां छेः हे वाया ! ए एक ज रूप थाय पण 'वाये !' 'वाया !' एवां बे रूपो न थाय.

इकारांत

बुद्धि

१ बुद्धी (बुद्धिः) बुद्धि+उ=बुद्धीउ
बुद्धि+ओ=बुद्धीओ (बुद्धयः)
बुद्धि=बुद्धी

२ बुद्धि (बुद्धिम्)	बुद्धि+उ=बुद्धीउ बुद्धि+ओ=बुद्धीओ बुद्धि=बुद्धी (बुद्धीः)
३ बुद्धीअ बुद्धि+आ=बुद्धीआ (बुद्ध्या) बुद्धीइ बुद्धीए	बुद्धीहि बुद्धीहिं (बुद्धिभिः) बुद्धीहिँ
४ बुद्धीअ बुद्धीआ बुद्धीइ (बुद्ध्यै) बुद्धीए (बुद्धये)	बुद्धीण (बुद्धीनाम्) बुद्धीणं
५ बुद्धीअ बुद्धीआ (बुद्ध्याः) बुद्धीइ बुद्धीए (बुद्धेः) बुद्धित्तो (बुद्धितः) बुद्धितो (,,) बुद्धीओ (,,) बुद्धीउ (,,) बुद्धीहितो	बुद्धित्तो (बुद्धितः) बुद्धितो (,,) बुद्धीओ (,,) बुद्धीउ (,,) बुद्धीहितो (बुद्धिभ्यः) बुद्धीसुंतो
६ बुद्धीअ बुद्धीआ (बुद्ध्याः) बुद्धीइ बुद्धीए (बुद्धेः)	बुद्धीण (बुद्धीनाम्) बुद्धीणं

७ बुद्धीअ	बुद्धीसु (बुद्धिषु)
बुद्धीआ (बुद्ध्याम्,	बुद्धीसुं
बुद्धीइ बुद्धौ)	
बुद्धीए	
सं० बुद्धी, बुद्धि (बुद्धे!)	बुद्धीउ, बुद्धीओ बुद्धी (बुद्धयः)

ईकारान्त

नदी

१ नदी (नदी)	नदी+आ=नदीआ
	नदीउ
	नदीओ (नद्यः)
	नदी
२ नदिं (नदीम्)	नदीआ
	नदीउ
	नदीओ
	नदी (नदीः)
३ नदीअ	नदीहि (नदीभिः)
नदीआ (नद्या)	नदीहिं
नदीइ	नदीहिँ
नदीए	
४ नदीअ	नदीण (नदीनाम्)
नदीआ	नदीणं
नदीइ	
नदीए (नद्यै)	
५ नदीअ	
नदीआ (नद्याः)	
नदीइ	

	नदीए	
	नदित्तो (नदीतः)	नदित्तो (नदीतः)
	नदीतो ,,	नदीउ ,,
	नदीओ ,,	नदीतो ,,
	नदीउ ,,	नदीओ ,,
	नदीहिंतो	नदीहिंतो (नदीभ्यः)
		नदीसुंतो
६	नदीअ	नदीण (नदीनाम्)
	नदीआ (नद्याः)	नदीणं
	नदीइ	
	नदीए	
७	नदीअ	नदीसु (नदीषु)
	नदीआ (नद्याम्)	नदीसुं
	नदीई	
	नदीए	
सं०	नदि ! (नदि !)	नदीआ
		नदीओ (नद्यः)
		नदीउ
		नदी

उकारांत

धेणु (धेनु)

१	धेणू (धेनुः)	धेणूउ
		धेणूओ (धेनवः)
		धेणू
२	धेणुं (धेनुम्)	धेणूउ
		धेणूओ
		धेणू (धेनूः)

३	घेणूअ	घेणूहि
	घेणूआ (धेन्वा)	घेणूहिं (धेनुभिः)
	घेणूइ	घेणूहिँ
	घेणूए	
४	घेणूअ	घेणूण (धेनूनाम्)
	घेणूआ	घेणूणं
	घेणूइ	
	घेणूए (धेनवे, धनवै.)	
५	घेणूअ	
	घेणूआ (धेन्वाः, धेनोः)	
	घेणूइ	
	घेणूए	
	घेणुत्तो (धेनुतः)	घेणुत्तो (धेनुतः)
	घेणूतो ,,	घेणुतो ,,
	घेणूओ ,,	घेणूओ ,,
	घेणूउ ,,	घेणूउ ,,
	घेणूहितो	घेणूहिंतो (धेनुभ्यः)
		घेणूसुंतो
६	घेणूअ	
	घेणूआ (धेन्वाः, धेनोः)	घेणूण (धेनूनाम्)
	घेणूइ	घेणूणं
	घेणूए	
७	घेणूअ	घेणूसु (धेनुषु)
	घेणूआ (धेन्वाम्, धेनौ)	घेणूसुं
	घेणूइ	
	घेणूए	

सं० घेणू, घेणु (धेनो !)...घेणूउ, घेणूओ (धेनवः)
घेणू

ऊकारांत

वहू (वधूः)

१	वहू (वधूः)	वहूउ, वहूओ (वध्वः) वहू
२	वहुं (वधूम्)	वहूउ, वहूओ वहू (वधूः)
३	वहूअ वहूआ (वध्वा) वहूइ वहूए	वहूहि (वधूभिः) वहूहिं वहूहिँ
४	वहूअ वहूआ वहूइ वहूए (वध्वै)	वहूण (वधूनाम्) वहूणं
५	वहूअ वहूआ (वध्वाः) वहूइ वहूए वहुत्तो (वधूतः) वहूतो ,, वहूओ ,, वहूउ ,, वहूहिंतो	वहूत्तो (वधूतः) वहूतो ,, वहूओ ,, वहूउ ,, वहूहिंतो (वधूभ्यः) वहूसुंतो
६	वहूअ वहूआ (वध्वाः) वहूइ	वहूण (वधूनाम) वहूणं

वहूए

७ वहूअ　　　　　　　　वहूसु (वधूषु)

वहूआ (वध्वाम्)　　　　वहूसुं

वहूइ

वहूए

सं० वहु (वधु !) ....वहूओ, वहूउ (वध्वः)

वहू

नामनुं अंग अने प्रत्ययनो अंश ए बन्ने छूटा पाडीने ज जणावेलां छे अने साथे ए उपरथी साधित थतां दरेक रूपो पण जुदां जुदां बतावेलां छे.

आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत अने ऊकारांत-नारीजाति-नामोनां बधां रूपो तद्दन सरखां छे जे फेर छे ते नहि जेवो छे एथी मूळ अंग अने प्रत्ययोनो विभाग-ए पद्धति एक ज स्थळे मुकी ए बधी साधनिका समजावेली छे.

दीर्घ ईकारांत नामोने प्रथमा अने द्वितीयाना बहुवचनमां एक 'आ' प्रत्यय नवो लागे छे तथा आकारांत सिवाय उक्त बधां नामोने तृतीयाथी सप्तमी सुधीना एकवचनमां पण 'आ' प्रत्यय वधारे लागे छे-आपेलां रूपो ज आ फेरफार बतावी आपे छे.

ए चारे प्रकारनां नामोनां बधां रूपो तद्दन सरखां छे छतां संस्कृत साथेनी सरखामणी बताववा अने विशेष स्पष्ट करवा ते दरेकनां सर्व रूपो जणावेलां छे तथा ए रूपो द्वारा भाषानां प्रचलित रूपोनी सरखामणीनुं पण भान थाय एम छे.

१ 'त्तो' अने 'म्' प्रत्यय सिवायना बीजा बधा प्रत्ययो लागतां पूर्वनो स्वर दीर्घ थाय छेः बुद्धीओ, धेणूओ.

२ 'म्' प्रत्यय लागतां पूर्वनो स्वर ह्रस्व थाय छेः नदिं, वहुं.

३ ज्यां मूळ अंग ज वापरवानुं छे त्यां तेने दीर्घ करीने वापरवानुं छेः बुद्धी, धेणू.

४ इकारांत उकारांतनुं संबोधननुं एकवचन विकल्पे दीर्घ थाय छेः बुद्धि ! बुद्धी ! धेणु ! धेणू.

५ ईकारांत ऊकारांतनुं संबोधननुं एकवचन ह्रस्व थाय छेः

नदि ! वहु !

उक्त प्रत्ययोमां तृतीयाथी सप्तमी सुधीना बधा एक-वचनी प्रत्ययो एक सरखा छे त्यारे ए ज विभक्तिओना बधा बहुवचनी प्रत्ययो अकारांत नामनी जेवा छे अने प्रथमा द्वितीयाना बहुवचनी प्रत्ययो इकारांत नरजातिक नामनी सरखा छे ए ध्यानमां राखवा जेवुं छे.

भिन्न भिन्न प्रांतोमां उच्चारणोनी विविधता प्रचलित छे तेथी संस्कृत अने प्राकृत बन्नेमां एक ज विभक्तिनां पण अनेक रूपो थवा पाम्यां छे छतां ए बन्ने भाषानां रूपोनुं मौलिक समानपणुं जतुं रह्युं नथी ए समजवा जेवुं छे - ए समानपणुं उक्त रूपो उपरथी ज जणाइ आवे छेः—

धेन्वा - धेनुवा - धेणुआ

धेन्वै - धेनुवे - धेणुए

नद्यै - नदीये - नदीए

शब्दो

सद्धा (श्रद्धा) श्रद्धा	छुहा (क्षुधा) भूख
मेहा (मेधा) मेधा-बुद्धि	कउहा (ककुभा) दिशा
पण्णा (प्रज्ञा) प्रज्ञा	निसा (निशा) निशा-रात्री
सण्णा (संज्ञा) संज्ञा-सान-समज	दिसा (दिशा) दिशा-दश
संझा (संध्या) सांज	नावा (नौका) नाव
वंझा (वन्ध्या) वांज-वांजणी	गउआ (गोका) गाय
भुक्खा (बुभुक्षा) भूख	सलाया (शलाका) सळी
तिसा (तृषा) तरस-लालच	मट्टिआ (मृत्तिका) माटी
तण्हा (तृष्णा) तृष्णा	मक्खिआ, मच्छिआ (मक्षिका) माखी-माछी
सुण्हा, ण्हुसा (स्नुषा)[९०] स्नुषा-पुत्रवधू	कलिआ (कलिका) कळी
पुच्छा (पृच्छा) प्रश्न-पूछा	विज्जुला (विद्युत्) वीजळी
चिंता (चिन्ता) चिंता	जिब्भा, जीहा [९१](जिह्वा) जीभ
आणा (आज्ञा) आज्ञा-आण	अच्छरसा (अप्सरस्) [९२]अप्सरा

९० 'स्न' ने बदले 'ण्ह' नो उपयोग थाय छे:

स्नुषा-ण्हुसा. स्नातः— { ण्हाओ, ण्हायो } प्रस्नुतः पण्हुओ, प्रस्नवः पण्हओ

ज्योत्स्ना-जोण्हा, स्नानम्-ण्हाणं

९१ आदिना 'ह्व' नो विकल्पे 'भ' थाय छे अने शब्दनी अंदरना 'ह्व' नो विकल्पे 'ब्भ' थाय छे:

जिह्वा – जिब्भा, जीहा. विह्वलः – विब्भलो, विहलो

९२ ह्रस्व स्वरथी पर आवेला 'प्स' ने बदले 'च्छ' नो प्रयोग थाय छे:

अप्सरस-अच्छरा, लिप्सा-लिच्छा
जुगुप्सा-जुगुच्छा, लिप्सते-लिच्छते
जुगुप्सति-जुगुच्छइ

आसिसा (आशिष) आशिष-आशीर्वाद

धूआ (दुहिता) दीकरी

नणंदा (ननान्दृ) नणद

पिउच्छा, पिउसिआ (पितृष्वसा) पितानी बहेन-फई

माउसिआ, माउच्छा (मातृष्वसा) माशी-मातानी बहेन

बाहा (बाहु) बाहु-हाथ-बाय

माआ (मातृ) माता-जननी

माअरा, मायरा (मातृ) देवी, माता

ससा (स्वसृ) स्वसा-बेन

वाया (वाच्)[९३] वाचा-वाणी

सरिआ, सरिया (सरित्) सरिता-नदी

पाडिवआ, पाडिवया (प्रतिपदा) पडवो तिथि

गिरा (गिर्)[९४] गिरा-वाणी

पुरा (पुर्) पुरी-नगर-नगरी

संपया, संपआ (संपदा) संपदा-संपत्ति

चंदिआ, चंद्रिआ (चन्द्रिका[९५]) चांदनी, चांदी-रूपुं

चंदिमा (चन्द्रिका) चन्द्रमानी चांदनी

रच्छा (रथ्या[९६]) रथ चाले तेवी पहोळी शेरी-शेरी

---

९३ स्त्रीलिंगी व्यंजनांत नामना अंत्य व्यंजननो 'या' के 'आ' थाय छे:

वाच्-वाया, वाआ. सरित्-सरिया, सरिआ.

प्रतिपद्-पाडिवया, पाडिवआ. संपद्-संपया, संपआ.

अपवाद: विद्युत्-विज्जु के विज्जुला.

९४ स्त्रीलिंगी 'र' कारांत नामना अंत्य 'र'नो 'रा' थाय छे:

गिर्-गिरा. पुर्-पुरा. धुर्-धुरा.

९५ 'द्र' मां रहेला 'र' कारनो लोप विकल्पे थाय छे:

चन्द्रिका-चंदिआ, चंद्रिआ. चन्द्रः-चंदो, चंद्रो

द्रहः-दहो द्रहो समुद्रः-समुद्दो, समुद्रो

द्रुमः-दुमो, द्रुमो

९६ ह्रस्व स्वरथी पर आवेला 'थ्य' ने बदले 'च्छ' नो व्यवहार प्रचलित छे:

रथ्या-रच्छा मिथ्या-मिच्छा पथ्यम्-पच्छं

[यादी : 'अच्छरसा' थी मांडीने 'संपआ' सुधीनां नामो मूळ अकारांत नथी, ए ध्यानमां राखवानुं छे.]

जुत्ति (युक्ति) युक्ति–योजना
रत्ति (रात्रि) रात
माइ (मातृ) मा–माइ
भूमि (भूमि) भूमि–भो
जुवइ (युवति) युवति
धूलि (धूलि) धूळ
रइ (रति) प्रेम–राग
मइ (मति) मति
दिहि / धिइ (धृति) धैर्य
सिप्पि (शुक्ति) छीप
सत्ति (शक्ति) शक्ति
सति (स्मृति) स्मृति–सरत
दित्ति (दीप्ति) दीप्ति–तेज
पंति (पङ्क्ति) पङ्क्ति–पगत–पांत
थुइ (स्तुति) स्तुति–थोय
कित्ति (कीर्ति) कीर्ति–कीरत
सिद्धि (सिद्धि) सिद्धि
रिद्धि (ऋद्धि) रध–ऋद्धि
संति (शान्ति) शांति
कंति (कान्ति) कांति

खंति (क्षान्ति) क्षमा
कंति (कान्ति) खांत–इच्छा–होंश
गउ (गो) गाय–गउ
कच्छु (कच्छु) खाज–खरज
विज्जु (विद्युत्) वीजळी
उज्जु (ऋजु) सरळ
माउ (मातृ) माता
दद्दु (दद्रु) धाधर–दादर
चंचु (चञ्चु) चांच
गाई (गो) गाय
वावी (वावी) वाव
कयली (कदली) केळ
नारी (नारी) नारी–नार
रयणी (रजनी) रजनी–रेण
राई (रात्री) रात
धाई (धात्री) धाई–धवरावनारी माता
कुमारी (कुमारी) कुंवारी
तरुणी (तरुणी) तरुण स्त्री
समणी (श्रमणी) साध्वी
साहुवी / साहुणी (साध्वी[१७]) ,,

१७ संयुक्त 'वी' छेडावाळा स्त्रीलिंगी नामना अंतिम 'वी'ने बदले 'उवी'नो प्रयोग प्रचलित छे :

साध्वी–साहुवी. तन्वी–तणुवी
लघ्वी – लहुवी. मृद्वी–मउवी

तणुवी (तन्वी) पातळी
इत्थी } (स्त्री) स्त्री–तिरिया
थी
बहिणी (भगिनी) बहेन
वाराणसी (वाराणसी) वाराणसी–
बनारस नगर
पिच्छी (पृथ्वी)[९८] पृथ्वी
पुहवी (पृथ्वी) ,,

साडी (शाटी) साडी
मित्ती (मैत्री) मित्रता–मैत्रीवृत्ति
अज्जू (आर्या) सासू–आजी
कणेरू (कणेरू) हाथणी
कक्कंधू (कर्कन्धू) बोरडी
अलाऊ } (अलाबू) तुंबडी–
लाऊ } लउआ
वहू (वधू) वहू

वाक्यो

तेनी जीभ उपर अमृत छे अने तारी जीभ उपर झेर छे.
तेनी सासू मने आशिष आपशे के 'तारुं कल्याण थाओ
गाय अने हाथणी फूलनी माळावडे शोभशे
कीर्ति अने कार्यनी सिद्धि माटे प्रयत्न करो
जेने विवेकनो समज नथी ते पशु छे

मारी आज्ञाने पाछी आपो
हे बेन! तारी नणंदनो आंखने सळी न अडे तेम तुं बेस.
आजे पडवो छे तेथी ब्राह्मणो नहि भणे.
पुत्र भणे तो पंडित थाय.
[क्रियाति०]
आकाशमां वीजळी हमणां झबकशे एम जोशीए कह्युं

गुर्वी – गुरुवी. पृथ्वी–पुहुवी
पट्वी – पडुवी.

९८ कोइ कोइ प्रयोगमां 'थ्व'ने बदले 'च्छ'नो व्यवहार चालु छे: पृथ्वी–पिच्छी

मेघ वरसे तो घास थाय [क्रियाति०]

तारी पुत्रवधू मारी बेनना सुखनी पुछा करशे

तुं श्रमण था तो हुं श्रमण थाउं [क्रियाति०]

कुमार कुमारीने वरशे अने साडी आपशे

दिशाओमां चारे बाजु चांदनी फेलाय छे.

युवति स्त्री श्रमणोनी स्तुति करे छे

रात्रीओ अने दिवसो झपाटाबंध जाय छे

भमरो फूलनी कळीनो रस पीशे

वहूनी साडी उपर धूळ पडे छे.

पंडितो क्षमा राखे.

तेनी पुत्री वांजणी न थाओ

मारी पुत्रवधू अने बेन परस्पर मैत्री राखे छे

तमे दान द्यो तो अमे विवाह करीए [क्रियाति०]

मेधा अने प्रज्ञा चंद्रिकानी जेम प्रकाशे छे.

आ राजा राज्य तजे तो हुं तेनो पुत्र राजा थाउं. [क्रियाति०]

बनारस नगरमां गंगा नदी वहे छे अने तेमां नावो चाले छे.

धीर पुरुषो दुःखने समये पण श्रद्धाने तजता नथी.

मारी माशीनी शरीमां तारी फईनुं गोळनुं गाडु आव्युं

मारा अंगरखांनी बांय अने मारो हाथ सरखां नथी

इंद्रो पासे अप्सराओ नाची

भूख अने तरस श्रमणोने पण पीडा आपशे.

माखीनी पातळी पांख सुवाळी छे.

महावीरे पृथ्वीना राज्यनो मोह छोड्यो.

देवी मातानी पासे गायने लइ जाओ अने जीवित आपो

वावनी पासे केळो वावो

धोळां मोतीओनी पंक्ति छीपमां शोभे छे.

अच्चेइ कालो तूरंति राईओ
वरेहि वरं
हे पुत्ता ! जहेव देवस्स
वट्टिज्जासि तहेव पइणो
वट्टिज्जासि
कीस एवं सगडं नेहि ?
खमह जं मए अवरद्धं
दीवो होंतो तया अंधयारो
नस्संतो
रावणो सीतं रक्खंतो तया
रामो तं रक्खेज्ज
वीरो बलं कुणंतो तया सगमो
सुरो तं न पणमेज्जा
वच्च, देहि से संदेसं मा रुयह
गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया !
आहारमिच्छे मियमेसणिज्ज
समणो गिहाइं न कुव्विज्जा
पंडिओ खंतिं सेवेज्ज
मिअं कालेण भक्खए
तुम्हे गच्छंतो तया अम्हे
गच्छमाणा

तओ तस्स मा भाहि
एयं एव मम वरं देहि
अहं मेत्तिं आयरंतो तया
सव्वे जीवा मए सद्धिं मेत्तिं
आयरंतो
एव होउ
उट्ठेह, वच्चामो
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा
पडिबंधं करेह
तहा चेट्ठसु जेण मम जुव-
ईए सह संजोगो होउ
लोग मा मारेह
पवहणं जुत्तमेव उवणेहि
संदिसंतु णं देवाणुप्पिया !
जं अम्हाणं कज्जं
माउसिआ असच्चं परिहरे
गिरं
जेण सिद्धिं संपाउणिज्जासि
तं उज्जमं कुण

---

६९ आहारम्+इच्छे–आहारमिच्छे, आहारं इच्छे
मियम्+एसणिज्जं–मियमेसणिज्जं, मियं एसणिज्जं जुओ टिप्पण ६५

पाठ १७ मो

प्रेरकभेद

प्रेरक प्रत्ययो

अ } (अय)
ए }

आव } (आपय)
आवे }

मूळ धातुने अ, ए, आव अने आवे प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं प्रेरक अंग तैयार थाय छे :

कर्+अ - कार	कर्+आव-कराव
कर्+ए - कारे	कर्+आवे-करावे

१ मूळ धातुना उपांत्यमां रहेला 'इ'नो प्राय: 'ए' अने 'उ'नो प्रायः 'ओ' थाय छे : दुह्+दोह्. सुम-सोम्. घुस्-घोस्.

२ उपांत्यमां गुरु अक्षरवाळा (स्वरादि के व्यंजनादि) धातु मात्रने उक्त प्रेरक प्रत्ययो उपरांत एक 'अवि' प्रत्यय पण वधारे लागे छे :

चूस् + अवि-चूसवि.	दुह्-दोह+अवि-दोहवि
चूस्+अ-चूस.	दोह्+अ-दोह
चूस्+ए+चूसे.	दोह्+ए+दोहे
चूस्+आव-चूसाव.	दोह+आव-दोहाव
चूस्+आवे-चूसावे.	दोह्+आवे-दोहावे

३ 'अ' अने 'ए' प्रत्यय लागतां धातुना उपान्त्य 'अ' नो 'आ' थाय छे:—

खम् + अ – खाम. खम् + ए – खामे.

४ एक मात्र 'भम' धातुनुं प्रेरक अंग भमाड [भम्+आड] पण थाय छे:

भम्+अ–भाम	भम्+आव–भमाव
भम्+ए–भामे	भम्+आवे–भमावे
	भम्+आड–भमाड

[यादी:—'भमाड'मां 'आड' प्रेरक प्रत्यय छे. आपणी गूजराती भाषामां य घणां प्रेरक क्रियापदो 'आड' प्रत्यय-वाळां पण देखाय छे:

चाटवुं–चटाडवुं	जीववुं–जिवाडवुं
सूवुं–सुवाडवुं	न्हावुं–न्हवाडवुं
जागवुं–जगाड	
उंघवुं–उंघाडवुं	भमवुं–भमाडवुं वगेरे]

५ आर्षप्राकृतना कोइ कोइ प्रयोगोमां प्रेरणासूचक 'अवे' प्रत्यय पण लागेलो जणाय छे अने ते 'अवे' प्रत्यय लागतां धातुना उपांत्य 'अ'नो 'आ' थएलो छे:

कर्+अवे=कारवे (कारापय)

धातुनां प्रेरक अंगोना नमूना

कर– कार्, कारे (कारय)
कराव, करावे (कारापय)
कारवे

हस् - हास्, हासे (हासय)
हसाव, हसावे (हासापय)

खम् - खाम्, खामे (क्षामय)
खमाव, खमावे (क्षमापय)

दरिस्- दरिस्, दरिसे (दर्शय)
दरिसाव्, दरिसावे (दर्शापय)

भम् - भाम्, भामे (भ्रामय)
भमाव, भमावे (भ्रमापय)
भमाड

दुह् - दोह्, दोहे (दोहय)
दोहाव, दोहावे (दोहापय)
दोहवि

चूस् - चूस्, चूसे (चूषय)
चूसाव, चूसावे (चूषापय)
चूसवि

मुह् - मोह्, मोहे (मोहय)
मोहाव, मोहावे (मोहापय)
मोहवि

उक्त रीते धातुमात्रनां प्रेरक अंगो साधी लेवानां छे अने ते रीते सधायेलां प्रेरक अंगोने ते ते काळना पुरुष-बोधक प्रत्ययो लगाडवाथी तेमनां दरेक प्रकारनां रूपाख्यानो तैयार थाय छे. ए रूपाख्यानो साधवानी बधी प्रक्रिया आगला पाठोमां आवी गइ छे छतां उदाहरणरूपे अहीं एक एक रूप आपवामां आवे छे :—

प्रेरक अंग	रूप	
	वर्तमानकाळ	
	एकव०	बहुव०
खाम —	खाममि,	खाममो, खामामो
	खामामि	खामिमो,
	खामेमि	खामेमो
खामे —	खामेमि	खामेमो
खमाव —	खमावमि, खमावामि	खमावमो, खमावामो
	खमावेमि	खमाविमो, खमावेमो
खमावे—	खमावेमि	खमावेमो

इत्यादि

सर्वपुरुष } खामेज्ज, खामेज्जा
सर्ववचन } खमावेज्ज, खमावेज्जा

भूतकाळ

खामसी, खामही, खामहीअ, खामंसु, खामिंसु, खामित्थ
खामेसी, खामेही, खामेहीअ,
खमावसी, खमावही, खमावहीअ, खमावंसु, खमाविंसु, खमावित्थ
खमावेसी, खमावेही, खमावेहीअ

भविष्यत्काळ एकव०

खाम — खामिस्सं, खामेस्सं
खामिस्सामि, खामेस्सामि
खामिहामि, खामेहामि
खामिहिमि, खामेहिमि

खामे—खामेस्सं, खामेस्सामि, खामेहामि, खामेहिमि

खमाव--खमाविस्स, खमाविस्सामि, खमाविहामि, खमाविहिमि
खमावेस्सं खमावेस्सामि, खमावेहामि, खमाविहिमि

खमावे--खमावेस्सं खमावेस्सामि, खमावेहामि, खमावेहिमि

सर्वपुरुष } खामेज्ज, खामेज्जा
सर्ववचन } खमावेज्ज, खमावेज्जा

विध्यर्थ-आज्ञार्थ

एक व०

खाम— खामसु, खामेसु
खामिज्जसु, खामेज्जसु
खामिज्जसि, खामेज्जसि
खामिज्जासि, खामेज्जासि
खामिज्जहि, खामेज्जहि
खामिज्जाहि, खामेज्जाहि
खामिज्जे, खामेज्जे
खामाहि, खामहि, खाम

खामे-- खामेसु
खामेहि

खमाव-- खमावसु, खमावेसु
खमाविज्जसु, खमावेज्जसु
खमाविज्जसि, खमावेज्जसि
खमाविज्जासि, खमावेज्जासि
खमाविज्जहि, खमावेज्जहि
खमाविज्जाहि, खमावेज्जाहि
खमाविज्जे, खमावेज्जे
खमावाहि, खमावहि, खमाव

खमावे— खमावेसु
खमावेहि

सर्वपुरुष	खामेज्ज,	खामेज्जा,	खामेज्जइ
सर्ववचन	खमावेज्ज,	खमावेज्जा,	खमावेज्जइ

क्रियातिपत्ति

खाम— खामंतो, खामेंतो, खामिंतो
खाममाणो, खामेमाणो.

खामे— खामेंतो, खामिंतो, खामेमाणो.

खमाव— खमावंतो, खमावेंतो, खमाविंतो
खमावमाणो, खमावेमाणो.

खमावे— खमावेंतो, खमाविंतो, खमावेमाणो

आ प्रकारे प्रत्येक प्रेरक अंगने बधी जातना पुरुष-बोधक प्रत्ययो लगाडी तेमनां रूपो साधी लेवानां छे.

प्रेरक सह्यभेद अने बधी जातनां प्रेरक कृदंतो बनाववां होय त्यारे पण प्रेरक अंगने ज ते ते सह्यभेदो अने कृदंतना प्रत्ययो जोडी रूपाख्यानो साधवानां छे. सह्यभेद वगेरेना प्रत्ययोनी समज हवे पछीना पाठोमां आवनारी छे.

धातु

उव+दंस् (उप+दर्शय) देखाडवुं–पासे जइने बताववुं

आ+सार् (आ+स्–सार) आमतेम अफळाववु–आमतेम लइ जवुं

अक्खोड् (आ+क्षोद्) खोदवुं–कापवुं

उल्लव् (उत्+लप्) बोलवुं

जाव् (याप) वीताववुं–यापन करवुं

आभोअ (आ+भोग) ध्यानपूर्वक जोवुं

परिनिव्वा (परि+निर्+वा) शांत करवुं–ओलववुं

अग्घ (अर्घ) मूलववुं-मूल्य करावबुं
कील (क्रीड) क्रीडा करवी-रमत रमवी
छोल्ल - छोलवुं
ताव (तापय) तावतुं-तपाववुं
झाम - बाळवुं
किण (क्रीणा) खरीदवुं-वेचातुं लेवुं
आढा (आ+दृ) आदर करवो
पण्णव् (प्रज्ञापय) जणाववुं
संघ् (सं+ख्या) कहेवुं
पच्चर् (प्र+उत्+चर्-प्रोच्चर) कहेवुं
वच्चर् (वि+उत्+चर-व्युच्चर) ,,
वव् (वच्) ,,
जंप् (जल्प) ,,
पिसुण् (पिशुनय) चाडी करवी
मुण् (मन्) जाणवुं
पिज्ज् (पीय) पीवुं
उंघ् - उंघवुं
अब्भुत्त् (अवभृथ) अबोटवुं-आभडवुं-नहावुं
उट्ठ (उत्+स्था) ऊठवुं
छाय, छाअ } (छाद्) छावुं-ढांकवुं

मेलव् (मेलय) मेळववुं-मेळववुं-एकमेक करवुं
दक्खव् (दृश्) दाखववुं-देखाडवुं-कही बताववुं
पणाम् (प्र+णाम) आपवुं-सेवामां रजु करवुं
ओग्गाल् (उद्+गार) ओगाळवुं
आरोव् (आ+रोप) आरोपवुं
भर्, भल् } (स्मर्) स्मरण करवुं
चय् (शक्) शकवुं
जीह् (जिह्री) लाजवुं
अण्ह् (अश्ना) अशन करवुं-जमवु-खावुं
आढव् (आ+रभ्) आरंभवु-शरू करवु
चुक्क् (च्युतक) चूकवुं-भ्रष्ट थवुं
पुलोअ, पुलअ } (प्र+लोक्)प्रलोकवुं-जोवुं
पुलआअ (पुलकाय) पुलकित थवुं-उल्लसवु
वलग्ग (वि+लग्न) वळगवुं-चडवुं
पक्खाल् (प्र+क्षाल्) पखाळवुं-धोवुं
सिह् (स्पृह्) स्पृहा करवी
पट्ठव् (प्र+स्थाप्) पाठववु

विण्णव् (वि+ज्ञप्) वीनववुं
अल्लिव् – आलवुं
ओम्वाल् (उत्+प्लाव) प्लावित करवुं
वग्गोल् (वि+उद्+गार-व्युद्गार) वागोळवुं
परिआल् (परि+वार) परिवृत करवुं-वींटवुं
पयल्ल् (प्र+सर् फेलवुं
नीहर् (निर्+सर्) नीहरवुं-नीसरवुं
समार् (सम्+आ+रच्) समारवुं
सूड् } (पद) सूडवुं-नाश करवो
सूर् }

गढ् (घट) घडवुं
जम्भा (जृम्भ) बगासुं खावुं
तुवर् (त्वर) त्वरा करवी
पेच्छ् (प्र+ईक्ष) जोवुं
चोप्पड् – चोपडवुं
अहिलंख् } (अभि+लष) अभिलषवुं
अहिलंघ् } -इच्छा करवी
चड् (चट्) चडवु
नि+क्खाल् } (नि+क्षाल्) नीखारवुं-घोवुं
नि+क्खार् }
विच्छल् (वि+क्षल) वींछळवुं-धोवुं

स्त्रीलिंगी सर्वादि

'सव्वी' 'सव्वा' 'ती' 'ता' 'जी' 'जा' 'की' 'का' 'इमी' 'इमा' 'एई' 'एआ' अने 'अमु' वगेरे स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना रूपो 'माला' 'नदी' अने 'धेणु' नी जेवां योजी लेवानां छे.

विशेषता आ प्रमाणे छे:

ती, ता } (तत्-ता)
णी, णा }

१ सा (सा) तीआ तीउ तीओ ती ताउ ताओ ता (ताः)

२	तं (ताम्)	तीआ तीउ तीओ ती
	णं	ताउ ताओ ता (ताः)
३	तीअ, तीआ, तीइ, तीए	तीहि, तीहिं, तीहिँ
	ताअ, ताइ, ताए (तया)	ताहि, ताहिं ताहिँ
४ अने ६	से सिं तास तिस्सा, तीसे (तस्यै, तस्याः)	
	तीअ, तीआ, तीइ, तीए	तेसिं (तासाम्)
	ताअ, ताइ, ताए	ताण ताणं (तानाम्?)
७	ताहिं (तस्याम्)	तासु तासुं (तासु)
		तीसु तीसुं
	तीअ, तीआ, तीइ, तीए	
	ताअ, ताइ, ताए	

'णी' अने 'णा' नां रूपो पण 'ती' अने 'ता' प्रमाणे समजवानां छे.

जी, जा (यत्-या)

१	जा (या)	जीआ जीउ जीओ जी
		जाउ जाओ जा (याः)
२	जं (याम्)	,, ,, ,, ,,
		,, ,, ,,
४ अने ६	जिस्सा, जीसे, (यस्यै यस्याः)	जाण जाणं (यासाम्) (यानाम्?)
	जीअ, जीआ, जीइ, जीए	
	जाअ, जाइ, जाए	
७	जाहिं (यस्याम्)	जासु (यासु)
	जीअ, जीआ, जीइ, जीए	जासुं
	जाअ, जाइ, जाए	

की, का (किम्-का)

१	का (का)	कीआ, कीउ, कीओ, की काउ, काओ का,(काः)
२	कं (काम्)	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, (काः)
४ अने ६	किस्सा, कीसे कास (कस्यै ,कस्याः) कीअ, कीआ, कीइ, कीए काअ, काइ, काए	(कासाम्) काण, काणं (कानाम् ?)
७	काहिं (कस्याम्) कीअ, कीआ, कीइ, कीए काअ, काइ, काए (कायाम् ?)	कीसु, कीसुं (कासु) कासु, कासुं

इमा, इमी (इदम्-इमा)

१	इमिआ, इमा, इमी (इयम्)	इमीआ,इमीउ, इमीओ इमी इमाउ, इमाओ,इमा (इमाः)
३	इमीअ इमीआ, इमीइ, इमीए इमाअ, इमाइ इमाए (इमया ? अनया)	इमीहि, इमीहिं. इमीहिँ इमाहि, इमाहिं इमाहिँ (इमाभिः ?) आहि आहिं आहिँ (आभिः)
४ अने ६	से, इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए इमाअ, इमाइ, इमाए (अस्यै इमायै ?)	सिं (आसाम्) इमीण, इमीणं इमाण, इमाणं (इमानाम् ?)

एआ, एई (एतद्-एता)

१	एसा, एस, इणं, इणमो (एषा)	एईआ, एईउ, एईओ, एई एआउ, एआओ, एआ (एताः)
४ अने ६	से एईअ, एईआ, एईइ, एईए एआअ, एआइ, एआए (एतस्यै एतस्याः एतायै?)	सिं (एतासाम्) एईण, एईणं एआण, एआणं (एतानाम् ?)

[याद्दीः उक्त रूपोमां ईकारांत अने आकारांत अंगनां बधां रूपो नथी आपेलां पण ते बधांय समजी लेवानां छे]

अमु (अदस्)

१ अह, अमू   अमूउ, अमूओ, अमू

बाकीनां 'धेणु' वत्

केटलाक देश्य शब्दो[100] [नरजाति]

अग्घाड - अघेडानुं झाड	अग्गिअ (आग्निक) आगियो
अहेल्ल, अहिल्ल } अल्लाह-ईश्वर	आमोडो - अंबोडो
	उड्डु (उड्र) ओड जातना लोक

---

१०० केटलाक शब्दो अतिप्राचीन होवाने लीधे तेमनी व्युत्पत्ति कळी शकाती नथी अथवा व्युत्पत्ति कळातां छतां य जेमनो कविसाहित्यमां विशेष प्रचार नथी, एवा शब्दोने देशी शब्दो के देश्य शब्दो कहेवामां आवे छे. हवे पछीना पाठोमां एवा पण केटलाक शब्दो आपवामां आव्या छे. आ शब्दोने ज देश्यप्राकृत तरीके गणवामां आवे छे. आचार्य हेमचंद्रे पोतानी देशीनाममाळामां एवा अतिप्राचीन शब्दोनो सारो एवो संग्रह आपेलो छे.

उडिद् – अडद
ओहरिस (अवघर्ष) ओरसियो
कच्छर – कचरो
कक्किड – काकीडो
कडइअ – कडीओ-घर चणनार
काहार (क-हार) कहार-पाणी भरनार
कुक्कुस – कुशका
कोत्थल – कोथळो
कोइल – कोयला
कोलिअ (कौलिक) करोळिओ
खट्टिक (घातक) खाटकी
खोसलअ – खोखळदतो
खोड – खोडो-लंगडो
गढ – गढ
खोल (खर) खोलचुं-गधेडानुं बच्चुं
चास – चास-खेतरमां चास करवा ते
चिच्च? } – चीबो
चिव्व }
छइल्ल (छेक) चतुर
छंट – छांटो-छांट
छेअ – छेडो
जवरअ – जुवारा
झंखर – झांखरुं-सूकुं झाड
टप्परअ – टापरो-खराब कानवाळो

टार –टारडो
टुंट – ठुंठो
डव्व } डाबु-डावो हाथ
डाव }
डोल –डोळो-आंखनो डोळो
डुंब – डोम-चांडाळ
डुंघ – डुघो-होको
डुंगर – डुंगरो
डोअ – डोयो-पाणी काढवानो डोयो
णक्क – नाक
दवर – दोरो
पण्हअ (प्रस्नव) पानो-पोतानु बाळक जोइने माताने पानो आवे ते
परियट्ट – परीट-धोबी
पंडरंग (पाण्डुराङ्ग) पांडुरग-महादेव
पिणाअ – पराणे
पेडइअ – फडियो-दाणानो वेपारी
बप्प – बाप
बइल्ल – बेल – बळद
बोक्कड – बोकडो
मक्कड – मकडी-करोळीयो
मुब्भ } मोभ
मोब्भ }
रप्फ – राफडो
रवअ – रवायो
रोल – रोळो-कलह
वड्ड – वडो

बप्पीअ } बपैयो **बप्पीह** }	**वहोलो** – पाणीनो वहेळो
	वोज्झअ – बोजो

सामान्य शब्दो [नरजाति]

खग्ग (खड्ग[१०१]) खडग–तरवार	**रस्सि** (रश्मि[१०२]) राश–बळदनी के घोडानी राश
उप्पाअ (उत्पाद) उत्पाद–उत्पत्ति	**मुइंग** } (मृदङ्ग[१०३]) मृदंग **मिइंग** }

---

१०१ संयुक्त व्यंजनमां पूर्ववर्ती एवा क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष अने स नो प्रायः लोप थइ जाय छे अने लोप थतां बाकी रहेलो अनादि भूत व्यंजन बेवडाय छेः—

भुक्त–भुत–भुत्त	मद्गु–मगु–मग्गू
षट्पद–छपय–छप्पय	सुप्त–सुत–सुत्त
दुग्ध–दुध–दुद्ध	निश्चल–निचल–निच्चल
खड्ग–खग–खग्ग	गोष्ठी–गोठी–गोट्ठी
उत्पल–उपल–उप्पल	स्तव–तव–तव
	स्तवन–तवण–तवण

१०२ संयुक्त व्यंजनमां परवर्ती म अने न नो प्रायः लोप थई जाय छे अने लोप थतां बाकी रहेलो अनादि भूत व्यंजन बेवडाय छे:

स्मर–सर	नग्न–नग–नग्ग
रश्मि–रसि–रस्सि	लग्न–लग–लग्ग

१०३ केटलाक शब्दोमां आवेला आदिभूत 'ऋ' नो 'इ' थाय छे अने 'उ' पण थाय छेः—

ऋषि–इसि	ऋषभ–उसह
ऋद्धि–इद्धि	ऋजु–उज्जु
नृप–निव	पितृ–पिउ
शृगाल–सिआल	प्रवृत्ति–पउत्ति
मृदङ्ग–मिइंग	मृदङ्ग–मुइंग वगेरे

विंचुअ (वृश्चिक) वींछी
भिंग (भृङ्ग) भृंग-भमरो
सिंगार (शृङ्गार) शृंगार-शणगार
निव (नृप) नृप-राजा
छप्पअ } (षट्पद) छपगो-
छप्पय } भमरो
सज्ज (षड्ज) षड्ज-एक प्रकारनो सूर
इसि (ऋषि) ऋषि
तव (स्तव) स्तव-स्तुति
नेह (स्नेह) स्नेह-नेह
सर (स्मर) स्मर-कामदेव

पाउस (प्रावृष्) पाउस-पावस वरसादनी ऋतु
वुत्तंत (वृत्तान्त) वृत्तांत-समाचार
नत्तुअ } (नप्तृक) नाती-
नत्तिअ } पौत्र
वुड्ढ (वृद्ध) बूढो-घरडो
जामाउअ (जामातृक) जमाइ
मग्गु (मद्गु) एक प्रकारनी माछली
कंद (स्कन्द) स्कन्द-गणपति
हरिअंद (हरिश्चन्द्र) हरिचंद राजा

[नान्यतरजाति]

दुद्ध (दुग्ध) दूध
सित्थ (सिक्थ) सीथ
आमलय (आमलक) आमळुं-आंबळु
बिंबय (बिम्बक) बिंब-प्रतिबिंब-बीबुं

कुंडलय (कुण्डलक) कुंडळ-कुंडाळुं
उप्पल (उत्पल) उत्पल-कमळ
मसाण (श्मशान) मसाण
अहिन्नाण (अभिज्ञान) एंधाण
चम्म (चर्मन्) चाम-चामडु
पुट्ठय (पृष्ठक) पूंठुं

[नारीजाति]

गोट्ठी (गोष्ठी) गोठ-गोठडी
विट्ठी } (विष्टि) वेठ
वेट्ठि }
धत्ती (धात्री) धात्री
किवा (कृपा) कृपा

घिणा (घृणा) घिण-घृणा
सामा (श्यामा)-युवती-स्त्री
गोरी (गौरी) गौरी-पार्वती, गोरी स्त्री

रेखा
रेहा
लेहा } (रेखा) रेखा-लीह-लीटो

किया (क्रिया) क्रिया-विधि-विधान

किसरा (कृसरा) खीचडी

समिद्धि (समृद्धि) समृद्धि

विशेषण

मुत्त (मुक्त) मुक्त-छूटुं

सत्त (शक्त) शक्तिमान्

भुत्त (भुक्त) भुक्त-भोगवेलुं

नग्ग (नग्न) नागो

सत्त (सक्त) आसक्त

किलिन्न (क्लन्न[१०४]) गीलुं-भीनुं-भींजाएलुं

किलित्त (क्लृप्त) क्लृप्त

निच्चल (निश्चल) निश्चल

निट्ठुर (निष्ठुर) नठोर

छट्ठ (षष्ठ) छट्ठ

गुत्त (गुप्त) गोपवेलुं-सुरक्षित गुप्त

सुत्त (सुप्त) सूतेलुं

मुद्ध (मुग्ध) मुग्ध

---

१०४ ऌ ने बदले 'इलि' नो प्रयोग थाय छे:—

क्लन्न-किलिन्न क्लृप्त-किलित्त

पाठ १८ मो

भावे प्रयोग

अने

कर्मणि प्रयोग

प्रत्ययो

ईअ }
ईय } (य)
इज्ज }

कोइ पण धातुनुं भावप्रधान के कर्मप्रधान अंग बनाववुं होय त्यारे तेने ईअ, ईय अथवा इज्ज - ए त्रणमांथी गमे ते एक प्रत्यय लगाडवानो छे.

ए त्रणे प्रत्ययो फक्त वर्तमानकाळ, विध्यर्थ, आज्ञार्थ के ह्यस्तनभूतकाळमां ज वापरी शकाय छे. तेथी भविष्य-काळ, क्रियातिपत्ति वगेरे अर्थमां भावेप्रयोग अने कर्मणि-प्रयोग. कर्तरिप्रयोगनी जेम समजवानो छे.

भाव एटले क्रिया. जे प्रयोग मुख्यपणे क्रियाने ज बतावे ते भावेप्रयोग.

अकर्मक धातुओनो भावेप्रयोग थाय छे. गुजराती व्याकरणमां रोवुं जणवुं सूवुं उंघवुं लाजवुं वगेरे धातुओ ज अकर्मक तरीके प्रसिद्ध छे. त्यारे अहीं तो जे धातुओ सकर्मक होय छतां प्रयोगमां तेमनुं कर्म न कहेवायुं होय-अध्याहारमां

होय-तेओ पण अकमक गणाय छे. तेथी ज खावुं, पीवुं जोवुं घडवुं करवुं वगेरे सकर्मक धातुओ पण तेमना कर्मनी अविवक्षानी अपेक्षाए अकर्मक तरीके लेखाय छे. ए बन्ने प्रकारना अकर्मक धातुओनो भावेप्रयोग थाय छे.

कर्ता, क्रिया द्वारा जेने विशेषपणे इच्छे ते कर्म-नानी मोटी बधी क्रियाओनुं फळ. जे प्रयोग मुख्यपणे कर्मने ज सूचित करे ते कर्मणिप्रयोग.

भावे अने कर्मणिप्रयोगनां अंगो

भावसूचक अंगो

बीह् - बीहीअ
बीहिज्ज

उंघ - उंघीअ
उंघिज्ज

कह् - कहीअ
कहिज्ज

खा - खाईअ
खाइज्ज

लज्ज - लज्जीअ
लज्जिज्ज

बुड्ड - बुड्डीअ
बुड्डिज्ज

बोल्ल - बोल्लीअ
बोल्लिज्ज

हो - होईअ
होइज्ज

कर्मसूचक अंगो

पा - पाईअ
पाइज्ज

दा - दाईअ
दाइज्ज

झा - झाईय
झाइज्ज

ला - लाईय
लाइज्ज

पढ् - पढीय
पढिज्ज

कड्ढ् - कड्ढीअ
कड्ढिज्ज

घड् - घडीय
घडिज्ज

कह् - कहीय
कहिज्ज

खा - खाईय
खाइज्ज

बोल्ल् - बोल्लीय
बोल्लिज्ज

ए रीते धातुमात्रनां भाववाची अने कर्मवाची अंगो बनावी लेवानां छे अने तैयार थएलां अंगने ते ते काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडी तेमनां रूपो साधी लेवानां छे:

वर्तमानकाळ

भावप्रधान

बीहीअइ, बीहिज्जइ (भीयते)
बीह+ईअ+इ-बीही-अइ,-एइ-अए,-एए,
बीह्+इज्ज+इ-बीहि-ज्जइ,-ज्जेइ,-ज्जए,-ज्जेए

सर्वपुरुष { बीहीएज्ज, बीहीएज्जा
सर्ववचन { बीहिज्जेज्ज, बीहिज्जेज्जा

भावप्रधान प्रयोगोमां भाव-क्रिया-ज मुख्य होय छे. प्रथम के द्वितीय पुरुष एमां संभवतो नथी तेम बे त्रण वा तेथी अधिक संख्या पण संभवी शकती नथी माटे ते द्वारा ते ते पुरुषोनुं वा एकथी अधिक संख्यानुं सूचन थइ शकतुं नथी. साधारण रीते भावेप्रयोग, त्रीजा पुरुषना एकवचनद्वारा व्यवहारमां आवे छे.

कर्मप्रधान

भणीयइ, भणिज्जइ गंथो (भण्यते ग्रन्थः)
भण्+ईअ+इ—भणी-अइ,-एइ,-अए, एए
भण्+इज्ज+इ-भणि-ज्जइ,-ज्जेइ, ज्जए, ज्जेए
भणीयंति गंथा (भण्यन्ते ग्रन्थाः)
भणिज्जंति

भण्+ईय+न्ति— भणी-यंति,-येंति,-यंते,-येंते,-यइरे,-येयरे

भण्+इज्ज+न्ति—भणि-ज्जंति,ज्जेंति,-ज्जंते,-ज्जेंते,ज्जइरे,ज्जेइरे

सर्वपुरुष सर्ववचन { भणीएज्ज, भणीएज्जा
भणिज्जेज्ज, भणिज्जेज्जा

पुच्छीयसि
पुच्छिज्जसि तुमं (पृच्छ्यसे त्वम्)

पुच्छ्+ईय+सि-पुच्छी-यसि,-येसि,-यसे,-येसे

पुच्छ्+इज्ज+सि-पुच्छि-ज्जसि, ज्जेसि,-ज्जसे, ज्जेसे

पुच्छीयामि
पुच्छिज्जामि अहं (पृच्छ्ये अहम्)

पुच्छ्+ईय+मि—पुच्छी-यमि,-यामि,-येमि

पुच्छ्+इज्ज+मि—पुच्छि-ज्जमि-ज्जामि,-ज्जेमि

सर्वपुरुष सर्ववचन { पुच्छीयेज्ज, पुच्छीयेज्जा
पुच्छिज्जेज्ज, पुच्छिज्जेज्जा

विध्यर्थ-आज्ञार्थ

पुच्छी-यउ,-येउ, पुच्छि-ज्जउ, ज्जेउ

पुच्छी-यंतु,-येंतु, पुच्छि-ज्जंतु,-ज्जेंतु

सर्वपुरुष सर्ववचन { पुच्छीयेज्ज, पुच्छीयेज्जा
पुच्छिज्जेज्ज, पुच्छिज्जेज्जा
पुच्छीयेज्जइ
पुच्छिज्जेज्जइ

भूतकाळ

भणीअसी, भणीअही, भणीअहीअ

भणीयइत्था, भणीयइत्थ, भणीइंसु, भणीअंसु

भणिज्जसी, भणिज्जही, भणिज्जहीअ

भणिज्जइत्था, भणिज्जइत्थ, भणिज्जिंसु, भणिज्जंसु

अद्यतन भूतकाळ

भणीअ, भणित्था, भणित्थ, भणिंसु

भविष्यकाळ

भणिहिइ, भणिहिस, वगेरे बधां कर्तरि प्रमाणे

[जुओ पाठ १२ मो]

क्रियातिपत्ति

भणंतो, भणमाणो, भणेज्ज, भणेज्जा

प्रेरक भावेप्रयोग
अने
कर्मणिप्रयोग

१ धातुनुं प्रेरक भावेप्रयोगी के कर्मणिप्रयोगी रूप करवुं होय त्यारे मूळ धातुने प्रेरणासूचक एक मात्र 'आवि' प्रत्यय लगाडवो अने 'आवि' प्रत्यय लागेला ते तैयार थएल अंगने भावे अने कर्मणि प्रयोगना सूचक उक्त इअ, ईय अथवा इज्ज प्रत्यय पूर्वोक्त साधनिकाने अनुसारे लगाडवा.

२ अथवा प्रेरणासूचक कोइ पण प्रत्यय न लगाडी मात्र मूळ धातुना उपान्त्य 'अ' नो 'आ' करवो अने ए 'आ' वाळा अंगने उक्त इअ, ईय के इज्ज प्रत्यय पूर्व प्रमाणे लगाडवा. ए रीते पण प्रेरक भावेप्रयोगनां अने प्रेरक कर्मणिप्रयोगनां रूपो बनावी शकाय छे.

[यादीः आ सिवाय बीजी कोइ रीते प्रेरक भावेप्रयोग के प्रेरक कर्मणिप्रयोगनां अंगो बनी शकतां नथी.]

अंग— अंगना रूपाख्यान—

करावीअइ (काराप्यते)

कर्+आवि-करावि+ईअ-करावीअ—करावी-अइ,-अए,-असि, असे इत्यादि

कर्—कार+ईअ-कारीअ—कारी-अइ,-अए (कार्यते)

कारी-असि, कारी-असे (कार्यसे)

कर+आवि-करावि-इज्ज-कराविज्ज—करावि-ज्जइ,-ज्जए (काराप्यते)

कर्-कार-इज्ज-कारिज्ज-कारि-ज्जइ,-ज्जए, (कार्यते)

कार्-इज्ज-कारिज्ज—कारि-ज्जसि,-ज्जसे (कार्यसे)

ए रीते धातु मात्रनां प्रेरकभाने अने प्रेरककर्मणिनां अंगो तैयार करी सर्वकाळनां रूपो उक्त साधनिका प्रमाणे साधी जवां जोइए.

भविष्यकाळ

कराविहिइ, कराविहिए कराविस्सते (कारापयिष्यते) [जुओ पाठ १२ मो]

कराविहिसि, कराविहिसे (कारापयिष्यसे)

कराविस्सामि, कराविहामि, कराविस्सं (कारापयिष्ये)

कारिस्सते, कारिहिए (कारयिष्यते) इत्यादि

केटलांक अनियमित अंगो अने तेनां उदाहरणरूप रूपाख्यान

मूळ धातु—भा०क०नुं अंग— रूपाख्यान—

दरिस्— [१०५]दीस्— दीसइ (दृश्यते) दीसउ, दीससी दीसिज्जइ, दीसिज्जउ

---

१०५ दीस अने वुच्च-आ बे अंगो मात्र वर्तमान, विध्यर्थ, आज्ञार्थ अने ह्यस्तनभूतमां ज वपराय छे.

वच— वुच्च- वुच्चइ (उच्यते) वुच्चउ, वुच्चसी
वुच्चिज्जइ, वुच्चिज्जउ

चिण्— } [१०६]चिव्व-चिव्वइ (चीयते) प्रे० चिव्वाविइ, चिव्वाविहिइ
चिम्म-चिम्मइ प्रे० चिम्माविइ, चिम्माविहिइ

हण्— हम्म- हम्मइ (हन्यते) हम्माविइ, हम्माविहिइ
खण्— खम्म- खम्मए (खन्यते) खम्माविइ, खम्माविहिइ

दुह्— दुब्भ- दुब्भते (दुह्यते) दुब्भाविइ, दुब्भाविहिइ
लिह्— लिब्भ- लिब्भए (लिह्यते) लिब्भाविइ, लिब्भाविहिइ

वह्— वुब्भ- वुब्भए (उह्यते) वुब्भाविइ, वुब्भाविहिइ
रुंध्— रुब्भ- रुब्भए (रुध्यते) रुब्भाविइ, रुब्भाविहिइ

दह् - डज्झ- डज्झए (दह्यते) डज्झाविइ, डज्झाविहिइ
बंध्— बज्झ- बज्झए (बध्यते) बज्झाविइ, बज्झाविहिइ

सं+रुध्— संरुज्झ- संरुज्झए (संरुध्यते) संरुज्झाविइ, संरुज्झाविहिइ
अणु+रुंध्-अणुरुज्झ- अणुरुज्झए (अनुरुध्यते) अणुरुज्झाविइ,
अणुरुज्झाविहिइ

उव+रुंध्- उवरुज्झ-उवरुज्झए (उपरुध्यते) उवरुज्झाविइ,
उवरुज्झाविहिइ

गम्— गम्म- गम्मए (गम्यते) गम्माविइ, गम्माविहिइ
हस्— हस्स- हस्सते (हस्यते) हस्साविइ, हस्साविहिइ
भण्— भण्ण- भण्णते (भण्यते) भण्णाविइ, भण्णाविहिइ

छुप् }
छुव् } — छुप्प- छुप्पते (छुप्यते- स्पृश्यते) छुप्पाविइ
छुप्पाविहिइ

रुव्— रुव्व- रुव्वए (रुद्यते) रुव्वाविइ, रुव्वाविहिइ

---

१०६ 'चिव्व' थी मांडीने 'पुव्व' सुधीनां अंगो सह्यभेद सिवाय क्यांय वपराता नथी.

लभ्— लब्भ- लब्भए (लभ्यते) लब्भाविइ, लब्भाविहिइ
कथ्— कत्थ- कत्थते (कथ्यते) कत्थाविइ, कत्थाविहिइ
भुंज्— भुज्ज- भुज्जते (भुज्यते) भुज्जाविइ, भुज्जाविहिइ
हर्— हीर- हीरते (ह्रियते) हीराविइ, हीराविहिइ
तर्— तीर्- तीरते (तीर्यते) तीराविइ, तीराविहिइ
कर्— कीर्- कीरते (क्रियते) कीराविइ, कीराविहिइ
जर्— जीर- जीरते (जीर्यते) जीराविइ, जीराविहिइ
अर्ज्— विढप्प- [१०७]विढप्पते (अर्ज्यते) विढप्पाविइ विढप्पाविहिइ
जाण्— { णज्ज- णज्जते (ज्ञायते) णज्जाविइ, णज्जाविहिइ
{ णव्व - णव्वते णव्वाविइ णव्वाविहिइ
वि+आ+हर्-वाहर्- वाहिप्पते (व्याह्रियते) वाहिप्पाविइ,
वाहिप्पाविहिइ
गह्— घेप्प- घेप्पते (गृह्यते) घेप्पाविइ, घेप्पाविहिइ
छिव्— छिप्प- छिप्पते (स्पृश्यते) छिप्पाविइ, छिप्पाविहिइ
सिच् { __सिप्प- सिप्पते (सिच्यते) सिप्पाविइ,सिप्पाविहिइ
निह् { (स्निह्यते)
आ+रभ—आढप्प-आढप्पते(आरभ्यते)आढप्पाविइ,आढप्पाविहिइ
जिण्— जिव्व- जिव्वते (जीयते) जिव्वाविइ, जिव्वाविहिइ
सुण्— सुव्व- सुव्वते (श्रूयते) सुव्वाविइ, सुव्वाविहिइ
हुण्— हुव्व- हुव्वते (हूयते) हुव्वाविइ, हुव्वाविहिइ
थुण्— थुव्व- थुव्वते (स्तूयते) थुव्वाविइ, थुव्वाविहिइ
लुण्— लुव्व- लुव्वते (लूयते) लुव्वाविइ, लुव्वाविहिइ
धुण्— धुव्व- धुव्वते (धूयते) धुव्वाविइ, धुव्वाविहिइ
पुण्— पुव्व- पुव्वते (पूयते) पुव्वाविइ, पुव्वाविहिइ

---

१०७ 'विढप्प' ए अंग 'अर्ज' धातुना अर्थमां वपराय छे पण तेनुं मूळ स्वरूप 'अर्ज' मां नथी. 'अर्ज-अज्ज' अने 'विढप्प' ए वच्चे कशी समानता जणाती नथी.

केटलाक देश्य शब्दो [नारीजाति]

अम्मा (अम्बा) मा-अम्मा
अआलि-एली-अकाळे वादळां थवां
अलिया (अलिका) सखी
अवालुया-अवालु-दांतना पेढा
राडी (राटि) राड
उंबी-पाकेला घउंनी डुंडी
उत्थल्ला-उथलो-उथळवुं-उथली जवुं
उत्थल्लपत्थल्ला-उथलपाथल
उत्तरिविडी-उतरेड-वासणनी मांड
ओप्पा-ओप
ओज्झरी-होजरी
ओसरिआ-ओशरी
ओसा-ओस
कत्ता-कत्ता-पाशा-जुगारनी आंधळी कोडी
कट्टारी-कटार
कुक्खी (कुक्षि) कूख
कुहिणी (कफोणि) कोणी
खड्डा (गर्त) खाड-खाडो
खली-खोळ
खणुसा-खणस-इच्छा
खडक्की-खडकी
गड्डी (गन्त्री) गाडी

गंडीरी-गंडेरी-शेरडीनी कातळीओ
गडयडी-गडगडाट
गायरी-गागर
गोली-गोळी
चोट्टी-चोटली
चवेडी-चपटी वगाडवी
चिरिहिट्टी } - चणोठी
चिणोट्टी }
छल्ली-छाल
छवडी-चामडी
छासी-छाश
छेंडी-छीडी
जाडी-झाडी
जोवारी-जूवार-जार
झडी-वरसादनी झडी
झंटी-झटियां-माथाना वाळ
झोलिका-झोळी
डाली-डाळ-शाखा
ढंकणी-ढांकणी
ढेंका-ढिकवो
णत्था-नाकनी नथ, बळदनी नाथ
णहरी-नेरणी
णिदिणी-नींदवुं-नकामु घास कापवुं
णीसणिआ-नीसरणी
दअरी-दारु
पड्डी-पाडी

परडा–परडकुं
पड्डुआ–पाढु
पक्खरा-पाखर-हाथी घोडानो सामान
पारिहट्टी–पारेट–बहु वखतथी वीआएली गाय के भेंश
पूणी–पूणी
फग्गू–फाग
फोंफा } फुंफाडो
फुंफा }
बब्बरी–बाबरी–माथानी बाबरी
बिग्गाइ–बगाय
बोहारी–बुहारी–सावरणी
भाउज्जा–भोजाय
भुक्खा–भूख
मम्मो } मामी
मामी }
रल्ला–राळ
वट्टा–(वर्त्म) वाट–रस्तो
वाडिया–(वाटिका) वाडी
वाडी–वाड
सुहेल्ली (सुखकेली) सहेल
सिंदु–छिंदरी
सुंघिय (सुघ्रात) सुंघेलु
हुड्डा–होड–सरत
हत्थोडी–हाथनुं हथीआर–हथोडी
वियाउआ (विपादिका) वीया–पगनी वीया फाटवी ते.

सामान्य शब्दो [नरजाति]

केवट्ट (कैवर्त)[१०८] कैवर्त–केवट–होडी हांकनार

जट्ट (जर्त) जाट जातनो माणस

---

१०८ 'र्त'ने बदले 'ट्ट'नो प्रयोग थाय छे:—

कैवर्त–केवट्ट | नर्तकी–नट्टई
वर्ती–वट्टी | वर्त्म–वट्ट
वार्ता–वट्टा, वत्ता | वर्तुल–वट्टुल

[यादी:—केटलाक शब्दोमां 'र्त'नो 'त्त' पण थाय छे:—

धूर्त–धुत्त | कर्तरी–कत्तरी
मुहूर्त–मुहुत्त | कीर्ति–कित्ति

धुत्त (धूर्त) धूर्त–धूतारो

मुहुत्त(मुहूर्त) मुहरत

संवत्तअ (संवर्तक) संवर्तक वायु

सग्ह (सह्य)[१०९] सह्य नामनो पहाड, सही शकाय ते

गुग्ह (गुह्य) गुह्यक-यक्ष, गुह्य–गूढ

कलाव (कलाप)[११०] कडपलो–समूह

साव (शाप) श्राप

सवह (शपथ) शपथ–सोगन

पल्हाअ (प्रह्लाद)[१११] प्रह्लाद कुमार,

आल्हाअ (आह्लाद) आह्लाद–आनंद

पज्ज (प्राज्ञ)[११२] प्राज्ञ–डाह्यो

मूर्त – मुत्त. कार्तिक–कत्तिअ

मूर्ति – मुत्ति प्रवर्तक–प्रवत्तय वगेरे]

१०९ ' ह्य ' ने बदले ' ग्ह ' नो प्रयोग थाय छे:—

सह्य – सग्ह गुह्य – गुग्ह

११० असंयुक्त ' प ' ज्यारे अवर्ण [अ के आ] थी पर आवेलो होय त्यारे तेनो ' व ' ज थाय छे:—

कलाप – कलाव शाप – साव

काश्यप – कासव शपथ – सवह

१११ ' ह्ल ' ने बदले ' ल्ह ' वपराय छे:—

आह्लाद – आल्हाद

११२ आदिभूत ' ज्ञ ' नो ' ज ' अने अनादिभूत ' ज्ञ ' नो 'ज्ज' पण थाय छे:

प्रज्ञ – पज्ज, पण्ण. सर्वज्ञ – सव्वज्ज, सव्वण्णु.

सव्वज्ज (सर्वज्ञ)–सर्वज्ञ+बधुं जाणनार

देवज्ज (दैवज्ञ) दैवने जाणनार-जोशी

किलेस (क्लेश)[११३] क्लेश

पिलोस (प्लोष) दाह

सिलोअ
सिलोग } (श्लोक) श्लोक, कीर्ति

सिलिम्ह (श्लेष्मन्) श्लेष्मा

कासव (काश्यप) काश्यप गोत्रनो ऋषि, ऋषभदेव

कविल (कपिल) कपिल ऋषि

---

११३ संयुक्त 'ल्' ने बदले 'इल्' नो प्रयोग थाय छे:—
क्लेश–[क् + ल + एश]–क् + इल् + एस – किलेस
प्लोष [प् + ल + ओष]-प् + इल् + ओस – पिलोस
श्लोक [श् + ल – ओक]–श् + इल् + ओअ–सिलोअ

पाठ १९ मो

व्यंजनांत शब्दो

प्राकृतमां रूपाख्यानने प्रसंगे कोइ शब्द, व्यंजनांत संभवी शकतो नथी एथी एनां बधां रूपो पूर्वोक्त स्वरांत शब्दनी पेठे समजवानां छे.

शरत् अने भिषक् वगेरे शब्दोना अंत्य व्यंजननो 'अ' थाय छे: शरत् – सरअ – सरओ, सरअं, सरएण वगेरे. भिषक् – भिसअ – भिसओ, भिसअं, भिसएण वगेरे

'अत्' अने 'अन्' छेडावाळां नामोनां रूपोमां जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे :

नामने छेडे आवेला 'अत्' प्रत्ययने स्थाने 'अंत' नो व्यवहार थाय छे :

अत् –	भवत् –	भवंत	मत् – भगवत् –	भगवंत
	गच्छत् –	गच्छंत	गुणवत् –	गुणवंत
	नयत् –	नयंत, नेंत	धनवत् –	धणवंत
	गमिष्यत्–	गमिस्संत	ज्ञानवत्–	नाणवंत णाणवंत
	भविष्यत्–	भविस्संत	नीतिमत्–	नीइवंत णीइवंत

'अंत' छेडावाळां ए बधां नामोनां रूपो अकारांत नामनी जेवां समजवानां छे :—

भगवंतो, भगवंतं, भगवंतेण इत्यादि 'वीर' प्रमाणे. भवंतो, भवंतं भवंतेण इत्यादि 'सव्व' प्रमाणे.

'अत्' छेडावाळा नामोनां अनियमित रूपो

भगवत्

प्र० ए० भगवं (भगवान्)
प्र० ब० भगवंतो (भगवन्तः)
तृ० ए० भगवया (भगवता)
ष० ए० भगवओ (भगवतः)

भवत्

प्र० ए० भवं (भवान्)
प्र० ब० भवंतो (भवन्तः)
द्वि० ए० भवंतं (भवन्तम्)
द्वि० ब० भवतो (भवतः)
भवओ
तृ० ए० भवता (भवता)
भवया
ष० ए० भवतो (भवतः)
भवओ (,,)
ष० ब० भवयाण (भवताम्)

'अन्' छेडावाळां नकारांत नामोना 'अन्' नो विकल्पे 'आण' थाय छे :—

अध्वन् – [अध्व् + अन् = अध्व्+आण – अद्धाण] अद्धाण, अद्ध.

आत्मन्–अप्पाण, अप्प.

ब्रह्मन्–बम्हाण, बम्ह

उक्षन् { उच्छाण, उच्छ / उक्खाण, उक्ख }

मघवन्–मघवाण, मघव

ग्रावन्–गावाण, गाव.

मूर्धन्–मुद्धाण, मुद्ध

युवन्–जुवाण, जुव

राजन्–रायाण, राय

तक्षन्- { तच्छाण, तच्छ / तक्खाण, तक्ख — श्वन्-साण, स

सुकर्मन्-सुकम्माण, सुकम्म

पूषन् — पूसाण, पूस

ए बधां नामोनां रूपो अकारांत नामनी जेम साधी लेवानां छे :

{ अद्धाणो, अद्धाणं, अद्धाणेण / अद्धो, अद्धं, अद्धेण

{ साणो, साणं, साणेण / सो, सं, सेण

{ रायाणो, रायाणं, रायाणेण / रायो, रायं, रायेण

वगेरे

छेडाना 'अन्' नो 'आण' न थाय त्यारे ए जातनां नामोनां वधारानां केटलांक रूपो जुदी रीते थाय छे :

राय (राजन्)

१	राया (राजा)	राइणो, रायाणो (राजानः)
२	राइणं (राजानम्)	,, ,, रण्णो (राज्ञः)
३	राइणा, रण्णा (राज्ञा)	राईहि, राईहिं, राईहिँ (राजभिः)
४	राइणो, रण्णो (राज्ञः)	राईण, राईणं (राज्ञाम्) राइण, राइणं
५	राइणो, रण्णो (राज्ञः)	राइत्तो, राइतो, राईओ, राईउ (राज्ञः) राईहि, राईहिंतो (राजभ्यः)
६	राइणो, रण्णो (राज्ञः)	राईण, राईणं (राज्ञाम्) राइण, राइणं
७	राइंसि, राइम्मि (राज्ञि)	राईसु, राईसुं (राजसु)
सं०	हे राया ! (राजन्)	राइणो, रायाणो (राजानः)

अप्प (आत्मन्)

१	अप्पा (आत्मा)	अप्पाणो (आत्मानः)
२	अप्पिणं (आत्मानम्)	,, ,,
३	अप्पणिआ, अप्पणइआ अप्पणा (आत्मना)	अप्पेहि, अप्पेहिं, अप्पेहिँ (आत्मभिः)
४-६	अप्पाणो (आत्मनः)	अप्पिण, अप्पिणं, (आत्मनाम्)
५	अप्पाणो (आत्मनः)	अप्पत्तो, अप्पतो (आत्मतः) वगेरे

पूस (पूषन्)

१	पूसा (पूषा)	पूसाणो (पूषणः)
२	पूसिणं (पूषणम्)	,, (पूष्णः)
३	पूसणा (पूष्णा)	पूसहि, पूसहिं, पूसहिँ (पूषभिः)
४-६	पूसाणो (पूष्णः)	पूसिण, पूसिणं (पूष्णाम्)
५	,, ,,	पूसत्तो, पूसतो (पूषतः) वगेरे

मघव
महव } मघवन्

१	मघवं, मघवा (मघवा)	मघवाणो (मघवानः) वगेरे ' पूस 'नी पेठे.

साधनिकानी समज

प्रत्ययो

	एकव०	बहुव०
१	+	णो
२	इणं	णो
३	णा	
४-६	णो	इणं

५ णो
सं० + णो

+ आ निशान छे त्यां अर्थात् प्रथमा अने संबोधनना एकवचनमां राय, पूस, मघव वगेरे नामोनो अंत्य स्वर दीर्घ थाय छे: राय=राया. मघव=मघवा पूस=पूसा.

'णा' प्रत्यय सिवायना 'ण' कारादि प्रत्ययो लागतां पूस वगेरे शब्दोनो अंत्य स्वर दीर्घ थाय छे:

पूस+णो=पूसाणो. राय+णो=रायाणो

अपवाद

प्रथमा अने संबोधन सिवायना 'ण' कारादि प्रत्ययो लागतां 'राय'ने बदले 'राइ' अने 'रण्'नो उपयोग थाय छे:—

राय+णा = राइणा, रण्णा

राय+णो = राइणो, रण्णो

प्रथमा अने संबोधननो बहुवचन 'णो' लागतां तो 'राय'ने स्थाने एक मात्र 'राइ' वपराय छे.

'इणं' प्रत्यय लागतां 'राय'नो 'य' लोप पामे छे

राय+इणं = राइणं (राजानम्)

राय+इणं = राइणं (राज्ञाम्)

[यादी: राइ + ण = राईण, राईणं ए रूपमां इणं प्रत्यय नथी पण षष्ठी बहुवचननो 'ण' प्रत्यय छे]

'अन्' छेडावाळा कोइ कोइ शब्दने तृतीयाना एक वचनमां 'उणा' अने पंचमी षष्ठीना एकवचनमां 'उणो' प्रत्यय लागे छे. जेमके:—

कम्म (कर्मन्)

कम्म+उणा–कम्मुणा (कर्मणा)

कम्म+उणो–कम्मुणो (कर्मणः)

केटलांक अनियमित रूपो

मणसा (मनसा)
मणसो (मनसः)
मणसि (मनसि)
वयसा (वचसा)
सिरसा (शिरसा)
कायसा (कायेन)
कालधम्मुणा (कालधर्मेण)

केटलाक तद्धित प्रत्ययोनी समज

१ 'तेनुं आ' ए अर्थमां नामने 'केर' प्रत्यय लागे छे :

अम्ह+केरं=अम्हकेरं (अस्माकम् इदम्–अस्मदीयम्) अमारुं
तुम्ह+केरं=तुम्हकेरं (युष्माकम् इदम्–युष्मदीयम्) तमारुं
पर+केरं=परकेरं (परस्य इदम्–परकीयम्) पारकुं
राय+केरं=रायकेरं (राज्ञः इदम्–राजकीयम्) राजानुं

२ 'इल्ल' अने 'उल्ल' प्रत्यय 'तेमां थएल' अर्थने सूचवे छे :

गाम+इल्ल–गामिल्लं (ग्रामे भवम्) गाममां थएलुं
घर+इल्ल घरिल्लं (गृहे भवम्) घरेलु–घरमां थएलुं
अप्प+उल्ल–अप्पुल्लं (आत्मनि भवम्) आत्मामां थएलुं
नयर+उल्ल–नयरुल्लं (नगरे भवम्) नगरमां थएलुं

४ 'तेनी जेवु' एवो भाव सूचववा 'व्व' प्रत्ययनो प्रयोग करवा :

महुर व्व पाडलिपुत्ते पासाया (मथुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादाः)

४ इमा, त्त अने त्तण प्रत्यय 'पणुं'ना भावने बतावे छे:

पीण+इमा-पीणिमा (पीनिमा-पीनत्वम्) पीनपणुं-पुष्टता
देव+त्त=देवत्तं (देवत्वम्) देवपणुं
बाल+त्तण=वालत्तण (वालत्वम्) बालपणुं

५ 'वार' अर्थने बताववा 'हुत्तं' अने 'खुत्तो' प्रत्ययनो उपयोग करवो:

एग+हुत्तं=एगहुत्तं (एककृत्वः-एकवारम्) एक वार
ति+हुत्तं=तिहुत्तं (त्रिकृत्वः-त्रिवारम्) त्रण वार
ति+खुत्तो=तिखुत्तो । (त्रिकृत्वः- ,,) ,,
तिक्खुत्तो ।

६ आल, आलु, इत्त, इर, इल्ल, उल्ल, मण, मंत अने वंत ए बधा प्रत्ययो 'वाळुं' अर्थने सूचवे छे:

आल- रस+आल=रसालो (रसवान्) रसाळ-रसाळुं
जटा+आल=जडालो (जटावान्) जटावाळो

आलु- दया+आलु=दयालू (दयालुः) दयाळु-दयावाळुं
लज्जा+आलु=लज्जालू (लज्जालुः) लाजाळ-लाजवाळुं

इत्त- मान+इत्त=माणइत्तो (मानवान्) मानवान
इर- रेहा+इर=रेहिरो (रेखावान्) रेखावान
गव्व+इर=गव्विरो (गर्ववान्) गर्ववान
इल्ल- सोभा+इल्ल=सोभिल्लो (शोभावान्) शोभावान
उल्ल- सद्द+उल्ल=सद्दुल्लो (शब्दवान्) शब्दवान
मण- धण+मण=धणमणो (धनवान्) धनवान
सोहा+मण=सोहामणो (शोभावान्) सोहामणो
बीहा+मण=बीहामणो (भयवान्) बीहामणो
मंत- धी+मंत=धीमंतो (धीमान्) धीमंत
वंत- भत्ति+वंत=भत्तिवंतो (भक्तिमान्) भक्तिवंत

७ 'त्तो' प्रत्यय पंचमी विभक्तिना अर्थने सूचवे छेः

सव्व+त्तो=सव्वत्तो (सर्वतः) सर्वथी, सर्व प्रकारे

क+त्तो=कत्तो (कुतः) क्यांथी, शाथी

ज+त्तो=जत्तो (यतः) जेथी

त+त्तो=तत्तो (ततः) तेथी

इ+त्तो=इत्तो (इतः) आथी

८ 'हि' 'ह' अने 'त्थ' प्रत्यय सप्तमीना अर्थने सूचवे छेः

ज+हि=जहि (यत्र) जहिं-ज्यां

ज+ह= जह ,,

ज+त्थ=जत्थ (यत्र)

त+हि=तहि (तत्र) तहिं-त्यां

त+ह= तह ,,

त+त्थ=तत्थ (तत्र)

क+हि=कहि (कुत्र) कहिं-क्यां

क+ह= कह ,,

क+त्थ=कत्थ (कुत्र)

९ 'तेनुं तेल' एवा अर्थने सूचववा 'एल्ल' (तैल[११४]) प्रत्यय वपराय छेः

कडुअ+एल्ल=कडुएल्लं (कटुकस्य तैलम्-कटुकतैलम्) कडवुं तेल

दीव+एल्ल=दीवेल्लं (दीपस्यतैलम्-दीपतैलम्) दीवेल-दीवानुं तेल

एरंड+एल्ल=एरंडेल्लं (एरण्डस्य तैलम्-एरण्डतैलम्) एरंडेल-एरंडानुं तैल

धूप+एल्ल=धूपेल्लं (धूपस्य तैलम्-धूपतैलम्) धूपेल-धूपयुक्त तैल

१० स्वार्थने सूचववा 'अ' 'इल्ल' अने 'उल्ल' प्रत्ययनो व्यवहार विकल्पे थाय छेः

---

११४ दीपस्य तैलम्-दीपतैलम् ए शब्दमांनो 'तैल' शब्द ज कोई काळे पोतानुं व्यक्तित्व खोई प्रत्ययरूपे थएलो छे. माटे ज भाषामां 'धूपेल तेल' शब्दनो व्यवहार प्रचलित छे.

चंद्र+अ=चद्रओ, चंद्रो (चन्द्रकः) चांदो
पल्लव+इल्ल=पल्लविल्लो, पल्लवो (पल्लवकः) पालवडो-
पालव, छेडो
हत्थ+उल्ल=हत्थुल्लो, हत्थो (हस्तकः) हाथो, हाथलो

११ केटलांक अनियमित तद्धितो

एक्क+सि=एक्कसि
एक्क+सिअं+एक्कसिअं
एक्क+इआ=एक्कइआ } (एकदा) एक वखत

भ्रु+मया=भुमया
भ्रू+मया=भमया } (भ्रूः) भवां

सण+इअं=सणिअं (शनैः) धीमे धीमे

उवरि+ल्ल=अवरिल्लो (उपरितनः) उपरनुं

ज+एत्तिअ=जेत्तिअं
ज+एत्तिल=जेत्तिलं
ज+एद्दह=जेद्दहं } (यावत्) जेटलुं

त+एत्तिअ=तेत्तिअं
त+एत्तिल=तेत्तिलं
त+एद्दह=तेद्दह } (तावत्) तेटलुं

क+एत्तिअ=केत्तिअं
क+एत्तिल=केत्तिलं
क+एद्दह=केद्दहं } (कियत्) केटलुं

एत+एत्तिअ=एत्तिअं
एत+एत्तिल=एत्तिलं
एत+एद्दह=एद्दहं } (एतावत्) एटलुं
(इयत्)

पर+क्क= { परक्कं
पारक्कं (परकीयम्) पारकुं

राय+क्क=रायक्कं (राजकीयम) रायकुं-राजानुं.
अम्ह+एच्चय=अम्हेच्चयं (अस्मदीयम्) अमारुं-आमचा
तुम्ह+एच्चय=तुम्हेच्चयं (युष्मदीयम्) तमारुं-तुमचा
सव्वंग+इअ+सव्वंगिओ (सर्वाङ्गीणम्) सर्व अंगमां व्यापेलुं
पह+इअ=पहिओ (पथिकः) पथिक
अप्प+णय=अप्पणयं (आत्मीयम्) आपणुं

केटलांक वैकल्पिक रूपो

नव+ल्ल=नवल्लो, नवो (नवकः) नवलुं, नवुं
एक+ल्ल=एकल्लो, एक्को (एककः) एकलुं
मनाक्+अयं=मणयं (मनाक्) मणा-खामी
,, +इयं=मणियं, ,, ,,
मिस्स+आलिअ=मीसालिअं मीसं (मिश्रम्) मिश्र-
मेळेलुं.
दीघ+र=दीघरं, दीहरं, दीघं, दिग्घं (दीर्घम्) दीर्घ-लांबुं
विज्जु+ल=विज्जुला (विद्युत्) विजळी
पत्त+ल=पत्तलं, पत्तं (पत्रम्) पातळुं
पीत+ल=पीअलं पीतलं पीवलं पीअं (पीतम्) पीळुं
अन्ध+ल=अंधलो (अन्धः) आंधळो

तद्धितांत-शब्दो

धणी (धनी) धनी-धनवाळो
अत्थिओ (आर्थिकः) अर्थ संबंधी-अर्थने लगतुं.
आरिस (आर्षम्) ऋषिए कहेलुं

मईयं (मदीयम्) मारुं.
कोसेयं (कौशेयम्) कौशेय-रेशमी वस्त्र.
हेट्ठिल्लं (अधस्तनम्) हेठलुं.

जया (यदा) ज्यारे,
अण्णया (अन्यदा) अन्य समये
तवस्सी (तपस्वी) तपस्वी
मणंसी (मनस्वी) बुद्धिमान्
काणीणो (कानीनः) व्यासऋषि
वम्मयं (वाङ्मयम्) वाङ्मय-शास्त्र
पिआमहो (पितामहः) बापनो बाप
उवरिल्लं (उपरितनम्)उपलुं-उपरनुं

कया (कदा) क्यारे
सव्वया (सर्वदा) सर्व वखते
रायण्णो (राजन्यः) राजपुत्र
अत्थिओ (आस्तिकः) आस्तिक
भिक्खं (भैक्षम्) भीख
पीणया (पीनता) पुष्टपणुं
मायामहो (मातामहः) मानो बाप
सव्वहा (सर्वथा) सर्व प्रकारे
तया (तदा) त्यारे

केटलाक देश्य शब्दो (नान्यतर जाति)

आरोग्गिय-आरोगेलुं-खाधेलुं
उल्लुट्ट—उलटुं
उज्जड—ऊजड
ऊसय—ओशीकुं
ओचुल्ल—ओलोचूलो
ओक्किय—ओकेलुं
उंड—ऊंडुं
कंटोल, कंकोड } कंकोडुं-कंकोडानुं शाक
कोडिय—कोडियुं
कुलड—कूलडु—कूलडी
खट्ट—खाटुं
खड—खड—घास
खुट्ट—खूटेलुं

जेमणय—जमणुं
झुट्ठ—झूठुं
टिक्क—टिकी—टीलुं-तिलक
णिव्व, निव्व } (नीव्र) नेवुं-छापरानुं नेवुं
तग्ग—तागडो—त्रागडो
तुंद (तुन्द) दुंद—पेट
पद्र—पादर
पद्धर—पाधरुं
परिहण (परिधान) पहेरण
पंगुरण—पागरण
पिंजिय—पींजेलुं
पोट्ट—पोट—पेट
पोच्च—पोचुं

खुत्त—खूतेलुं
गवत्त—गवत-घास
घग्घर - घाघरो
चंग – चंग – सारुं
चउक्क—चोक
छिल्लर—छिल्लर पाणीनुं खाबोचीयुं
छिक्क छींक
जिमिय—जमेलुं
संखलय—शंखलुं
सिंदुरय—छिद्रु
सोल्ल— मांसना सोला

लाहण—लाणुं
वरुअ—बरू
रंढुअ—रांढवुं
रूअ—रू
लक्कुड—लाकडुं
वंग—वांगी—वेंगण
वद्दल—वादळ
संपडिय—सांपडेलुं
हड्ड—हाड—हाडकुं
हल्लिअ—हालेलुं—चालेलुं

सामान्य शब्दो

विक्कव (विक्लव[115]) विक्लव—न्यूनता
विप्पव (विप्लव) विप्लव—तोफान
धअ (ध्वज) धजा–ध्वज
लुद्धअ (लुब्धक) लुब्धक लोधो

कीलअ (कीलक) खीलो
वणयर (वनचर) वणियर—जंगली जनावर
दार / बार (द्वार) द्वार–बार–बारणुं

---

११५ संयुक्त ल, व, ब अने र पूर्ववर्ती होय के परवर्ती होय बन्ने ठेकाणे लोप पामे छे अने लोप थतां बाकी रहेलो अनादिभूत व्यंजन बेवडाय छेः—

पूर्ववर्ती—
उल्का—उका—उक्का
शब्द—सद—सद्द

परवर्ती
विक्लव—विकव—विक्कव
ध्वज—धअ—धअ

अलाबू } (अलाबू) दूधी
अलावू }

अक्क (अर्क) अर्क–सूर्य, आकडो

वग्ग (वर्ग) वर्ग

गह (ग्रह) ग्रह

सद्द (शब्द) शब्द–साद

अल्ल (आर्द्र) आर्दु–भीनुं

बिउण (द्विगुण) बमणुं

दिप (द्विप) द्विप–बेट

सबल } (शबल[११६]) चित्रविचित्र
सवल }

केटलाक नामधातुओ

संस्कृतमां प्रेरक प्रक्रिया उपरांत बीजी पण अनेक प्रक्रियाओ छे. जेवी के—सन्नंत, यङंत यङ्लुबंत अने नामधातुप्रक्रिया. परंतु प्राकृतमां ए माटे खास कांइ विशेष विधान नथी आर्षप्राकृतमां ए प्रक्रियाओनां रूपाख्यानो वपराएलां मळे छे, ते बधांने वर्णविकार वा उच्चारणभेदना नियमोद्वारा साधित करवानां छे.

सन्नंत–सुस्सूसइ (शुश्रूषति) सांभळवाने इच्छे छे, शुश्रूषा–सेवा करे छे.

वीमंसा (मीमांसा) विचार करवो

यङन्त–लालप्पइ (लालप्यते) लपलप करे छे–बोल बोल करे छे

यङ्लुबंत–चंकमइ (चङ्क्रमीति) चंक्रमण करे छे–चर्या करे छे

चंकमणं (चङ्क्रमणम्) चंक्रमण

नामधातु–गरुआइ (गुरुकायते) गुरुनी जेम रहे छे, गुरुनो
गरुआअइ जेवो डोळ करे छे.

अर्क—अक्क—अक्क चक्र—चक्क—चक्क

श्लक्ष्ण—सण्ह—सण्ह ग्रह—गह—गह

११६ ब ने बदले 'व' नो पण व्यवहार प्रचलित छेः—

शबल—सवल, सबल. अलाबू—अलावू अलाबू.

अमराइ (अमरायते) अमरवत् आचरे छे, पोतानी
अमराअइ जातने अमर समजे छे

तमाइ (तमायते) तम-अंधारा जे॒ छे
तमाअइ

धूमाइ (धूमायते) धूमने उद्गमे छे-धूमने काढे छे
धूमाअइ

सुहाइ (सुखायते) सुहाय छे-गमे छे
सुहाअइ

सद्दाइ (शब्दायते) सादे छे-साद करे छे
सद्दाअइ

नामधातुनां उक्त संस्कृत रूपोमां जे 'य' देखाय छे, प्राकृतरूपोमां तेनो विकल्पे लोप थाय छे. ए नियम मात्र नामधातु पूरतो छे.

पाठ २० मो

कृदंत

हेत्वर्थ कृदंत

मूळ धातुने 'तुं' अने 'त्तए'[११७] प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं हेत्वर्थ कृदंत बने छे.

'तुं' अने 'त्तए' प्रत्यय लागतां पूर्वना 'अ' नो 'इ' के 'ए' थाय छे.

तुं—

भण + तुं—[११८] { भणितुं, भणेतुं / भणिउं, भणेउं } (भणितुम्) भणवा माटे

हस् + तुं— { हसितुं, हसेतुं / हसिउं, हसेउं } (हसितुम्) हसवा माटे

हो + तुं— { होइतुं, होएतुं / होइउं, होएउं } (भवितुम्) थवा माटे

हो + तुं— { होतुं / होउं } (भवितुम्) थवा माटे

सुस्सूस + तुं— { सुस्सूसितुं, सुस्सूसेतुं / सुस्सूसिउं, सुस्सूसेउं } (शुश्रूषितुम्) शुश्रूषा करवा माटे

चंकम + तु— { चंकमितुं, चंकमेतुं / चंकमिउं, चंकमेउं } (चङ्क्रमितुम्) चंक्रमण करवा माटे

---

११७ हेत्वर्थ कृदंत करवा सारु वेदिक संस्कृतमां 'तवे' प्रत्ययनो उपयोग थएलो छे प्राकृतनो 'त्तए' अने वैदिक 'तवे' ए बन्ने तद्दन समान प्रत्ययो छे. 'त्तए' प्रत्ययवाळां रूपो आर्षप्राकृतमां विशेष मळे छे.

११८ व्यंजनांत धातुने छेडे 'अ' लागे छे अने स्वरांत धातुने छेडे 'अ' विकल्पे लागे छे ए साधारण नियम छे

भण् + तु – भण + तु – भणितु, भणेतु

हो + तुं – होअ + तुं – होइतु, होएतु

हो + तु – होतु

प्रेरक हेत्वर्थ कृदंत

[मूळ धातुनुं प्रेरक अंग करवा माटे जुओ पाठ १८ मो नि०१-२]

भण्-भणावि+तुं-{ भणावितुं / भणाविउं } (भणापयितुम्)भणाववा माटे

कर्-करावि+तुं-{ करावितुं / कराविउं } (कारापयितुम्) कराववा माटे

हस्-हासि+ तुं-{ हासितुं / हासिउं } (हासयितुम्) हसाववा माटे

कर-कारि+तु -{ कारितुं / कारिउं } (कारयितुम्) कराववा माटे

त्तए—

कर् + त्तए—करित्तए, करेत्तए (कर्तवे-कर्तुम्) करवा माटे

गम् + त्तए—गमित्तए, गमेत्तए (गन्तवे-गन्तुम्) गमन करवा माटे-जवा माटे

विहर् + त्तए—विहरित्तए, विहरेत्तए (विहर्तवे - विहर्तुम्) विहार करवा माटे

आहर् + त्तए— आहरित्तए, आहरेत्तए (आहर्तवे-आहर्तुम्) आहार करवा माटे

दल्+त्तए—दलइत्तए, दलएत्तए (दातवे- दातुम्) देवा माटे

['आहरित्तए' ने बदले 'आहारित्तए' पण वपराय छे अने 'दल्+त्तए'मां 'अइ' उमेरायो छे]

हो + त्तए -होइत्तए, होएत्तए (भवितवे-भवितुम्) थवा माटे

हो + त्तए - होत्तए (भवितवे-भवितुम्) थवा माटे

सुस्सूस + त्तए - सुस्सूसित्तए, सुस्सूसेत्तए (शुश्रूषितवे-शुश्रूषितुम्) शुश्रूषा करवा माटे

चंकम + त्तए-चंकमित्तए } (चङ्क्रमितवे-चङ्क्रमितुम्) चंक्रमण
चंकमेत्तए } करवा माटे

भण्- भणावि+त्तए-भणावित्तए-(भणापयितवे-भणापयितुम्)
भणाववा माटे

कर - कराबि+त्तए-करावित्तए (कारापयितवे-कारापयितुम्)
कराववा माटे

कर् - कारि + त्तए-कारित्तए (कारयितवे-कारयितुम्) करा-
वचा माटे

हस् - हासि + त्तए-हासित्तए (हासयितवे-हासयितुम्) हसा-
ववा माटे

अनियमित हेत्वथ कृदंत

कर् + तुं- { कातुं, काउं कट्टुं } (कर्तुम्) करवा माटे

गेण्ह् + तुं-घेत्तुं (ग्रहीतुम्) ग्रहण करवा माटे

दरिस् + तुं- दट्ठुं (द्रष्टुम्) देखवा माटे-जोवा माटे

भुंज् + तु-भोत्तुं (भोक्तुम्) खावा माटे, भोगववा माटे

मुंच् + तुं-मोत्तुं (मोक्तुं) छूटवा माटे-छूटा थवा माटे

रुद् + तुं -रोत्तुं (रोदितुम्) रोवा माटे

वच् + तुं-वोत्तुं (वक्तुम्) बोलवा माटे

लह् + तुं-लद्धं (लब्धुम्) लेवा माटे

रुध् + तुं-रोद्धुं (रोद्धुम्) रोध करवा माटे-रोकवा माटे

युध + तुं- { योद्धुं जाद्धुं } (योद्धुम्) जूझवा माटे-युद्ध करवा माटे

संबंधक भूतकृदंत

मूळ धातुने तुं, तूण, तुआण, अ, इत्ता, इत्ताण, आय अने आए प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं संबंधक भूत कृदंत बने छे.

'तुं' वगेरे शरूआतना चार प्रत्ययो लगाडतां पूर्वना 'अ' नो 'इ' अने 'ए' विकल्पे थाय छे

तूण, तुआण अने इत्ताण प्रत्ययनो 'ण' अनुस्वारवाळो थइने पण वपराय छेः तूण, तूणं
तुआण, तुआणं,
इत्ताण, इत्ताणं

तुं—

हस् + तुं – { हसितुं, हसेतुं / हसिउं, हसेउं } (हसित्वा) हसीने

हो+अ+तुं – { होइतुं, होएतुं / होइउं, होएउं } (भूत्वा) थईने

हो + तुं – होतु, होउं (भूत्वा) थईने

तूण—

हस्+तूण- { हसितूण, हसेतूण / हसिऊण, हसेऊण } (हसित्वा)हसीने

हो+अ+तूण { होइतूण, होएतूण / होइऊण, होएऊण } (भूत्वा) थईने

हो+तूण { होतूण, होतूणं / होऊण, होऊणं } (भूत्वा) थईने

तुआण—

हस्+तुआण— { हसितुआण, हसेतुआण / हसिउआण, हसेउआण } (हसित्वा) हसीने

हो+अ+तुआण—{ होइतुआण, होएतुआण } (भूत्वा) थईने
{ होइउआण, होएउआण }

हो+तुआण— होतुआण, होउआण (भूत्वा) थईने

अ—

हस्+अ— हसिअ, हसेअ (हसित्वा) हसीने

हो+अ+अ— होइअ, होएअ (भूत्वा) थईने

हो+अ— होअ (भूत्वा) थईने

इत्ता—

हस+इत्ता— हसित्ता हसेत्ता (हसित्वा) हसीने

इत्ताण—

हस्+इत्ताण— हसित्ताण हसेत्ताण (हसित्वा) ,,

आय—

गह्+आय— गहाय (गृहीत्वा) ग्रहण करीने

आए—

आय+आए— आयाए (आदाय) ,,

संपेह्+आए— संपेहाए (संप्रेक्ष्य) खूब विचारीने

['आय' अने 'आए' प्रत्ययनो उपयोग जैन आगमोनी रचनामां मळी आवे छे.]

ए ज प्रमाणे सुस्सूसितुं, सुस्सूसितूण, सुस्सूसितुआण सुस्सूसिअ, सुस्सूसित्ता, सुस्सूसित्ताण [(शुश्रूषित्वा) शुश्रूषा करीने] वगेरे रूपो समजवानां छे.

चंकमि-तुं,-मितूण,-मितुआण,-मिअ, मित्ता, मित्ताण.
(चङ्क्रमित्वा) चंक्रमण करीने

प्रेरकसबंधक भूतकृदंत—

भणावि-तुं -वितूण,-वितुआण,-विअ,-वित्ता,-वित्ताण
(भणापयित्वा) भणावीने

हासि-तुं -सितूण,-सितुआण,-सिअ,-सित्ता,-सित्ताण
(हासयित्वा) हसावीने

अनियमित संबंधक भूतकृदंत

कर्+तुं-कातुं, काउं
कर्+तूण-कातूण काऊण
कर्+तुआण-काउआण, कातुआण } (कृत्वा) करीने

गह्+तुं—घेतुं
,, तण—घेत्तूण, घेतण
,, तुआण—घेत्तुआण, घेत्तुआणं } (गृहीत्वा) ग्रहण करीने

दरिस्+तुं— दट्ठुं
,, तूण—दट्ठूण, दट्ठूणं
,, तुआण-दट्ठुआण, दट्ठुआणं } (दृष्ट्वा) देखीने

भुंज्+तुं- भोत्तुं
,, तूण- भोत्तुण, भोत्तुणं
,, तुआण-भोत्तुआण, भोत्तुआणं } (भुक्त्वा) भोजन करीने, भोगवीने

मुंच्+तुं— मोत्तुं
मोत्तुण, मोत्तुणं
मोत्तुआण, मोत्तुआणं } (मुक्त्वा) मुकीने-तजीने

भुज प्रमाणे

रुद् उपरथी रोत्— रोत्तुं, रोत्तुण, रोत्तुआण (रुदित्वा) रोईने

वच् उपरथी वोत्—वोत्तुं, वोत्तुण, वोत्तुआण (उक्त्वा) बोलीने
वंद् उपरथी वंदित्तुं, वंदित्तु (वन्दित्वा) वांदीने
कर् ,, कट्टुं, कट्टु (कृत्वा) करीने

['वंदित्तुं' अने 'कट्टुं' मां 'त्तुं' नो अनुस्वार लोपाय पण छे.]

आयाय (आदाय) ग्रहण करीने
गच्चा, गत्ता (गत्वा) जईने
किच्चा, किच्चाण (कृत्वा) करीने[११९]
नच्चा, नच्चाण (ज्ञात्वा) जाणीने
नत्ता (नत्वा) नमीने
बुज्झा (बुद्ध्वा)[१२०] बुझीने, जाणीने
भोच्चा (भुक्त्वा) भोगवीने, खाईने
मत्ता, मच्चा (मत्वा) मानीने
वंदित्ता (वन्दित्वा) वांदीने
विप्पजहाय (विप्रजहाय ? / विप्रहाय) त्याग करीने

---

११९ 'त्व' नो प्रायः 'च्च' थाय छे:—

कृत्वा – किच्चा

ज्ञात्वा – णच्चा

भुक्त्वा– भोच्चा

१२० 'ध्व' नो प्रायः 'ज्झ' थाय छे:—

बुद्ध्वा – बुज्झा

युद्ध्वा – जुज्झा

सोच्चा (श्रुत्वा) सांभळीने
सुत्ता (सुप्त्वा) सूईने
आहच्च (आहत्य) आघात करीने-पछाडीने
साहट्ट (संहृत्य) संहार करीने, लई जईने, बलात्कार करीने
हंता (हत्वा) हणीने
आहट्टु (आहृत्य) आहार करीने
परिन्नाय (परिज्ञाय) बराबर समजीने
चिच्चा, चेच्चा, चइत्ता (त्यक्त्वा) त्याग करीने
निहाय (निधाय) स्थापीने, प्रवर्तावीने
पिहाय (पिधाय) ढांकीने
परिच्चज्ज (परित्यज्य) परित्याग करीने
अभिभूय (अभिभूय) अभिभव करीने
पडिबुज्झ (प्रतिबुध्य) समजीने

उच्चारणना भेदथी नीपजेलां आ बधां अनियमित रूपोनी साधनिका, सामे जणावेलां संस्कृत रूपोद्वारा ज समजी शकाय एम छे. आ उपरांत बीजां घणां य अनियमित रूपो छे तेमनी पण साधनिका, आ रूपोनी पेठे ज छे माटे ए बधां रूपो नथी जणाव्यां.

विध्यर्थ कृदंत

मूळ धातुने तव्व, अणीअ के अणिज्ज प्रत्यय लगाडवाथी विध्यर्थ कृदंत बने छे.

'तव्व 'नी पूर्वना 'अ' नो 'इ' के 'ए' थाय छे.

तव्व--

हस् + तव्व— { हसितव्वं, हसेतव्वं / हसिअव्वं, हसेअव्वं } (हसितव्यम्) हसवा जेवुं, हसवुं जोईए

हो + तव्व— { होइतव्वं, होएतव्वं / होइअव्वं, होएतव्वं / होतव्वं होयव्व / होअव्व } (भवितव्यम्) थवा योग्य, थवुं जोईए

ना + तव्व नातव्वं, नायव्वं (ज्ञातव्यम्) जाणवा योग्य, जाणवुं जोईए

चिव्व + तव्व { चिव्वितव्वं, चिव्वेतव्वं / चिव्विअव्वं, चिव्वेअव्वं } (चेतव्यम्) एकठुं करवा योग्य, एकठुं थवुं जोईए

अणीअ, अणिज्ज—

हस् + अणीअ— { हसणीअं, हसणिज्जं / हसणीयं } (हसनीयम्) हसवा जेवुं, हसवुं जोईए

प्रेरक विध्यर्थ कृदंत

हसावि + तव्व— { हसावितव्वं / हसाविअव्वं / हसावियव्वं } (हसापयितव्यम्) हसावा जेवुं, हसाववुं जोईए

हसावि + अणीअ— { हसावणीअ, हसावणिज्जं / हसावणीय } (हसापनीयम्),

ए ज प्रमाणे वयणीयं. वयणिज्जं. करणीयं, करणिज्जं. सुस्सूसितव्वं, चंकमितव्वं, सुस्सूसणिज्जं, सुस्सूसणीयं वगेरे रूपो समजी लेवानां छे.

अनियमित विध्यर्थ कृदंत

कज्जं (कार्यम्) करवा योग्य
किच्चं (कृत्यम्) कृत्य-कामु
गेज्झं (ग्राह्यम्) ग्रहण करवा योग्य
गुज्झं (गुह्यम्) छूपाववा योग्य, गुप्त
वज्जं (वर्ज्यम्) वर्जवा योग्य
वज्जं (वद्यम्) बोलवा योग्य
अवज्जं (अवद्यम्) नहि बोलवा योग्य-पाप
वच्चं (वाच्यम्)
वक्कं (वाक्यम्) कहेवा योग्य-वाक्य
जन्नं (जन्यम्) जणवा योग्य
भिच्चो (भृत्यः) पाळवा योग्य-भृत्य-नोकर
भज्जा (भार्या) भरण पोषण योग्य भारजा

अज्जो (अर्यः) अर्य-वैश्य, स्वामी
अज्जो (आर्य) आर्य
पच्चं (पाच्यम्) पचवा-रांधवा-योग्य
भव्वं (भव्यम्) थवा योग्य-ठीक
घेत्तव्वं (ग्रहीतव्यम्) ग्रहण करवा जेवुं
वोत्तव्वं (वक्तव्यम्) कहेवा जेवुं
रोत्तव्वं (रुदितव्यम्) रोवु-रुदन
कातव्वं, कायव्वं, काअव्वं (कर्तव्यम्) कर्तव्य-करवा जेवुं
भोत्तव्वं (भोक्तव्यम्) भोजन करवा जेवुं भोगववा जेवुं
मोत्तव्वं (मोक्तव्यम्) मूकवा जेवुं
दट्ठव्वं (द्रष्टव्यम्) देखवा जेवुं

वर्तमान कृदंत

मूळ धातुने 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु वर्तमान कृदंत बने छे.

'ई' प्रत्यय तो फक्त स्त्रीलिंगमां ज वपराय छे.

'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लागतां पूर्वना 'अ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे.

न्त—

भण् + न्त—भणंतो, भणेंतो, भणितो (भणन्) भणतो
भणंतं, भणेंतं, भणितं (भणन्) भणतुं

भणंती, भणेंती, भणिंती, (भणन्ती) भणती
भणंता, भणेंता, भणिंता,[१२०] (भणन्ती) ,,

होँ+अ+न्त— होअंतो, होएंतो, होइंतो, (भवन्) थतो
होंतो हुंतो
होअंतं, होएंतं, होइंतं (भवत्) थतुं
होंतं हुंतं
होअंती, होएंती, होइंती (भवन्ती) थती
होअंता, होएंता, होइंता (भवन्ती) ,,
होंती, होंता
हुंती हुंता

माण—

भण्+माण— भणमाणो, भणेमाणो (भणमानः) भणतो
भणमाणं भणेमाणं (भणमानम्) भणतुं
भणमाणी भणेमाणी (भणमाना) भणती
भणमाणा, भणेमाणा

हो+अ+माण—होअमाणो, होएमाणो (भवमानः) थतो
होमाणो
होअमाणं, होएमाणं (भवमानम्) थतुं
होमाणं

---

१२० कोइ पण विशेषण दर्शक नामना अंत्य 'अ' नो वाराफरती 'ई' अने 'आ' करवाथी ते नाम स्त्रीलिंगी थाय छेः—

भणन्– भणंत– भणंता, भणंती
नील– नील– नीला, नीली
सर्व– सव्व– सव्वा, सव्वी
शूर्पणख–सुप्पणह–सुप्पणहा, सुप्पणही
साधन– साहण– साहणा, साहणी

होअमाणी, होएमाणी (भवमाना) थती
होअमाणा, होएमाणा
होमाणा, होमाणी

ई—

भण् + ई— भणई, भणेई (भणन्ती) भणती
हो + अ + ई होअई, होएई (भवन्ती) थती
होई

ए ज प्रमाणे कर्तरि प्रेरक अंग, सादु भावे अंग, सादुं कर्मणिअंग अने प्रेरक भावे तथा कर्मणिअंगने पण उक्त त्रणे प्रत्ययो लगाडवाथी तेमनां वर्तमान कृदंतो बने छे.

कर्तरि प्रेरक वर्तमान कृदत—

करावि+अ+न्त—करावंतो, करावेंतो (कारापयन्) करावतो
कार + न्त— कारंतो, कारेंतो (कारयन्) ,,
करावि+अ+माण-करावमाणो,करावेमाणो(कारापयमानः) ,,
कार + माण – कारमाणो, कारेमाणो, (कारयमाणः) ,,

सादुं भावे वर्तमान कृदंत—

भण्+इज्ज+न्त— भणिज्जंतं
,, + ,, + माण–भणिज्जमाणं
भण्+इअ+न्त— भणीअंतं
,, + ,, + माण–भणीअमाणं
(भण्यमानम्) भणावुं–भणवामां आवतुं

सादुं कर्मणि वर्तमान कृदंत—

भणीअतो, भणिज्जंतो गंथो (भण्यमानः ग्रन्थः) भणातो ग्रंथ
भणीअमाणो भणिज्जमाणो सिलोगो (भण्यमानः श्लोकः),, श्लोक

भणिज्जंती भणीअंती गाहा (भण्यमाना गाथा) भणाती गाथा
भणिज्जमाणी, भणीअमाणी पंती (भण्यमाना पङ्क्तिः) पंक्ति
भणिज्जई, भणीअई ,,

प्रेरक भावे

भणाविज्जतं (भणाप्यमानम्) भणावातुं—
भणाववामां आवतुं
भणावीअंतं वगेरे

प्रेरक कर्मणि

भणाविज्जंतो मुणी (भणाप्यमानः मुनिः)
भणावातो मुनि
भणाविज्जमाणो
भणावीअंतो
भणावीअमाणो
भणाविज्जंती साहुणी (भणाप्यमाना साध्वी)
भणाविज्जमाणा भणावाती साध्वी
भणावीअंता
भणावीअमाणा
भणाविज्जई
भणावीअई इत्यादि

एज प्रमाणे—

सुस्सूसंतो (शुश्रूषन्)	चंकमंतो (चङ्क्रमन्)
सुस्सूसमाणो (शुश्रूषमाणः)	चंकममाणो (चङ्क्रममाणः)
सुस्सूसिज्जंतो	चंकमिज्जंतो
सुस्सूसिज्जमाणो (शुश्रूष्यमाणः)	चंकमिज्जमाणो (चङ्क्रम्यमाणः)
सुस्सूसीअंतो	चंकमीअंतो
सुस्सूसीअमाणो	चंकमीअमाणो

आ बधां रूपो जाणी लेवां

भूतकृदंत

मूळ धातुने 'त' के 'अ' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं भूतकृदंत बने छे.

ए बन्ने प्रत्ययो लागतां पूर्वना 'अ' नो 'इ' थाय छेः

गम् + अ + त—गमितो } (गतः) गयेलो
गम् + अ + अ- गमिओ }

भावे—

गमितं, गमिअं (गतम्) जवुं-गति

कर्मणि—

गमितो गामो } (गतो ग्रामः) जवाएलुं गाम
गमिओ गामो }

प्रेरक—

करावितो (कारापितः) } करावाएलो-करावेलो
कारिओ (कारितः) }

अनियमित भूतकृदंत[१२२]

गयं (गतम्) गयेलुं, जवुं	मडं (मृतम्) मरेलुं, मरवुं
मयं (मतम्), मानेलुं, मानवुं, मत	जिअं (जितम्) जितेलुं, जितवुं
कडं (कृतम्) करेलुं, करवुं	तत्तं (तप्तम्) तपेलुं, तपवुं
हडं (हृतम्) हरेलुं, हरवुं	कयं (कृतम्) करेलुं, करवुं

१२२ आ कृदंतो अने बीजां कृदंतो पण [पानुं २०५, २११] विभक्तिवाळां जणावेलां छे ते उपरथी तेमना मूळ शब्दो विद्यार्थीओए जाते शोधी लेवा जेमकेः–

विभक्तिवाळुं–	मूळ शब्द–	
गयं	गय	
मडं	मड	
दट्ठ	दट्ठ	
पायगो	पायग	
लेहओ	लेहअ	
हसिरो	हसिर	
कज्ज	कज्ज	
भिच्चो	भिच्च	
हसेतव्वं	हसेतव्व	वगेरे

दट्ठं (दृष्टम्) दीठुं-देखेलु, देखवुं
मिलाणं } (म्लानम्) म्लान
मिलानं } थएलु-करमाएलुं, म्लान थवु
अक्खायं (आख्यातम्) कहेलुं, कहेवु
निहियं (निहितम्) निहित-स्थापेलुं, स्थापवुं
आणत्तं (आज्ञमम्) आज्ञा करेलुं, आज्ञा
संखयं (संस्कृतम्) संस्कारेलु, संस्कार
आकुट्ठं (आक्रुष्टम्) आक्रोश करेलुं, आक्रोश
विणट्ठं (विनष्टम्) विनष्ट, विनाश
पणट्ठं (प्रणष्टम्) प्रनष्ट, नाश
मट्ठं (मृष्टम्) शुद्ध, शोधन
हयं (हतम्) हणेलु-हणाएलुं, हणवुं
जायं (जातम्) जायेलुं-थएलुं, जणवु
गिलाणं } (ग्लानम्) ग्लान थएलुं,
गिलानं } ग्लान थवुं
परूविअं (प्ररूपितम्) प्ररूपेलुं जणावेलुं, प्ररूपवुं
ठियं (स्थितम्) स्थित, स्थान
पिहियं (पिहितम्) ढांकेलुं, ढांकवुं,
पन्नत्तं } (प्रज्ञप्तम्) प्रज्ञापेलुं,
पण्णत्तं } प्रज्ञापवुं
पन्नवियं (प्रज्ञपितम्) ,,
सक्कयं (संस्कृतम्) संस्कृत
किलिट्ठं (क्लिष्टम्) क्लेशवाळु, क्लिष्ट
सुयं (स्मृतम्) स्मरेलुं, याद करेलुं
सुयं (श्रुतम्) सांभळेलु, सांभळवु
संसट्ठं (संसृष्टम्) संसर्गवाळुं, संसर्ग
घट्ठं (घृष्टम्) घसेलुं, घसवु वगेरे

उच्चारणना भेदथी नीपजेलां आवां अनेक रूपोनी साधनिका, वर्णविकारना नियमोद्वारा समजी लेवानी छे.

भविष्यत्कृदंत

मूळ धातुने इस्संत, इस्समाण अने इस्सई प्रत्यय लगाडवाथी तेनु भविष्यत्कृदंत बने छेः—

करिस्संतो (करिष्यन्) करतो होईश
करिस्समाणो (करिष्यमाणः) ,,
करिस्सन्ती (करिष्यन्ती) करती होईश
करिस्सई ,, ,,
कराविस्समाणो (कारापयिष्यमाणः)
कराविस्संतो (कारापयिष्यन्) करावतो होईश
इत्यादि.

कर्तृदर्शक कृदंत

मूळ धातुने ' इर ' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं कर्तृदर्शक कृदंत बने छे.

हस+इर–हसिरो (हसनशीलः) हसनारो
नव+इर–नविरो (नम्रः–नमनशीलः) नमनारो
हसाव+इर–हसाविरो (हासनशीलः) हसावनारो
हसिरा, हसिरी (हसनशीला) हसनारी
नविरा, नविरी वगेरे. (नम्रा–नमनशीला) नमनारी

अनियमित कर्तृदर्शक कृदंतो

पायगो, पायओ } (पाचकः) पाक करनार–रांधनार

नायगो, नायओ } (नायकः) नायक–नेता–दोरनार

नेआ, नेता } नेता ,, ,,

विज्जं[१२३] (विद्वान्) विद्वान्
कत्ता (कर्ता) कर्ता–करनार
विकत्ता (विकर्ता) विकार करनार
वत्ता (वक्ता) वक्ता–बोलनार
हंता (हन्ता) हणनार
छेत्ता (छेत्ता) छेदनार
भेत्ता (भेत्ता) भेदनार
कुंभआरो (कुम्भकारः) कुंभ करनार–कुंभार

---

१२३ 'द्व' नो प्रायः 'ज्ज' थाय छेः–
विद्वान्–विज्ज

कम्मगरो (कर्मकरः) कर्म-काम-करनार-कामगरो
भारहरो (भारहरः) भार लइ जनार
थणंधयो (स्तनंधयः) धावनार बाळक
परंतवो (परंतपः) शत्रुने तपावनार-प्रतापी
लेहओ (लेखकः) लखनार वगेरे

केटलांक अव्यया

अग्गे (अग्रे) आघे-आगळ
अकट्टु (अकृत्वा) नहि करीने
अईव } (अतीव) अतीव-विशेष
अतीव }
अग्गओ (अग्रतः) आगळथी
अओ } (अतः) आथी-एथी
अतो }
अण्णमण्णं (अन्योऽन्यम्) अन्योअन्य-एक बीजाने
अत्थं (अस्तम्) आथमवुं
अत्थु (अस्तु) थाओ
अद्धा (अद्धा) समय
अण (नञ्-अन) निषेध-विपरीत
अण्णहा (अन्यथा) तेम नहि तो
अणंतरं (अनन्तरम्) अतर विना, तुरत
अदुवा } (अथवा) अथवा
अदुव }
अहुणा (अधुना) हमणां
अप्पेव (अप्येव) सशय
अभितो (अभितः) चारे बाजु
अम्मो आश्चर्य
अलं (अलम्) सर्यु-निषेध पूरतुं
अवस्सं (अवश्यम्) अवश्य
असइं (असकृत्) अनेकवार
उप्पिं }
अवरिं } (उपरि) उपर
उवरिं }
अहत्ता (अधस्तात्) नीचे
आहच्च (आहत्य) बलात्कार
इओ } (इतः) आ तरफ, वाक्यारंभ
इतो }
इहरा (इतरथा) एम नथी-अन्यथा
ईसिं (ईषत्) थोडुं
उत्तरसुवे (उत्तरश्वः) आवती काल पछी
एगया (एकदा) एकवार-एक दिवसे
एगंततो (एकान्ततः) एक तरफी
एत्थ (अत्र) अहीं
कल्लं (कल्यम्) काले
कह } (कथम्) केम केवी रीते
कहं }

कालओ (कालतः) काळे करीने, वखते

केवच्चिरं (कियच्चिरम्) केटला लांबा समय सुधी

केवच्चिरेण (कियच्चिरेण) केटला लांबा समये

सामान्य शब्दो-नरजाति

णिलाडवट्ट (ललाटपट्ट) निलवट

सावय (श्वापद) सावज

डंड (दण्ड) दंड, डंडो, डांडियो

बन्धु (बन्धु) भांडु-भाई

जरढय (जरठक) घरडो-जरडो

मूक, मूग (मूक) मुगो

मउड (मुकुट) मोड, मुगट

अंबमउड (आम्रमुकुट) अंबोडो

काक / काग (काक) कागडो

बक, बग (बक) बगलो

अंबकाल / अंबगाल (आम्रकाल) आंबागाळो

विवाहकाल (विवाहकाल) विवाडो -लग्नसरा

बिडाल (बिडाल) बिलाडो

कण्णिआर (कर्णिकार) कणेर

फलाहार (फलाहार) फराळ

जवरय (यवाङ्कुर) जुवारा

महण्णव (महार्णव) महेरामण-समुद्र

मेरामण (मेरा+मतु-) मेरा+मण "

मेरा (मेरा) मर्यादा

ओहरिसो / ओघरिसो (अवघर्ष) ओरसियो

चित्तयार (चित्रकार) चितारो

सुत्तहार (सूत्रधार) सुतार

आसाढ (आषाढ) अशाड मास

पाघुणय / पाहुणय (प्राघूणक) प्राहुणो-अतिथि

देसवइ (देशपति) देशाई

किमि (कृमि) कृमि-करमियुं

भाइणेज्ज (भागिनेय) भाणेज

घूअ (घूक) घूअड-घूड

देवर (देवर) देर

गोधूम (गोधूम) गोधम-घउ

पूयर (पूतर) पोरो-पूरो

लोहयार (लोहकार) लुहार

कोणय (कोणक) खूणो

सिआल (शृगाल) शियाळ

गाहय (ग्राहक) घराक

फेण (फेन) फीण

बाध / बाह (बाध) बांधो

बप्फ (बाष्प) बाफ

सद्द (शब्द) साद
कच्छच (कच्छप) काचबो
अरय (अरक) आरो पैडानो
डंस (दश) डंख
सिलेसम (श्लेष्मन्) श्लेखम
वसभ (वृषभ) वृषभ राशी
संतोस (संतोष) संतोक
वेस (वेष) वेष–भेख
कुडुंबी (कुटुम्बिन्) कणबी
छावय (शावक) छैयो–छोकरो
छुहागुड (सुधागुड) छागोळ–
चुनो अने गोळनुं मिश्रण
मसय (मशक) मच्छर
किण्हसार (कृष्णसार) कालीयार
मृग
निंबु (निम्बु) लींबु
मउल (मुकुल) मोर
मुग्गरय (मुद्गरक) मगदळ–
मोगरो
हरिताल (हरिताल) हरताल
कुढारय (कुठारक) कुहाडो

कुद्दालय (कुद्दालक) कोदाळो
पच्छाताव (पश्चात्ताप) पस्तावो
अच्छ (अक्ष) आंस–हांस
तरस (तरक्ष) तरस नामनुं जनावर
आसंक (आशङ्क) आंचको
मक्कडय (मर्कटक) मांकडो
कोलिअ (कौलिक?) करोळियो
कोलिक } (कोलिक) कोळी–एक
कोलिअ } जात
कोल्हुअ —कोल्हु–सियोडो
कोइल— कोयलो
कोत्थल— कोथळो
कुक्कुस— कुशका
कडइअ— कडिओ–चणनार
कडप्प— कडपलो–समूह
कक्किड — काकिडो
कच्छर— कचरो
रवय— रवैयो
कवड्ड (कपर्द) कोडो
कोल } (क्रोड) खोळो
कोड }

सामान्य शब्दो—नारीजाति

आपत्ति (आपत्ति) ओपटी
दाढा (दंष्ट्रा) दाढ
गब्भिणी (गर्भिणी) गाभणी
पतीति (प्रतीति) पतीज–विश्वास

चुच्छुंदरिआ (तुच्छोन्दुरुका)
छछुंदर
कलसी (कलशी) कसली
परिट्ठावणिआ (परिष्ठापनिका)
परठामणी

देवराणी (देवराणी) देराणी
गोणी (गोणी) गुणी–अनाज भरवानी
कहोणी (कफोणी) कोणी
ओसरिया—ओशरी
छेंडी (छिद्रिका) छींडी
अलसी (अतसी) अलसी
महिसी (महिषी) भश
छासी — छाश
छवि | (छवि) छबी
छवी |
हलद्दी, हलिद्दा (हरिद्रा)हळदर
छाया, छाही (छाया) छांया
सवत्तिका (सपत्नीका) शोक्य
भीइआ | (भीतिका) बीक
भीइका |
छुहा (सुधा) छो–चुनो
लालसा (लालसा) लालच
कंकतिआ (कङ्कतिका) कांचकी
कुढारिया (कुठारिका) कुहाडी
कुद्दालिया (कुद्दालिका) कोदाळी
बारक्खरी (द्वादशाक्षरिका) बाराखडी
मज्जाया (मर्यादा) माजा–मलाजो
मंजूसा (मञ्जूषा) मजूस–पेटी
पेडिआ (पेटिका) पेटी
कच्छडिआ (कच्छटिका)काछडी
लोमपडी (लोमपटी) लोबडी–भरवाडने पहेरवानी साडी

वत्ता (वार्त्ता) वात
वत्ति (वर्त्ति) वाट, बत्ती
तआ (त्वचा) तज
लक्खा (लाक्षा) लाख
कक्खा (कक्षा) काख
रक्खा (रक्षा) राख
विभूति | (विभूति) भभूत राख
विभूइ |
माला (माला) माला, माळ
लज्जा (लज्जा) लाज
कडी (कटी) कड
जङ्घा (जङ्घा) जाघ
सडसिआ (सदशिका) साडसी
अंगुलि (अङ्गुलि) आंगळी
भाउज्जाया (भ्रातृजाया) भोजाई भाभी
बारिआ (द्वारिका) बारी
भइणी | (भगिनी) बहन
भगिणी |
संझा (सन्ध्या) सांज
रत्ति (रात्री) रात
गोट्ठी (गोष्ठी) गोठ, गोठडी
वरगोट्ठी | (वरगोष्ठी) वरोठी
वरोट्ठी |
वरजत्ता | (वरयात्रा)बरात–जान
वरअत्ता |
जन्नी | (जन्नी) जान
जणी |
गोरी (गौरी) गोरी

सामान्य शब्दो—नान्यतर जाति

पावरणय (प्रावरणक) उपरणुं
बिगुणय, बिउणय (द्विगुणक) बमणुं
तिगुणय, तिउणय (त्रिगुणक) त्रमणुं
चउगुणय, चउग्गुणय (चतुर्गुणक) चोगणुं
छग्गुणय (षड्गुणक) छगणुं
सत्तगुणय (सप्तगुणक) सातगणुं
अट्ठगुणय (अष्टगुणक) आठगणुं
मिड्ढफल, मिड्ढहल (मेढ्फल) मींढळ-मींढोळ
मयणफल, मयणहल (मदनफल) मींढोळ
उत्थिअ (उत्थित) उठ्युं
विस (विष) विख
कोमलय (कोमलक) कूणुं
सावत्तक, सावत्तय (सापत्न्यक) सावकुं
सगडय (शकटक) छकडो-शकट
छट्ठय (षष्ठक) छठ्ठुं
अच्चब्भुय (अत्यद्भुत) अचंबो
अद्ध (अर्ध) अडधुं
सोरभ (सौरभ) साडम
तिमिर (तिमिर) तम्मर-अंधारुं
दालिद्द (दारिद्र्य) दळदर—दारिद्र्य
रुक्खय (रूक्षक) लूखुं
पलाल (पलाल) पराळ-चोखानुं घास

लङ्गल (लाङ्गल) लंगर
बयर (बदर) बोर-बेर
वत्त, वट्ट (वर्त्म) वाट-रस्तो
कयल (कदल) केळुं
नीलय (नीलक) नीलो-नीलुं
वाइत्त, वाइत्त (वादित्र) वाजित्र
कोटर (कोटर) कोतर
तिलय (तिलक) टीलुं
बिंदु (बिन्दु) मींडुं
दाहिणय (दक्षिणक) डाबुं
निच्छिअय (निश्चितक) नक्की
उच्छृंखलय (उच्छृङ्खलक) उच्छृं-खल-उछांछळो
उच्चंचलय (उच्चञ्चलक) उछां-छळो
चुच्छ (तुच्छ) तुच्छ-जूज
पगरण (प्रकरण) पगरण-प्रारंभ
नमिर (नम्र) नम्र-नरम
चक्क (चक्र) चक्र-चरखो
माइहर (मातृगृह) मायरु महियर
लोहखड (लोहखण्ड) लोखंड
सिंग (शृङ्ग) सिंगडुं
भयव्वाउलय (भयव्याकुलक) बेबाकळो
रोमय (रोमक) रूवुं-रोम
दंतपवण (दन्तपवन) दंतवण-दातण
बिइज्जय (द्वितीयक) बीजुं

पाठ २१ मो

संख्यावाचक शब्दो

विशेषताः--

अट्ठारस (अष्टादश) सुधीना संख्यावाचक शब्दोने षष्ठीना बहुवचनमां 'ण्ह' अने 'ण्हं' प्रत्यय लागे छेः

एगण्ह, एगण्हं { एकेषाम् / एकानाम् ? }

दुण्ह, दुण्हं (द्वयोः) उभयण्ह, उभयण्हं { उभयेषाम् / उभयानाम्? } वगेरे

एग, एक, इक, एअ (एक)

आ शब्दनां पुंलिंगी रूपो 'सव्व' नी जेवां थाय छे. स्त्रीलिंगी रूपो 'माला' नी जेवां थाय छे अने नपुंसकलिंगी रूपो नपुंसक 'सव्व'नी जेवां थाय छे.

	उभ, उह (उभ)	
प०—	उभे	(उभे)
बी०—	उभे उभा	(उभान्)
त०—	उभेहि उभेहिं उभेहिँ	(उभेभिः, उभैः)
च० छ०—	उभण्ह, उभण्हं	(उभेषाम्, उभानाम् ?)
पं०—	उभत्तो, उभतो, उभओ, उभाओ, उभाउ उभाहि, उभेहि	(उभतः)

उभाहिंतो, उभेहिंतो (उभेभ्यः)
उभासुंतो, उभेसुंतो

स० — उभेसु, उभेसुं (उभेषु)

दु (द्वि) त्रणे लिंगनां रूपो

प०— दुवे, दोण्णि } दुण्णि } वेण्णि } विण्णि } दो, वे, बे (द्वौ) (द्वे)

बी० — „ „ „ „ „ „
„ „

त०— दोहि, दोहिं, दोहिँ (द्वाभ्याम्)
वेहि, वेहिं, वेहिँ

च० छ० दोण्ह दोण्हं, दुण्ह दुण्हं, (द्वयोः द्वोनाम् ?)
वेण्ह वेण्हं, विण्ह, विण्हं

प० दुत्तो, दुतो दोओ दोउ (द्वितः)
दोहिंतो, दोसुंतो (द्वाभ्याम्)

स० दोसु, दोसुं (द्वयोः द्विषु ?)
वेसु, वेसुं

ति (त्रि) त्रणे लिंगनां रूपो

प० } बी० } तिण्णि (त्रीणि)

च० छ० तिण्ह, तिण्हं (त्रयाणाम् त्रीणाम् ?)
शेष बहुवचनी रूपो 'रिसि' नां बहुवचनी रूपो जेवां छे.

चउ (चतुर्) त्रणे लिंगनां रूपो

प० बी० चत्तारो, चउरो चत्तारि (चत्वारः चतुरः, चत्वारि)

त० चऊहि चऊहिं चऊहिँ (चतुर्भिः)
चउहि चउहिं चउहिँ

च० छ०— चउण्ह, चउण्हं (चतुर्णाम्)
शेष बहुवचनी रूपो 'भाणु'नां बहुवचनो रूपो जेवां छे.

पंच (पञ्च) त्रणे लिंगनां रूपो

प० बी०— पंच (पञ्च)
त०— पंचेहि, पंचेहिं पंचेहिँ (पञ्चभिः)
पंचाहि पंचहिं पंचहिँ
च० छ०— पंचण्ह, पंचण्हं (पञ्चानाम्)
स०— पंचसु, पंचसुं (पञ्चसु)
शेष बहुवचनी रूपो 'जिण'नां बहुवचनी रूपो जेवां छे.

आ रीते आ नीचे आपेला बीजा बधा शब्दोनां रूपो जाणवानां छेः

छ (षट्) छ
सत्त (सप्तन्) सात
अट्ठ (अष्टन्) आठ
नव (नवन्) नव
दस, दह } (दशन्) दश
एआरह, एगारह, एआरस } (एकादश) अगीयार
दुवालस, बारह, बारस } (द्वादश) बार
तेरह, तेरस } (त्रयोदश) तेर

चउद्दस, चउद्दह, चोद्दस, चोद्दह } (चतुर्दश) चौद
पण्णरह, पण्णरस } (पञ्चदश) पन्नर
सोलस, सोलह } (षट्+दश–षोडश) सोळ
सत्तरस, सत्तरह } (सप्तदश) सत्तर
अट्ठारस, अट्ठारह } (अष्टादश) अढार

कइ (कति)

प० बी० } कई (कति)

च० छ० } कइण्ह, कइण्हं (कतीनाम्)

बाकी बधां 'रिसि'नां बहुवचनी रूपो जेवां जाणवां.

नीचे जणावेला शब्दोमां जेओ आकारांत छे तेमनां रूपो 'वाया' नी जेवा जाणवानां छे अने जे शब्दो इकारांत छे तेमनां रूपो 'गति' नो जेवां समजवानां छे.

एगूणवीसा (एकोनविंशति) ओगणीश

वीसा (विंशति) वीश

एगवीसा, इक्कवीसा, एकवीसा } (एकविंशति) एकवीश

बावीसा (द्वाविंशति) बावीश

तेवीसा (त्रयोविंशति) तेवीश-त्रेवीश

चउवीसा, चोवीसा } (चतुर्विंशति) चोवीश

पणवीसा (पञ्चविंशति) पच्चीश-पचवीश

छव्वीसा (षड्विंशति) छव्वीश

सत्तावीसा (सप्तविंशति) सत्तावीश

अट्ठावीसा, अट्ठवीसा, अडवीसा } (अष्टाविंशति) अठ्यावीश

एगूणतीसा (एकोनत्रिंशत्) ओगणत्रीश

तीसा (त्रिंशत्) त्रीश

एगतीसा, इक्कतीसा, इक्कतीसा } (एकत्रिंशत्) एकत्रीश

बत्तीसा (द्वात्रिंशत्) बत्रीश

तेतीसा, तित्तीसा } (त्रयस्त्रिंशत्) तेत्रीश

चउत्तीसा, चोत्तीसा } (चतुस्त्रिंशत्) चोत्रीश

पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्) पांत्रीश

छत्तीसा (षट्त्रिंशत्) छत्रीश

सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्) साडत्रीश

अट्ठत्तीसा, अडतीसा } (अष्टत्रिंशत्) आडत्रीश

एगुणचत्तालिसा (एकोनचत्वारिंशत्) ओगणचालीश

चत्तालीसा (चत्वारिंशत्) चालीश

प्राकृत	संस्कृत	
एगचत्तालिसा इक्कचत्तालिसा एक्कचत्तालिसा इगयाला	(एकचत्वारिंशत्)	एकताळीश
बेचत्तालिसा बेआलिसा बेआला दुचत्तालिसा	(द्विचत्वारिंशत्)	बेंताळीश
तिचत्तालिसा तेआलिसा तेआला	(त्रिचत्वारिंशत्)	त्रताळीश–तताळीश
चउचत्तालिसा चोआलिआ चोआला चउआला	(चतुश्चत्वारिंशत्)	चुमाळीश–चुआळीश
पणचत्तालिसा पणयाला	(पञ्चचत्वारिंशत्)	पिस्ताळीश
छचत्तालिसा छायाला	(षट्चत्वारिंशत्)	छेंताळीश
सत्तचत्तालिसा सगयाला	(सप्तचत्वारिंशत्)	सूडताळीश
अट्ठचत्तालिसा अडयाला	(अष्टचत्वारिंशत्)	अडताळीश
एगूणपण्णासा	(एकोनपञ्चाशत्)	ओगणपचास
पण्णासा पण्णास पञ्चासा	(पञ्चाशत्)	पचास

प्राकृत	संस्कृत	
एगपण्णासा इक्कपण्णासा एक्कपण्णासा एगावण्णा	(एकपञ्चाशत्)	एकावन
दुप्पण्णासा बावण्णा	(द्विपञ्चाशत्)	बावन
तेवण्णा तिपण्णासा	(त्रिपञ्चाशत्)	त्रेपन
चोवण्णा चउपण्णासा	(चतुष्पञ्चाशत्)	चोपन
पणपण्णा पणपण्णासा पंचावण्णा	(पञ्चपञ्चाशत्)	पंचावन
छप्पण्णा छप्पण्णासा	(षट्पञ्चाशत्)	छप्पन
सत्तावन्ना सत्तपण्णासा	(सप्तपञ्चाशत्)	सत्तावन
अट्ठावन्ना अडवन्ना अट्ठपण्णासा	(अष्टपञ्चाशत्)	अट्ठावन
एगूणसट्ठि	(एकोनषष्ठि)	ओगणसाठ
सट्ठि	(षष्टि)	साठ
एगसट्ठि इगसट्ठि	(एकषष्टि)	एकसठ
बासट्ठि	(द्विषष्टि)	बासठ
तेसट्ठि	(त्रिषष्टि)	त्रेसठ
चउसट्ठि चोसट्ठि	(चतुष्षष्टि)	चोसठ

पणसट्ठि (पञ्चषष्टि) पांसठ

छासट्ठि (षट्षष्टि) छासठ

सत्तसट्ठि (सप्तषष्टि) सडसठ

अट्ठसट्ठि, अडसट्ठि } (अष्टषष्टि) अडसठ

एगूणसत्तरि (एकोनसप्तति) ओगणोशित्तेर

सत्तरि, हत्तरि } (सप्तति) शित्तेर

एगसत्तरि, एगहत्तरि, इक्कसत्तरि, इक्कहत्तरि } (एकसप्तति) एकोतेर

बिसत्तरि, बासत्तरि, बिहत्तरि, बाहत्तरि, बावत्तरि } (द्विसप्तति) बोंतेर

तिसत्तरि, तिहत्तरि } (त्रिसप्तति) तोंतेर

चोसत्तरि, चोहत्तरि, चउसत्तरि, चउहत्तरि } (चतुस्सप्तति) चूमोतेर

पण्णसत्तरि, पणहत्तरि } (पञ्चसप्तति) पंचोतेर

छसत्तरि, छहत्तरि } (षट्सप्तति) छोंतेर

सत्तसत्तरि, सत्तहत्तरि } (सप्तसप्तति) सत्योतेर

अट्ठसत्तरि, अट्ठहत्तरि } (अष्टसप्तति) अठ्योतेर

एगूणासीइ (एकोनाशीति) ओगण्याएंशी–अगण्याएंशी

असीइ (अशीति) एंशी

एगासीइ (एकाशीति) एकाशी

बासीइ (द्वयशीति) बाशी

तेसिइ (त्र्यशीति) त्राशी–त्र्याशी

चउरासीइ, चोरासीइ } (चतुरशीति) चोर्याशी

पचासीइ, पञ्चासीइ } (पञ्चाशीति) पंचाशी

छासीइ (षडशीति) छाशी

सत्तासीइ (सप्ताशीति) सत्याशी

अट्ठासीइ (अष्टाशीति) अठ्याशी

नवासीइ (नवाशीति) नेवाशी

एगूणनवइ (एकोननवति) ,,

नवइ (नवति) नेवुं

एगणवइ, इगणवइ, एगाणवइ } (एकनवति) एकाणुं

बाणवइ (द्विनवति) बाणुं
तेणवइ (त्रिनवति) त्राणुं
चउणवई / चोणवइ } (चतुर्नवति) चोराणुं
पण्णणवइ / पञ्चणवइ / पञ्चाणवइ } (पञ्चनवति) पंचाणुं
छण्णवइ (षण्णवति) छन्नुं
सत्तणवइ / सत्ताणवइ } (सप्तनवति) सत्ताणुं
अट्ठणवइ / अट्ठाणवइ / अडणवइ } (अष्टनवति) अठ्ठाणुं
णवणवइ / नवणवइ } (नवनवति) नव्वाणुं
एगूणसय (एकोनशत) ,,
सय (शत) सो
दुसय / बिसय } (द्विशत) बसो
बे सयाइं (द्वे शते) बसो

तिसय (त्रिशत) त्रणसो
तिण्णि सयाइं (त्रीणि शतानि) त्रणसें
चत्तारि सयाइं (चत्वारि शतानि) चारसें इत्यादि
सहस्स (सहस्र) हजार
दससहस्स / दहसहस्स } (दशसहस्र) दसहजार
अयुत / अयुअ } (अयुत) ,,
लक्ख (लक्ष) लाख
दसलक्ख / दहलक्ख } (दशलक्ष) दसलाख
पयुअ / पयुत } (प्रयुत) दस लाख
कोडि (कोटि) कोड
कोडाकोडी (कोटाकोटि) कोडानुकोड

सामान्य शब्दो

कुद्दालय / कोद्दालय } (कु+द्दालक) कोदाळो
खइर (खदिर) खेरनुं झाड के लाकडुं
णिरिक्क–नर्युं–एकलुं–केवळ
धवल (धवल) धोळुं, धोळ

माधव (मा+धव) लक्ष्मीपति –कृष्ण
उद्धव / ओद्धव } (उद्धव) ओधव –कृष्ण
गुल / गुड } (गुड) गोळ

सूई } सूइ } (सूचि) सूई–सोय

गुरु (गुरु) गोर

पहर (प्रहर) पहोर, पोरो

नहर (नखर) नहोर

पिंड } पेंड } (पिण्ड) पेंडो, पींडो

विहत्थी (वितस्ति) वेंत

कयलय (कदलक) केळुं

कयली (कदली) केळ

पाइक्क (पदातिक) पायगा

नयर (नगर) नेर–चांपानेर वांकानेर, वीकानेर

अहिनव (अभिनव) अवनवुं

कवल (कवल) कोळीओ

फलाहार (फलाहार) फराळ

कवड्डय (कपर्दक) कोडो

कवड्डिया (कपर्दिका) कोडी

कवित्थ (कपित्थ) कोठुं

गवक्ख (गवाक्ष) गोंखलो–गोंख

पिहुल } पहुल } (पृथुल) पहोळुं

पइट्ठ (प्रविष्ट) पेठो–पेठेलो

कप्पडय (कर्पटक) कपडुं–कापडुं

रट्ठकूड } रट्ठऊड } (राष्ट्रकूट) राठोड

चित्तकूड } चित्तऊड } (चित्रकूट) चित्तोड

कसवट्टिआ (कषपट्टिका) कसोटी

घणयर (घनतर) घणेरुं–अधिक

वच्छयर (वत्सतर) वच्छेरो

मयगल (मदकल) मेंगळ–मद झरतो हाथी

गुहिलउत्त (गुहिलपुत्र) गुहिलोत

दुवेइ (द्विवेदिन्) दवे, दुबे

चउव्वेइ (चतुर्वेदिन्) चोबे–चोबा

अव्यय

सु० दि० (शुक्ल दिवस) अजवाळियुं

व० दि० } ब० दि० } (बहुल दिवस) अंधारियुं

। सव्वे सुहिणो होंतु ।

नाम [नरजाति]

अकम्म (अकर्मन्) कर्म रहित निर्मळ—पवित्र

अक्क (अर्क) सूर्य, आकडानुं झाड-आकडो

अग्गि (अग्नि) अग्नि, आग

अग्गिअ (आग्निक) आगिओ

अग्घाड अघेडानुं झाड—अघेडो

अच्चि (अर्चिस्) आंच, जाळ

अच्छ (अक्ष) आस-हांस

अणागम } (अन्+आगम) न
अनागम } आववु ते अनागमन

अण्णयर } (अन्यतर)
अन्नयर } अनेरुं-बीजो कोइ

अप्प (आत्मन्)आत्मा—आप—पोते

अण्ण (अन्य) अन्य, बीजुं

अप्पाण (आत्मन्) आत्मा—आप पोते

अभोगि } (अभोगिन्) अभोगी-
अभोइ } भोगोने नहि भोगवनार

अमु (अदस्) ए

अमुणि (अमुनि) मुनि नहि ते-बडबड करनार

अम्ह (अस्मद्) हुं

अय (अयस्) अयस—लोढुं

अरय (अरक) आरो—पैडानो

अरिहंत (अरि+हन्त) वीतराग देव

अलाह } (अलाभ) अलाभ—
अलाभ } अप्राप्ति

अवर (अपर) अवर-बीजुं

असमण (अश्रमण) श्रमण नहि ते

असंजम (असंयम) असयम

अहर (अधर) नीचुं, बीजु

अहिल्ल } अल्लाह ईश्वर
अहिल्ल }

अंक (अङ्क) अंक-खोळो

अंतर (अन्तर) अंतरनु

अंध } (अन्ध) आंधळो
अंधल }

अंब (आम्र) आंबो

अंबकाल } (आम्रकाल) आंबागाळो
अंबगाल }

अंबमउड (आम्रमुकुट) अंबोडो

आइच्च (आदित्य) आदित्य-सूर्य

आमोडो अंबोडो

आयरिय (आचार्य) आचार्य—धर्मगुरु, विद्यागुरु,

आरिय (आर्य)आर्य—सज्जन

आस (अश्व) अश्व-घोडो
आसाढ (आषाढ) अषाड मास
आसंक (आशङ्क) आंचको
आल्हाअ (आह्लाद) आह्लाद-आनंद
आहार (आधार) आधार
आहार (आहार) आहार-खावानुं
इम (इदम्) आ
इयर (इतर) इतर, बीजुं
इसि (ऋषि) ऋषि
इंद (इन्द्र) इन्द्र
उच्छाह (उत्साह) उत्साह
उच्छु (इक्षु) इख शेरडी
उट्ट (उष्ट्र) उंट
उडिद अडद
उड्ड (उड्र) ओड जातना लोको
उण्हाल (उष्णकाल) उनाळो
उत्तर (उत्तर) उत्तरदिशा, उत्तरनु
उदहि (उदधि) उद-पाणी-ने धारण करनार-समुद्र
उद्धव, ओद्धव (उद्धव) ओधव-कृष्ण
उप्पाअ (उत्पाद) उत्पाद-उत्पत्ति
उरु (उरु) उरु-साथळ
उवज्झाय (उपाध्याय) उपाध्याय अध्यापक-गुरु-ओझा

उवासग (उपासक) उपासक-उपासना करनार
उवाहि (उपाधि) उपाधि-प्रपंच
ऊसव (उत्सव) उत्सव
एअ, एय (एतद्) ए
एग, इक्क, एक्क (एक) एक
एरावण (ऐरावण) ऐरावण-मोटो हाथी
ओट्ठ (ओष्ठ) ओठ-होठ
ओहरिसो, ओघरिसो (अवघर्ष) ओरसियो
क (किम्) कोण
कइम, कतम (कतम) कयो, केटलाक
कक्कड काकीडो
कच्छर कचरो
कच्छव (कच्छप) काचबो
कडइअ कडीओ-घर चणनार
कडप्प कडपलो-समूह
कण्णिआर-(कर्णिकार) कणेर
कण्ण (कर्ण) कान, कानो
कण्ह (कृष्ण) कृष्ण-कान
कप्पडअ (कर्पटक) कपडुं-कापडुं

कमंडलु (कमण्डलु) कमंडळ
कयर (कतर) कयो
कयविक्कय (क्रयविक्रय) खरीदवुं वेचवुं-क्रयविक्रय करवो
करेणु (करेणु) करी-हाथी
कलंब (कदम्ब) कदंबनु झाड
कलह (कलह) कलह-कळो
कलाव (कलाप) कळपलो-समूह
कवड्ड (कदर्प) कोडो
कवि (कपि) कपि-वानर
कवि (कवि) कवि
कविल्थ (कपित्थ) कोठुं
कविल (कपिल) कपिल ऋषि
कस (कश) चाबुक
कसिवल (कृषिबल) खेडवाळो-खेडुत
कंटग (कण्टक) कांटो
कंद (स्कन्द) स्कन्द-गणपति
कंसआर, कंसार (कांस्यकार) कंसारो
काग, काक (काक) कागडो
काम (काम) काम-तृष्णा-इच्छा
काय (काय) काया-काय-शरीर
काल (काल) काल-समय
कावड्डिअ (कापर्दिक) कावडियुं-कोडा-कोडी

कासव (काश्यप) काश्यप गोत्रनो ऋषि-ऋषभदेव
काहार (क+हार) कहार-पाणी भरनार
कांबलिअ (काम्बलिक) कामळीयो, कांबळीओने वेचनार वा ओढनार
किण्हसार (कृष्णसार) कालीयार मृग
किलेस (क्लेश) कलेश
किसाणु (कृशानु) अग्नि
कुक्खि, कुच्छि (कुक्षि) कूख
कुक्कुस कुसको
कुडुम्बि (कुटुम्बिन्) कणबी
कुढार (कुठार) कुठार-कुहाडा
कुढारय (कुठारक) कुहाडो
कुद्दालय (कुद्दालक) कोदाळो
कुमारवर (कुमारवर) उत्तम कुमार
कुलवइ (कुलपति) कुलनो पति-आचार्य
कुंथु (कुन्थु) कंथवो-एक नानो जीवडो
कुंभार (कुम्भकार) कुंभार
केवट्ट (कैवर्त) कैवर्त-केवट-होडी हांकनार

केसरि (केसरिन्) केसरावाळो-याळवाळो सिंह-केसरीसिंह

कोइल कोयल

कोइल | **कोकिल** } (कोकिल) कोकिल-कोयल

कोड (कोड) गोद-खोळो

कोणय (कोणक) खूणो

कोत्थल कोथळो

कोल | **कोड** } (क्रोड) खोळो

कोलिअ (कौलिक) करोळियो

कोलिय | **कोलिअ** } (कौलिक) कोळी-एक जात

कोल्हुअ (कोल्हु) कोल्हु-निचोडो

कोवपर (कोपपर) कोपमां तत्पर-कोपी-क्रोधी

कोस (कोश) कोह-पाणी काढवानो, कोश-खजानो

कोसिअ (कौशिक) कौशिक गोत्रवाळो इन्द्र अथवा चंडकौशिक सर्प

कोह (क्रोध) क्रोध

कोहदंसि (क्रोधदर्शिन्) क्रोधने जोनार-क्रोधी

खग्ग (खड्ग) खड्ग-तलवार

खट्टिक (घातक) खाटकी

खत्तिय (क्षत्रिय) क्षत्रिय

खय (क्षय) खे-क्षय

खार | **छार** } (क्षार) खारो

खोखलअ खोखळदंतो

खोड खोडो-लंगडो

खोल (खर) खोलकुं-गधेडानुं बच्चुं

खंध (स्कन्ध) कांध-खांध-भाग, मोटी डाळ

गग्ग (गार्ग्य) गर्गनो पुत्र-ए नामनो एक ऋषि

गड्डह | **गद्दह** } (गर्दभ) गधेडो

गढ गड

गणधर | **गणहर** } (गणधर) गणने धारण करनार-समूहनी-व्यवस्था करनार आचार्य

गणवइ } (गणपति) गणोनो पति-गणपति

गणि (गणिन्) गण-समूहने साचवनार आचार्य

गब्भ (गर्भ) गर्भ, गाभो

गब्भदंसि (गर्भदर्शिन्) गर्भने जोनार-जन्म धारण करनार

गय (गज) गज-हाथी

गरुल (गरुड) गरुड

गवक्ख (गवाक्ष) गोखलो-गोख

गंध (गन्ध) गंध

गंधिअ (गान्धिक) गांधी-गंधवाळी वस्तुने वेचनार

गाम (ग्राम) गाम

गाहय (ग्राहक) घराक

गिहि (गृहिन्) गृहस्थ

गुय्ह (गुह्य) गुह्यक-यक्ष, गुह्य-गूढ

गुरु (गुरु) गुरु-गोर, वडिल माता पिता वगेरे

गुहिलउत्त (गुहिलपुत्र) गुहिलोत

गोतम } गोयम } (गौतम) गौतम गोत्रनो मुनि

गोधूम (गोधूम) गोधम-घउं

घड (घट) घडो

घरवइ } गहवइ } (गृहपति) घरनो पति-गृहस्थ

घूअ (घूक) घूअड-घूड

घोडअ (घोटक) घोडो

चउव्वेइ (चतुर्वेदिन्) चतुर्वेदी चोबे, चोबा

चक्कवट्टि (चक्रवर्तिन्) चक्र फेरवनार-चक्रवर्ती राजा

चक्खु (चक्षुस्) चक्षु-आंख

चम्मार (चर्मकार) चमार

चंद (चन्द्र) चंद्र

चाइ (त्यागिन्) त्यागी

चास (चास)-खेतरमां चास करवा ते

चिच्च? } चिव्व } चीबा

चित्त (चित्र) एक सारथिनुं नाम

चित्तकूड } चित्तऊड } (चित्रकूट) चित्तोड

चित्तयार (चित्रकार) चितारा

छइल्ल (छेक) चतुर

छगलय (छाग) छालु-बकरुं

छत्त (छात्र) छात्र-विद्यार्थी

छप्पअ } छप्पय } (षट्पद) छपगो-भमरो

छंट छांटो-छांट

छाइल्ल } छायालु } (छायालु) छायाळ-छायावाळुं

छावय (शावक) छैयो-छोकरो

छुहागुड (सुधागुड) छागोळ-चुनो अने गोळनुं मिश्रण

छेअ (छेद) छेडो

ज (यद्) जे

जट्ट (जर्त) जाट ज्ञातनो माणस

जडालु (जटाल) जटाळुं-जटा-वाळुं

जणय (जनक) जनक-पिता

जण्हु (जह्नु) ते नामनो सगरपुत्र

जम्म (जन्मन्) जन्म

जर (ज्वर) ज्वर-ताव

जरढय (जरठक) घरडो-जरडो

जवरय (यवांकुर) जुवारा

जंतु (जन्तु) जंतु-प्राणी-जीवजंत

जंबु (जम्बु) जांबु, जांबुनुं झाड

जामाउय (जामातृक) जमाइ

जायतेय (जाततेजस्) जेमां तेज छे ते-अग्नि

जिण (जिन) जय पामनार वीतराग

जीव (जीव) जीव

जीवाउ (जीवातु) जीवननुं औषध

जेट्ठ (ज्येष्ठ) मोटो-जेठ

जोइसिअ (ज्योतिषिक) जोशी

जोगि (योगिन्) योगी-जोगी

झंखर झांखरुं-सूकुं

झुणि (ध्वनि) झणझणाट अवाज-ध्वनि

टप्परअ टापरो-खराब कानवाळो

टार टारडो

टुंट ठुंठो

डंड (दण्ड) दंड, डंडो, डांडियो

डव्व } डाबु-डाबो हाथ
डाव }

डंस (दंश) डंख

डुंगर डुंगरो

डुंब डोम-चांडाळ

डुंघ डुंघो-होको

डोअ डोयो-पाणी काढवानो डोयो

डोल डोळो-आंखनो डोळो

णक्क नाक

णातसुत } (ज्ञातसुत) ज्ञातवंशनो
णायसुय } पुत्र-महावीर

णिलाडवट्ट (ललाटपट्ट) निलवट

ण्हाविअ } (नापित) नवरावनारो-
नाविअ } नावी-हजाम

त } (तद्) ते
ण }

तलाय (तडाग) तळाव

तरस (तरक्ष) तरस नामनुं जनावर

तरु (तरु) तरु–द्रु झाड

तव (तपस्) तप–तपश्चर्या

तव (स्तव) स्तव–स्तुति

तवस्सि (तपस्विन्) तपस्वी

तस (त्रास) त्रास पाणी–गति
करी शके तेवा प्राणी

तंतु (तन्तु) तांतणो

तंबोलिअ (ताम्बूलिक) तंबोळी

ताव (ताप) ताव–ताप–तडको

तिल (तिल) तल

तुम्ह (युष्मद्) तुं

तुरंगम (तुरंगम) तुरत जनार,
तुरंग–घोडो

तेअ (तेजस्) तेज

तेलिअ (तैलिक) तेली–तेल
वेचनार

थावर (स्थावर) स्थिर रहेनार–
गति न करी शके ते प्राणी–
वनस्पति वगेरे

थेर (स्थविर) स्थिर बुद्धिवाळो–
पाकट–वयोवृद्ध संत

दयालु (दयालु) दयालु

दवर दोरो

दंड (दण्ड) दंड–डांडो–लाकडी

दंत (दन्त) दांत

दाडिम (दाडिम) दाडम

दास (दास) दास

दाहिण } दक्षिण–दक्षिणनु
दक्खिण }

दिणयर (दिनकर) दिननो
करनार–सूरज, दीकरो

दुकाल (दुष्काल) दुकाळ

दुक्खदंसि (दुःखदर्शिन्,)दुःखने
जोनार–दुःख पामनार

दुम (द्रुम) द्रुम–झाड

दुवेइ (द्विवेदिन्) दवे, दुबे

दुस्सीस } (दुश्शिष्य)
दुस्सिस्स } दुष्ट शिष्य–विद्यार्थी

देवज्ज (दैवज्ञ) दैवने जाण–
नार–जोशी

देवर (देवर) देवर–देर–दियर

देविंद (देवेन्द्र) देवोनो इन्द्र–
देवोनो स्वामी

देस (देश) देश

देसवइ (देशपति) देसाइ

दोस (दोष) दोष, द्वेष

दोस्सिअ (दौष्यिक) दोशी–दूष्य-वस्त्र-वेचनार

धअ (ध्वज) धजा-ध्वज

धणि (धनिन्) धनवाळो-धणी

धन्न (धान्य) धान्य

धुत्त (धूर्त) धूर्त-धुतारो

नग्ग (नग्न) नागो-लुच्चो

नड (नट) नट

नत्तुअ / **नत्तिअ** (नप्तृक) नाती-पौत्र

नमि (नमि) ते नामनो एक राजर्षि-नमिराज

नमिराय (नमिराज) नमिराज–ते नामनो मिथिलानो एक राजर्षि

नयण (नयन) नेण-आंख

नरवइ (नरपति) नरानो पति–नरपति–नरपत–राजा

नह (नख) नख

नह (नभस्) नभ–आकाश

नहर (नखर) नहोर

नातपुत्त / **णातपुत्त** / **नायपुत्त** (ज्ञातपुत्र) ज्ञातवंशनो पुत्र–महावीर

नास (न्यास) न्यास–थापण

नास (नाश) नाश

निव (नृप) नृप–राजा

निंबु (निम्बु) लींबु

नेह (स्नेह) स्नेह-नेह

नेहालु (स्नेहालु) नेहाळ–स्नेहाळ–स्नेहवाळो

पइ (पति) पति–स्वामी–धणी–मालीक

पक्ख (पक्ष) पक्ष–पखवाडीयुं, पंख–पांख, तरफदारी

पक्खि (पक्षिन्) पंखी–पांखवाळुं

पच्छानाव (पश्चात्ताप) पस्तावो

पज्ञ (प्राज्ञ) प्राज्ञ–डाह्यो

पज्जुण्ण / **पज्जुन्न** (प्रद्युम्न) प्रद्युम्न नामनो कृष्णनो पुत्र

पडह (पटह) पडो–ढोल

पण्हअ (प्रस्नव) पानो–पोतानुं बाळक जाइने माताने दूध आवे ते

पण्ह (प्रश्न) प्रश्न

पण्हुअ (प्रस्नुत) पानो

पमाद (प्रमाद) प्रमाद असावधानता–आळस

परियट्ट परीट–धोबी

पल्हाअ (प्रह्लाद) प्रह्लाद कुमार

पवासि (प्रवासिन्) प्रवास करनार

पवंच (प्रपञ्च) प्रपंच

पव्वय (पर्वत) पर्वत

पसु (पशु) पशु

पहु (प्रभु) प्रभावशाळी-समर्थ

पंडरंग (पाण्डुराङ्ग) पांडुरंग-महादेव

पंथ (पन्थ) पंथ मार्ग

पाउस (प्रावृष्) पाउस-पावस वरसादनी ऋतु

पाघूणय } (प्राघूणक) प्राहुणो-
पाहूणय } अतिथि

पाण (प्राण) प्राण-जीव

पाणि (प्राणिन्) प्राणी

पाणि (पाणि) पाणी-हाथ

पाय पाय) पा-चोथो भाग

पाय (पाद) पाद-पग-पायो

पायय (पादक) पायो

पावासु (प्रवासिन्) प्रवासी

पास (पाश) पाश-फांसो, पाशलो फांसलो

पासाय (प्रासाद) प्रासाद-महेल

पिणाख पराणे

पिलोस (प्लोष) दाह

पीलु (पीलु) पीलुनुं झाड

पुरिम (पुरा+इम) पहेलानुं पूर्व

पुरिस (पुरुष) पुरुष

पुव्व (पूर्व) पूर्व-पूर्वनुं

पुव्वण्ह (पूर्वाह्ण) दिवसनो पूर्व भाग

पूअर (पूतर) पूरो-पोरो

पेडइअ फडिओ-दाणानो वेपारी

पोक्खर (पुष्कर) पोखर-तळाव

पोट्ठिय (पौष्ठिक) पोठीयो-महादेवनो पोठीयो

फलाहार (फलाहार) फराळ

फास (स्पर्श) स्पर्श

फेण (फेन) फीण

बइल्ल बळद-बेल

बक } (बक) बगलो
बग }

बप्प (वप्तृ) बाप

बप्फ (बाष्प) बाफ

बहिणिवइ (भगिनीपति) बनेवी

बंधव (बान्धव) बांधव-भाई

बंधु (बन्धु) बंधु-भांडु-भाई

बंभण, बम्हण, माहण (ब्राह्मण) ब्रह्म-विद्याने जाणनार समजनार पुरुष

बंभयारी (ब्रह्मचारिन्) ब्रह्मचारी

बाध, बाह (बाघ) वांघो

बाल (बाल) बाळ-बाळक

बाहु (बाहु) बाहु-बांय-हाथ

बिडाल (बिडाल) बिलाडो

बिंदु (बिन्दु) बिंदु, मींडु, टीपुं,

बुद्ध (बुद्ध) बुद्धदेव

बुह (बुध) बुद्धिमान्-डाह्यो पुरुष

बोकड (बर्कर) बोकडो-बकरो

भड (भट) भड-शूर

भमर (भ्रमर) भमरो

भाइणेज्ज (भागिनेय) भाणेज

भाणु (भानु) भानु-भाण-सूरज

भार (भार) भार

भारय (भारक) भारो

भारवह (भारवह) भार वहन करनार मजूर

भारहर (भारहर) भार लइ जनार मजूर

भिंग (भृङ्ग) भृंग-भमरो

भिक्खु (भिक्षु) भिक्षु

भूअ (भूत) भूत-प्राण जीव

भूमिवइ (भूमिपति) भूमिनो पति राजा

भूवइ (भूपति) भू-पृथ्वी-नो पति भूपति-भूपत-राजा

भोगि, भोइ (भोगिन्) भोगी-भोगोने भोगवनार

मअ (मृग) मृग-वनपशु-हरण

मउड (मुकुट) मोड-मुगट

मउल (मुकुल) मोर

मक्कड मकडी-करोळीयो

मक्कडय (मर्कटक) मांकडो

मग्ग (मार्ग) मार्ग-मारग

मग्गु (मद्गु) एक प्रकारनी माछली

मच्चु, मिच्चु (मृत्यु) -मोत-मरण

मढ (मठ) मढो-मठ-संन्यासियो-नुं रहेठाण

मणि (मणि) मणि

मणिआर (मणिकार) मणियार काचनो सामान वेचनार

मयगल (मदकल) मेंगल-मद झरतो हाथी

मयंक (मृगाङ्क) मृगना निशा-नवाळो चन्द्र

मरहट्ट (महाराष्ट्र) मोटो देश-महाराष्ट्र देश

मरहट्ठअ (महाराष्ट्रीय) महाराष्ट्रनो वतनी-मराठी लोक

मसय (मशक) मच्छर

महण्णव (महार्णव) महेरामण समुद्र-

महप्पसाय (महाप्रसाद) मोटा प्रसादवाळो-सुप्रसन्न-कृपालु

महातवस्सि (महातपस्विन्) मोटो तपस्वी

महादोस (महादोष) महादोष मोटो दोष

महावीर (महावीर) महावीर देव

महासड्ढि (महाश्रद्धिन्) मोटी अचल श्रद्धावाळो

महासव (महास्रव) मोटो आश्रव-पापोनो मोटो मार्ग

महेसि { महा+ऋषि / महर्षि } व्यास वगेरे महर्षि

मंजार (मार्जार) मणजर-बिलाडो

मंति (मन्त्रिन्) मन्त्री-कारमारी

मंतु (मन्तु) अपराध-शोक

माधव (मा+धव) लक्ष्मीपति-माधव-कृष्ण

मार (मार) मारनारो-तृष्णा

माराभिसंकि (माराभिशङ्किन्) मार-तृष्णा-थी शंकित रहेनार-दूर रहेनार-तृष्णाथी डरनारो

मालिअ (मालिक) माली-माळा वेचनार

मास (मास) महीनो-मास

मिलिच्छ (म्लेच्छ) म्लेच्छ

मुइंग / **मिइंग** } (मृदङ्ग) मृदंग

मुग्गरय (मुद्गरक) मगदळ-मोगरी

मुणि (मुनि) मुनि-मनन करनार-मौन राखनार-संत

मुब्भ / **मोब्भ** } मोभ

मुहुत्त (मुहूर्त) मूरत-वखत-थोडो समय

मूअ / **मूक** / **मूग** } (मूक) मूंगो

मूसअ } (मूषक) मूषक-उंदर
मूसय }

मेरा (मेरा) मर्यादा

मेरामण (मेरा+मतु-मेरा+मण) महेरामण-समुद्र

मेह (मेघ) मे-मेघ-वरसाद

मेहावि (मेधाविन्) मेधावाळो बुद्धिमान्

मोक्ख (मोक्ष) मोक्ष-छूटकारो

मोचिअ (मौचिक) मोची-मोजां सीवनार

मोर } (मयूर) मोर-मयूर
मयूर }

मोह (मोह) मोह-मूढता

मोहणदास (मोहनदास) ते नामनो वीरपुरुष-मोहनदास गांधी

रट्ठकूड } (राष्ट्रकूट) राठोड
रट्ठऊड }

रट्ठधम्म (राष्ट्रधर्म) राष्ट्रनो धर्म-समग्र देशनुं हित करनारी प्रवृत्ति

रण्णवास (अरण्यवास) अरण्य-मां वसवुं-वनमां रहेवुं

रप्फ राफडो

रवय रवैयो

रस (रस) रस

रसाल } (रसाल) रसाळ-रसवाळुं
रसालु }

रस्सि (रश्मि) राश-बळदनी के घोडानी राश

राग (राग) राग-आसक्ति

रायरिसि (राज+ऋषि) राजर्षि

रिच्छ (ऋक्ष) रींछ

रिसि } (ऋषि) ऋषि
इसि }

रुक्ख (वृक्ष) रुंख-झाड

लाह } (लाभ) लाभ-लावो
लाभ }

लेहसालिअ (लेखशालिक) निशाळीओ-निशाळे भणवा जनार

लोअ } (लोक) लोक-जगत-लोको
लोग }

लोह (लोभ) लोभ

लोहयार (लोहकार) लुहार

लोहार (,,) लुहार-लुवार

वग्घ (व्याघ्र) वाघ

वच्छ (वत्स) बच्चुं-संतान-वाछडो

वच्छयर (वत्सतर) वछेरो
वड्ड वडो
वणप्फइ }
वणस्सइ } (वनस्पति) वनस्पति
वद्धमाण (वर्धमान) वर्धमान-महावीर
वप्पीअ }
वप्पीह } बपैयो
वम्मह (मन्मथ) मनने मथनार कामदेव
वरदंसि (वरदर्शिन्) उत्तम रीते जोनार
ववहार (व्यवहार) व्यवहार-वेपार
ववहारिअ (व्यवहारिक) वहेवारी वेपारी
वसभ (वृषभ) वरख राशी
वसह (,,) वृषभ-बळद
वसु (वसु) वसु-धन, पवित्र मनुष्य
वहोलो पाणीनो वहोळो
वंसअ (वंशक) वांसो-पीठ
वाउ }
वायु } (वायु) वायु-वा
वाणिअ (वाणिज) वाणीओ
वाणिज्जार (वाणिज्यकार) वणजारो-वणज करनारो-वेपारी
वाहि (व्याधि) व्याधि-रोग
विज्जत्थि (विद्यार्थिन्) विद्यानो अर्थी-विद्यार्थी
विडवि (विटपिन्) बीड-झाड
विण्हु (विष्णु) विष्णु
विप्परियास (विपर्यास) विपर्यास-विपरीतता-भ्रान्ति
विराग (विराग) रागथी विरुद्ध भाव-वैराग्य
विवाहकाल (विवाहकाल) विवाडो-लगनसरा
विहु (विधु) विधु-चन्द्र
विंचुअ (वृश्चिक) वींछी
विंछिअ (,,) ,,
वीस (विश्व) विश्व-बधुं
वुड्ढ (वृद्ध) बूढो-घरडो
वुत्तंत (वृत्तान्त) वृत्तान्त-समाचार
वेय (वेद) ऋग्वेद वगेरे वेद
वेवाहिअ (वैवाहिक) वेवाई
वेस (वेष) वेष-भेख
वेसाह (वैशाख) वैशाख मास
वोज्झ (वह्य) बोजो
वोज्झअ बोजो
स, सुघ (स्व) स्व-पोते-पोतानुं
स (श्वन्) श्वान-कूतरो
सउणि (शकुनि) शकुनि-पक्षी
सज्ज (षड्ज) षड्ज-एक प्रकारनो सूर

सढ (शठ) शठ–लुच्चो
सद् (शब्द) शब्द–साद–अवाज
सप्प (सर्प) साप
सम (सम) बधुं
समण (श्रमण) शुद्धि माटे श्रम करनार संतपुरुष
समत्तदंसि (सम्यक्त्वदर्शिन्) सत्यने जोनार–समजावनार–आचरनार
समुद } (समुद्र) समुद्र–समुदर
समुद्र }
सयंभु(स्वयंभू) स्वयं थनार–ब्रह्मा, ते नामनो समुद्र
सय्ह (सह्य) सह्य नामनो पहाड, सही शकाय ते
सर (स्मर) स्मर–कामदेव
सवह (शपथ) शपथ–सोगन
सव्व (सर्व) सव–सव–बधुं
सव्वण्णु(सर्वज्ञ) सर्वज्ञ–बधुं जाणनार
सव्वण्णु (सर्वज्ञ) सर्व जाणनार
सव्वसंग (सर्वसङ्ग) सर्व प्रकारनो संग–संबंध–आसक्ति
संकु (शङ्कु) शकु–खीलो
संख (शङ्ख) शंख
संग (सग) संग–सोबत
संतोष (संतोष) संतोक
संभु (शम्भु) शंभु–सुखनुं स्थान–महादेव

संवत्तअ (संवर्तक) संवर्तक–वायु
संसार (संसार) संसार–जगत्
संसारहेउ (ससारहेतु) संसारनो हेतु–संसार बधवानुं कारण
साणु (सानु) शिखर
साड (शाट) साडलो–साडी
साडय (शाटक) साडलो–साडी
साडवी } (शाटविन्) साळवी–
सालवी } साडी वणनार
सारहि (सारथि) सारथि–रथ हांकनारो
साव (शाप) श्राप
सावय (श्वापद) सावज
साहु (साधु) साधक, साधन करनार–साधुपुरुष, सज्जन, साहुकार
सिआल (शृगाल) शिआळ
सिद्ध (सिद्ध) अवेदी–वीतराग
सिम (सिम) बधुं
सिलिम्ह (श्लेष्मन्) श्लेष्मा
सिलेसम (श्लेष्मन्) सळेखम
सिलोअ } (श्लोक) श्लोक–कीर्ति
सिलोग }
सिसु (शिशु) शिशु–बाळक
सिंगार (शृङ्गार) शृंगार–शणगार
सीआल (शीतकाल) शियाळो

सीस } (शिष्य) शिष्य–
सिस्स } विद्यार्थी

सीह } (सिंह) सिंह
सिंघ }

सुत्तहार (सूत्रधार) सुतार

सुमिण
सिमिण
सुविण
सिविण } (स्वप्न)–सपनुं–सोणुं

सुरट्ठ (सुराष्ट्र) सोरठ देश

सुरट्ठिअ { सुराष्ट्रीय }
सोरट्ठीअ { सौराष्ट्रीय }

सोरठनो वतनी–सोरठी लोक

सूअर (शूकर) शूकर–भुंड

सेट्ठि (श्रेष्ठिन्) श्रेष्ठी–शेठ

सोवाग (श्वपाक) चांडाळ

सोमित्ति (सौमित्रि) सुमित्रानो पुत्र –लक्ष्मण

सोरहिअ (सौरभिक) सरैयो–सुरभि–सुगंधी–तेल वगेरेने वेचनार

सोवण्णिय (सौवर्णिक) सोनी–सोनुं घडनार

हत्थ (हस्त) हाथ

हत्थि (हस्तिन्) हाथी

हर (हर) हर–महादेव

हरिअंद (हरिश्चन्द्र) हरिचंद्र राजा

हरिएसबल (हरिकेशबल) मूळ चंडाळ कुळमां जन्मेलो एक जैन मुनि

हरिण (हरिण) हरण

हरिताल (हरिताल) हरताळ

हरिस (हर्ष) हरख–हर्ष

हव्ववाह (हव्यवाह) हव्यवाह–अग्नि

हेमंत (हेमन्त) हेमंत ऋतु–शिआळो

नाम [नारीजाति]

अआलि एलि–अकाळे वादळां थवां

अच्छरसा (अप्सरस्) अप्सरा

अज्जू (आर्या) सासू–आजी

अम्मा (अम्बा) मा–अम्मा

अलसी (अतसी) अळशी

अलाऊ } (अलाबू)
लाऊ } तुंबडी–लउआ

अवालुया अवालु-दांतना पेढा
अंगुलि (अङ्गुलि) आंगळी
आणा (आज्ञा) आज्ञा-आणा
आपत्ति (आपत्ति) ओपटी
आसिसा (आशिष्) आशिष, आशीर्वाद

इत्थी } (स्त्री)
थी } स्त्री-तिरिया

उज्जु (ऋजु) सरळ
उत्थल्ल उथलो-उथळवुं-उथळी जवुं
उंडी [illegible] डुंडी
उत्तरिल्लिरी [illegible]-वागणनी मोढ
उत्थल्लपत्थल्ला उथलपाथल
ओज्झरी होजरी
ओप्पा ओप
ओसरिया ओशरी
ओसा ओस
कउहा (ककुभ्) दिशा
ककंधू (कर्कन्धू) बोरडी
कक्खा (कक्षा) काख
कच्छडिया (कच्छटिका) काछडी
कच्छु (कच्छु) खाज-खरज
कट्टारी कटार
कडी (कटी) केड

कत्ता (कत्ता) पासा-जुगारनी आंधळी कोडी
कयली (कदली) केळ
कलसी (कलशी) कसली-कळशी
कलिआ (कलिका) कळी
कहोणी (कफोणी) कोणी
कंकतिआ (कङ्कतिका) कांचकी
कंति (कान्ति) कांति खांत
कित्ति (कीर्ति) कीर्ति-कीरत
किया (क्रिया) क्रिया, विधि-विधान
किवा (कृपा) कृपा
किमरा ([illegible]) कीचडी
[illegible]**डी** ([illegible]) कूव
कुठारिया (कुठारिका) कुहाडी
कुद्दालिया (कुद्दालिका) कादाळी
कुमारी (कुमारी) कुंवरी कुंवारी
कुहिणी (कफोणी) कोणी
खडकी खडकी
खड्डा (गर्ता) खाडा-खाडो
खणुस खणस-इच्छा
खली खोळ
खंति (क्षान्ति) क्षमा
गउ (गो) गाय-गाउ
गउआ (गौका) गाय
गडयडी गडगडाटी
गड्डी (गन्त्री) गाडी
गंडीरी गंडेरी-शेरडीनी कातळीओ

गब्भिणी (गर्भिणी) गाभणी
गाई (गो) गाय
गायरी गागर
गिरा (गिर्) गिरा–वाणी
गोट्ठी (गोष्ठी) गोठ–गोटडी
गोणी (गोणी) गुणी–अनाज भरवानी
गोरी (गौरी) गौरी–पार्वती, गौरी स्त्री
गोली गोळी
घिणा (घृणा) घिण–घृणा
चवेडी चपटी वगाडवी
चंचु (चञ्चु) चांच
चंदिआ / **चंद्रिआ** } (चन्द्रिका) चांदनी, चांदी–रूपु
चंदिमा (चन्द्रिका) चन्द्रमानी चांदनी
चिरिहिट्टी / **चिणोट्ठी** } चणोठी
चिंता (चिन्ता) चिंता
चुच्छुंदरिया (तुच्छोन्दुरका) छछुंदर
चोट्टी चोटली
छल्ली छाल
छवडी चामडी
छवि, छवी (छवि) छबी

छाया, छाही (छाया) छाया
छासी छाश
छुहा (क्षुधा) भूख
छुहा (सुधा) छो–चुनो
छेंडी – छींडी
जनी, जणी (जनी) जान
जंघा (जङ्घा) जांघ
जाडी झाडी
जिब्भा / **जीहा** } (जिह्वा) जीभ
जुत्ति (युक्ति) जुक्ति–योजना
जुवइ (युवति) युवति
जोवारी जूवार–जार
झडी वरसादनी झडी
झंटी झंटियां–माथानां वाळ
झोलिका झोळी
डाली डाळ–शाखा
ढंकणी ढांकणी
ढंका ढिकचो
णत्था नाकनी नथ, बळदनी नाथ
णहरी नेरणी
णिंदिणी नींदवुं–नकामुं घास कापवुं
णीसरिआ नीसरणी
तया (त्वचा) तज

तणुवी (तन्वी) पातळी
तण्हा (तृष्णा) तृष्णा
तरुणी (तरुणी) तरुण स्त्री
तिसा (तृषा) तरस-लालच
थुइ (स्तुति) स्तुति-थोय
दुअरी दारु
दद्दु (दद्रु) धाधर-दादर
दित्ति (दीप्ति) दीप्ति-तेज
दाढा (दंष्ट्रा) दाढ
दिसा (दिशा) दिशा-दश
दिहि } (धृति) धैर्य
धिइ }
देवराणी (देवराणी) देराणी
धत्ती (धात्री) धात्री
धाई (धात्री) धाई-धवरावनारी माता
धुआ (दुहिता) दीकरी
धूलि (धूलि) धूळ
नणंदा (ननान्द) नणंद
नारी (नारी) नारी-नार
नावा (नौका) नाव
निसा (निशा) निशा-रात्री
पक्खरा पाखर-हाथी घोडानो सामान
पट्टुआ पाटु
पडी पाडी
पण्णा (प्रज्ञा) प्रज्ञा
पतीति (प्रतीति) प्रतीत-विश्वास
परडा परडकुं
परिहावणिया (परिधापनिका) पहेरामणी
पंति (पंक्ति) पंक्ति-पंगत-पांत
पाडिवआ } (प्रतिपदा)
पाडिवया } पडवो तिथि
पारिट्ठी पारेट-बहु वखतथी विआएली गाय के भेंश
पिउच्छा } (पितृष्वसा)
पिउसिआ } पितानी बहेन-फई
पिच्छी (पृथ्वी) पृथ्वी
पुच्छा (पृच्छा) प्रश्न-पूछा
पुरा (पुर्) पुरी-नगर-नगरी
पुहवी (पृथ्वी) पृथ्वी
पूणी पूणी
पेडिआ (पेटिका) पेटी
फग्गू फाग
फोंफा } फुंफाडो
फुंफा }
बब्बरी बाबरी-माथानी बाबरी
बहिणी (भगिनी) बहेन
बारिआ (द्वारिका) बारी
बाहा (बाहु) बाहु-हाथ-बांय
बिग्गाइ बगाय
बोहारी (बुहारी) सावरणी

भइणी, भगिणी (भगिनी) बहेन
भाउज्जा भोजाय
भीइआ, भीइका (भीतिका) बीक
भुक्खा भूख
भूमि (भूमि) भूमि-भों
मइ (मति) मति
मक्खिआ } (मक्षिका) माखी
मच्छिआ } -माछी
मज्जाया (मर्यादा) माजा-मलाजो
मट्टिआ (मृत्तिका) माटी
मम्मी } मामी
मामी }
महिसी (महिषी) भेंश
मंजुसा (मञ्जुषा) मजूह-पेटी
माअरा } (मातृ) देवी-
मायरा } माता
माआ (मातृ) माता-जननी
माइ (मातृ) मा-माई
माउ („) माता
माउसिआ } (मातृष्वसा)
माउच्छा } माशी-मातानी बहेन
माला (माला) माळा, माळ
मित्ती (मैत्री) मित्रता-मैत्रीवृत्ति

मेहा (मेधा) मेधा-बुद्धि
रइ (रति) प्रेम-राग
रक्खा (रक्षा) राख
रच्छा (रथ्या) रथ चाले तेवी पहोळी शेरी-शेरी
रत्ति (रात्रि) रात
रयणी (रजनी) रजनी-रेण
रला राळ
राई (रात्री) रात
राडी (राटि) राड
रिद्धि (ऋद्धि) रध-ऋद्धि
रेखा } (रेखा)
रेहा }
लेहा } रेखा-लीह-लीटो
लक्खा (लाक्षा) लाख
लज्जा (लज्जा) लज्जा-लाज
लालसा (लालसा) लालच
लोमपडी (लोमपटी) लोबडी भरवाडने पहेरवानी साडी
वट्टा (वर्त्म) वाट-रस्तो
वत्ता (वार्ता) वात
वत्ति (वर्ति) वाट-बत्ती
वरगोट्ठी } (वरगोष्ठी)
वरोट्ठी } वरोंठी
वरजत्ता } (वरयात्रा)
वरअत्ता } बरात-जान
वहू (वधू) वहू
वंझा (वन्ध्या) वांझ-वांझणी

वाडिआ (वाटिका) वाडी
वाडी वाड
वाया (वाच्) वाचा-वाणी
बारक्खरी (द्वादशाक्षरिका) बाराखडी
वाराणसी (वाराणसी) वा॰ राणसी-बनारस नगर
वावी (वावी) वाव
विज्जु (विद्युत्) विजळी
विट्ठी } (विष्टि)
वेट्ठि } वेठ
विभूति, विभूइ (विभूति) भभूति-राख
वियाउया (विपादिका) वीया-पगनी वीया फाटवी ते
विहत्था (वितस्ति) वेंत
सण्णा (संज्ञा) संज्ञा-सान-समज
सति (स्मृति) स्मृति-सरत
सत्ति (शक्ति) शक्ति
सद्धा (श्रद्धा) श्रद्धा
समणी (श्रमणी) साध्वी
समिद्धि (समृद्धि) समृद्धि
सरिआ } (सरित्)
सरिया } सरिता-नदी

सलाया (शलाका) सळी
सवत्तिका (सपत्नीका) शोक्य
ससा (स्वसृ) स्वसा-बेन
संझा (संध्या) सांज
संति (शान्ति) शांति
संदंसिआ (संदंशिका) सांडसी
संपया } (संपदा)
संपआ }
संपदा } संपदा-संपत्ति
साडी (शाटी) साडी
सामा (श्यामा) युवती-स्त्री
साहुवी } (साध्वी) साध्वी
साहुणी }
सिद्धि (सिद्धि) सिद्धि
सिप्पी (शुक्ति) छीप
सिदु छिंदरी
सूई, सुइ (सूचि) सूइ-सोय
सुण्हा } (स्नुषा)
ण्हुसा } स्नुषा-पुत्रवहू
सुहेल्ली } सहेल
सुखकेली }
हत्थोडी हाथनुं हथीयार, हथोडी
हलद्दी, हलिद्दा (हरिद्रा) हळदर
हुड्डा होड-सरत

नाम [नान्यतर जाति]

अक्खि
अच्छि } (अक्षि) आंख

अच्चब्भुय (अत्यद्भुत) अचंबो

अच्छेर (आश्चर्य) आश्चर्य–अचरज

अजिण (अजिन) अजीन–चामडुं

अट्ठगुणय (अष्टगुणक) आठगणुं

अट्ठि (अस्थि) हड्डी–हाडकुं–हाड

अत्थ(अस्त्र) अस्त्र–फेंकवानुं हथीयार

अद्ध (अर्ध) अडधुं [बाण वगेरे

अभयप्पयाण (अभयप्रदान) अभयदान–प्राणीओ निर्भय रहे –बने–तेवी प्रवृत्ति

अमिय (अमृत) अमी–अमृत

अरविंद (अरविन्द) अरविन्द–उत्तम कमळ

असाय
असात } (असात) शाता नहि–सुख नहि ते

अहिन्नाण (अभिज्ञान) एंधाण

अंगण (अङ्गन) आंगणुं

अंडय (अण्डक) इंडु

अंसु (अश्रु) आंसु

आउय (आयुष्क) आयुष्य–जींदगी

आभरण (आभरण) आभरण–घरेणुं

आमलय (आमलक) आमळुं–आंबळुं

आरोग्गिय आरोगेलुं–खाधेलुं

उच्चंचलय (उच्चञ्चलक) उंछाछळो

उच्छंखलय (उच्छृङ्खलक) उच्छृंखल

उज्जड ऊजड

उत्थिअ (उत्थित) उठयु

उदग
उदय } (उदक) उदक–पाणी

उप्पल (उत्पल) उत्पल–कमळ

उल्लुट ऊलटुं

उंड ऊंडुं

ऊसय ओशीकुं

ओक्किय ओकेलुं

ओचुल्ल ओलोचूलो

कट्ठ (काष्ठ) काष्ठ–काट–काठ–काठी–लाकडुं

कम्म (कर्म) काम–कार्य–सारी नरसी प्रवृत्ति

कम्मबीअ (कर्मबीज) कर्मबीज सत्–असत्–संस्कारनुं बीज

कयल (कदल) केळुं
कंबल (कम्बल) कंबल-कामळ
कटोल } कंटोलुं-कंकोडुं-
कंकोड } कंकोडानुं शाक
कंजिय (काञ्जिक) कांजी
कंटयरक्ख (कण्टकरक्ष) कांटा-
रखुं-कांटाथी रक्षण
करनार-जोडा
कारण (कारण) कारण
कुम्पल } (कुड्मल) कुंपळ-
कुंपल } फणगो
कुल (कुल) कुल-कुळ
कुल्लड कूलडुं-कुलडी
कुसग्गपुर (कुशाग्रपुर) राजगृहनुं
बीजुं नाम
कुंडलय (कुण्डलक) कुंडळ-
कुंडाळुं
कोटर (कोटर) कोतर
कोडिय कोडियुं
कोमलय (कोमलक) कूणुं
कोहल (कूष्माण्ड) कोळुं
खट्ट खाटुं
खड खड-घास
खाणु (स्थाणु) स्थाणु-खीलो-
ठूंठुं

खीर } (क्षीर)
छीर } क्षीर-खीर-दूध
खुट्ट खूटेलुं
खुट्ट खूतेलुं
खेत्त } (क्षेत्र)
खित्त } क्षेत्र-खेतर
खेम (क्षेम) क्षेम-कुशळ
गमण (गमन) गमन-जवुं
गल (गल) गळुं
गवत्त गवत-घास
गहण (ग्रहण) ग्रहण करवानुं साधन
गीअ } (गीत) गीत-
गीत } गाएलुं
गुत्त (गोत्र) गोत्र-वंश
गुरुकुल (गुरुकुल) सदाचार-
वाळा गुरुओ ज्यां रहे छे ते
स्थान
घग्घर घाघरो
घय (घृत) घी
घर (गृह) घर
घरचोल (गृहचोल) घरचोळुं
घाण (घ्राण) घ्राण-नाक सुंघ-
वानुं साधन
चउक्क चोक

चउगुणय } (चतुर्गुणक)
चउग्गुणय } चोगणुं

चउव्वट्टय (चतुर्वर्त्मक) चौटुं
चार रस्ता

चक्क (चक्र) चक्र-चरखो

चम्म (चर्मन्) चाम-चामडुं

चंग (चंग) सारु

चंडालिअ (चाण्डालिक) चंडा-
लणो स्वभाव-क्रोध

चंदण (चन्दन) चंदननुं झाड-
लाकडुं

चारित्त (चारित्र) सच्चारित्र-
सद्वर्त्तन

चुच्छ (तुच्छ) तुच्छ-जूज

चेइअ (चैत्य) चिता उपर च-
णेलुं स्मारक-चिह्न-
ओटाओ, छत्री, पगलां,
वृक्ष, कुंड, मूर्ति वगेरे

चेण्ह (चिह्न) चेन-चाळा

चेल (चेल) चेल-वस्त्र

छग्गुणय (षड्गुणक) छगणु

छट्ठय (षष्ठक) छट्ठु

छणपय } (क्षणपद)
छणपअ } हिंसा-हिंसानुं स्थान

छत्त (छत्र) छत्र-छत्री

छिक्क छींक

छिड्डय (छिद्रक) छींडुं

छिल्लर (छिल्लर) पाणीनुं
खाबोचीयुं

छीअ (क्षुत) छींक

जउ (जतु) जतु-लाख

जल (जल) जळ-पाणी

जाण (यान) यान-वाहन

जाणु (जानु) जानु-जांघ-साथळ

जिमिय जमेलुं

जीवण (जीवन) जीवन-जींदगी

जुग (युग) धोंसरु

जुज्झ } (युद्ध)
जुद्ध } युद्ध-लडाई

जुम्म } (युग्म)
जुग्ग } युग्म-जोडु-जोडी

जेमणय जमणुं

जोव्वणय (यौवन) जोबन-
यौवन

झुट्ठ झूठुं

टिक्क टिकी-टीलुं-तिलक

निलाट (ललाट) निलाड-
ललाट

णयर
णगर
नगर
नयर } (नगर) नगर—शहेर

णिव्व
निव्व } (नीव्र) नेबुं—छापरानु नेबुं

तग्ग तागडो-त्रागडो

तण (तृण) तरणुं—घास

तंब ताम्र तांबु

तंबोल (ताम्बूल) तंबोळ-नागरवेलनुं पान

ताण (त्राण) रक्षण—शरण—आशरो

तालु (तालु) ताळवु

तिगुणय
तिउणय } (त्रिगुणक) त्रमणुं

तिमिर (तिमिर) तम्मर—अंधकार

तिलय (तिलक) टीलुं

तेल (तैल) तेल

तुंद (तुन्द) दूंद—पेट

दहण (दहन) देण—दहन—आगे—बळवुं

दहि (दधि) दही

दंतपवण (दन्तपवन) दंतवण—दातण

दाण (दान) दान

दारु (दारु) दारु—लाकडुं

दालिद्द (दारिद्र्य) दळदर—दारिद्र्य

दिण (दिन) दिन-दन—दनियुं दिवस

दाहिणय (दक्षिणक) डाबुं

दीवेल्ल
दीवतेल्ल } (दीपतैल) दीवेल-दीवो बाळवानुं तेल

दुक्ख (दुःख) दुःख

दुद्ध (दुग्ध) दूध

धण (धन) धन

धणु (धनुष्) धनुष

धम्मजाण (धर्मयान) धर्म-रूप वाहन, धर्मस्थान उपर लइ जवानु वाहन

धीरत्त (धीरत्व) धीरत्व—धीरपणुं—धैर्य

नमिर (नम्र) नम्र—नरम

नयण (नयन) नेण

नाण (ज्ञान) ज्ञान

निच्छिअय (निश्चितक) नक्की

निवाण (निपान) नवाण–जळाशय

नीलय (नीलक) नीलो–नीलुं

नेड्ड } (नीड)
णेड्ड } निलय–नीड–माळो

पगरक्ख (पदकरक्ष) पगरखां–पगनुं रक्षण करनार

पगरण (प्रकरण) पगरण–प्रारंभ

पट्टोल (पट्टकूल) पटोळुं

पद } (पद)
पय } पद–पगलु

पद्धर पाधरुं

पद्र पादर

पम्ह (पक्ष्मन्) पांपण

पम्हपट (पक्ष्मपट) पक्ष्म–पांपण जेवुं झीणुं कापड–पांभडी

पय (पद) पद–पगलुं

परिसोसिय } (परिशोषित)
परिसोसिअ } परिशोषित तद्दन सुकाएलुं

परिहण (परिधान) पहेरण

पलाल (पलाल) पराळ–चोखानुं घास

पल्लाण (पर्याण) पलाण

पवहण (प्रवहण) वाहन–वहाण

पंगुरण पागरण

पंजर (पञ्जर) पांजरुं

पाणीय } (पानीय)
पाणीअ } पाणी–पीवानुं

पाडलिपुत्त (पाटलीपुत्र) पाटलिपुत्र–पटणा शहेर

पायत्ताण (पादत्राण) पाद-त्राण–जोडा

पाव (पाप) पाप

पावग (पावक) पाव

पावरणय (प्रावरणक) उपरणुं

पास (पार्श्व) पासुं–पडखुं

पासग (दर्शक–पश्यक) द्रष्टा समजनारो–विचारक

पिच्छ (पिच्छ) पींछुं

पित्त (पित्त) पित्त

पिंजिय पींजेलुं

पुच्छ (पुच्छ) पूछडुं–पूंछ

पुट्ठय (पृष्ठक) पूंठुं

पुप्फ (पुष्प) पुष्प–फूल

पोच्च पोचुं

पोट्ट पोट–पेट

फल (फल) फळ

फंदण (स्पन्दन) फांदवुं-फरकवुं-थोडुं थोडुं हलवुं

बम्हचेर (ब्रह्मचर्य) ब्रह्मचर्य-सदाचारवाळी वृत्ति-ब्रह्ममां परायण रहेवुं ते

बयर (बदर) बोर-बेर

बरूअ बरू

बार } (द्वार)
दुवार } बार-बारणुं

बिइज्ज (द्वितीय) बीजुं

बिगुणय,बिउणय (द्विगुणक) बमणुं

बिंदु (बिन्दु) टींपुं

बिंबिय (बिम्बक) बिंब-प्रतिबिंब-बीबुं

बीअ (बीज) बी-बीज

भय (भय) भय-भो

भयव्वाउलय (भयव्याकुलक) बेबाकळो

भायण } (भाजन)
भाण } भाजन-भाणुं-पात्र

भारहवास (भारतवर्ष) भारतदेश-हिन्दुस्तान

भाल (भाल) भाल-कपाळ-ललाट

भोयण (भोजन) भोजन-जमण

मच्चुमुह (मृत्युमुख) मृत्युनुं मुख-मोतनुं मोढुं

मत्थय (मस्तक) माथुं

मयणफल } (मदनफळ)
मयणहल } मींढोल

मरण (मरण) मरण-मोत

मलीर (मलयचीर) मलयदेशनु कोमळ, झीणुं अने आछुं कापड

मसाण (श्मशान) मसाण

महब्भय (महाभय) मोटो भय-मोटी बीक

महाविज्जालय (महाविद्यालय) मोटुं विद्यालय-कोलेज

महु (मधु) मधु

मंगल (मङ्गल) मंगळ

मंस (मांस) मांस

माइहर (मातृगृह) मायरु-महियर

मित्त (मित्र) मित्र

मित्तत्तण (मित्रत्व) मित्रत्व-मित्रता-भाईबंधी

मिहिलानयर (मिथिलानगर) मिथिला

मुह (मुख) मुख

मोत्तिअ (मौक्तिक) मोती

रज्ज (राज्य) राज्य-राज

रय (रजस्) रज-पाप-धूळ-मेल

रयय (रजत) रजत-रूपुं

रसायल (रसातल) रसातल-पाताळ

रंदुअ रांढवुं

रायगिह (राजगृह) विहारमां आवेलुं-हालनुं राजगिर मगधदेशनी राजधानी

रुक्खय (रूक्षक) लूखुं

रुप्प (रुक्म) रूपु

रुप्प (रौप्य) रूपु

रूअ रू

रूव (रुप) रूप-वस्तु-पदार्थ

रोमय (रोमक) रूवुं-रोम

लक्खण } (लक्षण)
लच्छण } लक्षण-लखण-चिन्ह

लक्कुड लाकडुं

लाङ्गल (लाङ्गल) लंगर

लावण्ण } (लावण्य)
लायण्ण } लावण्य-कांति

लाहण लाणुं

लोमपड { लोमपट
रोमपट } रुंवाटानुं वस्त्र-लोबडी

लोहखंड (लोहखण्ड) लोखंड

लोह (लोह) लोढुं

लोहिअ (लोहित) लोही

वण (वन) वन

वत्थ (वस्त्र) वस्त्र-वस्तर

वत्थु (वस्तु) वस्तु

वद्दल वादळ

वयण (वदन) वदन-मुख

वयण (वचन) वचन-वेण

वरिस (वर्ष) वरस

वंग वांगी-वेंगण

वाणिअ(वाणिज्य)वणज-वेपार

वादित्त, वाइत्त (वादित्र) वाजींत्र

वारि (वारि) वारि-पाणी

वित्त } (वेत्र) नेतर-नेतरनी
वेत्त } सोटी-वेत

विन्नाण } (विज्ञान)
विण्णाण } विज्ञान

विस (विष) विख

विहाण (विभात) वहाणु-प्रातः-काळ-सवार

वीरिय (वीर्य) वीर्य-बळ-शक्ति.

वेर (वैर) वेर-वैर

सगडय (शकटक) छकडो-शकट

सच्च (सत्य) सत्य-साचुं

सत्तगुणय (सप्तगुणक) सातगणुं

सत्थ (शस्त्र) शस्त्र-हणवानुं हथीयार-तरवार वगेरे

सत्थ (शास्त्र) शास्त्र

सत्थिल्ल
सत्थि } (सक्थि) साथळ

सयढ (शकट) छकडो-गाडुं -शकट

सरण (शरण) शरण-आशरो

सल्ल (शल्य) साल-शल्य

संखलय शंखलुं

संपडिय सांपडेलुं

साय
सात } (सात) शाता-सुख

सावज्ज (सावद्य) पापप्रवृत्ति

सावत्तक
सावत्तय } (सापत्न्यक) सावकुं

सासुरय (श्वाशुरक) सासरुं, सासरानुं घर

सित्थ (सिक्थ) सीथ

सिंग (शृङ्ग) शिंगडुं-शिंगुं

सिंदुरय छिंदरुं

सीअ (शीत) शीत-टाढ

सील (शील) शील-सदाचार

सीस (शीर्ष) शीश-माथुं

सुक्ख (सौख्य) सुख

सुत्त (सूत्र) सूत्र-सूतर-सूत्ररूप टुंकुं वाक्य

सुवण्ण (सुवर्ण) सोनुं

सोअ
सोत्त } (श्रोत्र) श्रोत्र -कान-सांभळवानुं साधन

सोरभ (सौरभ) सोडम

सोल्ल मांसना सोला

हड्ड (हाड) हाडकुं

हल्लिअ हालेलुं-चालेलुं

हियय (हृदय)-हैयुं

हुअ (हुत) होम

विशेषण

अक्खाय (आख्यात) कहेलुं -कहेवुं

अचेलय } (अचेलक) ऐलक-
अचलय } -कपडा विनानुं

अज्जयण } (अद्यतन) आजनुं
अज्जतण } -ताजुं

अज्ज (अर्य) अर्य-वैश्य-स्वामी

अज्ज (आर्य) आर्य

अट्ठम (अष्टम) आठमुं

अड्ढीअ } (अर्धतृतीय)
अड्ढाइअ } जेम बे आखां
अड्ढाइज्ज } अने त्रीजुं अ-
डधुं छे ते, अड्ढी -अढी

अणवज्ज } (अनवद्य) पाप-
अनवज्ज } रहित-निर्दोष

अणाइअ (अनादिक) आदि विनानुं

अणारिय (अनार्य) अनार्य-आर्य नहि ते-अनाडी

अत्थिअ (आर्थिक) अर्थ संबंधी-अर्थने लगतुं

अत्थिअ (आस्तिक) आ-स्तिक

अधीर (अधीर) अधीर-धीरज विनानु-नबळुं

अद्धुट्ठ (अर्धचतुर्थ) जेमां त्रण आखां अने चोथुं अडधुं छे ते उंठ-साडात्रण

अप्प (अल्प) अल्प-थोडुं

अप्पणिय (आत्मीय) आपणुं

अम्हारिस (अस्मादृश) अमा-रीशुं-अमारा जेवुं

अवज्ज (अवद्य) अवद्य-न वदी-कही-शकाय तेवुं काम-पाप-दोष

अहम (अधम) अधम-हलकुं -नीच

अहिनव (अभिनव) अभनवुं -नवीन

अंतिअ (अन्तिक) पासे-नजीकमां

आकुट्ठ (आक्रुष्ट) आक्रोश करेलुं-आक्रोश

आगअ
आगत
आअ } (आगत) आवेलुं

आणत्त (आज्ञप्त) आज्ञा करेलुं, आज्ञा

आरिस (आर्ष) ऋषिए कहेलुं

आसत्त (आसक्त) आसक्त-मोही

उच्छिट्ठ (उच्छिष्ट) एठुं-अजीठुं

उत्तम
उत्तिम } (उत्तम) उत्तम

उपरिअल्ल (उपरितन) उपलुं-उपरनुं

कज्ज (कार्य) करवा योग्य

कड
कय } (कृत) करेलु

कयण्णु (कृतज्ञ) कृतज्ञ-कदरदान

काणीण (कानीन) व्यासऋषि

कातव्व
कायव्व
काअव्व } (कर्तव्य) कर्तव्य-करवा जेवुं

किच्च (कृत्य) कृत्य-कार्यु

किलिट्ठ (क्लिष्ट) क्लेश-वाळुं, क्लिष्ट

किलिन्न (क्लन्न) गीलुं-भीनुं भींजाएलुं

किलिप्त (क्लृप्त) क्लृप्त

कुसल (कुशल) कुशळ-चतुर

केरिस (कीदृश) केवुं

कोसेय (कौशेय) कौशेय रेशमी-वस्त्र

खलपु (खलपु) खळुं साफ करनार

गढिय (गृद्ध) अतिशय लालचु

गय (गत) गएलुं, जतुं

गामणि (ग्रामणी) गामनो नेता

गिलाण
गिलान } (ग्लान) ग्लान थएलुं, ग्लान थतुं

गुप्त (गुप्त) गोपवेलुं-सुरक्षित-गुप्त

गुरु (गुरु) गुरु-भारे मोटुं

गुज्झ (गुह्य) छूपाववा योग्य-गुप्त

घट्ठ (घृष्ट) घसेलुं, सुंवाळुं, करेलुं, बाटेलु

घेत्तव्व (ग्रहीतव्य) ग्रहण करवा जेवुं

चउत्थ } (चतुर्थ)
चतुत्थ } चोथु

चउरंस } (चतुरस्र)
चउरस्स } चोरस

चंड (चण्ड) प्रचंड-क्रोधी

चारु (चारु) चारु-सुन्दर

छट्ठ (षष्ठ) छट्ठुं

जन्न (जन्य) जणवायोग्य

जाय (जात) जाएलुं, थएलुं, जणवुं

जिअ (जित) जीतलुं-जीतवुं

जिइंदिय (जितेन्द्रिय) इन्द्रियो उपर जय मेळवनार

जुगुच्छ (जुगुप्स) जुगुप्सा करनार, घृणा करनार

जुन्न (जीर्ण) जीर्ण, जूनुं, जळी-जरी-गएलुं

जोइअ } योजित जोडेलुं
जोइअ }

ठड्ढ (स्तब्ध) टाढो, ठण्डो स्तब्ध, जड-थंभी गएलुं

ठिय (स्थित) स्थित-स्थान

डज्झमाण (दह्यमान) दाझतुं बळतुं

तइय } (तृतीय) त्रीजुं
तइज्ज }

तत्त (तप्त) तपेलु-तपवुं

तवस्सि (तपस्विन्) तपस्वी

तंस (त्र्यस्र) त्रांसुं-त्रिकोण

तिण्ण (तीर्ण) तरी गएलु

तिण्ह (तीक्ष्ण) तीणुं-अणीदार

तिम्म } (तिग्म) तीक्ष्ण
तिग्ग } तेजदार-तेग

तुच्छ (तुच्छ) तुच्छ, रांक, अधुरो

दट्ठव्व (द्रष्टव्य) देखवा जेवुं

दिट्ठ (दृष्ट) दीठुं-देखेलुं-देखवुं

दसम (दशम) दशमु

दंत (दान्त), जेणे तृष्णाने दमी छे ते- शान्त

दिग्घाउ (दीर्घायुष्) दीर्घ आयुष्यवाळो

दियड्ढ
दिवड्ढ } (द्वितीयार्ध) जेमां एक आखुं बीजुं अडधु छे ते- दोढ

दुग्गंधि (दुर्गंधिन्) दुर्गन्धी चीज

दुप्पूरिय (दुष्पूर्य) मुश्केली- थी पुराय- भराय तेवुं

दुरणुचर (दुरनुचर) जेनुं आचरण कठण लागे ते

दुरतिक्कम (दुरतिक्रम) न मटे तेवुं

दुलह (दुर्लभ) दुर्लभ-दुल्लभ -मुश्केल

दुहि (दुःखिन्) दुःखी

धणि (धनिन्) धनी-धनवाळो

धीर (धीर) धीर-धीरजवाळुं

नग्ग (नग्न) नग्न -नागो

नवम (नवम) नवमुं

नवीण
णवीण } (नवीन) नवीन-नवुं

नाय (ज्ञात) जाणीतुं-प्रसिद्ध

निच्चल (निश्चल) निश्चल

निट्ठुर (निष्ठुर) नठोर

निण्ण
नेण्ण } (निम्न) निम्न नीचुं, नानुं, नेनुं

निरट्ठय (निरर्थक) निरर्थक- नकामुं

निहिय (निहित) निहित- स्थापेलुं, स्थापवुं

पच्च (पाच्य) पचवा-रांधवा योग्य

पच्छ (पथ्य) पथ्य-रस्तामां हितकर

पडुप्पन्न (प्रत्युत्पन्न) वर्तमा- न-ताजु

पढम (प्रथम) प्रथम-परथम

पणट्ठ (प्रणष्ट) प्रनष्ट, नाश

पत्त (प्राप्त) पहोंच्युं-पहोंच्युं

पन्नत्त (प्रज्ञप्त) प्रज्ञापेलुं-जणावेलुं

पन्नविय (प्रज्ञपित) प्रज्ञापेलुं, प्रज्ञापवुं

पमत्त (प्रमत्त) प्रमत्त-प्रमादी

परूविअ (प्ररूपित) प्ररूपेलुं, जणावेलुं, प्ररूपवुं

पंचम (पञ्चम) पांचमुं

पंडित, पंडिअ (पण्डित) पंडित-भणेलो, पंड्यो, पोपटपंडित

पंत (प्रान्त) अन्तनुं, छेवटनुं, वापरतां वधेलुं

पिआउय (प्रियायुष्क) आयुष्यने प्रिय समजनार

पियामह (पितामह) बापनो बाप

पिय (प्रिय) प्रिय-वहालुं

पिहिय (पिहित) ढांकेलुं ढांकवुं

पीण (पीन) पुष्ट

पुट्ठ (पुष्ट) पुष्ट

पुट्ठ (पृष्ट) पूछाएलुं

पुण्ण (पूर्ण) पूर्ण-भरेलो-संपत्तिवाळो

पुण्ण (पुण्य) पुण्य-पवित्र काम

पुराण, पुराअण (पुराण, पुरातन) पुराणुं, जूनुं

पोअ (प्रोत) परोव्युं-परोवेलुं

बज्झ (बाह्य) बहारनुं, बहारनो देखाव

बद्ध (बद्ध) बद्ध-बांधेलो-बधाएल

बहु (बहु) बहु-घणुं

बिइय, बिइज्ज, दुइय, दुइज्ज (द्वितीय) बीजुं-दूजुं

बुद्ध (बुद्ध) बोधवाळो-ज्ञानी

भव्व (भव्य) भवा योग्य-ठीक

भिच्च (भृत्य) पाळवा योग्य-
भृत्य-नोकर
भुत्त (भुक्त) भुक्त-भोगवेलुं
भोत्तव्व (भोक्तव्य) भोजन
करवा जेवुं,
भोगववा जेवुं
मईय (मदीय) मारुं
मट्ठ (मृष्ट) मांजेलु-शुद्ध
मड-मय (मृत) मृत-मरेलु
मणंसि (मनस्विन्) बुद्धिमान्
मय (मत) मानेलु, मानवुं
-मत
महग्घ (महार्घ) मोंघु
महड्ढिय } (महर्धिक)
महिड्ढिय } मोटी ऋद्धिवालुं
-धनाढ्य
मायामह (मातामह) मानो
बाप
मिउ (मृदु) मृदु-कोमळ-
नरम
मिलाण } (म्लान) म्लान
मिलान } थयेलु, करमायेलुं
म्लान थवुं

मुत्त (मुक्त) मुक्त-छूटुं
मुद्ध (मुग्ध) मुग्ध
मूढ (मूढ) मूढ-मोहवाळो-
अभण-अज्ञानी
मोत्तव्व (मोक्तव्य) मूकवा
जेवुं
रत्त (रक्त) रातुं-रंगेलुं
रायण्ण (राजन्य) राजपुत्र
रोत्तव्व (रुदितव्य) रोवुं-
रुदन
लण्ह (श्लक्ष्ण) नानुं
लहु (लघु) लघु-हळवुं-नानुं
लहुअ } (लघुक) लघु-
हलुअ } हळवुं-हलु-नानुं
लंब (लम्ब) लांबुं
लुक्ख } (रूक्ष) लुखुं-
लुह } आसक्ति विनानुं
वम्मय (वाङ्मय) वाङ्मय-
शास्त्र
वड्ढमाण (वर्धमान) वधतुं
वक्क (वाक्य) कहेवा योग्य,
वाक्य

वज्ज (वर्ज्य) वर्जवा योग्य
वज्ज (वद्य) बोलवा योग्य
वच्च (वाच्य) ,, ,,
वाघायकर (व्याघातकर) व्याघात करनार–विघ्न करनार
विणट्ठ (विनष्ट) विनष्ट, विनाश
विब्भल, विह्वल (विह्वल) विह्वल, भांभळो–गभराएल
विलिअ (व्यलीक) विशेष अलीक–खोटुं
विविह (विविध) विविध–जातजातनुं
विहल (विफल) विफळ
वीयराग, वीयराय (वीतराग) जेमां राग नथी ते
वीलिअ (व्रीडित) वीलो–भोंठो
वोत्तव्व (वक्तव्य) कहेवा जेवुं
सक्कय (संस्कृत) संस्कृत
सग्ग (स्वर्ग) सोंघुं
सचेलय (सचेलक) चेल–वस्त्र वाळुं, कपडावाळुं

सत्त (शक्त) शक्तिमान
सत्त (सक्त) आसक्त
सत्तम (सप्तम) सातमुं
सम (सम) समानवृत्तिवाळुं–सरखुं
सयल (सकल) सकळ–सघळुं
सरस (सरस) सरस
सवाय (सपाद) सवायुं–सवा
सहल (सफल) सफळ
संखय (संस्कृत) संस्कारेलुं, सस्कार
संजय (संयत) संयमवाळो
संभूअ (संभूत) संभवेलो–थयेलो
संसट्ठ (संसृष्ट) संसर्गवाळुं. संसर्ग
साउ (स्वादु) स्वादु–स्वादवाळुं
सीअ (शीत) शीत–ठंडुं
सीलभूअ (शीलभूत) शीलभूत, सदाचाररूप
सुइ (शुचि) शुचि–पवित्र

सुगंघि (सुगन्धिन्) सुगंधी वस्तु

सुजह (सु+हान) सहेलाईथी तजी शकाय ते

सुत्त (सुप्त) सूतेलुं

सुत्त (सूक्त) सूक्त–सारी उक्ति सुभाषित

सुय (श्रुत) सांभळेलुं, सांभळवुं

सुहि (सुखिन्) सुखी

सुहुम }
सुखुम } (सूक्ष्म) सूक्ष्म–नानुं

सेट्ठ (श्रेष्ठ) श्रेष्ठ–उत्तम

हअ (हत) हणायेलुं–हणेलुं

हय (हृत) हरेलु, हरवुं

हंतव्व (हन्तव्य) हणवा योग्य

हुत (हुत) होमेलुं–हवन करायेलुं

हेट्ठिअल्ल (अधस्तन) हेठलुं

संख्यावाचक शब्दो

अट्ठ (अष्टन्) आठ

अट्ठचत्तालिसा }
अडयाला } (अष्टचत्वारिंशत्) अडताळीश

अट्ठणवइ }
अडणवइ }
अट्ठाणवइ } (अष्टनवति) अठाणुं

अट्ठत्तीसा }
अडतीसा } (अष्टत्रिंशत्) आडत्रीश

अट्ठसट्ठि }
अडसट्ठि } (अष्टषष्टि) अडसठ

अट्ठसत्तरि }
अट्ठहत्तरि } (अष्टसप्तति) अठ्योतेर

अट्ठारस }
अट्ठारह } (अष्टादश) अढार

अट्ठावन्ना }
अडवन्ना }
अट्ठपण्णासा } (अष्टपञ्चाशत्) अठावन

अट्ठावीसा }
अट्ठवीस }
अडवीसा } (अष्टाविंशति) अठ्यावीश

अट्ठासीइ (अष्टाशीति) अठ्यासी

अयुत, अयुअ (अयुत) दश हजार

असीइ (अशीति) ऍंशी

इक्कवीसा, एगवीसा, एक्कवीसा (एकविंशति) एकवीश

एआरह, एगारह, एआरस (एकादश) अगियार

एग, एक्क, एअ, इक्क (एक) एक

एगचत्तालिसा, इक्कचत्तालिसा, एक्कचत्तालिसा, इगयाला (एकचत्वारिंशत्) एकताळीस

एगणवइ, इगणवइ, एगाणवइ (एकनवति) एकाणुं

एकतीसा, एक्कतीसा, इक्कतीसा (एकत्रिंशत्) एकत्रीश

एगपण्णासा, इक्कपण्णासा, एक्कपण्णासा, एगावण्णा (एकपञ्चाशत्) एकावन

एगसट्ठि, इगसट्ठि (एकषष्टि) एकसठ

एगसत्तरि, एगहत्तरि, इक्कसत्तरि, इक्कहत्तरि (एकसप्तति) एकोतेर

एगासीइ (एकाशीति) एकाशी

एगूणचत्तालिसा (एकोनचत्वारिंशत्) ओगणचालीस

एगूणनवइ (एकोननवति) नेवाशी

एगूणसय (एकोनशत) नव्वाणुं

एगूणतीसा (एकोनत्रिंशत्) ओगणत्रीश

एगूणपण्णासा (एकोनपञ्चाशत्) ओगणपचास

एगूणवीसा (एकोनविंशति) ओगणीश

एगूणसट्ठि (एकोनषष्टि) ओगणसाठ

एगूणसत्तरि (एकोनसप्तति) ओगणोशीतेर

एगूणासीइ (एकोनाशीति) ओगण्याऍंशी, अगण्याऍंशी

कोडाकोडी (कोटाकोटि) कोडाकोड

कोडि (कोटि) क्रोड

चऊ (चतुर्) चार

चउणवइ, चोणवइ (चतुर्नवति) चोराणुं

चउत्तीसा, चोत्तीसा (चतुस्त्रिंशत्) चोत्रीश

चउद्दस, चउद्दह, चोद्दस, चोद्दह (चतुर्दश) चौद

चउरासीइ, चोरासीइ (चतुरशीति) चोर्याशी

चउवीसा, चोवीसा (चतुर्विंशति) चोवीश

चउसट्ठि, चोसट्ठि (चतुष्षष्टि) चोसठ

चउचत्तालिसा, चोआलिसा, चोआला, चउआला (चतुश्चत्वारिंशत्) चुमालीश–चुंआळीश

चत्तारि सयाइं (चत्वारि शतानि) चारसें

चत्तालीसा (चत्वारिंशत्) चाळीश

चोवण्णा, चउपण्णासा (चतुष्पञ्चाशत्) चोपन

चोसत्तरि, चोहत्तरि, चउसत्तरि, चउहत्तरि (चतुस्सप्तति) चूमोतेर

छ (षट्) छ

छचत्तालिसा, छायाला (षट्चत्वारिंशत्) छेंताळीश

छण्णवइ (षण्णवति) छन्नुं

छत्तीसा (षट्त्रिंशत्) छत्रीश

छप्पण्णा, छप्पण्णासा (षट्पञ्चाशत्) छप्पन

छव्वीसा (षड्विंशति) छव्वीश

छसत्तरि, छहत्तरि (षट्सप्तति) छोंतेर

छासट्ठि (षट्षष्टि) छासठ

छासीइ (षडशीति) छाशी

णवणवइ, नवणवइ (नवनवति) नव्वाणुं

ति (त्रि) त्रण

तिचत्तालिसा } (त्रिचत्वा-
तेआलिसा } रिंशत्)
तेआला } तेंताळीश

तिण्णि सयाइं (त्रीणि शतानि)
त्रणसें

तिसत्तरि } (त्रिसप्तति)
तिहत्तरि } तोंतेर

तिसय (त्रिशत) त्रणशो

तीसा (त्रिंशत) त्रीश

तेणवइ (त्रिनवति) त्राणुं

तेतीसा } (त्रयस्त्रिंशत्)
तित्तीसा } तेत्रीश

तेरह } (त्रयोदश)
तेरस } तेर

तेवण्णा } (त्रिपञ्चाशत्)
तिपण्णासा } त्रेपन

तेवीसा (त्रयोविंशति) तेवीश

तेसट्ठि (त्रिषष्टि) त्रेसठ

तेसिइ (त्र्यशीति) त्राशी-
त्र्याशी

दस } (दशन्) दश
दह }

दसलक्ख } (दशलक्ष)
दहलक्ख } दश लाख

दससहस्स } (दशसहस्र)
दहसहस्स } दश हजार

दु (द्वि) बे

दुपण्णासा } (द्विपञ्चाशत्)
बावण्णा } बावन

दुवालस }
बारह } (द्वादश) बार
बारस }

दुसय } (द्विशत) बसो
बिसय }

नव (नवन्) नव

नवइ (नवति) नेवुं

नवासीइ (नवाशीति) नेवाशी

पणचत्तालिसा } (पञ्चच-
पणयाला } त्वारिंशत्)
पिस्ताळीश

पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्) पांत्रीश

पणपण्णा } (पञ्चपञ्चाशत्)
पंचावणा } पंचावन

पणवीसा (पञ्चविंशति) पचीश
—पचवीश

पणसट्ठि (पञ्चषष्टि) पांसठ

पणसीइ } (पञ्चाशीति)
पञ्चासीइ } पंचाशी

पण्णणवइ } (पञ्चनवति)
पञ्चणवइ }
पञ्चाणवइ } पंचाणु

पण्णरह } (पञ्चदश)
पण्णरस } पन्नर

पणसत्तरि } (पञ्चसप्तति)
पणहत्तरि } पंचोतेर

पण्णासा } (पञ्चाशत्)
पण्णास }
पञ्चासा } पचास

पयुअ } (प्रयुत) दश लाख
पयुत }

पंच (पञ्च) पांच

बत्तीसा (द्वात्रिंशत्) बत्रीश

बाणवइ (द्विनवति) बाणुं

बावीसा (द्वाविंशति) बावीश

बासट्ठि (द्विषष्टि) बासठ

बासीइ (द्व्यशीति) बाशी

बिसत्तरि }
बासत्तरि } (द्विसप्तति)
बिहत्तरि } बोंतेर
बावत्तरि }

बेचत्तालिसा } (द्विचत्वा-
बेआला } रिंशत्)
दुचत्तालिसा } बेंतालीश

बे सयाइं (द्वे शते) बसो

लक्ख (लक्ष) लाख

वीसा (विंशति) वीश

सट्ठि (षष्टि) साठ

सत्त (सप्तन्) सात

सत्तचत्तालिसा } (सप्त-
सगयाला } चत्वारिंशत्)
सूडतालीश

सत्तणवइ } (सप्तनवति)
सत्ताणवइ } सत्ताणुं

सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्)
साडत्रीश

सत्तरस } (सप्तदश)
सत्तरह } सत्तर

सत्तरि } (सप्तति) शीतेर
हत्तरि }

सत्तसट्ठि (सप्तषष्टि) सडसठ

सत्तसत्तरि } (सप्तसप्तति)
सत्तहत्तरि } सत्योतेर

सत्तावन्ना } (सप्तपञ्चाशत्)
सत्तपण्णासा } सत्तावन

सत्तावीसा (सप्तविंशति)सत्यावीश

सत्तासीइ (सप्ताशीति)
सत्याशी

सय (शत) सो

सहस्स (सहस्र) हजार

सोलस } (षट्+दश=षोडश)
सोलह } सोळ

अव्यय

अओ }
अतो } (अतः) आथी-एथी

अईव }
अतीव } (अतीव) अतीव-विशेष

अकट्टु (अकृत्वा) नहीं करीने

अग्गओ (अग्रतः) आगळथी

अग्गे (अग्रे) आघे-आगळ

अज्झत्थ }
अज्झप्प } (अध्यात्म) आत्माने लगतुं-अंदरनुं

अत्थु (अस्तु) थाओ

अण (नञ्) निषेध, विपरीत

अणंतरं (अनन्तरम्) अंतर विना, तुरत

अण्णमण्णं (अन्योऽन्यम्) अन्योन्य-एकबीजाने

अण्णया (अन्यदा) अन्य समये

अण्णहा (अन्यथा) तेम नहि ते

अत्थं (अस्तम्) आथमवुं-अदर्शन

अदुवा }
अदुव } (अथवा) अथवा.

अद्धा (अद्धा) समय

अप्पेव (अप्येव) संशय

अभिक्खणं (अभिक्षणम्) क्षणेक्षणे-वारंवार

अभितो (अभितः) चारे बाजु

अम्मो आश्चर्य

अलं (अलम्) सर्युं, निषेध पूरतुं

अवरिं }
उवरिं } (उपरि) उपर

अवस्सं (अवश्यम्) अवश्य अचूक

असइं (असकृत्) अनेकवार

अह (अथ) अथ-हवे-प्रारंभ सूचक

अहत्ता (अधस्तात्) नीचे

अहव }
अहवा } (अथवा) अथवा

अहुणा (अधुना) हमणां.

अंतो (अन्तर्) अंदर

आम (आम) हा-स्वीकार

आहच्च (आहृत्य) बलात्कार

इइ
इअ
त्ति
ति
इति
} (इति) ए प्रमाणे समाप्तिसूचक शब्द

इओ (इतः) आथी, एथी, वाक्यनो आरम्भ, आ बाजुथी

इत्थं (इत्थम्) ए प्रकारे

इह (इह) आमां-अहीं

इहरा (इतरथा) एम नथी अन्यथा

ईसि
ईसिं
} (ईषत्) ईषत्-थोडु-इशारा मात्र

उत्तरसुवे (उत्तरश्वः) आवती काल पछी

उप्पिं (उपरि) उपर
अवरिं
उवरिं
उवरि

एअं (एतत्) ए

एगया (एकदा) एकवार-एक वखत

एगंततो (एकान्ततः) एक तरफी

एत्थ (अत्र) अहीं

एव, एवं (एवम्) एम, ए प्रमाणे

कया (कदा) क्यारे

कल्लं (कल्यम्) काले

कह
कहं
} (कथम्) केम, केवी रीते

कहिं
कहिं
} (कुत्र) क्यां, कहीं

कालओ (कालतः) काळे करीने-वखते

किं (किम्) श, शा माटे

कुत्तो
कुओ
} (कुतः) क्यांथी, शाथी, कई बाजुथी

केवच्चिरं (कियच्चिरम्) केटला लांबा समय सुधी

केवच्चिरेण (कियच्चिरेण) केटला लांबा समय सुधी

केवलं (केवलम्) केवळ

खलु (खलु) निश्चय

खिप्पं (क्षिप्रम्) खेप-जल्दी

खु
खो
हु } (खलु) निश्चय

च
य } (च) अने

चिरं (चिरम्) चिरं-लांबा काळ सुधी

जया (यदा) ज्यारे

जहा
जह } (यथ) जेम

जहासुत्तं (यथासूत्रम्) सूत्रमां—शास्त्रमां कह्या प्रमाणे

जहिं (यत्र) ज्यां, जहीं

जं (यत्) जे-के

जाव
जा } (यावत्) जो, ज्यां सुधी

जेण (येन) जे तरफ

तओ, तत्तो (ततः) तेथी, त्यार पछी

तहा
तह } (तथा) तेम

तहिं
तहिं } (तत्र) त्यां, तहीं

ताव
ता } (तावत्) तो, त्यांसुधी

तु (तु) तो

तेण (तेन) ते तरफ

दाणि
दाणिं
इयाणि
इयाणिं } (इदानीम्) हमणां—आजकाल

दुट्ठु (दुष्ठु) दुष्ट रीते

धुवं (ध्रुवम्) ध्रुव—चोक्कस

न (न) न

नमो
णमो } (नमः) नमस्कार

णवर नर्यु—केवळ

णाणा (नाना) अनेक प्रकारनुं

निच्चं
णिच्चं } (नित्यम्) नित्य

नो (नो) नहीं

पगे (प्रगे) प्रागडवाश्ये-प्रात काळे.

पुण
पुणा
उण } (पुनः) पुनः पुनः, फरीवार

बज्झओ (बाह्यतः) बहारथी बहार तरफ

बहिआ } (बाह्य)
बहिया } बहार

बहिद्धा (बहिर्धा) बहार

मज्झे (मध्ये) मध्ये-वच्चे-महीं-मां

मणा } (मनाक्)
मणयं } मणा-थोडुं-खामी दर्शक

मा (मा) मा-नहीं

मुसं } (मृषा)
मुसा } मिथ्या खोटुं
मूसा }
मोसा }

व } (वा) वा अथवा के
वा }

विणा } (विना) विना
विना }

व० दि० (बहुल दिवस) अंधारियुं

सइ (सदा) सदा

सक्खं (साक्षात) साक्षात्-प्रत्यक्ष

सततं } (सततम्)
सययं } सतत-निरंतर

सया (सदा) सदा-हमेशां

सव्वत्तो } (सर्वतः)
सव्वतो } सर्व प्रकारे चारे
सव्वओ } बाजुथी

सव्वत्थ (सर्वत्र) सर्वत्र-बधे ठेकाणे

सव्वया (सर्वदा) सर्व वखते

सव्वहा (सर्वथा) सर्व प्रकारे

सह } { सह } सह-साथे
सद्धिं } { सार्धम् }

सुट्ठु (सुष्ठु) सारी रीते

सु० दि० (शुक्ल दिवस) अजवाळीयुं

धातु

अइवाय (अति+पात) अति-पात करवो-हणवुं

अक्खोड् (आ+क्षोद्) खोदवुं-कापवुं

अग्घ (अर्घ) मूलववुं—मूल्य कराववुं

अच्च् (अर्च) अर्चवुं-पूजवुं

अच्चे (अति + इ) अतीत थवुं-पार पामवुं

अणुजाण् (अनु + जाना) अनुज्ञा आपवी-संमति आपवी

अणु + तप्प् (अनु + तप्य) अनुताप करवो-पश्चा-ताप करवो

अणु + भव् (अनु+भव) अनुभववुं-भोगववुं

अणुसास् (अनु + शास्) शिक्षण आपवुं समजाववु

अण्ह् (अश्ना) अशन करवुं-जमवुं-खावुं

अप्प् } (अर्प) आपवु
ओप्प् }

अब्भुत्त् (अवभृथ) अबोटवुं आभडवुं-नहावुं

अभि + आण् (अभि+आना)
अहिजाणवुं-ओंधाणवुं-ओळखवुं

अभि+नि+क्खम् (अभि+निष्+क्रम्) हमेशने माटे घरथी नीकळवुं-संन्यास लेवो

अभिप्पत्थ } (अभि+प्र+अर्थ)
अभिपत्थ } प्रार्थना करवी

अमराय् } (अमराय)
अमरा } अमरनी पेठे रहेवुं-पोतानी जातने अमर मानवी

अरिह् (अर्ह) योग्य थवुं

अलिव् आळवुं

अवमन्न् (अप + मन्य) अपमानवुं-अपमान करवुं

अवसीअ (अव + सीद) अवसाद पामवो-खूचवुं

अहिट्ठ् (अधि + स्था – तिष्ठ) अधिष्ठान मेळववुं-उपरी थवुं

अहिलंख् } (अभि + लष)
अहिलंघ् } अभिलषवुं-इच्छा करवी

आगम् (आ + गम्)आववुं

आढव् (आ + रभ्) आरंभवुं शरू करवुं

आढा (आ + दृ) आदर करवो

आ + ने (आ + नी) आणवुं-लाववुं

आ + घा (आ + ख्या) आख्यान करवुं-कहेवुं

आभोअ (आ + भोग) ध्यानपूर्वक जोवुं

आयय् (आ + दय) आदान करवुं-ग्रहण करवुं

आरोव् (आ+रोप) आरोपवुं

आलोट्ट (आ+लुठ्य) आळोटवुं

आ+सार् (आ+सृ-सार) आम तेम अफळाववुं-आमतेम लई जवु

इच्छ् (इच्छ) इच्छवुं

उक्कुद् (उत्+कूर्दे) ऊंचे कूदवुं

उट्ठ (उत्+स्था) ऊठवुं

उ+डी (उत्+डी) ऊडवुं

उल्लव् (उत्+लप्) बोलवुं

उवचिट्ठ (उप+तिष्ठ) उपस्थित रहेवु-सेवामां हाजर रहेवु

उवणी (उप+नी) पासे लइ जवुं

उव+दंस् (उप+दर्शय) देखाडवुं-पासे जईने बताववुं

उव+दिस् (उप+दिश) उपदेशवुं उपदेश करवो

उवे (उप+इ) पासे जवु-पामवु

उंघ् — ऊघवुं

एस् (एष) एषणा करवी शोधवुं

ओगाल् (उद्+गार) ओगाळवुं

ओप्प् (अर्प) पाणी-आपवुं-चडाववुं-ओपवुं

ओम्बाल् (उत्+प्लाव) प्लावित करवुं

कत्थ् (कत्थ) कथवुं-कहेवुं-वखाणवुं

कप्प् (कल्प) खपवुं-उचित होवुं

कर् (कर) करवुं

करिस् (कर्ष्) कर्षवु-खेंचवु काढवुं-खेडवुं

कह् (कथ) कथवु-कहेवुं

किण् (क्रीणा) खरीदवुं-वेचातु लेवुं

कील (क्रीड) क्रीडा करवी-रमत रमवी

कुज्झ् (क्रुध्य) क्रोध करवो

कुण् (कृणु) करवु

कुद्द (कूर्द) कूदवु

कुप्प् (कुप्य) कोपवुं-कोप करवो

कुव्व् (कुरु) करवुं

कुह (कुथ) कोहवुं-सडवुं

कूअ (कूज) कूकू करवुं-कूहू कूहू करवुं

कोव् (कोप) कोप करवो-कुपित करवुं

खण् (खन्) खणवुं-खोदवुं

खल् (स्खल्) स्खलित थवुं-दूर थवुं

खा (खाद्) खावुं

खाद् } (खाद्) खावुं
खाय् }

खिज्ज् (खिद्य) खीजवुं-खेद करवो

खिप्प् (क्षिप्य) खेपवुं-खेववुं फेंकवुं

खिव् (क्षिप्) खेपवुं-खेववुं-फेंकवुं

खुब्भ् (क्षुभ्य) खोभवुं-छोभवुं-खळभळवुं-क्षोभ थवो-गभरावुं

गच्छ् (गच्छ्) जवुं-पामवुं

गज्ज् (गर्ज) गाजवुं

गढ् (घट) घडवुं

गरिह् (गर्ह्) गरहवुं-निंदवुं

गवेस् (गवेष) गवेषवुं-शोधवुं

गंठ् (ग्रन्थ) गंठवुं-गूंथवुं

गा (गा) गावुं

गिज्झ् (गृध्य) गृद्ध थवुं-ललचावुं

गिला (ग्ला) ग्लान थवुं-क्षीण थवुं

गेण्ह् (गृह्णा) ग्रहण करवुं

घड् (घट्) घडवुं-बनाववुं

घरिस् (घर्ष) घसवुं

चड् (चट्) चडवुं

चय् (त्यज) तजवुं

चय् (शक्) शकवुं

चर् (चर) चरवुं-चालवुं

चल् (चल) चालवुं

चव् (वच्) कहेवुं

चिइच्छ (चिकित्स) चिकित्सा करवी-उपचार करवो

चिण् (चिनु) चणवुं-एकठुं करवुं

चिणा (चिनु) चणवुं-एकठुं करवुं

चिंत् (चिन्त) चिंतववुं

चुक (च्युतक) चूकवुं-भ्रष्ट थवुं

चोप्पड चोपडवुं

छज्ज् (सज्ज) छाजवुं-शोभवुं

छाय } (छाद)
छाअ } छावुं-ढांकवुं

छिंद् (छिनद) छेदवुं-हणवुं मारवुं

छेच्छ् (छेत्स्य) छेदवुं

छोल्ल छोलवुं

जग्ग् (जागृ) जागवुं

जम्भा (जृम्भ) बगासुं खावुं

जम्म् (जन्मन्) जन्मवुं

जव् (जप्) जपवुं-जाप करवो

जहा (जहा) छोडवुं-त्याग करवो

जंप् (जल्प) कहेवुं

जा (या) जावुं

जागर् (जागर्) जागवुं

जाण् (जाना) जाणवुं

जाय् (जाय) जावुं-जन्म थवो
उत्पन्न थवुं

जाय् (याच) जाचवुं-याचना करवी-मांगवुं

जाव् (याप) वीतावबुं-यापन करवुं

जिण (जि) जितवुं-जय मेळववो

जीह (जिही) लाजवुं

जुज्झ (युध्य) झघडवुं-युद्ध करवुं

जुंज् (युज) योजवुं-जोडवुं-अडाडवुं-संबंध करवो

जुर (जुर) झूरवुं

जेम (जेम) जमवुं

जोत } (द्योत)
जोअ } द्योत थवो-प्रकाशवुं-जोवुं

झा (ध्या) ध्यावुं ध्यान करवुं

झाम् बाळवुं

ठा (स्था) स्थिर रहेवुं ऊभा रहेवुं-बेसी रहेवुं

डस् (दंश्) डसवुं-करडवुं

डह (दह) बहवुं-दाझवुं

डज्झ (दह्य) बळवुं-बाळवुं

णिव्विज्ज् (निर्+विद्) निर्वेद पामवो

तच्छ (तक्ष्) तासवुं छोलवुं, पातळुं करवुं

तर (तर) तरवुं

तव (तप) तपवुं-संताप थवो-तप करवुं

ताल् } (ताड)
ताड् } ताडन करवुं-मारवुं

ताव् (ताप) तपाववुं-ताववुं

तिप्प् (तिप्) टपकवुं-गळवुं

तुरिय् (तूर्य) त्वरा करवी-उतावळा थवुं-तुरत करवुं

तुवर (त्वर) त्वरा करवी

तूर (त्वर) त्वरा करवी झपाटाबंध जवुं

तोल् (तोल) तोळवुं

थुण (स्तुनु) थुणवुं-स्तुति करवी

दक्खव् (दृश) दाखववुं-देखाडवुं-कांई बतावबुं

दच्छ (दृश्य) जोवुं-देखवुं

दा (दा) देवुं

दिप्प् (दीप्य) दीपवुं

दिव्व् (दीव्य) द्युत रमवुं–रमवुं

दीव् (दीप) दीपवुं

देक्ख् (दृश्) देखवुं

धरिस् (धर्ष्) धसवुं–सामा थवुं

धा (धाव्) धावुं–दोडवुं

धाव } (धाव)
धाय् } धोडवुं–दोडवुं

नच्च् (नृत्य) नाचवुं

नज्झ् (नह्य) नाझवु–बांधवुं

नम् } (नम्) नमवु
नव् }

नस्स् } (नश्य)
नास् } नाश थवो

नि+क्खाल् } (नि+क्षाल)
नि+क्खार् } निखारवु–धोवु

निज्झुण् (निर् + धुना) खंखेरवुं-दूर करवु

निप्पज् (निर् + पद्य) नीपजवुं

नि+मंत् (नि+मन्त्र) निमंत्रण करवुं, नोतरवुं.

निंद् } (निन्द) निंदवुं–निन्दा
निन्द् } करवो

नीहर् (निर् + सर्) नीहरवुं –नीसरवुं

ने } (नी) लइ जवुं–दोरवु
णे }

पक्खाल् (प्र + क्षाल) पखाळवुं–धोवुं

पगब्भ् (प्र + गल्भ) प्रगल्भ थवुं–बडाई मारवी.

पच्चप्पिण् (प्रत्यर्पण-प्रति + अर्पण) पाछुं सोंपवुं.

पज्जर् (प्र + उत् + चर्–प्रोच्चर) कहेवुं

पट्ठव् (प्र+स्थाप्) पाठववुं

पड् (पत) पडवुं

पडिकूल (प्रति+कूल) प्रतिकूळ थवुं विपरीत थवुं

पडिनो (प्रति+नी) पाछुं देवुं -सामुं देवुं- बदले देवु

पडिवज्ज् (प्रति+पद्य) पामवुं -स्वीकारवुं

पढ् (पठ) पाठ करवो-पढवुं

पणाम् (प्र+णाम) आपवुं-सेवामां रजु करवुं

पन्नव् (प्रज्ञापय) जणाववु

पमाय् (प्र+माद्य) प्रमाद करवो

पमुच्च् (प्र+मुच्य) प्रमुक्त थवु तद्दन छूटी जवुं

पयल्ल् (प्र+क्षर्) फेंकवुं

परिआल् (परिवार) परिवृत करवुं-वींटवुं

परिक्कम् (परि+क्रम्) परि-क्रमण करवुं-परकमवुं-प्रदक्षिणा फरवी

परिच्चय् (परि+त्यज) परि-त्याग करवो

परितप्प् (परि+तप्य) परिताप पामवो-दुःखी थवुं

परिदेव् (परि+दिव) खेद करवो

परिनिव्वा (परि+निर्+वा) शान्त करवुं- ओलववुं

परिव्वय् (परि+व्रज्) परिव्रज्या लेवी-बंधनरहित थइने चारे कोर फरवुं

परिहर् (परि+हर) परहरवुं- तजवु

परिहा (परि+धा) पहेरवु

पवय् (प्र+वद) वदवुं-कहेवुं

पवस् (प्र+वस्) प्रवास करवो

पहार (प्र+धार) धारवुं-संकल्प करवो

पा (पा) पीवुं

पाव् (प्र+आप्) पामवुं-प्राप्त करवुं

पास्
पस्स् } (पश्य) जोवुं

पिज्ज् (पीय) पीवुं

पिट्ट् (पिट्ट) पीटवु-मारवुं पीटवुं

पिसुण् (पिशुनय) चाडी करवी

पील् } (पीड) पीडवुं-
पीड् } पीलवुं

पुच्छ् (पुच्छ) पूछवुं

पुञ्ज् (पूर्य) पूरवुं-पूरावुं

पुण् (पुना) पुणवुं-पवित्र करवुं

पुरिय् (पूर्य) पूरवु-पुरावुं-भरवु पुरु करवु

पुलआअ (पुलकाय) पुलकित थवुं-उल्लसवुं

पुलोअ } (प्र+लोक) प्र-
पुलअ } लोकवुं-जोवु

पूञ्ज } (पूज) पूजवुं
पूअ }

पेच्छ् (प्र+ईक्ष) जोवु

फल् (फल) फळवुं-फळ आववां

फुट्ट् (स्फुट) स्फुट थवुं-खीलवुं-फुटी नीकळवुं

बाह (बाध) बांधवुं-बाधा करवी-अडचण करवी

बीह (भी) बीवुं

बू (ब्रू) बोलवुं

बोल्ल् (ब्रु) बोलवुं

बोह (बोध) बोध थवो-जाणवुं

भक्ख् (भक्ष) भक्षवुं-खावुं भखवुं

भञ्ज् } (भज) भांजवुं
भंज् } भांगवु

भण् (भण) भणवुं-बोलवु-कहेवुं

भम् (भम) भमवुं

भम्म् (भ्राम्य) भमवुं

भर } (स्मर) स्मरण
भल } करवुं

भव् (भव) थवुं-होवुं

भा (भी) बीवु

भास् (भाष) भाखवु-भाषण करवु

भिद् (भिनद्) भेदवुं, कटका करवा

भेच्छ (भेत्स्य) भेदवुं–टकडा करवा

भोच्छ (भोक्ष्य) भोजन करवुं भोगववु

मज्ज् (मद्य) मद करवो, माचवुं, खुश थवुं

मन्न् (मन्य) मानवु

मरिस् (मर्श) विमासवुं–विचारवु

मरिस् (मर्ष) सहवुं, क्षमा राखवी

मिला (म्ला) म्लान थवुं, करमावुं

मुज्झ (मुह्य) मुंझावुं, मूढ थवुं–मोह पामवो

मुण् (मन्) जाणवुं

मुंच् (मुञ्च) मूकवु

मेलव् (मेलय) मेळववुं, भेळववुं, एकमेक करवुं

मोच्छ (मोक्ष्य) मुकावु–छूटुं थवुं

रक्ख् (रक्ष) रक्षवुं, राखवुं, साचववुं, रक्षण करवुं

रीय् (रीय) नीकळवुं

रुव् (रुद) रोवुं

रूस् / रूस्स् (रुष्य) रूसवुं, रोष करवो

रोच्छ (रोत्स्य) रोवुं

लभ् (लभ्) लाभवुं, मेळववुं

लव् (लप) लववं, बोलवुं

लह् (लभ) लेवुं, मेळववुं

लिप्प् (लिप्य) लेपावुं, खरडावुं

लिह् (लिख) लखवु

लुट्ट् (लुठ्य) लोटवुं–आळोटवुं

लुण् (लुना) लणवुं–कापवुं

वक्खाण् (वि+आ+ख्यान) विस्तारथी कहेवुं, वखाण करवां

वग्गोल (वि+उद्+गार-व्युद्गार)
वागोळवु

वच्च् (व्रज) फरता रहेवुं

वज्ज् (वर्ज) वर्जवु, छोडवुं

वज्जर् (वि+उत्+चर-व्युच्चर)
कहेवुं

वड्ढ (वर्ध) वधवुं

वण (वन) वणवुं, भात
पाडीने वणवुं

वर् (वृ) वरवुं, स्वीकारवुं,
वरदान लेवुं

वरिस् (वर्ष) वरसवुं

वलग्ग (वि + लग्न) वळगवुं
-चडवुं

वस (वस) वसवुं-रहेवुं

वह (वध) वध करवो-हणवुं

वह (वह्) वहेवुं-वावुं

वंद् (वन्द) वांदवुं-नमवुं

वा (वा) वावुं

वाव (वापू) वाववुं-ववरावबुं

विकिर्, विइर् (वि+किर्) वेरवुं

विक्के (वि+क्री) वेचवुं-वेकवुं

वि+चर् (वि+चर) विचरवु-फरवुं

विचिंत् (वि + चिन्त)
चिंतववुं-विशेष
चितववुं

विच्छड् (वि + क्षल)
वींछळवुं-धोवुं

विज्ज् (विद्य) विद्यमान होवु

विज्झ् (विध्य) वींधवुं

विणस्स् (वि + नश्य)
वणसी जवुं-नष्ट थवुं
वगडवुं

विण्णव् (वि+ज्ञप्) वीनववु

विप्पजह् (वि + प्र + जहा)
त्याग करवो-दूर करवुं

विराअ, विराज् (वि + राज)
विराजवुं-शोभवुं

विसीअ (वि + षीद)
विषाद पामवो-
खेद करवो

विहड् (वि + घट) विघट् बगडवुं–नाश पामवो

विहर् (वि + हृ) विहरवुं –फरवुं

विंध् (विध्य) वींधवुं

वोसर् (वि + स्मर्) वीसरवुं

वेढ्ढ (वेद्य) वेदवुं–अनुभववुं–जाणवुं

वेढ् (वेष्ट) वींटवुं

वेव (वेप्) वेपवुं-कंपवुं–धूणवुं

वोल्ल (वच्य) कहेवुं–बोलवुं

समायर् (सम् + आ + चर्) आचरण करवुं

समारभ(सम् + आ + रच्) समारवुं–समुं करवुं

समारंभ् (सम्+आ+रभ्) समारम्भ करवो, हणवुं

सर् (स्मर्) स्मरण करवुं

सव् (शप) शापवुं, शाप देवो

संख् (सं+ख्या) कहेवुं

संजम् (सं+यम) संजमवुं, संयम करवो

संजल् (सं+ज्वल्) बळवुं, कोप करवो

संदिस् (सम्+दिश्) आदेशो आपवो–सूचन करवुं

संपज्ज् (सं+पद्य) संपजवुं–सांपडवुं

संपाउण् (सम्+प्र+आप्नु) सारी रीते पामवुं

संबुज्झ् (सं+बुध्य) समजवुं

संभर् (सं+स्मर) संभारवुं, याद करवुं

संवड्ढ (सं+वर्ध) संवर्धन करवुं, पोषवुं, साचववुं

सिज्ज (स्विद्य) सीजवुं, सीझवुं थवुं, स्वेद–परसेवावाळा थवुं

सिज्झ (सिध्य) सीझवुं-
सिद्ध थवुं

सिलाह (श्लाघ) सराहवुं-
वखाणवुं

सिव्व् (सिव्य) सीववुं

सिह् (स्पृह) स्पृहा करवी

सिंच् (सिञ्च) सींचवु

सुण } (शृणु) सुणवु-
हण } सांभळवु

सुमर् (स्मर) स्मरण करवुं

सूड् } (सूद्)
सूर् } सूडवुं, नाश करवो

सूस् } (शुष्य) शोषवुं-
सुस्स } सुकावुं

सेव् (सेव) सेव-धारणवुं
करवुं-आश्रय लेवो

सोच्छ (श्रोष्य) सांभळवुं

सोह (शोध) शोधवुं-सोवुं
शुद्ध करवु

सोह (शुभ) सोहवु शोभवु

हण (हन्) हणवुं-मारवुं

हरिस् (हर्ष) हरखवुं
हर्ष थवो

हस (हस) हसवुं

हिंस (हिंस) हिंसा करवी
हणवुं

हा (हा) हीण थवुं-तजवुं

हो (भू) होवुं, थवुं

पाइअ-गज्ज-पज्जाणि

(१)

मंगलं

नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ।

नमो अरिहंताणं ।
नमो सिद्धाणं ।
नमो आयरिआणं ।
नमो उवज्झायाणं ।
नमो लोए सव्वसाहूणं । —नमोक्कारो ।

अरिहंता मंगलं ।
सिद्धा मंगलं ।
साहू मंगलं ।
केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं । —मंगलं ।

अरिहंते सरणं पवज्जामि ।
सिद्धे सरणं पवज्जामि ।
साहू सरणं पवज्जामि ।
केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि । —सरणं ।

---

(२)

महव्वयउच्चारणा

सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ।

सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ।

सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ।

सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ।

सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ।

सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमणं ।

सव्वं भन्ते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि—नेव सयं पाणे अइवाएज्जा, नेवऽन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं ॥ १ ॥

सव्वं भन्ते ! मुसावायं पच्चक्खामि—नेव सयं मुसं वएज्जा, नेवऽन्नेहिं मुसं वायावेज्जा, मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं ॥ २ ॥

सव्वं भन्ते ! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि—नेव सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा, नेवऽन्नेहिं गिण्हावेज्जा, अदिन्नं गिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं ॥ ३ ॥

सव्वं भन्ते ! मेहुणं पच्चक्खामि—नेव सयं मेहुणं सेविज्जा, नेवऽन्नेहिं सेवावेज्जा, मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं ॥ ४ ॥

सव्वं भन्ते ! परिग्गहं पच्चक्खामि—नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हेज्जा, नेवऽन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा, परिग्गहं परिगिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं ॥ ५ ॥

सव्वं भंते ! राइभोयणं पच्चक्खामि—नेव सयं राइं भुंजेज्जा, नेवऽन्नेहिं राइं भुंजाविज्जा, राइं भुंजते वि अण्णे न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं (६ ॥

—समणसुत्तं

---

(३)

मिच्छा मि दुक्कडं

किर एगया एगस्स कुंभगारस्स कुडीए साहुणो ठिया. तत्थेगो चिल्लगो चवलत्तणेण तस्स कुंभगारस्स कालालाणि अंगुलियधणुहगएणं पाहाणेहिं विंधेइ. कुंभकारेण पडिजग्गिओ दिट्ठो भणिओ—खुड्डगा ! कीस मे कोलालाणि काणेसि ? खुड्डओ भणइ—मिच्छा मि दुक्कडं, न पुणो विंधिस्सं, मणागं पमायं गओ मि त्ति. एवं सो पुणो वि केलाकिलत्तणेण विंधेऊण चोइओ मिच्छा—मि—दुकडं देइ. पच्छा कुंभकारेण सढो त्ति नाऊण तस्स खुड्डगस्स कन्नामोडओ दिन्नो. सा भणइ—दुक्खविओ हं, कुंभकारो भणइ —मिच्छा—मि—दुक्कडं. एवं सो पुणो पुणो कन्नामोडयं दाऊण मिच्छा—मि—दुकडं करेइ. पच्छा चेल्लओ भणइ—अहो ! सुंदरं मिच्छा—मि—दुकडं ति । कुंभकारो भणइ —तुब्भ वि एरिसं चेव मिच्छा—मि—दुकडं ति. पच्छा ठिओ विंधेयव्वस्स. किंच—

" जं दुक्कडं ति मिच्छा तं चेव निसेवइ पुणा पावं ।
पच्चक्खमुसावाई मायानियडीपसंगो य ।। "

—समणसुत्तवुत्ती.

---

(४)

खामणं

आयरिए उवज्झाए सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ।
जे मे केइ कसाया सव्वे तिविहेण खामेमि ।।
सव्वस्स समणसंघस्स भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ।
सव्वे खमावइत्ता खमामि सव्वस्स अहयं पि ।।
सव्वस्स जीवरासिस्स भावओ धम्मनिहिअनिअचित्तो ।
सव्वे खमावइत्ता खमामि सव्वस्स अहयं पि ।।
खामेमि सव्वजीवे सव्वे जीवा खमंतु मे
मित्ती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झं न केणइ ।।

—पडिक्कमणसुत्तं.

---

(५)

समयं गोयम ! मा पमायए

कुसग्गे जह ओसबिंदुए थोवं चिट्ठति लंबमाणए ।
एवं मणुयाण जीवियं समयं०

इइ इत्तरियम्मि आउए जीवितए बहुपच्चवायए ।
विहुणाहि रयं पुराकडं समयं०

एवं भवसंसारे संसरति सुभासुभेहिं कम्मेहिं ।
जीवो पमायबहुलो समयं०

परिजूरइ ते सरीरयं केसा पंडुरगा भवंति ते ।
से सोयबले य हायइ समयं०

वुच्छिद सिणेहमप्पणो कुमुयं सारइयं व पाणिय ।
से सव्वसिणेहवज्जिए समयं०

चिच्चा ण धणं च भारियं पव्वइओ हि सि अणगारियं ।
मा वंतं पुणो वि आविए समयं०

ण हु जिणे अज्ज दीसइ बहुमए दीसइ मग्गदेसिए ।
संपइ नेआउए पहे समयं०

तिण्णो हु सि अण्णवं महं किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ ।
अभितुर पारं गमित्तए समयं०

बुद्धस्स निसम्म भासियं सुकहियमट्ठपदोवसोहियं ।
रागं दोसं च छिंदिया सिद्धिगइं गए गोयमे ॥

—उत्तरज्झयणाइं

(६)

हरिकेसी सोवागो

सोवागकुलसंभूओ गुणुत्तरधरो मुणी।
हरिएसबलो नाम आसि भिक्खू जिइंदिओ ॥
मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइंदिओ।
भिक्खट्ठा बंभइज्जम्मि जन्नवाडं उवट्ठिओ ॥
तं पासिऊणमिज्जंतं तवेण परिसोसियं।
पंतोवहिउवगरणं उवहसंति अणारिया ॥
जाइमयं पडिथद्धा हिंसगा अजिइंदिआ।
अबंभचारिणो बाला इणं वयणमब्बवी ॥

बंभणा—कयरे आगच्छइ दित्तरूवे काले विकराले फुक्कनासे।
ओमचेलए पंसुपिसायभूए संकरदूसं परिहरिय कंठे ॥
कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे काए व आसा
इहमागओ सि।
ओमचेलगा! पंसुपिसायभूआ! गच्छ
खलाहि किमिहं ठिओ सि ॥

समणो—समणो अहं संजओ बंभयारी विरओ धण—
प्पयण—परिग्गहाओ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले अन्नस्स अट्ठा
इहमागओ मि ॥

वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ य अन्नं पभूयं भवयाणमेयं।
जाणाह मे जायणजीविणु त्ति सेसावसेसं
लहउ तवस्सी ॥

बंभणा—उवक्खडं भोयणं माहणाणं अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं।
न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं दाहामु तुज्झं
किमिहं ठिओ सि ? ॥

समणो—तुब्भित्थ भो ! भारहरा गिराणं अट्ठं न
याणह अहिज्ज वेए।
उच्चावयाइं मुणिणो चरंति ताइं तु खित्ताइं
सुपेसलाइं ॥

बंभणा—अज्झावयाणं पडिकूलभासी पभाससे किंनु
सगासि अम्हं।
अवि एयं विणस्सउ अन्न–पाणं न य णं
दाहामु तुमं नियंठा ! ॥

समणो—जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं, किमज्ज
जन्नाण लभित्थ लाभं ॥

बंभणा—के इत्थ खत्ता उवजोइया वा अज्झावया वा
सह खंडिएहिं ? ।
एयं खु दंडेण फलेण हंता कंठम्मि घित्तूण
खलिज्ज जो णं।

अज्झावयाणं वयणं सुणित्ता उद्धाइया तत्थ बहू
कुमारा ।
दंडेहिं वित्तेहिं कसेहिं चेव समागया तं इसि
तालयंति ॥

कोसलिआ रायदुहिआ—गिरिं नहेहिं खणह अयं
दंतेहि खायह ।
जायतेयं पायेहिं हणह जे भिक्खुमवमन्नह ॥

समणो—पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च मणप्पओसो
न मे अत्थि काई ।

बंभणा—सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो न दीसइ
जाइविसेस कोई ।
सोवागपुत्तं हरिएससाहुं जस्सेरिसा इड्ढी महाणुभावा ॥
कहं चरे भिक्खु ! वयं जयामो पावाइं कम्माइं
पणुल्लयामो ?

समणो—छज्जीवकाएऽसमारभंता मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
परिग्गहं इत्थिउ माण-मायं एयं परिन्नाय चरंति दंता ॥
एयं सिणाणं कुसलेण दिट्ठं महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।
जहिंसि ण्हाया विमला विसुद्धा महारिसी उत्तमं ठाणं पत्ता ॥

—**उत्तरज्झयणाइं.**

---

(७)

तं वयं बूम माहणं

जो लोए बंभणो वुत्तो अग्गी वा महिओ जहा ।
सदा कुसलसंदिट्ठं तं वयं०

जो न सज्जइ आगंतुं पव्वयंतो न सोअइ ।
रमए अज्जवयणम्मि तं वयं०

जायरूवं जहा मट्ठं निद्धंतमलपावगं ।
राग-दोस-भयाईयं तं वयं०

तसे पाणे वियाणित्ता संगहेण य थावरे ।
जो न हिंसइ तिविहेण तं वयं०

कोहा वा जइ वा हासा लोहा वा जइ वा भया ।
मुसं न वयइ जो उ तं वयं०

चित्तमंतमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं ।
न गिण्हइ अदत्तं जो तं वयं०

दिव्व-माणुस्स-तेरिच्छं जो न सेवेइ मेहुणं ।
मणसा काय-वक्केण तं वयं०

जहा पोम्मं जले जायं नोवलिप्पइ वारिणा ।
एवं अलित्तं कामेहि तं वयं०

अलोलुयं मुहाजीविं अणगारं अकिंचणं ।
असंसत्तं गिहत्थेहिं तं वयं०

नवि मुंडिएण समणो न ॐ कारेण बंभणो ।
न मुणी रण्णवासेणं कुसचीरेण न तावसो ॥

समयाए समणो होइ, बंभचेरेण बंभणो ।
मोणेण य मुणी होइ, तवेणं होइ तावसो ॥

कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
वइस्सो कम्मुणा होइ सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥

एए पाउकरे बुद्धे जेहिं होइ सिणायओ ।
सव्वकम्मविणिमुक्कं तं वयं०

एवं गुणसमाउत्ता जे हवंति दिउत्तमा ।
ते समत्था उ उद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ॥

—उत्तरज्झयणाइं.

---

(८)

रामवणवासो

चाउव्वण्णं च जणं आपुच्छेऊण निग्गओ रामो ।
वइदेही वि य ससुरं पणमइ परमेण विणयेणं ॥ १०३

सव्वाण सासुयाणं, काऊण चलणवन्दणं सीया ।
सहियायणं च निययं आपुच्छिय निग्गया एत्तो ॥ १०४

गन्तूण समाढत्तं, रामं दट्ठूण लक्खणो रुट्ठो ।
ताएण अयसबहुलं कह एयं पत्थियं कज्जं ? ॥ १०५

एत्थ नरिंदाण जए परिवाडीआगयं हवइ रज्जं ।
विवरीयं चिय रइयं ताएण अदीहपेहिणा ॥ १०६
रामस्स को गुणाणं अंतं पावेइ धीरगरुयस्स ।
लोभेण जस्स रहियं चित्तं चिय मुणिवरस्सेव ॥ १०७
अहवा रज्जधुरंधरं सव्वं फेडेमि अज्ज भरहस्स ।
ठावेमि कुलाणीए पुहइवइं आसणे रामं ॥ १०८
एएण किं व मज्झं हवइ वियारेण ववसिएणऽज्ज ।
नवरं पुण तच्चत्थं ताओ जेट्ठो य जाणंति ॥ १०९
कोवं च उवसमेउं, पणमिय पियरं परेण विणएणं ।
आपुच्छइ दढचित्तो सोमित्ती अत्तणो जणणिं ॥ ११०
संभासिऊण भव्वे, वज्जावत्तं च धणुवरं घेत्तुं ।
घणपीइसंपउत्तो पउमसयासं समल्लीणो ॥ १११
पियरेण बंधवेहि य सामंतसएसु परिनिग्गया संता ।
रायभवणाओ एत्तो विणिग्गया सुरकुमार व्व ॥ ११२
सुयसोगताविया‌ओ धरणियलोसित्तअंसुनिवहाओ ।
कह कह वि पणमिऊणं नियत्तियाओ य जणणीओ ॥ ११३
काऊण सिरपणामं नियत्तिओ दसरहो य रामेणं ।
सहवड्ढिया य बंधू कलुणपलावं च कुणमाणा ॥ ११४
जंपंति एक्कमेक्कं एस पुरी जइ वि जणवयाइण्णा ।
जाया रामविओए दीसइ विंझाडवी चेव ॥ ११५

—पउमचरियं

(९)

वीरत्थुती–

हत्थीसु एरावणमाहु णाए सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा ।
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवो निव्वाणवादीणिह नायपुत्ते ॥ २१
जोहेसु णाए जह वीससेणे पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ।
खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥ २२
दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति ।
तवेसु वा उत्तम बंभचेरं लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥ २३

सूअगडंगं, ६ वीरत्थुतिअज्झयणं.

---

(१०)

अप्पा

से ण दीहे, ण हस्से, ण वट्टे, ण तंसे, ण चउरंसे, ण परिमंडले; ण किण्हे, ण णीले, ण लोहिए, ण सुक्किले; ण सुरहिगंधे, ण दुरहिगंधे; ण तित्ते; ण कडुए, ण कसाने (ए), ण अंबिले, ण महुरे; ण कक्खडे, ण मउए, ण गरुए, ण लहुए, ण सीए, ण उण्हे, ण णिद्धे, न लुक्खे; ण काऊ (ओ), ण रुहे, ण संगे, ण इत्थी, ण पुरिसे, ण अन्नहा; परिण्णे, सण्णे.

उवमा ण विज्जति, अरूवी सत्ता; अपयस्स पयं नत्थि, सव्वे सरा णिअट्टंति, तक्का जत्थ ण विज्जंति, मती तत्थ ण गाहिता, ओए, अप्पतिट्ठाणस्स खेयन्ने.

से ण सद्दे, ण रूवे, ण गंधे, ण रसे, ण फासे इच्चेतावंति त्ति बेमि.

—आयारंगसुत्तं.

---

(११)

धुत्तो सियालो

सियालेण भमंतेण हत्थी मओ दिट्ठो। सो चिंतेइ–" लद्धो मए उवाएण ताव णिच्छएण खाइयव्वो। " जाव सिंहो आगओ। तेण चिंतियं–" सचिट्ठेण ठाइयव्वं एयस्स। "

सिंहेण भणियं–" किं अरे! भाइणेज्ज! अच्छिज्जइ? "

सियालेण भणियं–आमंति माम!

सिंहो भणइ–" किमेयं मयं? " ति।

सियालो भणइ–" हत्थी। "

" केण मारिओ? "

" वग्घेण। "

सिंहो चिंतेइ–" कहमहं ऊणजातिएण मारियं भक्खामि? " गओ सिंहो। णवरं वग्घो आगओ। तस्स कहियं–" सीहेण मारिओ, सो पाणियं पाउं णिग्गओ। "

वग्घो णट्ठो। जाव काओ आगओ। सियालेण चिंतियं–" जइ एयस्स ण देमि तओ ' काउ ' 'काउ'त्ति वासियसद्देणं अण्णे कागा

एहिंति, तेसिं कागरडणसद्देणं सियालादि अण्णे बहवे एहिंति, कित्तिया वारहामि ? ता एयस्स उवप्पयाणं देमि । ”

तेण तओ तस्स खंडं छित्ता दिण्णं । सो तं घेत्तूण गओ ।

जाव सियालो आगओ । तेण णायमेयस्स हठेण वारणं करेमित्ति भिउडिं काऊण वेगो दिण्णो । णट्ठो सियालो ।

उक्तं चः—

उत्तमं प्रणिपातेन, शूरं भेदेन योजयेत् ।
नीचमल्पप्रदानेन, सदृशं च पराक्रमैः ॥

(दशवैकालिकवृत्तिः)

---

(१२)

कयग्घा वायसा

इओ य किर अतीते काले दुवालसवरिसिओ दुब्भिक्खो आसी । तत्थ वायसा मेलयं काऊण अण्णोण्णं भणंति—“ किं कायव्वमम्हेहिं ? वड्ढो छुहमारो उवट्ठिओ, नत्थि जणवएसु वायसपिंडियाओ, अण्णं वा तारिसं किंचि न लब्भइ उज्झणधम्मियं, कहियं वच्चामो ” ? त्ति ।

तत्थ वुड्ढवायसेहिं भणियं—“ समुद्दतडं वच्चामो । तत्थ कायंजला अम्हं भायणेज्जा भवंति । ते अम्हं समुद्दाओ मच्छए उत्तारिऊणं दाहिंति । अण्णहा नत्थि जीवणावाओ । ”

संपहारेत्ता गया समुद्दतडं । ततो तुट्ठा कायंजला मच्छए उत्तारित्ता देंति । वायसा तत्थ सुहेण कालं गमेंति ।

ततो वत्ते बारससंवच्छरिए दुब्भिक्खे जणवएसु सुभिक्खं जायं । ततो तेहिं वायसेहिं संपहारेत्ता वायससंघाडओ "जणवयं पलोएह" त्ति पेसिओ, जइ सुभिक्खं भविस्सइ तो गमिस्सामो ।"

सो य संघाडओ अचिरकालस्स उवलद्धी करेत्ता आगतो । साहति य वायसाणं जहा–' जणवएसुं वायसपिंडिआओ मुक्कमाणीओ अच्छंति, उट्ठेह, वच्चामो ' त्ति ।

ततो ते संपहारेंति–किह गंतव्वं ? ति ' जइ आपुच्छामो नत्थि गमणं ' एवं परिगणेत्ता कायंजले सद्दावेत्ता एवं वयासी–

" भागिणेज्जा ! वच्चामो । "

ततो तेहिं भणियं–" किं गम्मइ " ।

ततो भणंति–

" न सक्केमो पइदिवसं तुम्हं अहोभागं पासित्ता अणुट्ठिए चेव सूरे " ।

एवं भणित्ता गया ।

(वसुदेवहिण्डी–प्रथमखण्डम्)

(१३)

सुरप्पिओ जक्खो

तेणं कालेणं तेणं समतेणं साकेयं णगरं। तस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागे सुरप्पिए नाम जक्खाययणे। सो य सुरप्पिओ जक्खो सन्निहियपाडिहेरो। सो वरिसे वरिसे चित्तिज्जइ। महो य से परमो कीरइ। सो य चित्तिओ समाणो तं चेव चित्तकरं मारेइ। अह न चित्तिज्जइ तओ जणमारिं करेइ।

ततो चित्तगरा सव्वे पलाइउमारद्धा। पच्छा रण्णा णायं, जदि सव्वे पलायंति, तो एस जक्खो अचित्तिज्जंतो अम्ह वहाए भविस्सइ।

तेणं चित्तगरा एक्कसंकलितबद्धा पाहुडएहिं कया, तेसिं सव्वेसिं णामाइं पत्तए लिहिऊणं घडए छूढाणि। ततो वरिसे जस्स णामं उट्ठाति, तेण चित्तेयव्वो। एवं कालो वच्चति।

अण्णया कयाइ कोसंबीओ चितगरदारओ घराओ पलाइओ तत्था-गओ सिक्खगो। सो भमंतो साकेतस्स चित्तगरस्स घरं अल्लीणो। सोवि एगपुत्तगो थेरीपुत्तो। सो से तस्स मित्तो जातो।

एवं तस्स तत्थ अच्छंतस्स अह तम्मि वरिसे तस्स थेरी पुत्तस्स वारओ जातो। पच्छा सा थेरी बहुप्पगारं रुवति।

तं रुवमाणीं थेरीं दट्ठूण कोसंबको भणति—"किं अम्मो रुदसि?"

ताए सिट्ठं। सो भणति—"मा रुयह। अहं एयं जक्खं चित्तिस्सामि।"

ताहे सा भणति—"तुमं मे पुत्तो किं न भवसि ?"

"तोवि अहं चित्तेमि, अच्छह तुब्भे असोगाओ।"

ततो छट्ठभत्तं काऊण, अहतं वत्थजुअलं परिहित्ता, अट्ठगुणाए मुहपोत्तीए मुहं बंधिऊण, चोक्खेण य पत्तेण सुइभूएण णवएहिं कलसएहिं ण्हाणेत्ता, णवएहिं कुच्चएहिं, णवएहिं मल्लसंपुडेहिं, अल्लेसेहिं वण्णेहिं च चित्तेऊण पायवडिओ भणइ—"खमह जं मए अवरद्धं" ति।

ततो तुट्ठो जक्खो भणति—"वरेहि वरं"

सो भणति—"एयं चेव ममं वरं देहि, लोगं मा मारेह।"

भणति—"एवं ताव ठितमेव, जं तुमं न मारिओ, एवं अण्णेवि न मारेमि। अण्णं भण।"

"जस्स एगदेसमवि पासेमि दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा अपयस्स वा तस्स तदणुरूवं रूवं णिव्वत्तेमि।"

"एवं होउ" त्ति दिण्णो वरो, ततो सो लद्धवरो रण्णा सक्कारितो समाणो गओ कोसंबिं णयरिं।

(आवस्यकहारिभद्रीयवृत्तिः—विभागः १)

---

(१४)

जामाउयपरिक्खणं

वसंतपुरं नयरं। निद्धसो नाम तत्थ आसि धिज्जाइओ। तस्स सुहा महेला लीलानिलओ। तेसिं च तिन्नि धूया जाया। कमेण य उन्नयं तारुन्नं पत्ता। नियसरिसविहवेसु कुलेसुं वीवाहिया।

जणणीए चिंतियं—" मज्झ दुहियरो कहं सुत्थिया होज्जा? पइ-परिणामे अन्नाए ववहरंतीओ ता गउरवपयं न भवंति। गउरवरहियाणं य कओ सुहासंगो? तओ कहमवि आमाउयाणं भावमहं जाणामि" त्ति चिंतिऊग नियधूयाओ भणियाओ—" लद्धावसराहिं पढमपसंगे पण्हि-पहारेण निययपइणो सिरो हणणिज्जो।"

ताहिं तहच्चिय कए पभायम्मि जणणीए ताओ पुच्छियाओ—"किं तेण तुम्हं विहियं?"

जेट्ठाए भणियं—" सो मचरणमद्दणपरो भणइ—' देवाणुप्पिये! किं नु दुक्खमणुपत्ता? एवंविहो पहारो तुम्ह चरणाणं न उचिओ। तुह मम्मि अइगरुओ आसंवो, अन्नहा को णु एवं कुणइ?"

जणणीए सा जेट्ठा भणिया—" पुत्ति! तुज्झं पई अइपेमपर-व्वसो। तओ तं जं कुणसि तं सव्वं पमाणं होहिइ। तओ तस्स मा भाहि।"

बीया धूया जणणिं भणइ—" पहारसमणंतरं सो मणागं झिंखण-कारी जाओ, खणंतराओ उवरओ" त्ति।

जणणी तं भणइ—" तुमए अरुच्चमाणम्मि विहिए सो झिंखणकारी होही, अन्नं निग्गहं नो काही।"

तइयाए धूयाए पुणो भणियं—" अम्मो! मए तुह निद्देसे कए संते सो दूरा दरिसियरोसो गेहत्थंभेग बंधिय मम कसघायसए दासी, भासियवं च तं दुकुला सि। तो मे तए एवंविहकज्जसज्जाए न कज्जं।"

तओ अस्स जामाउयस्स समीवं गंतुं माऊए भणियं—"कहं मे धूया ताडिया? सा हि पढमपसंगे तुज्झ पण्हिपहरं दाऊण अम्हं कुलधम्मं आइण्णा।"

सो जंपइ—"अम्हवि एस कुलधम्मो, जइ पुण सो कुलधम्मो कहवि न कज्जइ तो सा ससुरकुलं न नंदेइ।"

तओ जणणीए पुत्तीए समीवमागन्तुं भणियं—"जहेव देवस्स वट्टिज्जासि तहेव पइणो वट्टिज्जासि। न अन्नहा इमो तुह पियकरो" त्ति।

(उपदेशपद)

---

(१५)

गामिल्लओ सागडिओ

अत्थि कोइ कम्हिइ गामेल्लओ गहवती परिवसइ। सो य अण्णया कयाइ सगडं धण्णभरियं काऊणं, सगडे य तित्तिरिं पंजरगयं बंधेत्ता पट्ठिओ नयरं। नयरगतो य गंधियपुत्तेहिं दीसइ। सो य तेहिं पुच्छिओ—"किं एयं ते पंजरए" त्ति।

तेण लवियं—"तित्तिरि" त्ति।

तओ तेहिं लवियं—"किं इमा सगडतित्तिरी विक्कायइ?"

तेण लवियं—"आमं, विक्कायइ"।

तेहिं भणिओ—"किं लब्भइ?"

सागडिएण भणियं — "काहावणेणं" ति ।

ततो तेहिं काहावणो दिण्णो, सगडं तित्तिरं च घेत्तुं पयत्ता ।

ततो तेणं सागडिएणं भण्णति — "कीस एयं सगडं नेहि ?" त्ति।

तेहिं भणियं — "मोल्लेण लइययं" ति ।

ततो ताणं ववहारो जाओ, जितो सो सागडिओ, हिओ य सो सगडो तित्तिरीए समं ।

सो सागडिओ हियसगडोवगरणो जोग — खेम — निमित्तं आणिए-ल्लियं बइल्लं घेत्तूणं विक्कोसमाणो गंतुं पयत्तो, अण्णेण य कुलपुत्तएणं दीसइ, पुच्छिओ य — "कीस विक्कोससि ?"

तेण लवियं — "सामि ! एवं च एवं च अइसंधिओ हं ।"

ततो तेण साणुकंपेण भणिओ — "वच्च ताणं चेव गेहं, एवं च एवं च भणाहि" त्ति ।

ततो सो तं वयणं सोऊण गओ, गंतूण य तेण भणिआ — "सामि ! तुब्भेहिं मम भंडभरिओ सगडो हिओ ता इमं पि बइल्लं गेण्हह । मम पुण सत्तुयादुपालियं देह, जं घेत्तूण वच्चामि त्ति । न य अहं जस्स व तस्स व हत्थेणं गेण्हामि, जा तुज्झ घरिणी पाणेहि वि पिययरी सव्वा-लंकारभूसिया तीए दायव्वा, ततो मे परा तुट्ठी भविस्सइ । जीवलोग-ब्भंतरं व अप्पाणं मन्निस्सामि ।"

ततो तेहिं सक्खी आहूया, भणियं च — "एवं होउ" त्ति ।

ततो ताणं पुत्तमाया सत्तुयादुपालियं घेत्तूण निग्गया, तेण सा हत्थे गहिया, घेत्तूण य तं पट्ठिओ ।

तेहिं पि भणिओ – " किमेयं करेसि ? "

तेणं भणियं – " सत्तुदोपालियं नेमि । "

ततो ताणं सद्देण महाजणो संगहिओ, पुच्छिया – " किमेयं ? " ति । ततो तेहिं जहावत्तं सव्वं परिकहियं । समागयजणेण य मज्झत्थेणं होऊण ववहारनिच्छओ सुओ, पराजिया य ते गंधियपुत्ता । सो य किलेसेण तं महिलियं मोयाविओ, सगडो अत्थेण सुबहुएण सह परिदिण्णो ।

(वसुदेवहिण्डी–प्रथमखण्डम्)

---

(१६)

नडपुत्तो रोहो

उज्जेणी नामेणं वित्थिण्णसुरभवणा समुच्चुरघणोहा मालवमंडल-मंडणभूआ नयरी समत्थि । तत्थ जियसत्तू नामा रिउपक्खविक्खोहकारओ नयगुणसणाहो सइ गुणी सुदढपणओ नरनाहो आसी ।

अह उज्जेणिसमीवे सिलागामो गामो । तत्थ य भरहो नडो । सो य तग्गामे पहू, नाडयविज्जाए लद्धपसंसो य । तस्स णामेण रोहओ, गामस्स य सोहओ सुओ ।

अन्नया कयाइवि मया रोहयमाया । तओ भरहो घरकज्जकरणकए अण्णं तज्जणणिं संठवेइ ।

रोहओ य बालो। सा य तस्स हीलापरायणा हवइ। तो तेण सा भणिया–"अम्मो। जं ममं सम्मं न वट्टसि, न तं सुंदरं होही। एत्तो अहं तह काहं जह तं मे पाएसु पडसि।"

एवं कालो वच्चइ। अह अण्णया कयाइवि ससिपयासधवलाए रयणीइ सो एगसज्जाए जणगसहिओ पासुत्तो। तो रयणिमज्झभागे उट्ठित्ता उब्भएण होऊणं उच्चसरेणं जणओ उट्ठाविय भासिओ जहा– "ताय! पेक्खसु एस कोइ परपुरिसो जाइ!"

स सहसुट्ठिओ जाव निद्दामोक्खं काऊणं लोयणेहिं जोइए ताव तेण न दिट्ठो कोइ पुरिसो।

ततो रोहओ पुट्ठो–"वच्छा! सो कत्थ परपुरिसो?"

तेण जणओ भणिओ–"इमेणं दिसाविभागेणं सो तुरियतुरियं गच्छंतो मे दिट्ठो।"

तओ सो महिलं नट्ठसीलं परिकलिय तीए सिढिलायरो जाओ। सा पच्छायावपरिगया भासइ–

"वच्छ! मा एवं कुणसु।"

रोहओ भणइ–"कहं मम लट्ठं न वट्टसि?"

सा वेइ–"अह लट्ठं वट्टिस्सं। तओ तुमं तहा कुणसु जहा एसो तुह जणओ मज्झ आयरं कुणइ।"

इमं रोहेण पडिवन्नं। सा वि तह वट्टिउं लग्गा।

अण्णया कयावि रयणिमज्झे सुत्तुट्ठिओ सो जणगं भणइ–"ताय! सो एस पुरिसो! पुरिसो!"

पिउणा पुट्ठं — " सो कहिं " ति ।

तओ निययं चेव छायं दंसित्ता भणइ — " इमं पेच्छह " त्ति ।

स विलक्खमणो जाओ, पुच्छइ — " किं सो वि एरिसो आसी ? "

बालेण ' आमं ' ति भणियं ।

जणओ चिंतेइ — " अव्वो ! बालाण केरिसुल्लावा ! " इय चिंतिऊण भरहो तीइ घणराओ संजाओ ।

(उपदेशपद)

---

(१७)

चिब्भडियावंसगो

एगो मणुस्सो चिब्भडियाणं भरिएण सगडेण नयरं पविसइ । सो पविसंतो धुत्तेण भण्णइ—" जो एवं चिब्भडियाण सगडं खाइज्जा तस्स तुमं किं देसि ? "

ताहे सागडिएण सो धुत्तो भणिओ—" तस्साहं तं मोयगं देमि जो नगरद्दारेण ण णिप्फिडइ । "

धुत्तेण भण्णति—" तोऽहं एयं चिब्भडियासगडं खायामि, तुमं पुण तं मोयगं देज्जासि जो नगरद्दारेण ण नीसरति । "

पच्छा सागडिएण अब्भुवगए धुत्तेण सक्खिणो कया । तओ सगडं अहिट्ठित्ता तेसिं चिब्भडियाणं मणयं मणयं चक्खित्ता चक्खित्ता पच्छा तं सागडियं मोदकं मग्गति । ताहे सागडिओ भणति—

" इमे चिब्भडिया ण खाइया तुमे । "

धुत्तेण भण्णति—" जइ न खाइया चिब्भडिया अग्घवेह तुमं । "

तओ अग्घविएसु कइया आगया, पासंति खाइया चिब्भडिया, ताहे कइया भणंति—" को एया खाइया चिब्भडिया किणइ ? "

तओ करणे ववहारो जाओ । ' खाइय ' त्ति जिओ सागडिओ । ताहे धुत्तेण मोदगं मग्गिज्जति । अचाइओ सागडिओ, जुत्तिकरा ओलग्गिया, ते तुट्ठा पुच्छंति, तेसिं जहावत्तं सव्वं कहेति । एवं कहिते तेहिं उत्तरं सिक्खाविओ ।

तओ तेण खुड्डयं मोदगं णगरदारे ठवित्ता, भणिओ मोदगो—" जाहि, जाहि मोदग ! " स मोदगो न णीसरइ नगरदारेण ।

तो तेण सागडिएण सक्खिणो वुत्ता—" मए तुम्हाकं समक्खं पडिन्नायं—' जं अहं जिओ भविस्सामि तो सो मोदगो मया दायव्वो जो नगरदारेण न णीसरइ, ' एसो न णीसरइ । " ततो जिओ धुत्तो ।

(दशवैकालिकवृत्तिः)

---

(१८)

भारियासीलपरिक्खा

अत्थि अवंती नाम जणवओ । तत्थ उज्जेणी नाम नयरी रिद्धत्थिमियसमिद्धा । तत्थ राया जितसत्तू नाम । तस्स रण्णो धारिणी नाम देवी ।

तत्थ य उज्जेणीए नयरीए दसदिसिपयासो इब्भो सागरचंदो नाम। भज्जा य से चंदसिरी। तस्स पुत्तो चंदसिरीए अत्तओ समुद्ददत्तो नाम सुरूवो।

सो य सागरचंदो परमभागवउदिक्खासंपत्तो भगवयगीयासु सुत्तओ अत्थओ य विदितपरमत्थो। सो य तं समुद्ददत्तं दारगं गिहे परिव्वायगस्स कलागहणत्थे ठवइ "अन्नसालासु सिक्खंतो अण्णपासंडियदिट्ठी हवेज्जा"।

ततो सो समुद्ददत्तो दारगो तस्स परिव्वायगस्स समीवे कलागहणं करेमाणो अण्णया कयाइ 'फलगं ठवेमि' त्ति गिहं अणुपविट्ठो। नवरिं च पासइ नियगजणणीं तेण परिव्वायगेण सद्धिं असब्भमायरमाणीं। ततो सो निग्गतो इत्थीसु विरागसमावण्णो, 'न एयाओ कुलं सीलं वा रक्खंति' त्ति चिंतिऊण हियएण निब्बंधं करेइ, जहा—न मे वीवाहेयव्वं ति। ततो से समत्तकलस्स जोव्वणत्थस्स पिया सरिसकुल–रूव–विहवाओ दारियाओ वरेइ। सो य ता पडिसेहेइ। एवं तस्स कालो वच्चइ।

अण्णया तस्स सम्मएणं पिया सुरट्ठमागतो ववहारेणं। गिरिनगरे धणसत्थवाहस्स धूयं धणसिरिं पडिरूवेणं सुंकेणं समुद्ददत्तस्स वरेइ। तस्स य अन्नायमेव तिहिगहणं काऊण नियनगरमागओ।

ततो तेण भणितो समुद्ददत्तो—"पुत्त! मम गिरिनयरे भंडं अच्छइ, तत्थ तुमं सवयंसो वच्च। ततो तस्स भंडस्स विणिओगं काहामो" त्ति वोत्तूण वयंसाण य से दारियासंबंधं संविदितं कयं।

तओ ते सविभवाणुरूवेणं निग्गया, कहाविसेसेण य पत्ता गिरि-नयरं । बाहिरओ य ठाइऊणं धणस्स सत्थवाहस्स मणुस्सो पेसिओ, जहा ' ते आगओ वरो ' त्ति ।

ततो तेण सविभवाणुरूवा आदासा कया, तत्थ य आवासिया । रत्तीए आगया भोयणववएसेणं धणसत्थवाहगिहे, धणसिरीए पाणिग्ग-हणं कारिओ ।

ततो सो धणसिरीए वासगिहं पविट्ठो । ततो णेणं पइरिक्कं जाणि-ऊण तीसे धणसिरीते चम्मदिं दाऊण निग्गओ, वयंसाण च मज्झे सुत्तो । ततो पभायाए रयणीए सरीरावस्सकहेउं सवयंसो चेव निग्गतो बहिया गिरिनयरस्स । तेसिं वयंसाणं अदिट्ठतो चेव नट्ठो ।

ततो से वयंसेहिं आगंतूणं [सागरचंदस्स] धणसत्थवाहस्स य परिकहियं ' गतो सो ' । तेहिं समंततो मग्गिओ, न दिट्ठो । ततो ते दीणवयणा कइवयाणि दिवसाणि अच्छिऊण धणसत्थवाहमापुच्छिऊण गता नियगनयरं ।

इयरो वि समुद्ददत्तो देसंतराणि हिंडिऊण केणइ कालेण आगतो गिरिनयरं कप्पडियवेसछण्णो परूढनह–केस–मंसु–रोमो । दिट्ठो णेण धणसत्थवाहो आरामगतो । ततो तेणं पणमिऊणं भणिओ–" अहं तुब्भं आरामकम्मकरो होमि । "

तेण य भणिओ–" भणसु, का ते भती दिज्जउ " त्ति ? ।

ततो तेण भणियं–" न मे भईए कज्जं । अहं तुज्झं पसादाभि-कंखी । मम तुट्ठीदाणं देज्जह " त्ति ।

एवं पडिस्सुए आरामे कम्ममारद्धो काउं । ततो सो रुक्खाउव्वेय-कुसलो तं आरामं कइवएहिं दिवसेहिं सव्वोउयपुप्फ–फलसमिद्धं करेइ ।

ततो सो धणसत्थवाहो तं आरामसिरिं पासिऊणं परं हरिसमुवगतो । चिंतियं च णेणं–" किमेएणं गुणाइसयभूएण पुरिसेण आरामे अच्छंतेण ? वरं मे आवारीए अच्छउ " त्ति ।

ततो ण्हविय–पसाहिओ दिण्णवत्थजुयलो ठवितो आवणे ।

ततो तेण आय–वयकुसलेणं गंधजुत्तिनिउणत्तणेणं पुरजणो उम्मत्ति गाहितो । ततो पुच्छितो जणेणं–" किं ते नामधेयं ? "

पभणइ य–" 'विणीयओ' त्ति मे नामधेयं । "

एवं सो विणीयओ विणयसंपन्नो सव्वनयरस्स वीससणिज्जो जातो ।

ततो तेण सत्थवाहेण चिंतियं–" न खमं मे एस आवणे य अच्छंतो । मा एस रायसंविदितो हवेज्ज, ततो रायणा हीरइ त्ति । वर-मेस गिहे भंडारसालाए अच्छंतो । "

ततो तेण सगिहं नेऊण परियणं च सद्दावेऊण भणियं–" एस वो विणीयओ जं देइ तं मे पडिच्छियव्वं, न य से आणा कोवेयव्व"त्ति ।

ततो सो विणीयओ घरे अच्छइ, विसेसओ य धणसिरीए जं चेडीकम्मं तं सयमेव करेइ । ततो धणसिरीए विणीयको सव्ववीसंभट्ठा-णितो जातो ।

तत्थ य नयरे रायसेवी एक्को य डिंडी परिवसइ। इओ य सा धणसिरी पुव्वावरण्हसमए सत्ततले पासाए अट्टालगवरगया सह विणीयगेणं तंबोलं सभाणयंती अच्छइ।

सो य डिंडी ण्हाय–समालद्धो तस्स भवणस्स आसण्णेण गच्छति। धणसिरीए तंबोलं निच्छूढं पडियं डिंडिस्सुवरिं। डिंडिणा निज्झाइया य, दिट्ठा य णेणं देवयभूया। ततो सो अणंगबाणसोसियसरीरो तीए समागमुस्सुओ संवुत्तो। चिंतियं च णेणं–"एस विणीयओ एएसिं सव्वप्पवेसी, एयं उवतप्पामि। एयस्स पसातेणं एतीए सह समागमो भविस्सइ" त्ति।

ततो अण्णया तेण विणीयगो नियगभवणं नीओ। पूयासक्कारं च काउं पायपडिएण विण्णविओ–"तहा चेट्ठसु, जेण मे धणसिरीए सह संजोगं करेसि" त्ति।

ततो सो "एवं होउ" त्ति वोत्तूण धणसिरीते सगासं गतो। पत्थावं च जाणिऊण भणिया णेणं धणसिरी डिंडियवयणं। ततो तीए रोसवसगाए भणिओ—

"केवलं तुमे चेव एयं संलत्तं, अण्णो ममं न जीवंतो" त्ति।

ततो सो बिइयदिवसे निग्गतो, दिट्ठो य डिंडिणा। भणितो णेणं–"किं भो वयंस! कयं कज्जं?" ति।

ततो तेण तव्वयणं गूहमाणेणं भणियं–"घत्तीहं" ति। तओ पुणरवि तेण दाणमाणेणं संगहियं करेत्ता विसज्जिओ।

ततो सो आगंतूण धणसिरीए पुरतो विमणो तुण्हिक्को ठितो अच्छति। ततो तीए धणसिरीए तस्स मणोगयं जाणिऊण भणिओ—

" किं ते पुणो डिंडी किंचि भणइ " ?

तेण भणियं—" आमं " ति। तीए निवारितो—' न ते पुणो तस्स दरिसणं दायव्वं " ।

पुणो य पुच्छिज्जमाणो तहेव तुण्हिक्को अच्छइ। ततो तीए तस्स चित्तरक्खं करेंतीए भणिओ—" वच्च, देहि से संदेसं, जहा—' असोगवणियाए तुमे अज्ज पओसे आगंतव्वं ' " ति।

तेण तहा कयं। ततो सा असोगवणियाए सेज्जं पत्थरेऊण जोगमज्जं च गिण्हिऊण विणीयगसहिया अच्छइ। सो आगतो। ततो तीए सोवयारं मज्जं से दिण्णं। सो य तं पाऊण अचेतणसरीरो जाओ। ताते तस्सेव य संतियं असिं कड्ढिऊण सीसं छिण्णं। पच्छा विणीयगो भणिओ—" तुमे अणत्थं कारिया, तुज्झ वि सीसं छिंदामि " त्ति।

तेण पायवडिएण मरिसाविया। विणीयगेणं धणसिरिसंदिट्ठेणं कूवं खणित्ता निहिओ।

ततो अन्नया सुहासणवरगया धणसिरी विणीयगेण पुच्छिआ—" सुंदरि! तुमं कस्स दिन्ना ? "

तीए भणियं—" उज्जेणिगस्स समुद्ददत्तस्स दिण्णा " ।

तेण भणियं—" वच्चामि, अहं तं गवेसित्ता आणेमि " त्ति भणिउं निग्गओ। संपत्तो य नियगभवणं पविट्ठो, दिट्ठो य अम्मापिऊहिं, तेहिं

य कयंसुपाएहिं उवगूहिओ। ततो तेहिं धणसत्थवाहस्स लेहो पेसिओ ' आगतो मे जामाउओ ' त्ति।

ततो सो वयंसपरिगहिओ मातापितीहि य सद्धिं ससुरकुलं गतो। तत्थ य पुणरवि वीवाहो कओ।

ततो तीए तस्स रूवोवलद्धी कया। दिट्ठो य णाए विणीयओ। ततो तेण सव्वं संवादितं।

(वसुदेवहिण्डी–प्रथमखण्डम्)

---

(१९)

जो खणइ सो पडइ

इह आसि वसंतपुरे परोप्परं नेह–निब्भरा मित्ता।
खत्तिय–माहण–वाणिय–सुवण्णयार त्ति चत्तारि ॥ १ ॥

ते अत्थविढवणत्थं चलिया देसंतरं नियपुराओ।
पत्ता परिब्भमंता भूमिपइट्ठम्मि नयरम्मि ॥ २ ॥

रयणीइ तस्स बाहिं उज्जाणे तरुतलम्मि पासुत्ता।
पढमपहरम्मि चिट्ठइ जग्गंतो खत्तिओ तत्थ ॥ ३ ॥

पेच्छइ तरुसाहाए पलंबमाणं सुवण्णपुरिसं सो ।
विम्हियमणेण भणियं अणेण सो एस अत्थो त्ति ॥ ४ ॥

कणयपुरिसेण संलत्तमत्थि अत्थो परं अणत्थजुओ ।
तो खत्तिएण वुत्तं जइ एवं ता अलं अम्ह ॥ ५ ॥

तीए जामे जग्गेइ माहणो सोवि पिच्छइ तहेव ।
तइयम्मि वाणिओ तं दट्ठूण न लुब्भए तम्मि ॥ ६ ॥

जग्गइ चउत्थजामे सुवण्णयारो सुवण्णपुरिसं तं ।
दट्ठूण विम्हियमणो भणइ इमं एस अत्थो त्ति ॥ ७ ॥

पुरिसेण जंपियं एस अत्थि अत्थो परं अणत्थजुओ ।
जंपइ सुवण्णयारो न होइ अत्थो अणत्थजुओ ॥ ८ ॥

पुरिसो जंपइ तो किं पडामि ? पडसु त्ति जंपइ कलाओ ।
पडिओ सुवण्णपुरिसो छिंदइ सो अंगुलिं तस्स ॥ ९ ॥

खड्डाए पक्खित्तो सुवण्णपुरिसो सुवण्णयारेण ।
गोसम्मि पत्थिया ते सुवण्णयारेण तो भणिया ॥ १० ॥

किं देसंतरभमणेण अत्थि एत्थवि इमो कणयपुरिसो ।
खड्डाइ मए खित्तो तं गिण्हह विभजिउं सव्वे ॥ ११ ॥

तो सव्वेवि नियत्ता अंगुलिकणगेण भत्तमाणेउं ।
वणिओ सुवण्णयारो य दोवि पत्ता नयरमज्झे ॥ १२ ॥

चिंतियमिमेहिं हणिमो खत्तियमाहणसुए उवाएण ।
अम्हं चिय दोण्हं जेण होइ एसो कणयपुरिसो ॥ १३ ॥

भुत्तूण सयं मज्झे समागया गहियकुसुमतंबोला ।
खत्तियमाहणजुग्गं विसमिस्सं भोयणं घेत्तुं ॥ १४ ॥

बाहिं ठिएहिं तं चेव चिंतियं किं चिरं ठिया मज्झे ।
तुब्भे त्ति भणंतेहिं दुन्निवि खग्गेण निग्गहिया ॥ १५ ॥

विसमिस्सं भत्तं भुंजिऊण दिय–खत्तियावि वावन्ना ।
इअ एसा पाविड्ढी पाविज्जइ पावपसरेणं ॥ १६ ॥

(कुमारपालप्रतिबोधः–चतुर्थः प्रस्तावः)

———

' पाइअ–गज्ज–पज्जाणि ' नो शब्द कोश

० आ निशानवाळा शब्दो समासमां छे

अइपेमपरव्वसो (अतिप्रेमपरवशः) अति प्रेमने लीधे परवश थएलो

अइसंधिओ (अतिसंधितः) ठगायेलो

अग्घवेह (अर्घापयत) मूलवो–मूल्य करावो

अच्छह (आध्वम्) रहो–बेसो

अचिंतिज्जंतो (अचिन्त्यमानः) नहि चीतरातो–न चीतरवामां आवे तो

अज्झावया (अध्यापकाः) अध्यापको–शिक्षको

अट्ठा (अर्थाय) अर्थे–माटे

अण्णवं (अर्णवम्) समुद्रने

अणगारिअं (अनगारिताम्) अनगारिताने–संन्यास धर्मने

अणुट्ठिए (अनुत्थिते) उठ्यो न होय त्यां–उग्या पहेलां

अत्तए (आत्मजः) आत्मज–पेटनो दीकरो–सगो दीकरो

अत्थविढवणत्थं (अर्थअर्जनार्थम्) अर्थ–धन–कमावा माटे

अत्थओ (अर्थतः) अर्थ करीने–ग्रंथना अर्थ समजीने

अदिन्नं (अदत्तम्) नहि दीधेलुं–नहि कहेलुं–नहि पूछेलु

अदीहपेहिणा (अदीर्घप्रेक्षिणा) अदीर्घदर्शिए

अन्नाए (अज्ञाते) ज्ञात थया विना–जाण्या विना

अभितुर (अभित्वरस्व) त्वरा कर–उतावळ कर

अयसबहुलं (अयशोबहुलम्) जेमां अयश–अपयश–वधारे छे तेवुं

अरुच्चमाणम्मि (अरोचमाने) नहि रुचतुं–गमतुं–थये

असब्भमायरमाणीं (असभ्यम्–आचरन्तीम्) असभ्य आचरण करतीने

असोगओ (अशोकः) शोक वगरनी

अहयं (अहतम्) नहि हणायलुं–अक्षत

अहोभागं (अधोभागम्) नीचेना भागने

अंगुलियधणुहगएणं (अङ्गुलीय-धनुर्गतेन) आंगळीनु धनुष-गोफण-वडे

अंबिले (अम्लः) अम्ल-खाटो

आइण्णा (आचीर्णा) आचरी

आणिएल्लियं (आनीतकम्) आणेलुं

आणेउं (आनेतुम्) आणवा-लाववा माटे

आय-वय० (आय-व्यय०) आवक अने खर्च

आवारीए (आपणे) दुकाने

आविए (आपिबेत्) पीवे

आसा (आशया) आशाए

आसंघो (आसंगः) अतिशय अनुराग

इज्जंतं (आयन्तम्) आवताने

इत्तरियम्मि (इत्वरे) विनाशशील-नश्वर-नाशवंत

इसि (ऋषिम्) ऋषिने

उच्चावयाइं (उच्चावचानि) ऊंचां नीचां-गमे तेवां

उज्झणधम्मियं (उज्झनधर्मिकम्) फेंकी देवानुं-नाखी देवानुं-एठुं जूठुं

उट्ठाति (उत्तिष्ठति) ऊठे-नीकळे

उद्दाइया (उद्दाविताः) घोडया-दोडया

उब्भयेणं (ऊर्ध्वकेन) ऊभा थइने

उम्मत्तिं (उन्मत्तिम्) उन्मत्तताने

उवगूहिओ (उपगूढः) आलिंगायो-भेटायो

उवतप्पामि (उपतपामि) सताप पामुं छुं

ऊणजातिएणं (ऊनजातिकेन) हलकी जातवाळाए

एहिंति (एष्यन्ति) आवशे

एक्कसंकलितबद्धा (एकसंकलितबद्धाः) एक साथे सांकळीने बांधेलां

एतीए (एतस्याः) एणीनी, एणीनुं

ओए (ओजः) ओज-सामर्थ्य

ओमचेलए, ओमचेलगा (अवमचेलकः) जेणे हलकां वस्त्रो पहेर्यां छे ते

ओलग्गिया (अवलग्नाः) वळग्यो-आश्रय लीधो

कइया (क्रयिकाः) क्रय करनारा-खरीदनारा

कक्कसे (कर्कशः) कर्कश-खरबचडो

कज्जइ (क्रियते) कराय छे

कन्नामोडओ (कर्णामोटकः) कान-मरडवो–कान आमळवो

कम्हिइ (कस्मिन्–चित्) क्यांक स्थळे

कयंसुपाएहि (कृताश्रुपातैः) जेमणे आंसुओ पाडया छे तेओ वडे

करणे (करणे) न्यायालयमां–कचेरीमां

कलाओ (कलायः) सोनी

कसघायसए (कशघातशतानि) चाबुकना सो घा

कसाते (कषायः) कषायेलो रस

कहिंयं (कुत्र) कही–क्यां

काऊ (कायः) काया–शरीर

काओ, कागा (काकः) काक–कागडो

कागरडणसद्देण (काकरटनशब्देन) कागडानी राडना अवाजवडे

काणेसि (काणयसि) काणां करे छे

काहामो (करिष्यामः) करीशु

काहावणेण (कार्षापणेन) कार्षापण वडे [कार्षापण–सोनानुं एक जातनुं चलणी नाणुं]

कीस (कस्मात्) शा माटे–शा कारणे

कुच्चएहिं (कूर्चकैः) कूचाओ वडे

कुलाणीए (कुलानीते) कुलमां आ-णेलामां–कुलद्वारा आवेलामां

केरिसुल्लावा (कीदृशोल्लापाः) केवा उल्लापो–बडबडाटो

केवलि० (केवलिन्) केवळ–एक मात्र आत्मनिष्ट–स्थितप्रज्ञ

केसा (केशाः) केशो–वाळो

कोलालाणि (कौलालानि) कुलाले–कुंभारे–घडेलां

कोसंबीओ, कोसबको (कौशाम्बीकः) कौशांबीनो रहीश

खड्डाए (गर्तायाम्) खाडामां

खत्ता (क्षत्ता) सारथि–रथ हांकनारो

खत्तीण (क्षत्रियाणाम्) क्षत्रियोमां

खाइया (खादिताः) खाधेली

खामणं (क्षामणम्) क्षमा करवी–क्षमा आपवी

खुड्डगा ! (क्षुद्रका) नाना चेला !

खंडिएहि (खण्डिकैः) नाना शिष्यो साथे

गउरवपयं (गौरवपदम्) गौरवनुं स्थान

गामेल्लओ (ग्रामेणः) गामडियो

गिरिनगरे (गिरिनगरे) गिरनारमां

गेहथंभेण (गेहस्तम्भेन) घरना थांभला साथे

गोसम्मि (गोसे) प्रातःकाळे

गंधजुत्ति० (गन्धयुक्ति०) गंध बनाववानी कळा

गंधियपुत्तेहिं (गान्धिकपुत्रैः) गांधीना पुत्रोए

चउरंसे (चतुरस्रः) चोरस

चक्खिसत्ता चक्खिसत्ता (अक्षित्वा अक्षित्वा) चाखी चाखीने

चमढि (संमर्दम् ?) तर छोडवुं ? तिरस्कार ?

चिच्चा (त्यक्त्वा) त्याग करीने

चित्तगरा (चित्रकराः) चितारा

चित्तिज्जइ (चित्र्यते) चितराय छे

चिल्लगो (चेटकः) चेलो

चिब्भडियाणं (चिर्भटिकानाम्) चीभडाओनुं

छट्ठभत्तं (षष्ठभक्तम्) छ टंक आहार न लेवानुं व्रत

छुहमारो (क्षुधामारः) भूखमरो

छूढाणि ०छूढ (क्षिप्तानि) फेंक्यां-छोड्यां

जक्खाययणे (यक्षायतने) यक्षना मंदिरमां

जणमारिं (जनमारिं) माणसोनो मरो

जन्नवाडं (यज्ञपाटकम्) यज्ञवाडामां

जयामो (यजामः) यज्ञ करीए-पूजीए

जामाउयस्स (जामातृकस्य) जमाईनुं

जायणजीविणु त्ति (याचनजीविनः इति) याचनाकरीने जीवनारा

जीवणोवाओ (जीवनोपायः) जीवननो उपाय

जुत्तिकरा (युक्तिकराः) युक्ति करनारा-वकीलो

जोइए (दृष्टे) जोया पछी

जोहेसु (योधेषु) योधाओमां

ठाइयव्वं (स्थातव्यम्) ठावुं जोइए-रहेवुं जोइए

तक्का (तर्काः) तर्को-संकल्प विकल्पो

तच्चत्थं (तथ्यार्थम्) तथ्य अर्थने-साची वातने

तित्तिरं, तित्तिरिं (तित्तिरिम्) तेतरने

तित्ते (तिक्तः) तीतो-तीखो कडवो

तुट्ठिदाणं (तुष्टिदानम्) संतुष्ट थइने दान आपवुं ते–पारितोषिक इनाम

तंसे (त्र्यस्रः) त्रांसो

दासी (अदाः) दीधु

दाहिंति (दास्यन्ति) देशे

दिउत्तमा (द्विजोत्तमाः) उत्तम द्विजो –ब्राह्मणा

दीहे (दीर्घः) दीर्घ–लांबो

दुक्कुला (दुष्कुला) दुष्ट कुलनी

दुहियरो (दुहितरः) दीकरीओ

देवयभूया (देवताभूता) देवता जेवी

देसिओ (देशितः) उपदेशाएलो–देखाडेलो

दंतवक्के (दन्तवक्त्रः) दंतवक्त्र नामनो महाभारत–प्रसिद्ध राजा

धणप्पयणमपरिग्गहाओ (धन–पचन–परिग्रहात्) धन, रसोइ करवी अने बीजा परिग्रहथी

धम्मनिहिअनिअचित्तो (धर्मनिहित-निजचित्तः) जेणे पोतानुं चित्त धर्ममां स्थापेलुं छे ते

धरणितलोसित्तअंसुनिवहाओ (धरणितलावसिक्तअश्रु–निवहाः) जेमणे धरणितल उपर आंसुओ वहाव्यां छे तेओ

धिज्जाइआ (द्विजातिकाः) ब्राह्मणो

धूया (दुहिता) दीकरी

नयगुण० (नयगुण०) नीतिनो गुण

नाडयविज्जाए (नाटकविद्यायाम्) नाटकनी विद्यामां

निअट्टंति, णिअट्टंति (निवर्तन्ते) नवर्ते छे. अटके छे–आगळ जता नथी

निज्झाइया (निर्ध्याता) सारी रीते जोई

निद्धे, णिद्धे (स्निग्धः) स्निग्ध–चीकणो

नियत्तियाओ (निवृत्ताः) नीवर्ती–पाछी वळी

नियसरिसविहवेसु (निजसदृश–विभवेषु) पोतानी समान वैभव धरावनारा कुलोमां

निव्वाणवादीणिह (निर्वाणवादिनि इह) निर्वाणवादिओमां अहीं

नेआउए (नैयायिकः) न्याययुक्त–न्यायमार्ग

पइरिक्कं (प्रतिरक्तम्) खाली–एकांत स्थळ

पट्ठिओ (प्रस्थितः) प्रस्थान कर्युं छे ते

* पण्हिपहेरण (पृष्णिप्रहरेण) पानीना प्रहारथी

पणुल्लयामो (प्रनोदयामः) दूर करीए

पत्तए (पत्रकाणि) पत्तां–चिट्ठीओ

पत्थरेऊण (प्रस्तीर्य) पाथरीने

परप्पवित्तस्स (परप्रवृत्तस्य) बीजा माटे प्रवर्तेला–तैयार थयेला

परिग्गहं (परिग्रहम्) धन धान्य स्त्री वगेरेनो परिग्रह

परिण्णे (परिज्ञः) चारे बाजुनुं जाणनार

परिवाडीआगय (परिपाटीआगतम्) अनुक्रमे आवेलुं

परिहित्ता (परिधाय) पहेरीने

पलाइउमारद्धा (पलायितुमारब्धाः) दोडवा मांड्या

पलोएह (प्रलोकध्वम्) जुओ

पसाएणं (प्रसादेन) प्रसाद–कृपा–वडे

पाणाइवायं (प्राणातिपातम्) प्राणोनो अतिपात–हिंसाने

पायवडिओ, पायवडिएण (पादपतितः) पगे पडेलो

पाविड्ढी (पापर्धिः) पापथी आवेली ऋद्धि

पासुत्तो, पासुत्ता (प्रसुप्तः) सुतेलो

पाहुडएहि (प्राभृतकैः) भेटणांओ द्वारा

पोम्मं (पद्मम्) पद्म–कमळ

पंडुरगा (पाण्डुरकाः) पांडरा–धोळा

पंतोवहिउवगरणं (प्रान्तोपधिउपकरणम्) जेनां कपडां अने बीजां उपकरणो जूनां छे तेने

फलगं (फलकम्) पाटीने–लखवानी स्लेटने

फुक्कनासे (फुक्कनासः) जेनु नाक सारुं नथी ते

बहुपच्चवायए (बहुप्रत्यवायके) जेमां घणां प्रत्यवायो–विघ्नो–छे तेवुं

बहुमए (बहुमतः) बहु–घणा–ला-कोए मानेलो

बंभइज्जम्मि (ब्रह्मेज्ये) ब्राह्मणो ज्यां संध्या वगेरे धर्मकृत्य करे छे त्यां

भगवयगीयासु (भगवद्गीतासु) भगवद्गोताओमां

भच्चे (भृत्यान्) भृत्या—नोकरोने

भणित्ता (भणित्वा) भणीने—कहीने

भती (भृतिः) भाडुं—वेतन—पगार

भवयाणमेयं (भवताम् एतत्) आपनुं आ

भाइणेज्ज, भायणेज्जा, भागिणेज्जा (भागिनेय !) भाणेज

भागवउ० (भागवत०) भागवत धर्मनो अनुयायी

भासियवं (भाषितवान्) बोल्यो

भाहि (अभैः) बीक लागी

भिउडिं (भ्रुकुटिम्) भवांने

भिक्खट्ठा (भिक्षार्थम्) भिक्षा अर्थे

भंडभरिओ (भाण्डभृतः) भांड—करियाणाथी भरेलुं

भंडारसालाए (भाण्डागारशालायाम्) भंडारियानी जग्याए

मग्ग (मार्गः) मार्ग—रस्तो

मच्चरणमद्दणपरो (मच्चरणमर्दन-परः) मारा चरणने मसळवामां तत्पर

मणयं मणयं (मनाक् मनाक्) थोडुं थोडुं

मया (मृता) मरी गई

महव्वय० (महाव्रत०) महाव्रत—मोटुं व्रत—अहिंसा वगेरे पांच मोटां व्रत

महिओ (महितः) पूजाएलो

महेला (महिला) महिला—स्त्री

मिच्छा मि दुक्कडं (मिथ्या मे दुष्कृतम्) मारुं दुष्कृत मिथ्या

मुहाजीविं (मुधाजीविनम्) अना-सक्तपणे जीवनारने

मुहपोत्तीए (मुखपोतिकया) मों उपर बांधवाना वस्त्रवडे

मेलयं (मेलकम्) मेळो

मेहुणं (मैथुनम्) अब्रह्मचर्य

मोयाविओ (मोचितः) मुक्त कराव्यो

०मंसु० (०श्मश्रु०) दाढी मूछ

रयं (रजस्) रज—मळ-पाप

राइभोअणं (रात्रीभोजनम्) रात्री-भोजन—विकाळ भोजन

रामविओए (रामवियोगे) रामना वियोगमां

रायणा (राज्ञा) राजावडे

रुक्खाउव्वेय० (वृक्षायुर्वेद०) वृक्षोनो आयुर्वेद—झाडोनी दवा-दारुनी विद्या

रुहे (रुहः) ऊगनार—जन्मनार

लइयं (लातम्) लीधेलुं

लट्ठं (लष्टम्) सुंदर

लुक्खे (रूक्षः) लूखुं

लुब्भए (लुभ्यते) लोभाय

लेहो (लेखः) लेख–कागळ

वट्टिज्जासि (वर्तस्व) वर्त–वर्तन राख

वुड्ढे (वृद्धः) वडो–मोटो

वट्टे (वृत्तः) गोळ

वयंसाण (वयस्यानाम्) मित्रोनुं

ववहरंतीओ (व्यवहरन्त्यः) व्यवहार करती

ववहारो (व्यवहारः) न्याय

ववहारनिच्छओ (व्यवहारनिश्चयः) न्यायनो निर्णय–फेसलो

वहाए (वधाय) वध माटे

वायसपिंडियाओ (वायसपिण्डिकाः) कागडानी खावानी पिंडीओ

वायससंघाडओ (वायससंघाटकः) कागडानुं टोळुं

वारओ (वारकः) वाटो

वारेहामि (वारयिष्यामि) वारीश–अटकावीश

वासियसद्देणं (वासितशब्देन) वाशाना शब्दवडे

विच्छिण्ण० (विस्तीर्ण०) विस्तीर्ण–खूब विस्तारवाळुं

विहुणाहि (विधुनीहि) दूर कर–खंखेरी नाख

वीससेणो (विष्वक्सेनः) श्रीकृष्ण

वुच्छिंद (व्युच्छिन्द्धि) विच्छेद कर–नाश कर

वुड्ढवायसेहिं (वृद्धवायसैः) मोटा कागडाओ वडे

वेए (वेदान्) वेदोने–वेदशास्त्रोने

वेणुदेवो (वैनतेयः) विनतानो पुत्र–गरुड

वंतं (वान्तम्) वमेलुं—ओकेलुं

सक्खिणो (साक्षिणः) साक्षीओ

सगासि (सकाशे) पासे

सण्णे (संज्ञः) संज्ञावाळो–समजदार

सत्तुयादुपालियं, सत्तुयादोपालियं (सक्तुकद्विपालिकाम्) बे पाली साथवो

समत्तकलस्स (समस्तकलस्य) जेनी बधी कळाओ पूरी छे तेनुं

समुद्धुर० (समुद्धुर०) उद्धत

सरा (स्वराः) ध्वनिओ–शब्दो

सरीरावस्सगहेउं (शरीरावश्यकहेतुम्) शरीरना आवश्यक काम माटे–दिशाए जावाने माटे

सव्वप्पवेसी (सर्वप्रवेशी) सर्वमां प्रवेश राखनारो

सव्वोउय० (सर्वऋतुक०) बधी ऋतुओना

सहवड्ढिया (सहवर्धिताः) साथे वधेला–साथे मोटा थएला

सहसुट्ठिओ (सहसोत्थितः) एक दम उठेलो–जागेलो

सहियायणं (सखिकाजनम्) सखी जनने

साकेयं (साकेतम्) साकेत नगर–अयोध्या

सारइयं (शारदिकम्) शरदऋतुनु

सासुयाणं (श्वश्रुकाणाम्) सासूओनुं

साहम्मिए (साधर्मिकान्) समान धर्मवाळाओने

सिणाणं (स्नानम्) स्नान–न्हाण

सिरो (शिरः) शिर–माथुं

सुकहियमट्ठपदोवसोहियं (सुकथितम्–अर्थ–पद – उपशोभितम्) सारी रीते कहेलुं अने अर्थ तथा पदथी शोभितुं

सुक्किले (शुक्लः) शुक्ल–धोळो

सुत्तओ (सूत्रतः) शब्द मात्र द्वारा गोखीने

सुत्तुट्ठिओ (सुप्तोत्थितः) सुतेलो उठयो

सुयसोगताविआओ (सुतशोकतापिताः) सुतना शोकथी तपेली –दुःखी

सूरे (सूर्ये) सूर्य

सेज्जं (शय्याम्) सेज–पथारीने

सोवाग० (श्वपाक०) चांडाळ

सोयबले (श्रोत्रबलम्) श्रोत्र इंद्रियनी शक्ति

सोहओ (शोभकः) शोभा आपनारो

संकरदूसं (संकरदूष्यम्) जात जातना नाना नाना टूकडाओमांथी बनावेलुं एक वस्त्र

संगहिओ (संगृहीतः) भेगो कर्यो

संतियं (सत्कम्) संबंधी

संपहारेत्ता (संप्रधार्य) विचारीने

सुंकेणं (शुल्केन) किंमतवडे

हस्से (ह्रस्वः) ह्रस्व–नानो

हीला० (हीला०) निंदा

०–५–० પાકું પૂઠું ०–૮–०

ભગવાન મહાવીરના સામાયિકના પ્રયોગો

[આઠ દૃષ્ટાંત સાથે]

લેખક–પંડિત લાલન

વિજયરાય કલ્યાણરાય વૈદ્ય

'સામાન્યત: જિજ્ઞાસુઓને ને વિશેષત: જૈનોએ પડનને પાત્ર.'

મુંબઈ સમાચાર

'તેમાં સામાયિક સૂત્ર અને જૈનોના આદર્શ સામાયિક રજુ કરી અચ્છી રીતે સમજાવવામાં આવ્યા છે.'

આધ્યાત્મિક વિકાસક્રમ અથવા ગુણસ્થાન

०–६–०

લેખક–પંડિત સુખલાલજી

સોળ સતી

૧–૪–०

લેખક–ધીરજલાલ ધનજી શાહ

અનેકાંતવાદની મર્યાદા

०–२–०

લેખક–પંડિત સુખલાલજી

संस्कृत प्राकृत सिरीझ

१. समराइच्चकहा 3-8-0

[हरिभद्रसूरिकृत]

Edited by
M.C.Modi

द्वितीयावृत्ति

Two parts

[Text with introduction. Glossary, notes& sanskrit Tippani]

२. अंतगडाणुत्तरोववाइयदसाओ सटीक Paper Binding 2-4-0

[The Eighth & the Ninth Angas] Cloth Binding 3-0-0

Edited by
M. C. Modi

[Text with introducion, translation, notes, appendices and अभयदेव's Commentary]

३. पंचसुत्तं 1-0-0 Edited by V. M. Shah

४. निरयावलियाओ सटीक Edited by V. J. Chokshi

[A critically edited text, Prakrit Sanskrit-English Glossary, introduction giving full summary of the text & notes.]

पेपर ३-०-०
कलोथ ३-८-०

५. प्राकृतमार्गोपदेशिका पाकुं पुठुं रेपरसहित २-०-०
पं. बेचरदास जीवराज दोशी

६. विपाकसूत्र सटीक पेपर २-८-०
मधुसूदन मोदी अने वि. जे. चोकसी कलोथ ३-४-०

०–८–० **ભગવાન મહાવીરના દશ ઉપાસકો**

લેખક–પંડિત બેચરદાસ

કાકા કાલેલકર

'ઇતિહાસ સંશોધકને આ પ્રાચીન વાર્તામાંથી જૂના કાળની સામાજિક સ્થિતિ વિષે કેટલીક માહિતી અવશ્ય મળી શકે છે...આ ગ્રંથમાં ભગવાન મહાવીરના દશ ઉપાસકોની અવસ્થા વિષે કેવળ ટૂંકી નોંધ છે.'

જૈનદૃષ્ટિએ બ્રહ્મચર્ય વિચાર ०–५–०

લેખક—પંડિત સુખલાલજી ને બેચરદાસ

'જ્યાં સુધી હું જાણું છું ત્યાંસુધી આપણી ભાષાઓમાં આ જાતનો નિબંધ આ પહેલો જ છે.' **કાકા કાલેલકર**

જિનાગમ કથાસંગ્રહ १–४–०

સં. પં. બેચરદાસ જીવરાજ

જિનાગમોમાંથી નાની નાની ગદ્યપદ્યાત્મક કથાઓ ચૂંટીને સંગ્રહેલી છે. સાથે વ્યાકરણ, ખાસ ખાસ શબ્દો ઉપરની ટિપ્પણીઓ અને અર્થ સાથે શબ્દનો કોષ પણ આપેલો છે.

१–०–० **ભગવાન મહાવીરની ધર્મકથાઓ**

લેખકઃ પંડિત બેચરદાસ દોશી